"बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के जनजातीय समूहों के मूल्यों तथा शैक्षिक अभिवृत्ति का सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में अध्ययन"

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध
पी० एच० डी० की उपाधि हेतु
विषय "शिक्षाशास्त्र"
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।
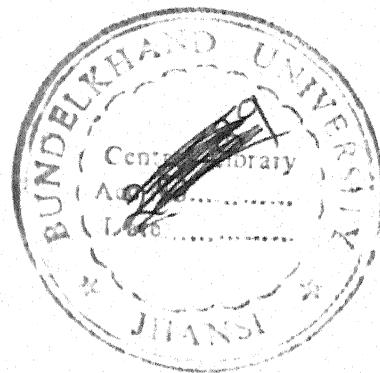
निर्देशक :-
डा० आर. पी. पाण्डेय
एम. ए., (मनोविज्ञान,) एम. एड.
पी. एच. डी.
बी. एड. विभाग,
बुन्देलखण्ड कालिज, झांसी

शोधकर्ता :-
संतोष कुमार पाँचाल
एम. ए., एम. एड.

नवम्बर १९९८

डा० आर०पी० पाण्डेय,
एम०ए० ।मनोविज्ञान।, एम०एड०,
पी०एच०डी० ।शिक्षा शास्त्र।,
बी०एड० विभाग,
बुन्देलखण्ड, कालिज, झाँसी ।
।उत्तर-प्रदेश।

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि --

अ- शोध कार्य पूर्ण रूप से शोधकर्ता द्वारा किया गया है,

ब- शोधकर्ता ने यह कार्य मेरे निर्देशन मे रहकर निर्धारित अवधि मे पूरा किया है, और

स- शोधकर्ता ने मेरी राय में बुन्देलखण्ड विश्व-विद्यालय की पी०एच०डी० से सम्बन्धित सभी नियमावली और परि-नियमावलियों का पूर्ण रूपेण परिपालन किया है ।

।डा० आर०पी०पाण्डेय

भूमिका

"स्वतंत्रता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है", लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की इस उद्घोषणा का व्यवहारिक प्रभाव तब पड़ा जब हमारी सरकार ने देश वासियों में फैले अंध विश्वास और जाति प्रथा के उन्मूलन हेतु संकल्प लिया । परिणाम् स्वरूप संविधान में यह घोषणा की गई कि आदिवासी हितों की रक्षा करना प्रशासन का प्रमुख कर्तव्य है । इसके साथ ही संविधान के अनुच्छेद-29 और 30 में शैक्षिक आरक्षणों की विशेष व्यवस्था की गई है । संविधान के अनुच्छेद-30 में जनजातियों को अपने धर्म और भाषा के आधार पर सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षिक विकास के लिये इच्छानुसार शैक्षिक संस्था स्थापित करने का अधिकार प्राप्त है ।

जनजातीय समूहों के लोग वास्तव मे प्राचीनतम् निवासी हैं । ये हमारी मिट्टी के अधिक नजदीक हैं, अपेक्षाकृत सभ्य निवासियों के । आज स्वतंत्रता के चालीस वर्षों में हम इनको अपने समान सम्मान नहीं दिला पाये हैं । इसका कारण इनका सांस्कृतिक और सामाजिक विकास को महत्व न दिया जाना मात्र है । इस महत्व को सैद्धांतिक रूप से, वैज्ञानिक रूप से और व्यवहारिक रूप से जन मानस में स्थापित करना चाहिये, ताकि इनके प्रति समानता और सम्मान की भावना जाग्रत हो सके । इन समूहों का विकास आर्थिक दृष्टिकोण से इतना महत्व नही रखता, जितना कि सांस्कृतिक रूप से । अत: शोधकर्ता ने झाँसी मण्डल में फैले जनजातीय समूहों का अध्ययन प्रस्तुत करके इनकी ओर प्रशासन का ध्यान ही नही खींचा है, बल्कि समाजशास्त्री राजनीति शास्त्री, अर्थ शास्त्री, मनोविज्ञान कर्ता, और शिक्षा विदों को नवीन पक्षों को खोजने और मुल्यांकित करने के लिये आमंत्रण सा दिया है ।

प्रस्तुत शोध कार्य अपने में अनूठा है, और इसे पूरा करने में स्थानीय प्रशासन तथा विद्वानों की पूरी सहायता ली गई है । अतः शोधकर्ता का यह परम् कर्तव्य हो जाता है कि वह सहायता प्रदान करने वालों के प्रति आभार प्रगट करें । प्रथमतः मै डा० आर०पी०पाण्डेय का चिरऋणी रहूँगा जिन्होने प्रत्येक क्षण और परिस्थिति में निर्देशन ही नहीं दिया, बल्कि साथ जाकर सहयोग भी प्रदान किया । झाँसी स्थित पुलिस प्रशासन का आभारी हूँ कि उन्होने नट-कबूतरा जनजाति से तथ्य संकलन में पूर्ण सहयोग प्रदान किया । साँख्यिकी के विश्लेषण एवं व्याख्या में सहयोग देने हेतु मैं श्री पी०एन०श्रीनाथन ।अध्यक्ष, साँख्यिकी विभाग,ग्रासलैण्ड,झाँसी। का आभारी हूँ । साथ ही डा० एम०पी०अहलूवालिया,डा० विद्या सागर मिश्र, डा० अरुण शुक्ला, डा० राजेन्द्र सिंह आदि प्रभृत विद्वानों का आभारी हूँ, जिन्होने समयसमय पर मार्ग दर्शन प्रदान करके हौसला बढ़ाया । मैं हार्दिक आभार उन पाँचो मुखियाओं और मुकद्दमों का व्यक्त करता हूँ,जिन्होने जनजातियों मे तथ्य संकलन के समय मुझे पूरा सहयोग प्रदान किया ।

इसके अलावा मै कम्प्यूटर मालिक श्री अग्रवाल,बुन्देलखण्ड विश्व-विद्यालय, पुस्तकालयाध्यक्ष श्री गौतम जी, प्राचार्य बुन्देलखण्ड कालिज झाँसी, हरिजन एवं समाज कल्याण विभाग,झाँसी, सागर और जबलपुर विश्व-विद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष आदि को पूर्ण सहयोग के लिये आभार प्रगट करते हैं ।

अन्त मे विनम्र शोधकर्ता के रूप मे मैं श्री रमन बिहारी लाल अध्यक्ष शिक्षा संकाय, बुन्देलखण्ड विश्व-विद्यालय झाँसी , श्री डा०एस०श्रीवास्तव

अध्यक्ष एम०एड० विभाग, ।अतर्रा कालिज,अतर्रा। और श्री गिरीष कुमार जी अध्यक्ष, बी०एड० विभाग, ।बाँदा कालिज, बाँदा। आदि गुरुजनों का हार्दिक आभारी हूँ, जिनके आशीर्वाद से इस गुरुतर कार्य को सफल बना सका ।

झाँसी

नवम्बर 1988

। संतोष कुमार पांचाल ।

एम०ए०, एम०एड०

विषयवस्तु

ता लि का - सू ची

तालिका नं0

शोध कार्य में प्रयुक्त ग्राफ्स

अध्याय-प्रथम

प्रस्तावना

(१) समस्या की पृष्ठभूमि
(२) समस्या का आभास
(३) समस्या की आवश्यकता
(४) समस्या का स्पष्टीकरण
(५) समस्या के उद्देश्य एवं परिकल्पनायें
(६) समस्या की परिसीमायें
(७) उपकरण प्रशासन में कठिनाइयाँ
(८) अध्ययन की योजना

प्रस्तावना

प्रत्येक राष्ट्र अपनी शिक्षा और मान्यताओं से पहचाना जाता है। राष्ट्र को जीवित रखने के लिये सरकार का सुदृढ़ होना आवश्यक है, वैसे ही सरकार को जीवित रखना उसके रूप पर निर्भर करता है। इस प्रकार से शिक्षा का विकास या प्रणाली सरकार की चेतनता पर निर्भर करती है। प्रत्येक नागरिक इसी चेतनता के फलस्वरूप स्वयं का, समाज का और राष्ट्र का विकास करने में सहयोग प्रदान करता है। आज का भारत, विदेशी अंग्रेजों की देन है। उन्होंने एक लम्बे समय तक इसको पद-दलित किया और यहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति को मिटाने की कोशिश की। इसी के परिणाम स्वरूप "अंग्रेजी" शिक्षा का प्रारूप बना। जिसका मुख्य ध्येय भारतवासियों को विभक्त करके एक समूह को तैयार करना, जो स्वामिभक्त हो, अंग्रेजी जानता हो, प्रशासन में कर्तव्य पालन जानता हो, और अन्य भारतीयों से उच्च माना जाने वाला व उनसे घृणा करने वाला हो। जब भारत-देश स्वतंत्र हुआ तो उसने प्रजातांत्रिक तरीके को अपने विकास का रास्ता बनाया। अतः उसको एक नवीन, पूर्ण भारतीय, और सशक्त शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता थी, जो वर्तमान भारतीय नागरिकों की आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक हो सके। "रास" (1937, पृ0 52) ने लिखा है जिस सामाजिक पर्यावरण मे मानव अपने व्यक्तित्व का विकास करता है, उससे पृथक रहने पर उसकी वैयक्तिता का कोई मूल्य नहीं रह जाता है, और उसका अस्तित्व निरर्थक हो जाता है। अतः नवीन भारत में भारतीय वैयक्तिता को जाग्रत करना उभारना और विकास के पथ पर लाना ही शिक्षा का ध्येय बनाया गया है।

प्रारम्भिक दौर में अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली में कुछ परिवर्तन लाकर हमने अपनी शिक्षा नीति निर्धारित की। लेकिन नागरिक विकास के अवसर न

पाकर हमने शिक्षा समितियाँ और आयोगों का विभिन्न स्तरों के लिये गठन किया । उनके द्वारा प्रदत्त सुझाव, आज नागरिक, समाज, और राष्ट्रीय आकांक्षाओं को पूर्ति करने वाले सिद्ध हो रहे हैं । "आज नवीन शिक्षा की धारणाओं से हमारी शिक्षा का ध्येय और अधिक परिवर्तनशील एवं क्रान्तिकारी हो रहा है । इसमे संस्थागत मूल्य और प्रत्यावर्तित मूल्यों का समागम किया गया है । जो नागरिकों को संतुलित, समायोजित और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास मे सहायक होता है ।" ।एस0पी0गुप्ता, 1968, पृ0-186। । अतः प्रश्न उठता है कि क्या अध्यापक, पाठ्यक्रम, और छात्र मिलकर इस ध्येय को प्राप्त कर पायेगें । इसके प्रति स्पष्ट विश्वास हैकि शिक्षित समाज ही शैक्षिक परिवर्तन ला सकेगा । क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही संसार के प्रत्येक देश मे परिवर्तन आया है, किसी कानून या हथियारों से नहीं । अतः शैक्षिक कार्यक्रम की उपादेयता शिक्षक के कंधों पर निर्भर करती है ।

"वास्तव मे शिक्षकों पर प्रत्येक राष्ट्र को गर्व करना चाहिये क्योंकि वे राष्ट्र के भविष्य ।नागरिकों। का निर्माण आवश्यकतानुसार करते है ।" ।शमसुद्दीन, 1965, पृ0-95। राष्ट्र का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि उसके अध्यापक क्या करते हैं," हमारा सम्पूर्ण मानव समाज और उनका जीवन अध्यापकों पर निर्भर करता है । इसीलिये यह कथन उपयुक्त लगता है, " शिक्षा प्रणाली की वृहत क्षमता और योजनायें पूर्ण रूप से अध्यापक की कुशलता और गुणों पर निर्भर करती है" ।महाजन, 1965, पृ0-20। । शिक्षक उन बच्चों के बीच क्रियाशील रहता है जो राष्ट्र के भविष्य बनाने वाले और नागरिक गुणों का विकास करने वाले होते हैं ।"भारत राष्ट्र का भाग्य इन्हीं लोगों की कक्षाओं मे निर्मित किया जा रहा है" । कोठारी, 1966, पृ0-1। ।

शिक्षा का प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च स्तर आदि रूपों मे प्रबन्ध किया गया है । इनमें प्राथमिक शिक्षा मुख्य और सार्वभौम है । हमारे संविधान के अनुच्छेद-29।1। भारत क्षेत्र मे रहने वाले नागरिकों के किसी भी वर्ग को, जिनकी अपनी विशेष भाषा, लिपि या संस्कृति है, उसे बनाये रखने का अधिकार प्रदान करता है । इस अनुच्छेद का उद्देश्य अल्प संख्यकों के हितों को सुरक्षित रखना है। यह अधिकार उन्हे अनुच्छेद-30 ।1। द्वारा प्रदान किया गया है । जो अल्प संख्यकों को अपनी रूचि के अनुसार शिक्षा संस्थाओं को स्थापित करने और उन पर प्रशासन करने का अधिकार प्रदान करता है । अनुच्छेद-29 ।2। के अनुसार राज्य द्वारा घोषित अथवा राज्य निधि से सहायता पाने वाली किसी शिक्षा संस्था मे प्रवेश पाने से किसी भी नागरिक को केवल धर्म, मूलवंश, जाति, भाषा अथवा इनमे से किसी भी आधार पर वंचित न किया जायेगा ।

भारतीय संविधान की धारा 36 से 51 तक मे राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक, प्रशासनिक, अंतर्राष्ट्रीय तथा शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं का वर्णन है । इसमे राज्य संविधान लागू होने के उपरान्त 10 वर्ष तक 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिये निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था का वर्णन किया गया है । आज हमारे संविधान को लागू हुये 38 वर्ष होने जा रहे हैं, फिर भी प्राथमिक शिक्षा मे निःशुल्कता और अनिवार्यता लागू है । इस प्रकार से यह स्पष्ट होता है कि राष्ट्र की शैक्षिक योजना मे अल्प संख्यक जातियाँ और जन-जातियों के लिये शिक्षा के समान अधिकार और सुविधायें प्रदान की गई हैं । इसके उपरान्त आज भी बुंदेलखण्ड प्रक्षेत्र की जन-जातियों मे साक्षरता का नितान्त अभाव पाया जाता है । यह कहना कठिन है कि

यह शिक्षा का अभाव समाज की अलगाव वादी नीति का दुष्परिणाम है, या शिक्षा नीति का सही संचालन न हो पाया है या उनमें शिक्षा के प्रति किसी भी प्रकार की रूचि का न होना है । इसमें, शोधकर्ता को जन-जातियों मे शैक्षिक दृष्टिकोण और अभिवृत्ति का अभाव ही प्रबल कारण मालूम होता है । इसीलिये जनजाति समूह के मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन विषय को शोध हेतु चुना गया है ।

उत्तर प्रदेश मे, शिक्षा प्रदत्त करने वाली सरकारी और प्राइवेट दोनों ही प्रकार की शिक्षा संस्थायें प्रचलित है । इनमें किण्डर गार्डन से लेकर कक्षा-5 तक शिक्षा दी जाती है । कक्षा-1 से लेकर कक्षा-5 तक दी जाने वाली शिक्षा को सार्वभौम अनिवार्य शिक्षा कहते हैं । संसार के सभी राष्ट्रों मे पूर्व प्राथमिक शिक्षा की आयु 3 वर्ष से 6 वर्ष तक मानी जाती है । 6 या 7 वर्ष से लेकर 14 वर्ष तक अनिवार्य शिक्षा मानी जाती है । इसका आरम्भ 19वीं शताब्दी के मध्य से हुआ । 1842 मे स्वीडन, 1852 संयुक्त-राज्य अमेरिका, 1860 नार्वे, 1870 इग्लैंड, 1905 हंगरी, पुर्तगाल तथा स्विटजरलैंड आदि देशों मे अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का विकास हुआ । परतंत्र भारत देश मे महाराजा बड़ौदा, श्री गोखले, कैप्टन विशदे, टी०सी०होम आदि ने इसके विकास हेतु प्राथमिक प्रयास किये थे । लेकिन 1917 मे "पटेल कानून" के द्वारा बम्बई म्यूनिसिपल क्षेत्र मे प्राथमिक शिक्षा कोसार्वभौम और अनिवार्य बनाया गया । इसके बाद का विस्तार निम्न तालिका से स्पष्ट होता है -

प्रान्त		अनिवार्यता लाने वाले वर्ष
बिहार, बंगाल, पंजाब, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा	-	1919
सी०पी०, मद्रास	-	1920
बम्बई, सम्पूर्ण प्रान्त	-	1923
आसाम, उत्तर प्रदेश ग्रामीण क्षेत्र	-	1926
बंगाल, काश्मीर	-	1930
मैसूर	-	1931

स्वतंत्र भारत मे प्राथमिक शिक्षा संविधान के अनुच्छेद-45 के अनुसार सार्वभौम अनिवार्य शिक्षा की घोषणा की गई। भारतीय संविधान (अनु०-45) लागू होने के 10 वर्ष के अन्दर-अन्दर ही 14 वर्ष आयु के बालक बालिकाओं की शिक्षा अनिवार्य कर दी जाय। भारतीय संविधान (अनु०-15) मे यह भी व्यवस्था की गई है कि अनिवार्य शिक्षा सबके लिये होगी, चाहे वह किसी भी जाति, रंग, धर्म, स्थान, लिंग तथा वर्ण का हो। इस प्रकार से प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक स्वरूप प्रदान करने के लिये सम्पूर्ण देश मे 6 से 11 वर्ष तक के बच्चों के लिये शिक्षा अनिवार्य कर दी गयी थी। 2 अक्टूबर 1959 को अनिवार्य शिक्षा का विकेन्द्रीकरण कर दिया गया। अब इसको जिला परिषदों के नियंत्रण मे दे दिया गया। इसी के आधार पर वर्तमान समय तक अनिवार्य शिक्षा निःशुल्क अनिवार्य, सार्वभौमिक प्रारूप में प्रचलित है। अतः देश मे संवैधानिक धाराओं, पंचवर्षीय योजनाओं, स्थानीय संस्थाओं के प्रयासों तथा देश मे विकसित जन-जागरण के कारण प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र मे पर्याप्त उन्नति हुई है। पंचवर्षीय योजनाओं मे इसके लिये और अधिक प्रयत्न करनेकी बात कही गयी है, (भारत सरकार, 1966, पृ०-578)।

इस प्रकार से झाँसी प्रक्षेत्र मे प्राथमिक शिक्षा प्रदत्त करने वाले विद्यालय जिलापरिषदों के अन्तर्गत चल रहे हैं और कुछ निजी प्रबन्धकों द्वारा संस्थायें क्रियाशील है । इनमे पूर्व प्राथमिक से लेकर कक्षा-5 तक शिक्षा दी जाती है । इनकी आयु सीमा 3 वर्ष से लेकर 11 वर्ष तक मानी गई है । आज हमारा प्रशासन, अनुशासन और शैक्षिक स्तर दिन प्रतिदिन गिरावट प्रदर्शित कर रहा है । इसका मुख्य कारण सामाजिक मूल्यों मे गिरावट, आवश्यकता मे वृद्धि, सरकारी नीतियाँ और जनता का दृष्टकोण आदि मे छिपा हुआ है । शोधकर्ता के अनुसार इनमें सामाजिक मूल्यों का प्रमुख महत्व है जो नागरिकों की प्राथमिक शिक्षा ह्रास मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है ।

बीसवी शताब्दी मे औद्योगिक विकास अपनी चरम सीमा को छू रहा है । प्रत्येक मानव समाज को उसने विमोहित कर लिया है । परिणाम स्वरूप, प्रत्येक राष्ट्र मे मानव विकास के लिये हितकर और अहितकर उद्योगों की बाढ़ सी आ रही है । आज का मानव, मानवीय सम्बन्धों को त्यागकर भौतिकता की ओर अग्रसर हो रहा है । आज के सभ्य और आधुनिक समाज के लोग अपना विकास भौतिक सम्पन्नता के निहित ही मानते हैं । अतः भारतीय जनजाति समाज, जिसे समाज विरोधी माना गया है, को आधुनिक समाज से भिन्न और नीचा क्यों माना जाता है ? भौतिक सुखों की होड में एक राष्ट्र दूसरों को आधुनिक ।युद्ध। हथियार बेचता एवं खरीदता है, तो ये लोग कुछ कार्य करके, अपना पेट भरते हैं, तो क्या यह गलत है ? गलत सिर्फ इसलिये है कि उनके मूल्यों, दृष्टिकोणों मे वह उच्चता नही है जो पाश्चात्य समाज मे देखने को मिलती है । वे उतने ताकतवर भी नही जितने अन्य मानव समाज है । साथ ही साथ उन्होने वैदिक समाज की नैतिकता को भी त्याग

दिया है, जिससे उनको निर्देशन प्राप्त होता था । अतः आज शिक्षा के द्वारा उनके मूल्यों का अध्ययन करके शिक्षा का सही अर्थ- "स्वयं को पहचानो" और "मानव हित मे जियो" को सिखायेगें । इसके द्वारा उनको समाज और प्रशासन दोनों मे सम्मान प्राप्त हो सकेगा ।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । वह अन्तिम क्षणों तक समाज मे रहना चाहता है । मनुष्य उसी समय अधिक प्रसन्न दिखाई देता है, जबकि वह स्वयं की रूचि, पसन्द, और अभिव्यक्तियों वाले समूह को प्राप्त कर लेता है । समाजीकरण की प्रवृत्ति इसकी द्योतक है, कि व्यक्ति अपने जीवन को सरस पूर्ण बनाने के लिए कुछ व्यक्तियों की आवश्यकताओं को पूर्ण करता है । वह उस समूह का एक अंग बन जाता है तथा प्रायः मान मर्यादा, रीति-रिवाज और वाह्य तथा आन्तरिक नियमों का पालन करने लगता है । वह अपने को समाज के पर्यावरण के साथ समायोजित करने का प्रयास करता है । इस समायोजन का आधार शिक्षा है जो समाज नियंत्रित होती है । शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य तभी पूरा होता है जबकि बालक विद्यालय रूपी समाज के साथ तादात्म स्थापित कर लें । विद्यालय तो समाज का लघु रूप होता है और उसमे बच्चों को उनकी पूर्णता का ध्यान रखकर ही शिक्षा दी जानी चाहिये । इस प्रकार से वह अपनी आवश्यकता पूर्ति हेतु पर्यावरण के साथ संघर्ष करना सीख जाता है, और उनमे से सही मूल्यों का चुनाव करके जीवन को सफलता की ओर अग्रसर करता है । अतः शोधकर्ता के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि जनजातिय समूह के मूल्यों का अध्ययन करके उनके शिक्षा विकास मे शैक्षिक अभिवृत्ति को विकसित किया जाय ताकिउनमें शिक्षा का प्रसार सामान्य गति से हो ।

2-समस्या का आभास-

भारत देश एक समाजवादी प्रजातांत्रिक राष्ट्र है । इसका उद्देश्य अपने नागरिकों को शिक्षा के द्वारा मानवीय गुणों से परिपूरित करना होता है । इस प्रकार से वे अपने समाज के साथ मधुर सम्बंध स्थापित करते हैं । यह सब उनकी शिक्षा या शैक्षिक अभिवृत्ति पर निर्भर करता है । भारतीय समाज में जाति व्यवस्था का अपना अलग स्थान है । जाति व्यवस्था धार्मिक विश्वासों पर आधारित एक ऐसे आनुवंशिक संस्तरण , अंतर्विवाही तथा व्यवसायिक समूह की ओर संकेत करती है, जिनमें अनेक कर्मकाण्डों तथा संस्कारों के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को पूर्व निर्धारित करके इनमें किसी प्रकार के भी परिवर्तन पर भी नियंत्रण लगा दिया गया है । ।जो0डी0 माइकेल , पृ0 182 ।

झांसी मण्डल में व्याप्त नट कबूतरे, साहरिया और खंगार आदि समूह अपने-अपने वर्ग की विशिष्टतायें धारण किये हुए हैं । सामाजिक विद्वानों ने नट कबूतरों को घूमने -फिरने वाली , साहरिया को परिवर्तनशील और खंगार को कृषि कार्य करने वाली जनजातियों के रूप में माना है । ।रसल और हीरालाल , पृ0443 ।अतिरिक्त जिलाधिकारी ।विकास।,झांसी जनपद द्वारा 28-12-76 को किया गया एक सर्वेक्षण रिपोर्ट का सारांश प्रस्तुत है:-

नट कबूतरे अधिकतर असामाजिक कार्यों में लगे हुये हैं । उनको यदि अन्य कार्यों की ओर मोड़ा जाय तो अरुचि दिखलाते हैं ।इनके परिवार शिक्षा के प्रसार से अनभिज्ञ हैं । चोरी, शराब बनाना आदि कुत्यों के कारण इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर छिपना पड़ता है । इनका पारिवारिक

जीवन अस्थिर, और अनियमित होता है । इसीलिये इनको घूमने फिरने वाली जनजाति माना गया है । साक्षात्कार से स्पष्ट हुआ कि चोरी करने, शराब बनाने आदि से इनके परिवार का भरण पोषण होता है । इनके परिवारों में यह कार्य निर्मुक्त रूप से होते आये हैं। अतः इनको ये सरल, निपरिश्रम से लगते हैं, साथ ही कम समय और मेहनत मे अधिक धन प्राप्त हो जाता है। कुछ लोगों का कहना है कि पुलिस हमें बेमतलब परेशान करती है, अतः हम जानबूझकर असामाजिक कृत्यों को करते हैं ।

सहरिया जनजाति स्वयं में परिवर्तनशील है । ये कभी भी एक प्रकार के व्यवसाय को स्थायी बनाकर कार्य नही करते हैं । विद्वानों ने शोधकर्ताओं के आधार पर, इनको राजस्थान से बुंदेलखंड मे पलायन माना है । ये बहुत ही गरीब होते हैं । इनके धंधों मे लकड़ी काटना, वन सम्पदा एकत्रित करना, कृषि कार्यों मे मदद देना आदि पाया जाता है । ये लोग अपने व्यवसाय मे हमेशा परिवर्तन करते रहते हैं, यही कारण है कि इनकी भौतिक उन्नति नहीं हो पाती है। इनमें शिक्षा का प्रसार बिल्कुल नहीं है । अतः स्पष्ट होता है कि शिक्षा का अभाव ही इनके विकास में बाधक है ।

आज खंगारों का दैनिक जीवन कृषि कार्य से जुड़ा हुआ है । शोधकर्ता ने अपने सर्वेक्षण में पाया कि इन्होने अपने को स्थायित्व प्रदान करने के लिए, और अपनी आर्थिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए अन्य कार्यों की अपेक्षा कृषि कार्य को व्यवसाय के रूप मे ग्रहण किया है । एक कथानक के अनुसार आज के सम्पूर्ण बुंदेलखण्डपर खंगार राजाओं का अधिकार था । ये लोग यहाँ के राजा थे और कुशलता पूर्वक शासन चलाते थे । यह बात बुन्देले राजपूतों को हमेशा खटकती रहती थी । एक बार उनको मौका मिला और उन्होने

सम्पूर्ण खंगार राज परिवार को समाप्त करके राजसिंहासन को हथिया लिया। इसके पश्चात् इन्होंने खंगारों को समाज विहीन गरीबी में और हरिजन समाज के रूप में जीवित रहने को बाध्य कर दिया । इसी परिणाम स्वरूप खंगार लोग आज दिहाती क्षेत्रों में प्राप्त होते हैं । उन्होंने समाज में उच्च स्थान प्राप्त करने के लिए आर्थिक शक्ति को चुना और धन सम्पदा में वृद्धि करने लगे । फिर भी , समाज में इनका स्थान अछूतों के रूप में विद्यमान है । ये शिक्षा के क्षेत्र में स्वयं को स्थापित करने में प्रयत्नशील है ।

उपर्युक्त तीनों समाजों का सर्वेक्षण करने पर शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि शिक्षा का अभाव ही इनके विकास में बाधक है । भारतीय संविधान के अनुच्छेद -30 में जनजातियों के शिक्षा प्रसार के अधिकार का वर्णन किया गया है । शिक्षा के द्वारा इनका पिछड़ापन , नागरिक गुणों का विकास , व्यवसायिक सम्पन्नता , और राष्ट्रीय चेतना में जाग्रति आदि गुणों का विकास किया जा सकता है । इसके साथ ही इनके अविकसित व्यक्तित्व और सामाजिक धारणा में परिवर्तन करके इनको सभ्य समाज के समान स्थापित किया जा सकता है । शिक्षा का प्रारूप ज्ञानवृद्धि के साथ-साथ सुधारात्मक हो ताकि ये सभी के साथ समायोजन स्थापित कर सकें । इसी के साथ वे अपने स्वभाव की असामाजिकता और अस्थायित्वता को दूर करके विनयशीलता , धैर्य, सहकारिता , परोपकारिता , दया, कर्तव्यनिष्ठा और देश प्रेम आदि गुणों को अपने व्यक्तित्व में धारण कर सकते हैं ।

शोध कर्ता ने उपर्युक्त उद्देश्य को ध्यान में रखकर बुन्देलखंड की जनजातियों के मूल्यों और उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति को शोध कार्य हेतु चुना , ताकि उनमें साक्षरता प्रसार , नागरिक गुणों का विकास , व्यवसायिक

उन्नति और राष्ट्रीय चेतना का पूर्ण विकास हो सके ।

3.3 समस्या की आवश्यकता

झाँसी मण्डल मे फैले हुये नट कबूतरे, सहारिया और बंगार आदि का शिक्षा के क्षेत्र मे कोई योगदान नही रहा है । आज इनमे शिक्षा का प्रसार नगण्य है । इनको उत्तर प्रदेश जातीय सूची मे अछूत जनजाति के रूप मे माना गया है । इनकी वैयक्तिक और सामाजिक दशा को उन्नतिशील बनाने के लिए शिक्षा को परमावश्यक माना गया है । इसलिये शोधकर्ता ने इनके मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति को अध्ययन की आवश्यकता महसूस की है ।

प्रस्तुत शोध कार्य की प्रथम आवश्यकता शिक्षा विभाग के लिए है । उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग के सतत प्रयत्नों के बावजूद भी इनमें शिक्षा का प्रसार बहुत ही कम है । प्रारम्भिक शिक्षा की अनिवार्यता को मानकर इनमें शिक्षा प्रसार के साधन जुटाये जा रहे हैं, लेकिन फल निषेधात्मक ही रहा । इनके निषेधात्मक दृष्टिकोण का कारण क्या है? जानने के लिए प्रस्तुत शोध कार्य को सम्पन्न किया जा रहा है । इससे शिक्षा विभाग को एक नया कार्यक्रम बनाने का मार्गदर्शन प्राप्त होगा, जो जनजातियों के समूहों के अन्तर्गत व्याप्त शैक्षिक अवहेलना को समाप्त करने मे सहायक होगा ।

द्वितीय आवश्यकता के रूप मे "हरिजन कल्याण विभाग" को लिया जा सकता है । इस विभाग का कार्य हरिजनों मे व्याप्त बुराइयों को दूर करके जीवन को सामान्य, सरल, और उन्नतिशील बनाना है । प्रस्तुत शोध कार्य, इनमें फैली सामाजिक बुराइयाँ, असमानता, निम्नस्तरीय दृष्टिकोण और पारंपरिक व्यवसाय को पुरानी नीति से ही करना आदि मे परिवर्तन लाना बतलायेगा । इनमें शिक्षा का प्रसार कैसे हो ? इनके आर्थिक दृष्टिकोण

में कैसे परिवर्तन लाया जाय ? इसकी सामाजिक और धार्मिक मापदण्डों में कैसे परिवर्तन हो ताकि इनमे भी आधुनिकता का विकास हो । इनमें राजनैतिक चेतनता को जागृत करके राष्ट्र को सफल और समृद्धिशाली बनाने के उपायों को फैलाना । इस प्रकार से यह भारतीय समाज से विलग न होकर राष्ट्रीय एकता के बंधन मे बँध जायेगें ।

प्रस्तुत शोधकार्य की अन्य आवश्यकता शिक्षकों के लिये या शिक्षा वेत्ताओं के लिये भी है । शिक्षकों के सामने पाठ्य चयन, शिक्षण विधियाँ, शिक्षालय, अनुशासन, पाठ्य सामिग्री आदि की समस्यायें आती रहती हैं । इनमें धन और नीति दोनों का पूर्ण सहयोग चाहिये । धन की व्यवस्था सरकार स्वयं कर सकती है, लेकिन सही शिक्षा नीति का बनाना शोध कार्यों पर ही निर्भर करता है । इनके लिये शिक्षा में रूझान पैदा करना, पाठ्यक्रम मे मूल्यों को निहित करना, उपयुक्त शिक्षण विधियों का बनाना, शिक्षा को रोजगार से जोड़ना आदि शैक्षिक समस्याओं पर सामयिक उपाय शिक्षाशास्त्री ही खोजता है । अतः प्रस्तुत शोध कार्य अध्यापकों को उपर्युक्त समस्याओं के समाधान मे पूर्ण एवं उपयुक्त सहायता प्रदान करेगा ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय जन-जागरण मे महत्वपूर्ण योगदान सामाजिक सुधार संस्थाओं का रहा है । ये संस्थायें सामाजिक बुराइयों, धार्मिक आडम्बरों, व्यवसायिक अवरोधों और दैनिक जीवन की असफलताओं का निराकरण करके जीवन को महत्वपूर्ण बनाने की सलाह देते हैं । आज देश मे पिछड़े और अछूत लोगों का धर्म परिवर्तन धन के लालच मे किया जा रहा है ।इसको रोकने मे भी ये संस्थायें कारगर साबित हो रही है । अतः प्रस्तुत शोध कार्य इनमे नवीन जीवन शक्ति को भरकर व्यक्तिगत, सामाजिक

और राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने के लिये भी उपयोगी है ।

प्रस्तुत शोधकार्य की एक अन्य उपयोगिता संरक्षकों और माता-पिता के लिये भी है । हमारा विचार है कि माता-पिता को दिया जाने वाला प्रशिक्षण बच्चों की सफलता और विकास में सहायक होता है । बच्चे की निर्भरता माता-पिता पर होती है । माता-पिता ही उनकी दिनचर्या कार्य-कलाप, व्यवहार, सामाजिक एवं राजनैतिक भावनाओं का निश्चय करते हैं । अतः हमें इनको प्रेरित और उत्साहित करना चाहिये ; ताकि बच्चों का सही शैक्षिक विकास हो सके, शोधकर्ता के लिये आवश्यक हो जाता है ।

शोध समस्या की एक अन्य उपयोगिता निर्देशन कर्ताओं के लिये भी है । प्रत्येक जिले मे निर्देशन मण्डलों की स्थापना हो चुकी है । इनका कार्य शिक्षा, व्यवसाय, सामाजिकउत्थान मे मदद करना होता है । हरिजन वर्ग मे जनजातियाँ सबसे अधिक असभ्य और पिछड़ी हुई हैं । इनके लिये उपयुक्त मार्ग दर्शन की व्यवस्था तभी की जा सकती है, जब इनके बारे मे पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो । अतः इनके सभी मूल्यों का अध्ययन करके सामाजिक स्तर का मूल्यांकन किया जायेगा, फिर उसके आधार पर शैक्षिक मनोवृत्ति का आँकलन होगा, जिससे उनमें शैक्षिक अभिरुचि को जाग्रत किया जा सके । इसी प्रकार से इनको आधुनिक समाज के साथ जोड़ा जा सकता है ।

समाजशास्त्र के सिद्धान्तों को समझने के लिए यह अध्ययन महत्वपूर्ण होगा । हम जिस समाज के सदस्य होते हैं या रहते हैं, उसी में हमारी रुचियों का विकास एवं पूर्ति होती है । समाज के रीति-रिवाज और प्रथायें नवयुवकों के दृष्टिकोण और रुचियों को प्रभावित करते हैं । आज ये जनजातियाँ दो प्रकार के सामाजिक पर्यावरणों मे रहती हैं । इनमे से एक

छात्र शहरी जीवन स्तर को ग्रहण करते हैं और शहरी छात्र नवयुवक पाश्चात्य जीवन स्तर की ओर अग्रसर हो रहे हैं । प्रश्न उठता है कि इनमे से कौन सी संस्कृति या सभ्यता हमारे नागरिकों के लिए लाभदायक है ? जिससे हम अपना समान विकास करके जनजातियों को देश का सभ्य नागरिक बना सकें । अतः शिक्षा ही एक मात्र साधन है जो सम्पूर्ण जनजाति मे विकास के अवसर प्रस्तुत कर सकती है । शिक्षा के द्वारा संस्कृति मे उन्नति, उपसंस्कृति मे परिवर्तन, और व्यवहार तरीकों मे सुधार आसानी से लाया जा सकता है । इस प्रकार से हमारे जनजातीय नवयुवक अपने जीवन को सभ्य नागरिक की तरह से व्यतीत करके राष्ट्र को सहयोग प्रदान कर सकेगें ।

" रंग एवं विदर्ती" । 1956, पृ0-72 । ने शिक्षा के प्रतिशील कार्य पर अधिक बल दिया है । शिक्षा का प्रगतिशील रूप अध्यापक के द्वारा सम्पन्न होता है । अध्यापक समाज के रीति-रिवाज, प्रथाओं, और मूल्यों को ही प्रभावित नही करता है, बल्कि वह समाज को विकास के पथ पर लाने के लिये नवीन मूल्यों का निर्माण भी करता है । अतः सामाजिक पर्यावरण के प्रभाव को "फ्लेमिंग" । 1957, पृ0-57 । ने स्पष्ट किया है, "समाज विशेष मे रहने के स्थान का प्रभाव विभिन्न रूपों मे प्रगट होता है । इसमें मकानों की बनावट उनके शारीरिक परिस्थितियों एवं दशाओं को प्रगट करते हैं । जहाँ पर घनी आबादी होती है वहाँ पर जगह की कमी होती है, एकान्त का अभाव होता है, और अपनी सम्पदा का विस्तार करने का अवसर नहीं रहता है । अतः जमीन, हवा, पानी आदि आवश्यकताओं के लिये व्यक्ति मोहताज हो जाता है । ऐसे समाज के बच्चों का व्यवहार विद्यालय मे निश्चित ही प्रभावित होता है । इस प्रकार से सुशिक्षा और संस्था मे स्वयं ही इनको

इनकी कमियों के प्रति आगाह करके दूर करने की कोशिश या उपाय बतलाते हैं ।"

इस प्रकार से यह आशा की जाती है कि प्रस्तुत अध्ययन की उपादेयता शिक्षा शास्त्रियों, सुधारकर्ताओं, पाठ्य समितियों, निर्देशन कर्ताओं, हरिजन विभाग, माता-पिता और लेखकों आदि के लिये है । संक्षेप में, इसकी उपयोगिता उन सभी के लिये होगी, जो भारतीय समाज के सही विकास और वृध्दि की कामना रखते हैं चाहे वह जाग्रत समाज हो, या सुसुप्त समाज ।

4- समस्या का स्पष्टीकरण -

शोधकार्य हेतु शोध विषय "बुंदेलखण्ड प्रक्षेत्र के जनजातीय समूहों के मूल्यों तथा शैक्षिक अभिवृत्तियों का सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में अध्ययन" का चुनाव शोध कर्ता ने किया है ।

वर्तमान शोध का क्षेत्र सिर्फ झाँसी प्रक्षेत्र की सीमा में निवास करने वाले जनजातीय समूहों । नट, कबूतरा, साहरिया, और कँगार । तक सीमित है । इसमें शोधकर्ता जनजातीय समूहों, मूल्यों, शैक्षिक अभिवृत्ति, और सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा आदि पर अलग-अलग से प्रकाश डालेगा । ये लोग स्वयं को साक्षर क्यों नहीं बना पाये हैं ? इसके उत्तर के लिये उनके जीवन मूल्यों के अन्तर्गत शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया जायेगा । यही प्रस्तुत शोध का केन्द्रीय मूल्य है जो समस्त अध्ययन पर छाया हुआ है । हम निम्न प्रकार से समस्या में प्रयुक्त विभिन्न पदों की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं :-

1- मूल्य -

प्रत्येक क्रिया एक निश्चित मानदण्ड के अन्तर्गत घटित होती है । विभिन्न प्रकार के मानदण्डों में से एक मानदण्ड प्रमुख होता है । इसी प्रभावशाली मानदण्ड का अभिप्राय: व्यक्ति के केन्द्रीय मूल्य से लगाया जाता

है । " मूल्य " शब्द स्वयं में बड़ा ही व्यापक और बहुअर्थी है । इसका प्रयोग वैज्ञानिक, धार्मिक, कला, नैतिकता, दार्शनिकता आदि बहुअर्थी और जटिलता के संदर्भ मे किया जाता है ।

मूल्यों के स्वरूप के संदर्भ मे भारतीय दार्शनिक संगठनों के अपने-अपने मत एवं राय है । "चारवाक" दर्शन "हीडोनिज्म" और इपीक्यूरिज्म" में विश्वास करता है । "हीडोनिज्म" का विश्वास उन्ही कार्यों और क्रियाओं को सम्पादित करना है जिनसे उन्हे आनन्द ही आनन्द प्राप्त होता है । "इपीक्यूरिज्म" का अभिप्राय पूर्ण-रूपेण इन्द्रीय सुखों मे खोजाना है । इन्होने संसार के प्रत्येक कार्य को विषय वासना और भोग के निमित्त माना है । अतः "चारवाक" के अनुसार "सुख या प्रसन्नता" ही मूल्य होता है । "जैन" सम्प्रदाय के दार्शनिक "जीवन मुक्ति" और वैराग्य" के भाव मे विचरित रहते हैं, ताकि वे अपनी इन्द्रियों पर नियंत्रण स्थापित करके अस्थायी संसार से मुक्ति पा सकें । मानव मात्र की सेवा करना और भौतिकता से छुटकारा पाना ही "बौद्ध दार्शनिकों" का केन्द्रीय मूल्य माना जाता है । अतः प्रत्येक मतावलम्बी ने अपने-अपने दृष्टिकोण से मूल्य सिद्धान्त को स्पष्ट करने की कोशिश की है ।रेड्डी, 1979 । ।

"सांख्य दार्शनिकों" ने मूल्यों के विकासवादी प्रत्यय को माना है । वे मानव मात्र के विवेक, ज्ञान, जीवमुक्ति आदि को आत्मा के लिये आवश्यक मानते हैं । " वैसासिका" ने परमाणु विद्या के संदर्भ मे उपयुक्त ज्ञान को मूल्य के रूप मे स्थापित किया है । जबकि "योगदर्शन" ने अनुभूति के अष्ट पदों का मूल्यों के रूप मे वर्णन किया है । योगशास्त्र मे "चित्तवृत्ति" से ही मुक्ति के द्वारका खुलना बताया गया है । इसके द्वारा मानव स्वयं से परिचय प्राप्त

करता है, साथ ही मानसिक सुधार लाता है । अतः चित्त की एकाग्रता ही मूल्य बन जाती है । "मीमांसा वेद" मानव को उस स्थिति या दशा का बोध कराते हैं जहाँ पर उसको सुख और दुखः की अनुभूति नही होती है । वेदों मे यह स्पष्ट रूप से वर्णित है कि "स्मृतियों" के द्वारा प्राप्त ज्ञान से ही अन्तिम सुख प्राप्त किया जा सकता है । अतः उच्च सुखानुभूति ही मूल्य कहलाता है । "ब्रह्म" के साथ "आत्मा" को जोडना या "आत्मा" को "परमात्मा" मे विलीन कर देना ही भव बधँन से मुक्ति होता है । इस प्रकार से वेदान्तों में ज्ञान को प्राप्त करना और अज्ञान को छितराना या समाप्त करना ही मूल्य का द्योतक माना जाता है । मूल्य का अभिप्राय या रूप आत्मानुशासन, आत्मा की पूर्णता और आत्म तृप्ति के समरूप माना जाता है । वास्तविकता के अनुसार भारतीय विचार संस्थाओं के द्वारा मूल्यों के स्वरूप का वर्णन भिन्नता लिये हुये है । इन विचारकों मे भिन्नता होते हुये भी एक आदि सत्य प्रतीत होता है कि मूल्य अपने मे पूँर्णता लिये हुये हैं, वह आत्म खोज का साधन भी है, और आत्मोन्नति का तरीका भी । अतः मूल्य का उपयोग उच्चतम मुक्ति हेतु किया जाता है जो मानव को मानसिक उन्नति की ओर अग्रसर करती है ।

व्यवहारिक विज्ञान के अन्तर्गत मूल्यों के सम्पूर्ण पक्ष या विचार का विकास किया गया है । यह वास्तविक ज्ञान के विषयगत, वाहयगत या आदर्श स्वरूप को स्पष्ट करते हैं । वास्तविक ज्ञान स्वयं मे पूर्ण और संगठित होता है । इस प्रकार से व्यवहारिक विज्ञान ने मूल्यों को मानव के विभिन्न पक्षों के रूप मे समझा है जैसे शारीरिक, प्राणसम्बन्धी, मानसिक, और आध्यात्मिक। पूँर्ण या सम्पूर्ण सिद्धान्त है विकास के विभिन्न आयामों से जुडा हुआ है । शिक्षा और मूल्य ने इस परिस्थिति मे एक दुर्गम रास्ता खोजा है ।

शिक्षा एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया मानी जाती है । जबकि मूल्यों को मानव अस्तित्व के मनोवैज्ञानिक विकास और उन्नति का मानक माना जाता है । पूर्ण शिक्षा प्रणाली समाज के अन्तर्गत प्रचलित मूल्यों में परिवर्तन करती है, और पूर्ण मूल्यों के द्वारा पूर्ण शिक्षा प्रणाली की प्रक्रिया को विकसित बनाने के लिये साधन प्रदान किये जाते हैं; ताकि वह संगठित और उन्नतिशील प्रक्रिया बन सके ।

आँग्ल भाषा की "वैबस्टर न्यू कालिजिएट डिक्शनरी, (1961, पृ0-940) में मूल्यों का वर्णन, श्रेष्ठता के लिए गुण या तथ्य जो लाभकारी या आशातीत होता है" के रूप मे प्रस्तुत किया गया है । अतः स्पष्ट होता है कि मूल्यों के तहत व्यतीत होने वाला मानवीय जीवन सुन्दर और श्रेष्ठ होता है ।

"रैशर" (1969, पृ0-1) महोदय के अनुसार,"मूल्य शब्द का प्रयोग परिस्थितिवश स्वतंत्र अर्थ मे और परिवर्तित अर्थ में किया गया है"। दार्शनिक और समाजशास्त्री मूल्य, प्रश्नों से सम्बन्धित है, "वह आगे बढ़ता या चलता है" । इस प्रकार से मूल्य की परिभाषा को अधिक सारगर्भित बनाया जाए ताकि बौद्धिकता और वैज्ञानिक संदर्भों में उसकी प्रकृति निश्चित की जा सके । यह तभी सम्भव हो सकता है जब सभी मतावलम्बी एक स्थान पर सहमति प्रगट करें, अन्यथा सभी सकारात्मक उपाय या प्रयास असफल सिद्ध हो जाते हैं । आज तक मूल्यों की परिभाषा को सारगर्भित बनाने के लिये कोई भी प्रयास सफल नही हो पाया है, अतः स्वयं को ही एकता स्थापित करने के लिये पहल करनी होगी ।

वस्तुतः मूल्यों के स्वरूप मे भिन्नता, या स्वतंत्र अर्थों का प्रयोग करने के संदर्भ मे लेखकों और शोधकों ने कुछ उपयुक्त परिभाषाओं का वर्णन किया है । जैसा " कुर्ट बैर" (1969) ने सम्पादित किया है ।

" एक वस्तु मूल्य या मूल्यवान तब होती है, जब लोग उसके प्रति ऐसा व्यवहार करते हैं, ताकि उसे वे धारण अथवा उसके अधिकार में वृद्धि कर सकें" । ।जार्ज लुन्डवर्ग।

" कोई भी महत्त्व देने योग्य ।इच्छित। वस्तु "मूल्य" है" ।
। ई0डब्लू0बर्गेस ।

" प्रेरणा के अभिपालक मूल्य - वस्तु, गुण, या दशा जो अभिप्रेरणा को संतुष्ट करे" । ।लापियरे।

" किसी भी आवश्यकता का कोई भी लक्ष्य मूल्य है" ।।बेकर।

" मूल्य एक अभीष्ट अथवा ऐसी वस्तु है, जिसकी कोई, किसी भी समय परिचालन निमित्त इच्छा करता हैया चुनता है और जिसे प्रत्यक्षीं वाँछनीय कहता है" । ।स्टुआर्ट सी0 डोड।

" मूल्य वे नियामक मानदण्ड होते हैं, जिनके द्वारा मनुष्य अपने सामने उपस्थित कार्य विकल्पों में से एक को चुनने को बाध्य होता है" ।
। जे0 फिलिबक ।

" एल्बर्ट और क्लूकोहन ।।1957। ने एक लम्बे अरसे तक मूल्यों का अध्ययन किया ताकि इनके स्वरूप से सम्बन्धित विभिन्न विवादों को समाप्त करके एक ऐसी परिभाषा को प्रस्तुत करें, जो सर्व सामान्य को स्वीकार हो यानी सभी उससे सहमत हों ।

" मूल्य" शब्द का अर्थ, व्याख्या, दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न रूपों मे प्रस्तुत की है । उनमे से कुछ के विचार प्रस्तुत हैं -

"जुंग" । 1923 । ने मूल्यों को व्यक्ति की "तीव्रता का मापक" माना है जो उसकी मनोशक्ति या क्षमता का प्रतिनिधित्व व्यक्तित्व तत्वों के गठन द्वारा होता है । उनका विचार है कि जब एक व्यक्ति किसी मुख्य भाव या विचार के प्रति उच्च मूल्य स्थापित करता है, तो एक निश्चित विचारात्मक शक्ति उसके प्रति उसके प्रति, क्रिया करने को प्रेरित करती है ।

"आलपोर्ट" । 1931 । एवं उनके सहयोगियों ने मूल्यों को मानवीय अभिरूचियों के प्रति स्थापित श्रेष्ठता, या व्यक्तित्व में प्रभावशाली अभिरूचि के अर्थ मे प्रयोग किया है । वस्तुतः देखा जाय तो प्रभावशाली अभिरूचि मानव व्यवहार को प्रेरित, निर्देशित और उत्साहित करने मे प्रमुख भूमिका अदा करतो है । अतः प्रभावशाली अभिरूचि के संदर्भ मे मूल्य का प्रयोग हो सकता है । "मरे" । 1951 । ने मूल्यों को मानव आवश्यकताओं के साथ सम्बन्धित माना है ताकि वह अपनी बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन सही रूप मे कर सकें, न कि खोज के एक अलग आयाम के रूप में । आवश्यकता के द्वारा मानव व्यवहार में मूल्यों का प्रगटीकरण होता है, और प्रगट हुई अवस्था धीरे-धीरे अवसान होती जाती है । उनके विचार से मूल्यों को प्रेरकों के किसी भी रूप या आयाम के प्रति सम्बन्धित समझना चाहिये ।

" मूल्य सिर्फ तीव्र प्रतिष्ठा से ही नही आँका जाता है, बल्कि वह प्रतिष्ठा जो मानव समाज ।नैतिकाता। द्वारा सही सिद्ध किया जाय, या तर्क के द्वारा विवेचित हो, या सौन्दर्यात्मक निर्णयों के द्वारा निष्कर्षित हो" । क्लु कोहन, 1952, पृ0-396 । ।

"पेरी" । 1954, पृ0-2-3 । महोदय ने एक वस्तु और प्रत्येक वस्तु मूल्य रखती है, या अपने उदभव से ही मूल्यवान होती है ।

है, उसका मूल्य स्वत: ही स्थापित होजाता है यानी वह मूल्यवान मानी जाती है "। "मौरिस" । 1956, पृ0 9-12 । महोदय ने मूल्यों को "अधिक प्रतिष्ठा-वान व्यवहार का विज्ञान" के रूप में परिभाषित किया है । आपने मूल्यों के संदर्भों में अधिक उपयुक्त धारणांयें प्रस्तुत की है । प्रथमत: आपने " क्रियात्मक मूल्यों" । आपरेटिव वैल्यूज । पर प्रकाश डाला है । इसमें मानव शरीर एक वस्तु के स्थान पर दूसरी वस्तु को महत्व देता है, जो पूर्ण रूपेण उसके व्यवहार पर निर्भर करता है । ये सब कार्य क्रियात्मक मूल्यों के अन्तर्गत माने गये हैं । द्वितीय स्थान पर आपने "विचारात्मक मूल्यों" । कन्सीव्ड वैल्यूज । को माना है । इसके अन्तर्गत प्रतीकात्मक वस्तु के रूप मे व्यक्ति को प्रमुखता दी जाती है । जब हम कहते है कि "ईमानदारी ही उत्तम विचार" है, तो इसका अभिप्राय विचारात्मक मूल्य द्वारा ही निश्चित किया गया है । अत: हम ईमानदारी । प्रतीकात्मक वस्तु । को व्यक्ति का मूल्य मान लेते हैं । तृतीय स्थान पर आपने "वाहयगत मूल्य" । आब्जेक्टिव वैल्यूज । माने हैं । इसमे व्यक्ति वाहयगत रूप से अपनी बात, क्रिया, राय आदि को महत्व देता है चाहे वह क्रियात्मक हो, या विचारात्मक या अभिरूचि पूर्ण हो, वह चिन्तित नही होता है ।

मूल्यों को मानव व्यवहार को निर्देशित करने वाली संस्था के रूप मे भी जाना जाता है । इसके अन्तर्गत मानव की इच्छानुसार व्यवहार को परिवर्तित या निश्चित किया जाता है । इसीलिए "बोरोनोस्की" ।1959,पृ0-62। ने लिखा है, " मूल्य नैतिकता या चरित्र की यांत्रिक नियमावली नही है और न यह गुणों का लेखा जोखा मात्र है । मूल्य एक विचार या भाव है जो हमारे समाज मे सामूहिक रूप से व्यवहार के प्रतिरूपों मे पाया जाता है" ।

" रोकीज" ।1968, पृ0-16। ने मूल्यों को व्यक्ति की क्रियाओं और व्यवहारों को निर्देशित करने वाला माना है । इन्ही के द्वारा व्यक्ति की अभिवृत्तियों का विकास किसी वस्तु या स्थिति के प्रति होता है, ताकि एक व्यक्ति अपने कार्यों और नैतिक निर्णयों की तुलना अन्य व्यक्तियों के साथ कर सके । अत: "रोकीज" के अनुसार "मूल्य एक मानक है जो अन्य व्यक्तियों के मूल्यों, अभिवृत्तियों और कार्यों को एक सीमा तकप्रभावित करता है" ।

"कुर्ट बैर" ।1962, पृ0-40। के अनुसार मूल्य वे प्रयत्न या प्रयास हैं जिनके द्वारा व्यक्ति निश्चित व्यवहार प्रदर्शित करता है और जिसका मूल्यांकन निरीक्षण के द्वारा किया जा सकता है । इनको प्रवित्तियां भी माना जा सकता है ताकि व्यक्ति अपने साधन, समय, शक्ति और धन का प्रयोग निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति में कर सके । इसी प्रकार से "विलियम्स" ।1969,पृ0-333। ने मूल्यों का अभिप्राय "धारणाओं की वाँछित दशाओं से लगाया है जिनका प्रयोग चयनित नैतिकता की पसंद, या व्यक्ति के वास्तविक व्यवहार के मूल्यांकन हेतु किया जाता है " ।

विगत पृष्ठों मे वर्णित विभिन्न परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि समाजशास्त्री या समाज मनोवैज्ञानिक मूल्यों की किसी एक परिभाषा पर सहमत नहीं हैं । वे सिर्फ एक बात से सहमत हैं कि मूल्य प्रत्येक व्यक्ति के व्यवहार का अंतर्भाग होते हैं या अन्य शब्दों मे मूल्य मानव व्यवहार को निर्देशित करने वाला तत्व होता है । इस प्रकार से मानव व्यवहार की व्याख्या में मूल्यों की क्या भूमिका होती है ? विषय बहुत ही रुचिमय है । आज के समाज मे मानवीय व्यवहार का आधार बहुत से तत्वों पर निर्भर करता है । इसीलिये मानव के सभी व्यवहारिक पक्षों का मापन करने के लिये सैद्धांतिक-

आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्रों को मूल्यों के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है । इससे बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र की जनजातीय शैक्षिक समस्या का समाधान हो सकेगा ।

वर्तमान शोध कार्य का विकास "रोकीज" द्वारा प्रस्तुत मूल्यों की परिभाषा के आधार पर किया जा रहा है, जिससे मूल्यों का प्रयोग, जनजातीय समूह को क्रिया को निर्देशित करने मे, शैक्षिक अभिवृत्तियों का विकास व स्थायित्व मे, स्वयं को या अन्य लोगों के कार्यों और अभिवृत्तियों में, और स्वयं का या अन्य लोगों का नैतिक मूल्यांकन, करने में, किया गया है । इस प्रकार, सभी प्रकार (छः मूल्यों) की सूचनायें एकत्रित करके, विश्लेषण एवं व्याख्या करके जनजाति समूह के मूल्यों का निर्धारण सम्भव हो सकता है । वर्तमान शोध विषय मे निश्चित मूल्यों का मापन उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति के संदर्भ मे किया जायेगा । इससे मूल्यों और अभिवृत्ति का सम्बन्ध भी स्पष्ट हो जायेगा ।

यह आवश्यक नही है कि शोधकर्ता अपने अध्ययन हेतु मूल्यों की सही और उपयुक्त परिभाषा का चुनाव करें, बल्कि वह तो अध्ययन लक्ष्य हेतु इसकी की गई व्याख्याओं मे से चयन कर लेता है । प्रस्तुत कार्य के सम्पादन हेतु मूल्यों के क्रियात्मक और व्यवहारात्मक क्षेत्र को सीमित करके मूल्य मापनी के अनुसार बना लिया गया है, जिसके द्वारा शोधकर्ता ने तथ्यों का एकत्रीकरण किया है । " आपोर्ट वरनन लिन्डे-जे" (1960) ने मूल्यों को निम्न स्वरूप प्रदान किया है -

" मूल्य प्रभावशाली अभिरूचि है" मूल्यों के अध्ययन का लक्ष्य व्यक्तित्व की स्थिति छः अभिरूचियों या प्रेरकों की सम्बन्धित श्रेष्ठता को

निम्न प्रकार से प्रस्तुत है :-

सैद्धान्तिक मूल्य -

सैद्धान्तिक मूल्यों से प्रभावित व्यक्ति सत्य की खोज मे और जीवन को सुन्दरता प्रदान करने मे लगा रहता है । वह अपने बौद्धिक, आलोचनात्मक और अनुभविक ज्ञान के द्वारा जीवन क्रम को सुखद एवं सार्थक बनाता है । इस प्रकार के व्यक्तित्व, बौद्धिकता, वैज्ञानिकता, और दार्शनिकता आदि के पक्षों से सम्बन्धित होते हैं ।

आर्थिक मूल्य -

इस मूल्य से ग्रसित व्यक्ति सिर्फ "अर्थ" के बारे मे ही सोचता रहता है । उसका मुख्य ध्येय आर्थिक पहलू को किसी न किसी प्रकार से मजबूत बनाना रहता है । वह व्यापार, उत्पादन, बाजार भाव, सट्टा आदि मे प्रखर रूचि रखता है, और उसी मे जीवन का आनन्द उठाता है । उसकी केन्द्रीय अभिरूचि "अचल सम्पत्ति और स्थूल पदार्थों" मे लगी रहती है ।

सौन्दर्यात्मक मूल्य -

सौन्दर्यात्मक मूल्य से प्रभावित व्यक्ति सौन्दर्य बोध मे लिप्त रहता है । वह अपने इस मूल्य को "प्रकार और समरूप" मे प्रगट करता है । वह रचनात्मक कलाकार हो भी सकता है और नही भी, लेकिन वह अपनी मुख्य रूचि कलात्मक या सौन्दर्यात्मकअनुभवों मे रखता है । उसका दृष्टिकोण स्वयं में एक अनोखा प्रतीत होता है, जिस पर सौन्दर्यात्मक मूल्यों की गहरी छाप रहती है ।

सामाजिक मूल्य -

सामाजिक मूल्य का सीधा सम्बन्ध मानव मात्र को प्रेम करना,

सेवा करना, और मानवीय गुणों को धारण करना आदि से होता है । वह समाज सेवा को अपना धर्म मानता है । उसका विकास अंत: पक्षीय न होकर बहुपक्षीय होता है । उसके अन्दर मानवीय गुण दया, उपकार, और भाई-चारे के भाव आदि प्रमुख होते हैं । वह स्वयं के लाभ के स्थान पर अन्य की भलाई मे विश्वास करता है ।

राजनैतिक मूल्य -

राजनैतिक मूल्य का अभिप्राय "शक्ति संचय" से होता है । इस प्रकार से व्यक्ति "येन केन प्रकारेण" स्वयं को शक्तिशाली बनाते है, ताकि उनका प्रभाव प्रत्यक्ष और सक्रिय रूप मे समाज पर पड़ सके । वे हमेशा संघर्षशील, प्रतिस्पर्धी और नेताशाही मे लिप्त रहते हैं । इसमें जीत और हार दोनों ही स्थितियों में उनका मनोबल ऊँचा रहता है, और वह जीवन का आनन्द इसी मे पाते हैं । वे स्वयं का प्रचार करवाते और स्वयं करते है, ताकि उनकी शक्ति और प्रभाव का अनुभव जनसाधारण महसूस कर सकें । ऐसे ही लोग आज "दल-बदलू" भी कहे जाते हैं, क्योंकि वे शक्ति के साथ या शक्ति में रहना चाहते हैं ।

धार्मिक मूल्य -

भारतीय समाज को धार्मिक मूल्यों से ग्रसित माना जाता है । इसी कारण हम अनेकता मे एकता और एकता मे ही शक्ति का विकास मानते हैं । परिणाम स्वरूप "वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना का विकास भारत की संस्कृति मे निहित सत्यं, शिवं और सुन्दरम् जैसे शाश्वत मूल्यों के द्वारा हुआ है । अन्त मे व्यक्ति धर्म भाव से, मानव भाव मे उतर कर आत्म भाव की ओर प्रस्थान करता है । यही आत्म भाव मानव को मानव मात्र से प्रेम करना, दया करना, सेवा करना सिखाता है । इसी को " धर्म दर्शन" के नाम से भी पुकारा

जाता है ।

मूल्य और अभिवृत्ति -

विद्वानों ने मूल्य और अभिवृत्ति को समान स्तर प्रदान किया है । "किम्बलयंग" । 1960 । के अनुसार, " मूल्य उन वस्तुओं का प्रतिनिधत्व करते हैं, जिनके प्रति हम अपनी इच्छाओं और अभिवृत्तियों को ले जाते हैं" । इसी प्रकार से "श्व0बोनर" के अनुसार जब कोई प्राकृतिक वस्तु अर्थ ग्रहण करती है, तब वह मूल्य बन जाती है । बिना अर्थ के कोई मूल्य नहीं होता है । संक्षेप मे मूल्य इतने महत्वपूर्ण होते हैं कि व्यक्ति और समाज इनको पाने की हर चेष्टा करते हैं तथा इस चेष्टा मे बडे से बडा त्याग कर सकते हैं, और व्यक्ति इन्ही मूल्यों के लिये जीवित रहते हैं । चूँकि शोधकर्ता का सम्बन्ध मूल्य और अभिवृत्ति दोनों से है, इसलिये दोनों के सम्बन्ध को जानना आवश्यक है :-

1- मूल्य वस्तु गत होते हैं और अभिवृत्ति आत्मगत ।

2- मूल्यों का आधार सामाजिक आदर्श और उद्देश्य होता है। बहुधा हम या समाज उन्ही वस्तुओं को महत्व देता है जो सामाजिक आदर्शों के अनुकूल होती हैं । यही मूल्य अभिवृत्तियों का आधार होता है ।

3- अभिवृत्तियाँ व्यक्ति की क्रियाओं की दिशाओं से सम्बन्धित होती है, जबकि मूल्य प्रत्यक्षीकरण की दिशा के सूचक होते हैं ।

4- जब कोई वस्तु अभिवृत्ति का लक्ष्य बन जाती है, तो वह मूल्य बन जाती है, दूसरी ओर अभिवृत्ति किसी वस्तु की ओर ले जाने वाली प्रवृत्ति है ।

अभिवृत्ति -

अभिवृत्ति और मूल्य दोनों का ही विकास काल्पनिक आधार

पर होता है । सामान्य धारणा के अनुसार दोनों की व्यक्ति की वैयक्तिकता के प्रति पूर्व स्थिति का आभास दिलाते हैं । इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्ति स्वयं के प्रति पर्यावरण से क्या आशा करता है । कभी-कभी ये दोनों पारस्परिक भावों मे प्रयोग की जाती हैं । और कभी इनका प्रयोग भिन्नता को धारण किये हुये रहता है । अत: सामान्य रूप मे अभिवृत्ति को "तत्परता की दशा या स्थिति" से लगाया जाता है, जो प्रेरकों के उत्पन्न करने मे सहायक होती है । इसका अन्य रूप तब देखने को मिलता है, जब एक निश्चित उद्दीपक के प्रति लगातार तत्परता के साथ प्रति विचार या क्रिया की जाती है । इसीलिये इसे " क्रिया के प्रति तत्परता" या परिस्थिति के प्रति तत्परता" का भाव माना गया है । "रोकीज, आल्पोर्ट" और अन्य विद्वानों ने एक मत से अपनी स्वीकृति दी है कि जब अभिवृत्ति एक निश्चित वस्तु या परिस्थिति पर प्रकाश डालती है, तो मूल्य उस वस्तु या परिस्थिति के आचरण तरीकों और स्थिति की दशा का वर्णन करते हैं । इसी विचारधारा के तहत होकर शोधकर्ता ने अपने शोध विषय को क्रियान्वित किया है । अत: मूल्य और अभिवृत्ति दोनों का अध्ययन मापन और विश्लेषण अलग-अलग रूपों मे किया गया है ।

अभिवृत्ति के स्वरूप को अधिक स्पष्ट करने के लिये विद्वानों के मत और परिभाषायें प्रस्तुत की जाती हैं -

<u>किम्बलयंग" । 1960 । के अनुसार</u> -

" आवश्यक रूप से अभिवृत्ति पूर्व ज्ञान रूपी प्रतिक्रिया का स्वरूप और क्रिया का आरम्भ है, जिसका पूर्ण होना आवश्यक नहीं है । इसके अतिरिक्त प्रतिक्रिया की इस तत्परता मे किसी प्रकार की विशिष्ट या सामान्य

" जेक्स ड्रेवर" ।1968 । के अनुसार-

"अभिवृत्ति, मत, रूचि तथा उद्देश्य की एक लगभग स्थायी तत्परता या प्रवृत्ति है, जिसमें एक विशेष प्रकार के अनुभव की आशा और एक उचित प्रक्रिया की तैयारी निहित होती है" ।

" क्रच, क्रचफील्ड तथा बैलेची । 1962।के अनुसार-

" व्यक्ति का सामाजिक व्यवहार उसकी अभिवृत्तियों को प्रतिबिम्बित करता है - यह किसी सामाजिक वस्तु के प्रति धनात्मक या ऋणात्मक मूल्यांकनों, संवेगात्मक भावों तथा पक्ष या विपक्ष के क्रियात्मक झुकावों की अपेक्षाकृत स्थायी पद्धतियाँ हैं " ।

" सीकार्ड तथा बैकमैन" । 1964 । के अनुसार -

" अपने पर्यावरण के कुछ पक्षों के प्रति व्यक्ति के नियंत्रित भाव, विचार और कार्य करने की पूर्व वृत्ति ही अभिवृत्ति कहलाती है" ।

" आइजेनक" ।1972। के अनुसार -

" सामान्यतया अभिवृत्ति की परिभाषा किसी वस्तु या समूह के सम्बन्ध मे प्रत्यक्षात्मक बाह्य उत्तेजनाओं की उपस्थिति मे व्यक्ति की स्थिति और प्रत्युत्तर तत्परता के रूप मे की जाती है" । सामाजिक जीवन में इन अभिवृत्तियों का निर्माण होता है । ये व्यक्ति की अर्जित विशेषतायें होती है । व्यक्ति की प्रत्येक क्रिया का आधार उसकी अभिवृत्तियाँ होती है ।

" अभिवृत्तियों के व्यक्ति मे अनेकों महत्वपूर्ण कार्य हैं । यह व्यक्तित्व को निरन्तरता प्रदान करती हैं। यह उसके दैनिक प्रत्यक्षीकरण और प्रक्रियाओं को अर्थपूर्ण बनाती है, तथा उसके विभिन्न उद्देश्यों को प्राप्त करने मे सहायक होती है"। क्रच,क्रचफील्ड, 1958।"

"थामस और जेनानायकी" ने अभिवृत्ति को व्यक्ति की मानसिक प्रक्रिया माना है जो उसकी वास्तविक और अवशावान प्रतिचारों को सामाजिक संसार के प्रति निश्चित करती है । "डूब" महोदय ने अभिवृत्ति को एक शंकाहीन प्रतिचार के रूप मे प्रयोग किया है जो व्यक्ति के बाहय व्यवहार के तरीकों " पूर्वभाव और मध्य स्थित" पर प्रकाश डालता है । इसी तरह से "कैम्पवैल" महोदय का विचार है कि एक व्यक्ति की सामाजिक अभिवृत्ति प्रतिचारों का गुच्छा होती है जो सामाजिक वस्तुओं के प्रति इंगित करता रहता है ।

"न्यूकाम्ब" महोदय के विचार से अभिवृत्ति, व्यक्ति द्वारा अपने पर्यावरण के प्रति लगातार सामान्य पूर्व स्थिति को प्रगट करती है, ताकि वह अपने पर्यावरण के साथ समायोजन स्थापित करने में सफल रहे ।

"आल्पोर्ट" महोदय ने अभिवृत्ति का वर्णन विस्तृत और स्पष्ट रूप मे किया है ।"अभिवृत्ति मानसिक और स्नायु रूप मे तत्परता की एक दशा है, जिसका निर्माण अनुभव द्वारा होता है । उसके बाहय निर्देशन और गत्यात्मक प्रभाव व्यक्तियों के प्रतिचारों पर पड़ते है, जिनको वह उन वस्तु, और परिस्थिति के प्रति प्रदर्शित करता है जो उससे सम्बन्धित होते हैं ।

"आसगुड" महोदय ने अभिवृत्ति को प्रत्ययों के मूल्यांकित आयामों के रूपों मे वर्णन किया है ।"इंगलिश व इंगलिश" ने अभिवृत्ति को आन्तरिक रूप से सीखा हुआ प्रभाव माना है, जो निश्चित वस्तु के प्रति एक समान व्यवहार प्रगट करता रहता है । इसी प्रकार से "न्यूमली" महोदय ने अभिवृत्ति को पूर्व प्रदर्शित व्यवहार माना है जो एक निश्चित मात्रा मे वस्तु के प्रति, संस्था के प्रति, व्यक्तियों के प्रति नकारात्मक रूप मे या सकारात्मक रूप में साकार होता रहता है ।

"थर्स्टन महोदय ने अभिवृत्ति को मानव की आकांक्षाओं, भावनाओं, जलन, पूर्व निर्मित सिद्धान्त, विचारमय, धमकियाँ आदि के योग के रूप में परिभाषित किया है, जो किसी विशेष दशा के प्रति प्रतिचार करने को बाध्य करते हैं ।

"क्रच" महोदय ने अभिवृत्ति को किसी सामाजिक वस्तु के प्रति व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित स्थायी मूल्यांकन (सकारात्मक या नकारात्मक), भाव, और क्रियायों, प्रवृत्तियों आदि के रूप में वर्णन किया है । इसी प्रकार से "एण्डरसन" महोदय ने लिखा है कि अभिवृत्ति किसी वस्तु के प्रति व्यक्ति के विश्वासों को पूर्ण क्षमताओं को प्रगट करती है, जिनका मापन किया जा सकता है । इससे वस्तु का मूल्याकंन सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही रूपों में किया जा सकता है, जैसे- अच्छा, बुरा, साफ, गन्दा आदि ।

" शा एवं राइट" ने अभिवृत्ति को व्यक्ति की स्थायी व्यवहार प्रणाली मानी है, जिसके द्वारा वह किसी वस्तु का मूल्यांकन प्रभावशाली प्रतिचार के द्वारा प्रगट करता है । यह प्रभावशाली प्रतिचार सीखा हुआ होता है, और इसका प्रगटीकरण सामाजिक उद्दीपक या सामाजिक वर्ग के प्रति किया जाता है ।

उपर्युक्त वर्णित अभिवृत्ति सम्बन्धी विचारों से स्पष्ट होता है कि इसका क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है । यदि हम अभिवृत्ति के वर्णित स्वरूपों को देखें तो स्पष्ट होता है कि इन सभी ने एक स्तर से अभिवृत्ति की कुछ समानताओं को वर्णित किया है । अभिवृत्ति किसी सामाजिक उद्दीपक के प्रति चिर-स्थायी प्रतिचार को प्रगट करता है, जो व्यक्ति के वाह्य व्यवहार को परिस्थिति के प्रति अन्तः क्रिया के साथ निर्देशित और मार्ग दर्शित करता है ।

व्यक्ति के व्यवहार का मूल्यांकन करने मे और उसको निश्चित करने मे अभिवृत्ति के प्रति विचार भिन्नता सामान्य या विशिष्ट क्षेत्र में उपयुक्त प्रतीत नही होती है । इस संदर्भ मे सिर्फ इतना ही कहना उपयुक्त होगा कि अभिवृत्ति का प्रयोग जिस रूप मे किया जा रहा है, वही उसकी विशिष्टता को प्रगट करने वाला हो । "आइजेनिक और रोकीज" आदि प्रभृति विद्वानों ने अभिवृत्ति को एक व्यक्ति का सामान्यीकृत और व्यापक स्वभाव के रूप में प्रगट किया है । साथ ही "हाउलैण्ड, जैनिस, कैली, क्रेच, क्रचफील्ड, शैरिफ और केन्दल आदि विद्वानों ने अभिवृत्ति को विशिष्ट संदर्भ मे या किसी विशिष्ट वर्ग के संदर्भ में व्यवहार का प्रगटीकरण माना है । अत: विद्वानों के द्वारा प्रस्तुत दोनों ही मतों में से बाद वाला मत शोधकर्ता के लिए उचित प्रतीत होता है । यह मत शोधकार्य के शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मापन करने मे सरलता और व्यवहारिकता प्रदान करेगा ।

कुछ विद्वानों ने व्यक्ति के प्रतिक्रिया करने के ढंग को ही अभिवृत्ति के रूप मे माना है । व्यक्ति समाज मे रहकर व्यक्ति के प्रति, समाज के प्रति, वस्तु के प्रति, विचार के प्रति प्रतिचार करता है । इस प्रतिचार का उद्‌गम उसका विचार, अधिगम, अनुभव, आदि सभी संगठित परिणाम होता है । यदि वह ऐसा न करे तो उसका समायोजन सामाजिक व्यवस्था में नही हो सकता है ।

विद्वानों ने अभिवृत्ति निर्माण के विषय में एक अपूर्व सैद्धांतिक विचार को प्रस्तुत किया है । कुछ विद्वान जैसे क्रच, सीकर्ड व बैकमैन आदि ने अभिवृत्ति निर्माण के तीन अंग बतलायें है। प्रथम अंग को प्रभावशाली कम्पोनेन्ट, द्वितरय को ज्ञानात्मक कम्पोनेन्ट, और तृतीय को व्यवहारिक कम्पोनेन्ट कहा

तरीके और मानव मतों या रायों को किसी नियम के अन्तर्गत होकर करती है । इसी प्रकार से "हार्वे, हण्ट और श्रोडर", रिन, शा व राइट, आसगुड, एन्डरसन और फिशवीन" आदि विद्वानों ने अभिवृत्ति को प्रभावशाली तत्व के रूप में प्रयोग किया है जो ज्ञानात्मक प्रक्रिया के द्वारा संचालित होता है और व्यवहार का पूर्वगामी होता है । अत: अभिवृत्ति एक मूल्यांकन प्रतिक्रिया है जो प्रत्ययों पर निर्भर होती है और जो ज्ञानात्मक पक्ष एवं वाह्य व्यवहार के साथ अंत:सम्बन्ध रखती है ।

शोध कार्य का वर्तमान सम्बन्ध अभिवृत्ति के विभिन्न स्वरूपों या तत्वों में से सिर्फ "क्रच" एवं सहयोगी द्वारा वर्णित परिभाषा से पूर्ण होता है । इसमें अभिवृत्ति की निम्नलिखित विशेषताओं को स्पष्ट किया गया है ।

1- स्थायी प्रणाली 2- सकारात्मक या निषेधात्मक मूल्यांकन

3- संवेगात्मक भाव 4- पक्ष और विपक्ष की क्रियात्मक प्रवृत्ति

5- सामाजिक उद्दीपक के प्रति प्रतिचार । वर्तमान संदर्भ में, शोधकर्ता अभिवृत्ति मापन के द्वारा जनजातीय समूह के विचार । शैक्षिक संदर्भ में । पक्ष और विपक्ष में जानने के लिये एक प्रभावशाली मापदण्ड के रूप में, प्रयोग कर रहा है । इससे शिक्षा के प्रति उत्साह और लगन का संचार उनमें किया जायेगा, ताकि वे अपने को भारत का सभ्य नागरिक बना सकें । प्रस्तुत मापनी का उद्देश्य उनमें छिपी हुई शैक्षिक अभिवृत्ति, विचार, धारणायें जो पक्ष और विपक्ष दोनों में हो सकती है, का मापन करना है । साथ ही इसका प्रभाव उनके व्यवसाय, मानसिक वृत्ति, दैनिक व्यवहार और ज्ञानात्मक व क्रियात्मक पक्ष पर क्या पड़ता है, समझना है । अत: वर्तमान शोध कार्य के संदर्भ में अभिवृत्ति के स्वरूप को निम्न प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है -

" अभिवृत्ति का अर्थ जनजातीय समूह की शैक्षिक आकांक्षा का मूल्याकंन, भावों का शिक्षा के प्रति जागरण, और शिक्षा के प्रति क्रियात्मक एवं व्यवहारिक कदम का उठाना है" ।

जनजाति -

प्रस्तुत शोध कार्य मे जनजाति शब्द का प्रयोग मानव जाति के रूप मे किया गया है जिसका आधुनिकीकरण न होने के कारण विकास में अवरूद्धता आ गई है । "मजूमदार" । 1965, पृ0-367 । ने अपने लेखों में जनजाति को सामाजिक स्तरीकरण का एक रूप माना है । जनजाति, जाति, पंथ, और वर्ग आदि विभिन्न सामाजिक स्तरीकरण की श्रेणियाँ हैं । भारत देश ने अपने इतिहास मे अनेकों संस्कृतियों का विकास व प्रभाव देखा है, अतः इनका होना स्वाभाविक सा लगता है । एक जनजाति कुछ परिवारों का एक संगठन होता है जिसकी एक नाम, स्थान, भाषा, विवाह का ढंग, निजी व्यवसाय, और निश्चित रीति-रिवाज होते हैं । जनजाति का पूर्ण विवरण अध्याय दो मे विस्तार से प्रस्तुत किया जायेगा ।

अतः शोधकर्ता ने जनजाति के उद्देश्य को ही यहाँ पर उपयुक्त माना है । प्राकृतिकसीमाओं के बीच बसे हुये स्त्री-पुरूषों का वह समुदाय जो आज के आधुनिक और विकसित मानव समुदाय से अलग मान्यताओं पर जीवित रहता है, जनजाति समूह कहलाता है । आज भारत सरकार के प्रयत्नों से इनको आधुनिक समाज के पास लाया जा रहा है, फिर भी विलगता की जड़ें बहुत गहरी हैं जो इनको अपने नये पर्यावरण के साथ अभियोजन करने मे सहायक नहीं हो पा रही हैं । इनके विकास, मे परिस्थितिवश अभियोजन मे असफलता और समाज की गतिशीलता को ग्रहण न कर पाना ही, अवरूद्धता का मुख्य

कारण है । अत: समाज मे रहकर भी सामाजिक विलगता बनी हुई है , जिसका कारण खोजना और शैक्षिक प्रगति करना ही शोध कार्य का उद्देश्य है । इसीलिये झाँसी प्रक्षेत्र की जनजाति को अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने चुना है ।

सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा -

शोध समस्या के अध्यन का क्षेत्र सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा स्तर को माना गया है । वर्तमान अध्ययन उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित विश्वविद्यालय मे किया जा रहा है, अत: हमें उत्तर प्रदेश मे प्रचलित सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा का अवलोकन करना अनिवार्य होगा । भारतीय संविधान के अनुच्छेद-29 और 30 मे शैक्षिक आरक्षणों की व्यवस्था की गई है । भारतीय संविधान (अनु0-29) में लिखा है, " किसी भी नागरिक को राज्य द्वारा चलाई जाने वाली अथवा उससे मान्यता प्राप्त और वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाली संस्था मे केवल धर्म, वंश, जाति, भाषा या इसमे से किसी एक के आधार पर प्रवेश से इनकार नही किया जा सकेगा" । इस अधिकार को शिक्षा तथा संस्कृति सम्बन्धी अधिकार के नाम से पुकारा जाता है । हम इसका वर्णन निम्न पाँच भागों मे विभक्त करके करते हैं -

1- भारत अथवा किसी भी भाग में रहने वाले नागरिकों के प्रत्येक ऐसे वर्ग को जिसकी अपनी पृथक भाषा, लिपि या संस्कृति हो, उसे बनाये रखने का अधिकार प्रदान किया गया है ।

2- धर्म या भाषा पर आधारित सभी अल्प संख्यक वर्गों को अपनी शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना तथा प्रशासन का अधिकार दिया गया है ।

3- राज्य या राज्य की सहायता से संचालित विद्यालयों में मूल, वंश, धर्म और भाषा आदि के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नही किया जायेगा ।

4- राज्य द्वारा विभिन्न वर्गों की शिक्षण संस्थाओं इत्यादि को आर्थिक सहायता देने मे किसी प्रकार का भेदभाव नही किया जायेगा ।

5- अपनी योग्यता, क्षमता, और रूचि के अनुसार शिक्षा ग्रहण करने की सबको स्वतंत्रता है ।

भारतीय संविधान ने सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा मे निःशुल्क और अनिवार्य दो शब्दों को जोड़कर सर्व सुलभ बना दिया है । संसार मे इसका प्रारम्भ 19 वीं शताब्दी के मध्य से हो चुका था, लेकिन भारत देश में अंग्रेजी शासकों को शिक्षा के प्रति उदासीन देखकर महाराजा बड़ौदा, और श्री गोपाल कृष्ण गोखले ने प्रयास किये । इसके पश्चात "पटेल कानून" के अंतर्गत 1917 में बम्बई म्यूनिसिपल क्षेत्र मे प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक स्वरूप प्रदान कर दिया गया। इसके साथ ही अन्य क्षेत्रों मे भी इसका प्रसार एवं विकास हुआ । मुख्य रूप से डा० पाण्डेय (1970, पृ०-86) ने उत्तर प्रदेश में शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में इसका विकास 1919 व 1926 मे माना है ।

स्वतंत्र भारत में संविधान के आधार पर आज भी प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य रूप में प्रचलित है । उत्तर प्रदेश मे पूर्व प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा, आदि रूप स्थायी रूप से प्रचलित हैं । पूर्व प्राथमिक शिक्षा निजी प्रबन्धकों द्वारा प्रशासित होती है जबकि प्राथमिक शिक्षा शासन के द्वारा । जब छात्र/छात्रा 5 या 6 वर्ष की आयु पूर्ण कर लेता है तो उसको प्राथमिक शिक्षा मे प्रवेश मिलता है । प्राथमिक शिक्षा आयु 6 - 11 वर्ष तक के बच्चों के लिये सर्व सुलभ निःशुल्क और अनिवार्य रूप से प्रचलित है । प्लानिंग कमीशन (1966, पृ०-578) ने प्राथमिक शिक्षा को अधिक शक्तिशाली और सर्व सुलभ बनाने की भारत सरकार से सिफारिश की है ।

2 अक्टूबर 1969 के आधार पर उत्तर प्रदेश सरकार ने प्राथमिक शिक्षा का कार्यभार, नियंत्रण, व संचालन जिलापरिषदों को सौंप दिया । इससे सम्पूर्ण प्रदेश में स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान मे रखकर प्राथमिक शिक्षा (कक्षा-1 से 5 तक) को सार्वभौमिक, अनिवार्य और निःशुल्क के रूप मे प्रस्तुत करके साक्षरता में उन्नति लाई जा रही है । अतः शोधकर्ता ने शिक्षा के इसी क्षेत्र मे जनजातीय मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति का मापन करना उपयुक्त समझा ।

अध्ययन के उद्देश्य -

1- जनजातीय समूहों (नट, कबूतरा, साहरिया, और कँगार) मे पाये जाने वाले मूल्य प्रकारों का अध्ययन करना ।

2- जनजातीय समूहों की शैक्षिक मनोवृत्ति का अध्ययन करना ।

3- प्रत्येक मूल्य प्रकार के अनुसार जनजातियों के व्यवहार को अलग-अलग प्रकार से निश्चित करना ।

4- उनके "प्रभुत्व मूल्य" को निश्चित करना जो इनकी शैक्षिक अभिवृत्ति को निश्चित करने मे सहायक होते हैं ।

5- 'नट कबूतरा' जनजाति में पुरुषों और स्त्रियों में स्थापित मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति भिन्नता का पता लगाना ।

6- 'साहरिया' जनजाति मे पुरुषों और स्त्रियों में निहित मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति भिन्नता का पता लगाना ।

7- 'कँगार' जनजाति मे स्थापित मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति (स्त्री-पुरुष) भिन्नता का अध्ययन करना ।

8- मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच स्थापित प्रभाव का अध्ययन करना ।

<u>अध्ययन की परिकल्पना</u>

वर्तमान शोध का मुख्य प्रयास जनजातीय समूह में व्याप्त मूल्यों का और शैक्षित अभिवृत्ति का अध्ययन करना है ताकि उनके बीच शिक्षा सम्बन्धी कठिनाइयों का निराकरण करके, शिक्षा का प्रसार किया जा सके । यह आशा की जाती है कि विभिन्न प्रकार के मूल्य शैक्षिक अभिवृत्ति के प्रभाव या विकास मे सार्थकता स्थापित करते हैं । अत: शोधकर्ता ने निम्नांकित परिकल्पनाओं का गठन परीक्षण हेतु किया है :-

1- जनजातीय मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सार्थक सम्बन्ध है ।

2- नट, कबूतरा जनजातीय समूह के मूल्यों का दूसरे ।सहरिया। जनजातीय समूह के बीच सार्थक सम्बन्ध है ।

3- नट-कबूतरा जनजातीय समूह के मूल्यों का खँगार जनजाति समूह के बीच सार्थक सम्बन्ध है ।

4- सहरिया जनजाति समूह के मूल्यों का खँगार जनजाति के साथ सार्थक सम्बन्ध है ।

5- जनजातीय समूहों के मूल्यों के प्रकारों मे मध्यमान अन्तर ।स्त्रियों और पुरुषों। मे है ।

6- नट-कबूतरा जनजातीय समूहों की शैक्षिक अभिवृत्ति मे मध्यमान अन्तर ।स्त्रियों और पुरुषों।मे है ।

7- सहरिया जनजाति समूह की शैक्षिक अभिवृत्ति मे मध्यमान अन्तर ।स्त्रियों और पुरुषों । है ।

8- खँगार जनजाति समूह की शैक्षिक अभिवृत्ति मे मध्यमान अन्तर ।स्त्रियों और पुरुषों। है ।

अध्ययन की परिसीमायें

प्रस्तुत अध्ययन को शोधकर्ता ने निदर्शन, क्षेत्र और विश्लेषण के आधार पर निम्न प्रकार से परिसीमित किया है -

1- निदर्शन :-

अ- अध्ययन का क्षेत्र सिर्फ झाँसी मण्डल तक निर्धारित किया गया।

ब- शोधकार्य हेतु तथ्य संकलन नट, कबूतरा जनजाति । 200 स्त्रियाँ-पुरूषों। सहरिया जनजाति । 200 स्त्री-पुरूष।, और खंगार जनजाति । 200 स्त्री-पुरूष । पर किया गया ।

स- विषयों की आयु 18 वर्ष से लेकर 35 वर्ष तक रखी गयी ।

द- निदर्शन का कुल योग 600 जनजाति स्त्री पुरूष हैं ।

2- अध्ययन क्षेत्र :-

अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया ।

अ-मूल्य -

मूल्यों का अध्ययन व्यक्ति के छः आयामों को ध्यान मे रखकर किया गया है, जिसमे सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक, और धार्मिक आदि मूल्य आते हैं । इन मूल्यों के मापन के लिये डा0 एस0पी0- अहलूवालिया द्वारा विकसित मूल्य परीक्षण का प्रयोग किया गया है ।

ब- अभिवृत्ति :-

अभिवृत्ति का अध्ययन शिक्षा के प्रति अभिरूचि जानने के लिये किया गया है , अतः जनजातीय शैक्षिक अभिरूचि को मापने के लिए शोधकर्ता ने डा0 एस0एस0 चोपड़ा द्वारा विकसित "अभिवृत्ति शिक्षा के प्रति" का प्रयोग

3- <u>विश्लेषण प्राविधियाँ</u> :-

अ- केन्द्रीय प्रवृत्ति की मापें,

ब- मानक विचलन,

स- मानक त्रुटि,

द- "टी" परीक्षण,

य- सह सम्बन्ध ।

<u>उपकरण प्रशासन में कठिनाइयाँ</u>

1- शोधकर्ता को सबसे पहली कठिनाई उस समय आई, जब जिला प्रशासन से नट- कबूतरों के क्षेत्र मे जाने के लिए और तथ्यों के एकत्रीकरण के लिये आज्ञा माँगी । शोधकर्ता बार-बार पुलिस प्रशासन के अधिकारियों के पास गया और सहायता की प्रार्थना की तथा उनके प्रश्नों के जबाव दिये, तब जाकर उन्होने एक परिचय पत्र आज्ञा के तौर पर प्रदान किया ।

2- जनजातीय समूहों के मुखियाओं को खोजना, और उनसे मिलना एक समस्या थी । वे आसानी से हमारी बातों पर विश्वास नही करते थे, अन्त तक अविश्वास पैदा करते रहे ।

3- उनके द्वारा उत्तर प्राप्त करने के लिए हमें आर्थिक प्रलोभनों का सहारा लेना पड़ा जो हमारे लिये काफी असहनीय कार्य था ।

4- महिलाओं के साथ साक्षात्कार के समय पुरुषों का उपस्थित रहना भी कठिनाई का कारण बना । इससे वे स्वतंत्र रूप से उत्तर देने मे हिचकिचाहट महसूस करतीं थीं ।

5- जनजातीय समूहों को विश्वास मे लेना आसान कार्य नही था । अत: अपने व्यवहार और प्रेरणा के द्वारा उनके विश्वास को शोधकर्ता ने जीता ।

6- झाँसी शहर के प्रत्येक स्थल को जाने के लिए पैदल, बैलगाड़ी और साइकिल आदि का सहारा लेना पड़ा, जो शारीरिक और मानसिक रूप से काफी तकलीफ देय रहा ।

7- उनके द्वारा प्रदत्त उत्तरों को समझना, भाव को स्पष्ट करके अर्थ लगाना भी एक समस्या थी ।

8- इन जनजातियों के कुछ अपराधी प्रवृत्ति के लोग विभिन्न अपराधों के तहत जिला कारागार मे बन्द हैं, जिन पर मूल्यों का मापन और अभिवृत्ति मापन काफी जटिल कार्य रहा ।

9- ऐसा भी प्रतीत हुआ कि कुछ स्त्री-पुरुषों ने बनावटी जबाब भी दिये, उन्होने शिक्षा को अतिरिक्त और व्यर्थ का बोझा माना ।

10- कुछ स्त्री और पुरुषों ने जबाब देने से इन्कार किया । अतः वहाँ पर जनमत बनाना ही कठिन कार्य रहा ।

11- कुछ जनजातीय सदस्यों ने हम लोगों को सी0आई0डी0 समझा, और सहयोग देने से इन्कार किया ।

<u>अध्ययन की योजना-</u>

शोध कार्य को छः अध्यायों मे प्रस्तुत किया गया है, साथ में परिशिष्ट का वर्णन किया गया है ।

<u>अध्याय प्रथम</u> "प्रस्तावना का है जिसमे शोध विषय का चुनाव आवश्यकता, उद्देश्य, परिकल्पनायें, परिसीमायें और परीक्षण समस्याओं आदि का उल्लेख किया गया है ।

अध्याय द्वितीय "जनजातीय समूहो के स्वरूप" से सम्बन्धित है । इसमे नट-कबूतरों, सहरिया, और कँगार आदि जनजातियों की उत्पत्ति,

रहन-सहन, भोजन, सामाजिक विचार, शौदियाँ, धार्मिक संस्कार आदि का वर्णन किया गया है ।

अध्याय तृतीय "सम्बन्धित साहित्य " का है । इसमे शोधकर्ता ने "मूल्यों" और अभिवृत्तियों" से सम्बन्धित अध्ययन ॥विदेशों और भारत में॥ प्रस्तुत किये हैं । इससे शोध विषय की अपूर्वता स्पष्ट होती है ।

अध्याय चतुर्थ " शोध प्रविधि" से सम्बन्धित है जिसमे शोध विधि योजना पद्धति, अध्ययन की बनावट आदि आते हैं । इसमे निदर्शन, उपकरण, तथ्य संकलन का तरीका, और विश्लेषण व विवेचन आदि के तरीकों को स्पष्ट किया गया है ।

अध्याय पंचम " तथ्य विश्लेषण और व्याख्या" का है । इसके अन्तर्गत जनजाति समूहो के मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति के तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है । इसमे मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच स्थापित अंत: सह सम्बन्ध को जानने की पूरी कोशिश की गई है, ताकि जनजातियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का पता लगाया जा सकेगा ।

अध्याय षष्ठम् " शोध निष्कर्षो और सुझावों" का है, जिसमें तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर शोध निष्कर्ष ज्ञात किये गये हैं । ये निष्कर्ष वर्तमान शोध कार्य के उद्देश्य को स्पष्ट करते हैं । साथ ही शैक्षिक प्रशासन और भविष्य के शोध कर्ताओं के लिए सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं ।

प्रथम परिशिष्ट- संदर्भ ग्रन्थावली का है जिसमे चयनित संदर्भ ग्रन्थों, पीरियोडिकल्स, आर्टिकल्स, पेपर्स और सम्बन्धित सामग्री ॥मूल्यों, अभिवृत्तियों॥ का वर्णन किया गया है ।

द्वितीय परिशिष्ट- मे उन उपकरणों की प्रतियों को संलग्न किया गया है जिनका प्रयोग अध्ययन हेतु किया गया है । जैसे -

1- मूल्य अनुसूची पुस्तिका,

2- उत्तर पत्रिका,

3- स्कोर की,

4- शैक्षिक अभिवृत्ति पुस्तिका,

5- उत्तर पत्रिका ।

तृतीय परिशिष्ट - प्रदत्तों की तालिका प्रस्तुत की गई है :-

1- मूल्य प्रदत्त,

2- शैक्षिक अभिवृत्ति प्रदत्त ।

-

अध्याय-द्वितीय

जनजातीय समूह एवं शैक्षिक अभिवृत्ति

(१) जनजातीय समूहों की उत्पत्ति, प्रकार

(२) नट-कबूतरा जनजाति की उत्पत्ति, व्यवहार प्रणाली और शिक्षाप्रसार

(३) साहरिया जनजाति की उत्पत्ति, व्यवहार प्रणाली और शिक्षाप्रसार

(४) खगार जनजाति की उत्पत्ति, व्यवहार प्रणाली और शिक्षाप्रसार

"जन-जातियाँ"

सामाजिक समूहों का इनकी विशिष्टताओं के आधार पर कबीला, जाति, वर्ग, जनजाति तथा प्रजाति आदि कुछ श्रेणियों मे अध्ययन किया जाता है । सभी देशों मे यह सभी प्रकार के सामाजिक समूह नहीं पाये जाते हैं । इसके विपरीत भारत मे सामाजिक गतिशीलता हजारों वर्षों से बहुत कम देखने मे आई है । अतः सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था मुख्य रूप से जाति तथा वर्ग पर निर्भर करती है । जनजाति, जाति, व्यवस्था की ही एक श्रेणी है जिसे जाति को समझने या स्वरूप को स्पष्ट करने पर ही समझ सकेगें ।

शाब्दिक रूप से " जाति " शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द "कास्टस" से मानी जाती है । इसका हिन्दी भाषा मे अर्थ "विशुद्धता" से अथवा "अनुवाँशिकता" से लगाया जाता है, लेकिन " जाति" इन दोनों ही शब्दों के क्षेत्र से भिन्न है । जाति का कार्य सिर्फ सामाजिक विभाजन की नीति को स्पष्ट करना होता है । इसीलिये " जाति " शब्द की उत्पत्ति " जात: शब्द से मानी जाती है, जिसका अर्थ "जन्म" माना जाता है । जाति एक बिल्कुल भिन्न सामाजिक व्यवस्था है जिसमे कुछ नियंत्रणों के अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति को अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है । इसके अतिरिक्त विभिन्न जातियों को एक दूसरे से पृथक करने के लिये विवाह, खानपान, धार्मिक-अनुष्ठानों और सम्पर्क आदि के बारे मे कुछ नियंत्रण होते हैं जिससे विभिन्न जातियां एक दूसरे के प्रति कुछ सामाजिक दूरी अनुभव करती है ।

जन्म और "सामाजिक दूरी" दो आधारों के साथ यदि हम भौगोलिक दूरी को भी जोड़ दें, तो हमें, जनजाति के उद्गम का स्रोत प्राप्त हो जाता है । एक सीमित क्षेत्र मे विशेष प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियों

में काफी लम्बे समय से रहते चले आने के कारण तथा बाह्य सम्पर्कों की न्यूनता अथवा अभाव में इन जन समूहों के जीवन यापन के विधानों तथा इनकी संस्कृतियों में भी विशेषता आ जाती है । इसीलिये जनजातियों की अपनी विशेषतायें और अपूर्वतायें होती हैं ।

जनजातीय समूह -

" नाडेल" ।1953 । का मत है कि जनजाति समूह की परिभाषा करते समय हमें दो प्रमुख बातों का ध्यान रखना चाहिये, प्रथम- प्रत्येक समूह का निर्माण व्यक्तियों के द्वारा ही होता है । इसलिये यदि आवश्यकता हो तो किसी भी समूह की परिभाषा करते समय उन व्यक्तियों के सम्बन्ध में कुछ कहा जाये । द्वितीय- प्रत्येक समूह का एक क्रियाशील पक्ष होता है और उस समूह की समस्त कानूनी, राजनैतिक तथा आर्थिक क्रियाओं का क्षेत्र अपनी क्रियाशील सीमाओं के अन्तर्गत ही हुआ करता है । इसी को आधार मानकर जनजातीय समूह की व्याख्या भी की जा सकती है, क्योंकि जाति, वर्ग तथा जनजातीयां आदि सभी सामूहिकता के भिन्न-भिन्न स्वरूप हैं । जनजातीय समूह एक विशिष्ट प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक, संगठन के स्वरूप हैं । इस प्रकार से जनजाति के क्रियाशील क्षेत्रों के अन्तर्गत भौगोलिक, भाषागत, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक आधार आते हैं । "कुक" । 1975 । "मजूमदार" । 1965 ।,"रसल" व "हीरालाल" । 1916 ।,"सिन्हा" । 1968 । आदि प्रभृति विद्वानों ने जनजातीय समूह की विशेषताओं मे एक सामान्य क्षेत्र, सामान्य राजनैतिक प्रशासन, तथा विशिष्ट संस्कृति आदि को माना है ।

आज के मानव वैज्ञानिकों ने इनमें से सांस्कृतिक आधार पर भेद स्थापित करने के सिद्धान्त को अधिक महत्व दिया है, लेकिन इस आधार

पर जनजाति को परिभाषित करने में अनेक कठिनाइयाँ सामने आती हैं। भारत देश में ये कठिनाइयाँ और अधिक बढ़ जाती हैं। इसके अतिरिक्त कहीं कहीं पर एक ही विस्तृत सांस्कृतिक क्षेत्र में अनेक आदिम जातीयाँ पाई जाती हैं और उनमे आपस में सांस्कृतिक भिन्नताओं के स्थान पर समानतायें ही अधिक पाई जाती हैं। अतः इन समाजों की क्रियाशीलता के क्षेत्रों को भौगोलिक, भाषा तथा राजनैतिक सीमाओं के आधार पर ही अधिक सुविधा पूर्वक निश्चित किया जा सकता है।

" इम्पीरियल गजेटियर" (1931) ने जनजाति की परिभाषा के अन्तर्गत लिखा है :-

" जनजाति परिवारों का वह समूह है जिसका एक सामान्य नाम होता है, जिसके सदस्य एक सामान्य भाषा बोलते हैं तथा एक सामान्य क्षेत्र में या तो वास्तव मे रहते हैं, या अपने को उसी क्षेत्र से सम्बन्धित मानते हैं तथा ये समूह अंतर्विवाही ही होते हैं " । इस परिभाषा के अन्तर्गत जनजाति सदस्यों के लिये प्रथम- सामान्य नाम, द्वितीय- एक भाषा या उपभाषा का बोलना, तृतीय- एक सामान्य क्षेत्र मे निवास करना अथवा उस क्षेत्र से अपने को सम्बन्धित मानना, तथा चतुर्थ- वैवाहिक सम्बन्धों का समूह के अन्दर ही सीमित रखना आदि को जनजाति की विशेषतायें माना गया है।

" डॉ० रिवर्स " (1932) ने जनजाति समूह को एक निम्न स्तरीय सामाजिक समूह के रूप मे माना है, जिसके सदस्य एक सामान्य भाषा बोलते हैं, उसकी एक शासन प्रणाली होती हैतथा सामान्य उद्देश्यों की पूर्ति हेतु तथा युद्ध इत्यादि की स्थिति मे एकता का प्रदर्शन करते हैं।

"इम्पीरियल गजेटियर" ने जनजाति के सामान्य क्षेत्र पर

जोर दिया, " पेरी" और " रिवर्स" ने जनजाति संगठन को महत्त्व दिया, " रेड क्लिफ ब्राउन" ने जनजाति युद्ध पर जोर दिया, और क्रोवर" महोदय ने संस्कृति को महत्त्व दिया है । अत: यह स्पष्ट हो जाता है कि जनजाति शब्द की परिभाषा किसी एक विशेष संदर्भ मे तो की जा सकती है, लकिन सभी विशेषताओं को अंतर्निहित करके नही की जा सकती है ।

शोधकर्ता के बिचार से प्राकृतिक परिसीमाओं के बीच बसे हुये स्त्री-पुरूषों का वह समुदाय जो मानव समुदाय से अलग मान्यताओं पर जीवित रहता है, आज जनजातीय समूह कहलता है । सामाजिक गतिशीलता के कारण उत्पन्न हुये परिवर्तन के कारण कुछ लोग अपना अभियोजन, परिस्थितिवश, समाज की गतिशीलता के साथ न कर सके, और उनका विकास अवरूद्ध होता चला गया । इस प्रकार से वे एक नाम, एक भाषा, एक क्षेत्र और एक प्रकार की मान्यता या रीति-रिवाज को मानने बाले हो गये, जिसने अन्य मानव समूहों से विलगता स्थापित कर दी । इन्ही विशेषताओं को धारण करने बाले मानव समूह को " जनजाति " के नाम से पुकारा जाता है ।

जनजाति समूह की उत्पत्ति :-

मानव वैज्ञानिकों ने जनजातियों की उत्पत्ति के संदर्भ मे विभिन्न मत स्थापित किये हैं । इसका मुख्य कारण है कि प्रत्येक मानव वैज्ञानिक ने किसी एक ही जनजाति का अध्ययन किया और उसी को आधार मानकर उसने उत्पत्ति का वर्णन किया है । अत: सभी विद्वानों के मतों के अध्ययन के पश्चात " डी०एन० मजूमदार" । 1965, पृ0-374 । ने जनजातियों की उत्पत्ति के निम्न आधार प्रस्तुत किये हैं :-

प्रथम- विचारधारा के अनुसार जनजातीय समूह भारतीय मूल वासियों के वंशज हैं । इनमें आज भी इनकी मूल विशेषतायें पायी जाती हैं ।

द्वितीय- विचारधार के अनुसार जनजाति समूह भारतीय खानाबदोष जातियों के वंशज हैं । ये जातियाँ किन्ही कारणों से सम्पूर्ण देश मे घूमती रहती थी, और जीवन यापन के विभिन्न साधन जुटाती थीं ।

तृतीय- विचारधारा के अनुसार मे मुगलकालीन युग के राजपूतों के वंशज हैं, जो "क्षत्री आन" को जीवित रखने के लिए जंगलों और पहाड़ी स्थानों को भाग गये थे । ये लोग स्वयं को चित्तौड़ के राजा "राणा प्रताप" के वंशज बताते हैं । इनका कथन है कि 1308 ए०डी० में अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण से ग्रस्त होकर, इस्लाम धर्म को स्वीकार न करने के कारण और स्वयं को हिन्दू कहलाते रहने के लिये जंगल और पहाड़ों को अपना निवास स्थल बनाया था । " भार्गव " । 1949 । के विचार से यह विचारधारा ही उत्तम है क्योंकि आज भी ऐसी जनजातियाँ है जो स्वयं को हिन्दुओं से मुसलमान परिवर्तित मानते हैं ।

चतुर्थ -विचारधारा के अनुसार ये प्राकृतिक परिसीमाओं के बीच बसे हुये लोगों के वंशज हैं, जिनके सम्बन्ध अन्य मानव समुदायों से विलग हो गये हैं । अतः इनको आज जनजाति के रूप में माना जाता है ।

पंचम- विचारधारा के अनुसार कुछ लोग अपना अभियोजन, परिस्थितिवश समाज की गतिशीलता के साथ न कर सके और विकास मे पिछड़ते चले गये । अतः धीरे-धीरे ये लोग जनजाति समूह मे परिवर्तित होते गये ।

जनजाति समूह लगभग दस या बारह परिवारों के समूह मे रहते हैं और कार्य करते हैं । इस समूह को " गैंग" का नाम दिया जाता है ।

इस "गैंग" का एक नेता होता है । इस नेता का चुनाव चालाकी में तेज या योग्यता में सबसे अधिक आदि विशेषताओं के आधार पर होता है या फिर वंशानुक्रम से चली आ रही नेतृत्व परिपाटी के द्वारा । कभी-कभी विभिन्न प्रकार के " गैंग्स " मिलकर एक ही नेता के पीछे जीवन यापन भी करते हैं और कार्य भी करते हैं । कुछ " गैंग्स " का जन्म या पहचान उनके प्रभावशाली नेता के नाम से ही प्रसिद्ध होता है । " मजूमदार " ।1965,पृ0-363। ने जनजाति समूह के नेता के कर्त्तव्यों को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया है :-

1- जनजाति का नेता अपने समूह मे से अपनी सहायता के लिये और जनजाति की रक्षा के लिए उनमें से कुछ सदस्यों की चुनाव करता है ।

2- वह इन सदस्यों और उनके परिवारों के सदस्यों का भरण-पोषण अपने खर्चे पर करता है ।

3- नेता स्थानीय पुलिस का मुखबिर होता है, इससे वह अपनी जनजाति की सुरक्षा करता है ।

4- वह ऐसे व्यक्तियों को खोजता है जिनके माध्यम से चोरी की वस्तुओं का विक्रय होता रहे ।

5- वह स्थान, योजना, समय और तरीकों का चुनाव करता है, ताकि धन को कमा सकें ।

6- कभी-कभी वह अपने सदस्यों को पुलिस से बचाने के लिए निरपराध व्यक्तियों को फसा देते हैं ।

7- ये लोग धनवान व्यक्तियों को अपने चंगुल मे फसाने के लिए सुन्दर युवतियों का प्रयोग भी करते हैं ।

8- ये स्त्रियों को जासूसी के रूप में भी प्रयोग करते हैं । जासूस स्त्रियाँ इनको

धनवान व्यक्तियों के बारे मे पूर्ण सूचना देती हैं ।

9- ये लोग ऐसे स्थानों की व्यवस्था भी करते हैं जहाँ पर चोरी करके, या उठाईगीरी करके इनके सदस्य छिप सकते हैं ।

10- इनमें शादी सम्बन्ध अपराध, चोरी, चालाकी पूर्ण कार्य के आधार पर निश्चित होते हैं ।

11- यदि इनके " गैग्स " में फूट पड़ जाती है तो ये लोग पंचायत के द्वारा इसका निपटारा भी कर लेतें हैं ।

12- इनमें एक प्रथा भी है कि यदि पुलिस के समक्ष किसी को जेल मे बन्द होना होता है, तो उसका भी चुनाव किया जाता है । उनका " भगत " आता है और अनाज के कुछ दानें लेकर नाम उच्चारित करता है और जो संदिग्ध है, वही पुलिस मे बन्द हो जाता है ।

इस प्रकार से यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक जनजाति में "गैग्स" होते हैं जो सम्पूर्ण जनजाति पर शासन करते हैं । इनका मुख्य कार्य असामाजिक तरीकों के द्वारा विकसित सामाजिक व्यवस्था से धन को हस्तगत करना होता है । अत: इनके प्रकारों का अवलोकन करना अनिवार्य हो जाता है ।

<u>जनजाति समूह के प्रकार</u> -

" डा० ललित प्रसाद विद्यार्थी" । 1975, पृ0-4 । ने अपनी पुस्तक " भारतीय आदिवासी " में जनजातियों को निवास के आधार पर तीन श्रेणियों मे विभक्त किया है -

<u>प्रथम श्रेणी</u> मे वे जनजातियाँ आती है जो अभी भी आदिम अर्थ व्यवस्था बनाये हुये हैं । ये लोग घने जंगलों और पहाड़ो मे घूमते फिरते रहते हैं । इनका निवास स्थान बदलता रहता है । इनमें उत्तर प्रदेश के नट, कबूतरे, राजी, बिहार के

खडिया, बिहोर, और पहाडिया, आसाम के कुकी, मध्य प्रदेश के पहाडीय भाड़िया, आन्ध्र प्रदेश के कोया, कोटा रेड्डी, पालियन, कादर, और उडीसा के जुआँग आदि उल्लेखनीय हैं। ये जातियाँ अपने ग्रामीण पडोसियों के सम्पर्क मे आने से पूर्व जंगलों और पहाडों पर रहती थीं और शिकार तथा जंगलों से अपनी आवश्यकता की वस्तुयें जुटाती थी,। इनमें से बहुत से लोग मिट्टी के बर्तन बनाना भी नहीं जानते थे और बाँस के नल के तथा पत्तों के दोनों से अपना काम चलाते थे। शिकार तथा कंदमूल फल जमा करने के लिये भी ये आदिम उपकरणों का ही प्रयोग करते थे। ये लोग या तो वस्त्र नहीं पहनते थे या फिर घास फूँस को कमर के ईर्द-गिर्द बाँध लेते थे। इनके पालतू पशुओं में कुत्ता मुख्य था, घोड़े तथा ढोर को पालतू बनाने की महत्ता इनको विदित न थी। इनकी झोपडियाँ भी बहुत आदिम ढ़ंग की होती थी। बाँस और घास-फूँस से छोटी सी झोपड़ी का निर्माण कर लेते थे, जिसे छोडकर स्थानान्तरित होने मे इन्हें किसी प्रकार का लोभ अथवा क्षोभ नही होता था।

इस श्रेणी की जनजातियों को घुमक्कड । नोमेडिक । जनजाति के नाम से जाना जाता है।

<u>दूसरी श्रेणी</u> मे वे जनजातियाँ आतीं हैं, जो कृषि कार्य और जंगली वस्तुओं के विनियम के द्वारा जीवन यापन करते हैं। ये लोग पहाडों की ढालों और पठारों पर रहते हैं। इनके यहाँ पर खेती करने को " झूम " कहते हैं। इनमें कोरवा, असुर, माल, पहाडिया, नागा, लखेडगारो, बैगा, मुड़िया, दण्डामी और भड़िया, कंध, सओरा, आदि जनजातियाँ आती है। कुछ समय पूर्व तक यह आदिम रूप से खेती किया करते थे। इस प्रकार की खेती मे पहाड़ो की ढालों पर वनस्पति को जलाकर राख बिखेर दी जाती है। लकड़ी के एक नुकीले

डंडे से, जिसमें कभी-कभी पत्थर या लोहे का छोटा फल लगा होता है, धरती खुरच कर उस पर बीज बिखेर दिये जाते हैं । वे इस डंडे को " हो " कहते हैं और इस प्रकार की खेती को " हो कृषि " कहते हैं । इनको किसी भी प्रकार की खाद या सिंचाई का ज्ञान नही था । साथ ही बीज उगने की प्रक्रिया का भी ज्ञान नही था । ये लोग प्रत्येक वर्ष कृषि हेतु नया भूखण्ड खोजा करते और पुरानी भूमि को परती छोड़ देते थे । इस प्रकार की खेती को वे " झूम ", " बेवार ", "पोंडू ", आदि नामों से पुकारते हैं । कृषि के अतिरिक्त ये लोग जंगलों से आँवला, बेर, खैर की छाल, महुआ, तेंदू, पलाश के फूल, लाख आदि एकत्रित करके ठेकेदारों के हाथ बेचने का धन्धा करते हैं । ये लोग पशु पालते हैं और उनके दूध से घीआदि बनाना जानते हैं । इनके शिकार के हरबे और अन्य उपकरण भी काफी सुधरे हुये होते हैं । पहली श्रेणी की जातियों की भाँति ही ये लोग अस्थाई झोपड़ियाँ बनाते हैं ।

तृतीय श्रेणी मे वे जनजातियाँ आती है, जिनके विषय मे यह कहा जाता है कि वे स्थायी रूप से भूखण्ड पर बस चुकी हैं । इन्होने भौतिक वातावरण से भरपूर लाभ उठाया है । उत्तर प्रदेश और बिहार की तराई के निवासी साहरिया, थारू और भोक्सा, जौनसार, बाबर के खस, मिर्जापुर के माँझी और खरवार, छोटा नागपुर के मुण्डा, हो, उराँव, बंगाल के पोलियाँ और संथाल, असम के खासी और मनीपुरी, मध्य प्रदेश के परजाय, भटरा और राजगोड़, उड़ीसा के गडावा, मद्रास के कोटा, बडगा और इल्ला तथा पश्चिम भारत के भील आदि इस श्रेणी की प्रमुख जनजातियाँ हैं । ये लोग अपने ग्रामीण पडोसियों की तरह से खेती करते हैं, पशु पालते हैं, मुर्गी, बतख, और सुअरों को पालकर ये लोग माँसाहारी व्यवसाय भी अपनाते हैं । ये स्थायी रूप से घर और गाँव बसा

कर रहते हैं । मिट्टी से बर्तन बनाना, लकड़ी से सामान बनाना, धातुओं को लगाना, औजार बनाना, सूती व ऊनी कपड़ा बुनना आदि धंधों का खूब प्रयोग करते हैं । ये लोग अपने सामान को घूम-घूम कर भी बेचते हैं और हाट मे भी ले जाते हैं । इनके परिवारों मे भौतिक विकास के सभी साधन प्राय: देखने को मिलते हैं ।

उपर्युक्त जनजातियों के श्रेणी विभाजन से स्पष्ट होता है कि ये लोग भी सभ्य मानव जीवन व्यतीत करना चाहते हैं । अत: शोधकर्ता ने अपने शोध विषय हेतु नट-कबूतरा ‌।नोमेडिक।, साहरिया ।ट्रान्जीशनल।, और खँगार ।एग्रीकल्चरल। जनजाति को चुना है । अत: इनके ऊपर भी विचार करना आवश्यक प्रतीत होता है :-

नट-कबूतरा -

बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र की प्रभुत्व जनजाति " नट-कबूतरा । है । नट-कबूतरा उत्तर भारत मे पायी जाने वाली एक ऐसी तथा कथित "अपराधी जनजाति" है जिसके बारे में लोग बहुत कम जानते हैं । इनके विषय मे कोई साहित्य भी शायद कठिनाई से उपलब्ध हो । झाँसी जनपद के गजट मे इनका कहीं भी उल्लेख नही किया गया है । सन् 1981 की जनगणना रिपोर्ट में भी इनका सही विवरण प्राप्त नहीं होता है । हरिजन तथा समाज कल्याण विभाग झाँसी ने इनके विषय में थोडी बहुत जानकारी एकत्र की है ।

झाँसी जनपद की तीन तहसीलों के नौ गाँवों में कबूतरों के डेरे । 154 परिवार । पाये जाते हैं । जिनका विवरण निम्न प्रकार है -

क्रमांक	तहसील का नाम	गाँव का नाम	परिवारों की संख्या
1-	मोंठ	1- बराठा	17 परिवार
		2- पहाड़ी बुजुर्ग	15 ,,
		3- कल्यानपुर	2 ,,
		4- गोपालपुरा	25 ,,
		5- जौरा	4 ,,
2-	झाँसी	1- मथनपुरा	23 ,,
		2- दातार नगर परवई	45 ,,
		3- गोरा मछिया	13 ,,
3-	गरौठा	1- गौंती	10 ,,

उत्पत्ति सम्बन्धी विचार धारायें -

नट-कबूतरों की उत्पत्ति किस प्रकार हुई है, इस विषय मे निश्चित रूप सेकुछ नही कहा जा सकता । इनके शारीरिक लक्षण अपने पास के क्षेत्रों के निवासियों से भिन्न हैं । जन्म के समय इनका रंग बहुत गोरा होता है ।सदैव धूप मे रहने के कारणं पुरूषों का शरीर साँवला पड़ जाता है। इनकी नाक नोकदार, सुन्दर, भूरी आँखें तथा कद लम्बे होते हैं । इस प्रकार की शारीरिक विशेषतायें बुन्देलखण्ड क्षेत्र की प्रजातों मे नही पायी जातीं । कुछ लोगों ने इन्ही प्रजातीय लक्षणों के आधार पर इन्हें जिप्सी जनजाति की संतानें (Discendant of the gypsytribe) बताया है । एक दूसरी विचार धारा के अनुसार कबूतरा-नटों की उत्पत्ति नट जन-जाति से हुई है । नट उत्तर भारत की एक बहु चर्चित जन-जाति है । इस जनजाति के सदस्य सामान्यतया

गाँवों में या कभी-कभी शहरों में खेल तमाशे दिखाते हुये देखे जा सकते हैं। रस्सियों पर चलना, ऊँचे-ऊँचे बाँसों पर शरीर को संतुलित करना, शरीर को विभिन्न प्रकार से मोड़ना तथा शरीर-संतुलन के आश्चर्यजनक खेल दिखाकर ये अपनी जीविका कमाते हैं। सर्कस, सिनेमा, क्लब तथा अन्य अनेक प्रकार के आधुनिक मनोरंजन के विस्तार के कारण नटों का धन्धा कमजोर पड़ने लगा। अपनी आय कम होने के कारण इनमें से बहुतों ने खेल दिखाने के बाद भीख माँगना भी आरम्भ कर दिया। नटों के एक बहुत बड़े समूह ने इसका विरोध किया और वह भीख माँगने वालों से अलग हो गया। इस अलग हुए समूह के सदस्य जो कि वास्तव मे नट ही थे, अनेक प्रकार के ऐसे करतबों के अभ्यस्त थे जिन्होंने उन्हें अपराध कार्यों में प्रवृत्त कर दिया। यही कबूतरा-नट कहलाने लगे। ये लोग अधिकतर राहजनी या चोरी का कार्य करते हैं तथा इसके बाद भागते हैं। अतः दौड़ने मे ये बहुत तेज होते हैं। यही कारण है कि इन्हें कबूतरा कहते हैं। इनकी स्त्रियाँ भी जो कबूतरी कहलाती है दौड़ने में बहुत तेज होती हैं।

इस समय नटों तथा कबूतरा-नटों के मध्य दूरी इतनी अधिक बढ़ गयी है कि दोनों आपस में किसी भी प्रकार के सम्बन्ध नही रखते हैं। इनमें आपस में किसी प्रकार की शादी-विवाह भी नही होते हैं। दोनों ही एक दूसरे से नफरत करते हैं तथा एक दूसरे की कुत्सा करते हैं। कबूतरा-नट लोग नटों को भिखारी कहते हैं, तथा नट लोग कबूतरा-नटों को चोर कहते हैं।

कबूतरा-नट की उत्पत्ति की एक तीसरी विचारधारा भी प्रस्तुत की जा सकती है। ये अपने नाम के आगे 'सिंह' का प्रयोग करतें हैं तथा अपने को क्षत्रिय राजपूत कहते हैं। हो सकता है कि इनका सम्बन्ध राजस्थान के किन्ही राजपूत क्षत्रियों से हो। अनेक अपराधी जन-जातियों की उत्पत्ति

इस प्रकार से हुई है । ये वह राजपूत भी हो सकते हैं जिन्होंने इस्लाम के भय से भ्रमणकारी जीवन आरम्भ किया हो, इनमे से कोई भी विचार-धारा ठीक हो सकती है । इस विषय मे कोई भी निश्चित बात गम्भीर अध्ययन के बाद ही की जा सकती है ।

कबूतरा-नट कहीं भी स्थायी रूप से नहीं रहते हैं । इसलिए इनके निवास स्थान को डेरा कहा जाता है । बुन्देखण्ड में झाँसी के अतिरिक्त ये ललितपुर जनपद मे भी पाये जाते हैं, जो पहले झाँसी जनपद के अन्तर्गत ही आता था । बुन्देलखण्ड के अतिरिक्त ये बदायूँ जनपद के राससामाधी तथा धापटोरा और बरेली जनपद के उम्नासी तथा डिमना गाँवों मे भी पाये जाते हैं ।

सामाजिक तथा आर्थिक जीवन -

कबूतरा नटों की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय तथा शोचनीय है । इनकी अत्यन्त गिरी हुई आर्थिक स्थिति की कल्पना इसी बात सेकी जा सकती है कि इनकी लड़कियाँ बचपन मे ही गिरवी रख दी जाती है या बेच दी जाती हैं । इनकी सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति अत्यन्त खराब होने के कारण क्या हैं? यह एक शोध का विषय है ।

ऐक सहभागी अवलोकन से यह मालूम हुआ कि लगभग आधे परिवारों के पास खेती के लिए जमीन है परन्तु ये खेती नही करते हैं । केवल दातार नगर परवई गाँव के 6 परिवारों में खेती का काम होता है । इन परिवारों के पास खेती का सामान तथा हल बैल आदि भी है । अन्य किसी भी गाँव का कोई भी परिवार खेती का कार्य नही करता है । इनकी जमीनें या तो खाली पड़ी रहती है या वे बटाई पर खेती के लिए दे दी जाती हैं ।

अधिकांश परिवारों की आजीविका पीढ़ियों से चली आने वाली अपराधी वृत्ति ही है ।

नट-कबूतरों मे शिक्षा का अभाव है । झाँसी जनपद में पाये जाने वाले सभी 154 परिवारों में केवल 31 व्यक्ति पढ़े लिखे हैं । इनमें से 18 व्यक्ति दातार नगर परवई गाँव के हैं । नट-कबूतरों मे अशिक्षा के अनेक कारण हैं । इनमे से प्रमुख कारण इनका किसी एक जगह स्थिरता से रहने का अभाव है । युवक कबूतरा-नट कठिनाई से अपने गाँव मे मिल पाते हैं । ये या तो जेल मे रहते हैं या पुलिस से बचने के लिए इधर-उधर भागते रहते हैं । स्थायी निवास न होने के कारण इनके बच्चों को भी इधर-उधर भटकना पड़ता है ।

परिवार तथा विवाह -

संयुक्त परिवार भारतीय समाज की एक प्रमुख विशेषता रही है । कबूतरो-नटों मे भी संयुक्त परिवार प्रणाली पायी जाती है । परिवार में पुरूष सदस्यों को महत्व अधिक होता है । परन्तु स्त्रियों की स्थिति भी काफी महत्व की होती है । अधिकांशतः बालिग पुरूष जेल मे रहते हैं । या इधर-उधर भटकते रहते हैं, अतः मुकद्में की पैरवी करना, वकील तय करना, घर की देख-भाल करना, बाजार से सामान की खरीद करना तथा अन्य सभी कार्य स्त्रियाँ ही करती हैं । झाँसी शहर मे इन कबूतरियों को इधरउधर घूमते देखा जा सकता है । कबूतरियाँ अपराधी कार्यों मे भी पुरूष सदस्यों का हाथ बटाती हैं अतः परिवार में इनका महत्व बढ़ जाता है ।

कबूतरा-नटों में विवाह एक अनिवार्य संस्था है परन्तु आधुनिक युगमें इसमें अनेक परिवर्तन हुये हैं । अधिकतर लड़कियों को छोटी आयु मे ही, धन की आवश्यकता पड़ने पर बेच दिया जाता है । जब कभी भी किसी

कबूतरा-नट को आवश्यकता होती है तो वह अपनी ही जन-जाति के किसी ऐसे कबूतरा-नट के यहाँ अपनी लड़की की शादी तय कर देता है, जिसके यहाँ उसकी लड़कीके योग्य लड़का हो । जब लड़की बड़ी हो जाती है तो उसी लड़के के साथ शादी कर दी जाती है । यदि इसी बीच लड़के की मृत्यु हो जाती है तो लड़की के माता-पिता लड़की का विवाह अन्य किसी कबूतरा-नट से करने के लिए स्वतंत्र होते हैं तथा यदि लड़की की मृत्यु हो जाती है तो उसके माता-पिता को किसी भी तरह का कोई हरजाना नहीं देना पड़ता है ।

कबूतरा-नटों मे विवाहित तथा अविवाहित दोनों ही प्रकार की स्त्रियाँ यौनाचार में सक्षम रूप मे स्वतंत्र होती हैं । कुमारीत्व का इनमें कोई विशेष महत्त्व नही होता है । सामान्यतया एक विवाह प्रथा का प्रचलन है । सामान्यत: कबूतरा-नटों मे वेश्यावृत्ति नहीं पायी जाती है, परन्तु अत्यधिक सुन्दरी होने के कारण कभी-कभी कबूतरियाँ इस पेशे के द्वारा भी धनोपार्जन कर लेती हैं । सामान्यतया ये वेश्यावृत्ति का कार्य उसी समय करती हैं जब इन्हें धन की अत्यधिक आवश्यकता होती है । कुमारीत्व का विशेष ध्यान नही देते हैं । स्त्रियाँ अकेले भी तथा पुरुषों के साथ बैठकर भी खूब शराब पीतीं हैं । ऐसा लगभग प्रतिदिन ही होता है । जब कभी भी इनके पास कहीं से धन आ जाता है तो शराब के साथ ही साथ नाच गाने का भी आयोजन होता है । इनकी अपनी भाषा गीत, संगीत तथा नृत्य शैली होती है, जिस पर अलग से शोध-कार्य किया जा सकता है ।

रीति-रिवाज तथा धार्मिक विश्वास -

अन्य अपराधी जन-जातियों के समान कबूतरा-नट भी बड़े ही शंकालु स्वभाव के होते हैं । ये अपने समुदाय से बाहर के किसी व्यक्ति पर

सामान्यतया विश्वास नहीं करते । जिस व्यक्ति पर इन्हें थोड़ा सा भी शक हो जाता है उसे गम्भीर नुकसान पहुंचा सकते हैं ।

ये हिन्दू देवी-देवताओं की पूजा करते हैं तथा उच्च म नैतिक मूल्यों मे विश्वास करते हैं । किसी बाहरी व्यक्ति के द्वारा दिया गया उपहार कभी भी स्वीकार नहीं करते हैं । दान या भीख लेने को ये घोर अपमान मानते है, तथा हराम का खाना ये कभी पसन्द नहीं करते हैं ।

धार्मिक विचार धारा के होने के कारण इनके स्वभाव मे स्पष्टवादिता भी होती है । इनमें कठोरता के साथ ही साथ स्वाभिमान की भावना भी बड़ी प्रबल होती है । जो व्यक्ति इन्हें नुकसान पहुंचाता है या इनके विरुद्ध पुलिस को खबर करता है उसेकभी नही छोड़ते हैं, परन्तु जो व्यक्ति इनकी सही कामों में सहायता करता है उसका ये हृदय से सम्मान करते हैं । जो लोग इनकी अपराधी कार्यों मे मदद करते हैं उनसे ये हृदय से नफरत करते हैं । अपने विचारों, व्यवहारों तथा आदर्शों से ये सरल होते हैं तथा सरलता से इनके सम्बन्ध मे अध्ययन किया जा सकता है । प्राचीन धार्मिक तथा नैतिक रीति-रिवाजों पर इनका अटल विश्वास रहता है । ये जिस जमीन पर बैठकर खाना बनाकर खा लेते हैं उस जमीन के मालिक को कभी भी किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुंचाते हैं, बल्कि उसकी रक्षा करते हैं ।

<u>कबूतरा-नट और अपराध-</u>

कबूतरा-नट एक अपराधी जन-जाति है । अपराध इनका प्रमुख पेशा है, जिसे छोड़ पाना इनके लिये आसान नही है । इनके समुदाय मे अपराध को केवल सामाजिक ही नही धार्मिक मान्यता प्राप्त है । जो कबूतरा-नट अपराध नहीं करता है उसे अच्छा नही समझा जाता है । ये सामान्यतया

ये सामान्यतः निम्न प्रकार के अपराध करते हैं -

1- कच्ची शराब बनाना और बेचना -

लगभग प्रत्येक कबूतरा-नट परिवार में कच्ची देशी शराब बनाने और बेचने का कार्य होता है । इस कार्य को मुख्यतया स्त्रियाँ करती है, स्त्रियाँ ही कच्ची शराब बनाती हैं (कभी-कभी इस कार्य में पुरूष उनकी सहायता करते हैं) और उसे शहर में आकर बेचती हैं । कभी किसी भी पुरूष कबूतरा-नट को शराब बेचते हुये नही देखा गया है ।

2- राहजनी -

पैदल, साइकिल पर या स्कूटर पर सड़क के रास्ते जाते हुये व्यक्ति का धन तथा सामान छीन लेना इनका दूसरा प्रमुख व्यवसाय है । यहाँ पर सबसे अधिक ध्यान देने की बात यह है कि ये राहजनी के साथ-साथ फौजदारी (मारपीट) अवश्य करते हैं । यदि कोई व्यक्ति इनसे घबरा कर अपने आप ही अपना सामान इन्हें देना चाहे तो ये नहीं लेते हैं । " हम हराम का नही खाते हैं, मेहनत का खाते हैं ।" ऐसा कहते हुये ये पहले राहगीर को मारते-पीटते हैं फिर छीन कर उसका सामान लेते हैं । सामान्यतया ये राहजनी का कार्य अपने गाँवों से काफी दूर जाकर करते हैं ।

3- सेंध लगाना तथा चोरी करना -

घरों से सेंध लगाकर चोरी करने का कार्य सामान्यतया बरसात के दिनों मे किया जाता है । बरसात में घरों की दीवारें पानी के कारण कमजोर पड़ जाती हैं। अतः सेंध लगाने मे आसानी रहती है । भारी वर्षा के समय आवाज भी कम होती है । इस कार्य मे स्त्रियाँ भी कभी-कभी इनका सहयोग करती हैं । इनकी चाल इतनी सधी हुई होती है कि सोते हुये व्यक्ति के पास से सौ कबूतरा-नट गुजर जायेगें और उसे किसी तरह की आहट नहीं होगी ।

4- बाल कतरनी । बाल कटी करना । -

जब खेतों में फसलें तैयार खड़ी होती हैं तो ये खेती में चोरी करने का काम करते हैं । ये खेत से पूरा पौधा कभी नहीं उखाड़ते हैं । बल्कि केवल ऊपर का वह भाग जिसमें बाल होती है हाथों से ही बड़ी सफाई से तोड लेते हैं । इस कार्य में ये इतने तेज होते हैं कि एक रात ही मे दो बीघे खेत की बालें उतार लेते हैं । इस अपराध मे स्त्रियां तथा पुरूष दोनों भाग लेते हैं ।

5- डकैतों को सूचना देने का कार्य -

कबूतरा-नटों द्वारा आरम्भ किया गया यह नये किस्म का अपराध है । ये शहर में रहने वाले धनवान लोगों की सूचना डकैतों को देते हैं तथा डकैती पड़ जाने के बाद उसमें से एक छोटा सा हिस्सा प्राप्त करते हैं । अनेक बार इन्हीं की सूचनाओं के आधार पर डकैतों ने झाँसी के कुछ बच्चों का अपहरण भी किया और वापसी की एक मोटी रकम वसूल की । कबूतरा-नट अधिकतर ऐसे गाँवों मे रहते हैं जहाँ गैर कबूतरा-नट परिवार भी रहते हैं अत: ये बच्चे अपहरण करके अपने पास नहीं रख सकते हैं । पुलिस भी सदैव इनकी निगरानी करती रहती है । अत: ये इस प्रकार का काम स्वयं न करके डकैतों के द्वारा कराते हैं ।

एक सहभागी अवलोकन के द्वारा अपराध सम्बन्धी इनके विषय में और भी काफी सूचनायें प्राप्त हुयी है ।

अपराध के लिये बरसात इन्हें सबसे अधिक सुभीते की होती है अत: वर्षा ऋतु को यह सबसे अच्छा समझते हैं । वर्षा के मौसम मे ये कभी भी अपने डेरों में नहीं मिलते हैं । गर्मियों के दिन इनके लिए सबसे बुरे होते हैं । सामान्यतया लोग बाहर सोते है तथा थोड़ी सी आवाज होने पर पकड़े जाने का डर रहता है ।

बूढ़ा कबूतरा-नट भी अपराधी कार्य ही करता है । शरीर से अशक्त होने के कारण वह चोरी, राहजनी, बाल कतरनी या अन्य अपराध करने के योग्य नहीं रह जाता है अतः वह अपने गाँव के पास ही मुर्गी-मुर्गे तथा बकरा बकरी आदि की चोरी करता है ।

वर्तमान स्थिति-

सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है । इसकी गति में तो परिवर्तन हो सकता है, लेकिन ऐसा असम्भव है कि कोई भी समाज इससे अछूता रहे । शहरी क्षेत्रों में अधिक परिवर्तन हुये हैं तथा तीव्र गति से हुये हैं । ग्रामीण क्षेत्रों मे परिवर्तन की गति धीमी रही है । इसी प्रकार नगरीय तथा सभ्य लोगों के विचारों-आदर्शों तथा मूल्यों में बड़े परिवर्तन हुये हैं परन्तु जन-जातियों में ये परिवर्तन नगण्य है ।यह एक आश्चर्य का विषय है कि झाँसी नगर के इतने समीप होते हुये कबूतरा-नटों ने अपने अपने आपको गैर कबूतरा लोगों से किस प्रकार अलग रखा है ।

आज भी कबूतरा-नटों में स्त्रियाँ एक विशेष प्रकार की कुरती तथा सलवार पहनती हैं । पुरुष सामान्यतः लुंगी तथा कुरता या कमीज पहनते हैं । स्त्रियों को लाल रंग से आज भी बहुत प्यार है । इनके कपड़े या तो लाल रंग के होते हैं या उन पर लाल रंग के ठप्पे लगे होते हैं ।

शिक्षा के क्षेत्र मे भी कोई उल्लेखनीय परिवर्तन इनमें नही हुआ है । सम्पूर्ण कबूतरा-नट परिवारों में शिक्षित व्यक्तियों का प्रतिशत बहुत कम है । ललितपुर जनपद के एक कबूतरा-नट ने एम०बी०बी०एस० किया हुआ है और आजकल एक सरकारी अस्पताल में कार्य कर रहा है । इसी प्रकार से झाँसी जनपद के गौंती ग्राम का इस जाति का एक व्यक्ति दतिया जनपद में प्रधानाचार्य

के पद पर कार्य कर रहा है ।

इनके सामाजिक तथा आर्थिक जीवन मे आज भी वही पिछड़ापन है, तथा इसमें कोई उल्लेखनीय परिवर्तन देखने में नहीं मिलता । ग्राम दातार नगर परवई के मुखिया जी, स्वयं कबूतरा-नट हैं, के प्रयासों से इस गाँव में कुछ परिवर्तन अवश्य देखने में आया है ।

ग्राम दातार नगर परवई में नट कबूतरों के पुनर्वास के लिए हरिजन तथा समाज कल्याण विभाग, झाँसी की तरफ से एक योजना सन् 1976 में बनाई गई थी । इस योजना में कबूतरों के लिए हल-बैल, भवन निर्माण, भैंस पालन तथा सिचाई की सुविधाओं के लिए 1,22,500.00 (एक लाख बाइस हजार पाँच सौ) रुपयों की राज्य सरकार से माँग की गयी थी, परन्तु निदेशक हरिजन तथा समाज कल्याण विभाग उत्तर प्रदेश लखनऊ के द्वारा इसे स्वीकृति न मिलने के कारण यह योजना फाइल मे ही रखी रह गयी ।

<u>समस्यायें</u> -

कबूतरा-नट जन-जाति अनेक सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं से घिरी हुयी है । अनेक परिवारों के पास खेती के लिए जमीन है, लेकिन हल, बैल, खाद, बीज आदि न होने के कारण ये खेती स्वयं नहीं कर पाते हैं ।

शिक्षा का प्रसार इनमें बहुत ही कम है । राहजनी तथा चोरी आदि अपराधों के कारण इन्हें अधिकतर अपना गाँव छोड़कर भागना पड़ता है । अधिकतर युवा कबूतरा-नट जेल में रहते हैं । अपराधी कार्यों मे लगे रहते हैं या पुलिस से बचने के लिए इधर-उधर भागते रहते हैं । अतः इनका पारिवारिक जीवन सदैव अस्थिर रहता है । इस कारण ये अपने बच्चों को शिक्षा नहीं प्रदान करा पाते । इनमें शिक्षा का प्रसार बहुत ही आवश्यक है ।

जिन स्थानों पर शिक्षा का थोड़ा बहुत भी प्रसार हुआ है वहाँ बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं ।

शराब बनाना, चोरी, राहजनी तथा इसी तरह के अन्य अपराध इन्हें बहुत आसान मालूम पड़ते हैं । इनका कहना है कि अगर हम लोग ये काम न करें तो क्या करें ? यदि इनके गाँवों मे शिक्षा के साथ ही साथ छोटे उद्योग भी आरम्भ किये जायें तो इस दिशा में सुधार हो सकता है । परन्तु इसमें सफलता निश्चित रूप से मिलेगी ऐसा दावा नही किया जा सकता ।

कबूतरा-नटों में अपराध का एक कारण पुलिस भी है ।पुलिस विभाग के सभी कर्मचारी एक से नहीं होते हैं । कुछ नीच वृत्ति के पुलिस कर्मचारी इन्हें अपराध करने के लिये प्रोत्साहित करते हैं क्योंकि उन्हें अपराध से प्राप्त माल का एक हिस्सा प्राप्त होता है ।

खंगार -

" खंगार" जनजाति झाँसी प्रक्षेत्र में ही पाई जाती है । इनको "विद्यार्थी (1975) की जाति श्रेणियों के आधार पर कृषि कार्य में संलग्न रहने वाली जनजाति के रूप में माना गया है । " रसैल व हीरालाल" (1916, पृ0-439) ने इनको कोतवाल, जमादार, दरबारिया और चौकीदार आदि अनेक नामों से वर्णित किया है । बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र में यह जनजाति निम्न स्तरीय यानी अछूत मानी जाती है और ये सिर्फ कृषि मजदूरी ही करते हैं । ये मुख्य रूप से झाँसी, सागर, दमोह,नरसिंहपुर और जबलपुर आदि जिलों मे बहुतायत में पाये जाते हैं । 1911 की जन-गणना में इनकी जनसंख्या लगभग 13000 थी । हिन्दू विचार धारा ने खंगार" शब्द को "बाड़; एक गड्ढे को

चोरी करने के लिए दीवार में छेद करना ताकि व्यक्ति अन्दर जाकर आराम से माल को बाहर ले आये, ऐसे लोगों को "खंगार" की संज्ञा से विभूषित किया गया था। इसके बावजूद भी विद्वानों ने इन्हें आर्यों की संतान नहीं माना है। फिर भी, संदेह होता है कि बुन्देलखण्ड प्रखण्ड ही वास्तव में इनकी जन्मभूमि है या नहीं। इस संदर्भ में एक काहानी प्रचलित है :-

उत्पत्ति -

बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र मे "कुरार" एक प्रसिद्ध राजाओं का गढ़ रहा है। यहाँ पर खंगार राजा राज्य करते थे। एक बुन्देला राजपूत इनके राज्य में आकर रहने लगा। उसके एक बहुत ही सुन्दर, सुकुमार कन्या थी। उसको देखकर खंगार राजा ने उससे विवाह करने का प्रस्ताव बुन्देला राजपूत के पास भेजा। वह राजपूत खंगार राजा के साथ अपनी पुत्री का विवाह करना पसन्द नही करता था, लेकिन वह राजा को नाखुश भी नहीं करना चाहता था। उस राजपूत ने कहा कि मै एक शर्त पर अपनी पुत्री का विवाह खंगार राजा के साथ कर सकता हूँ, यदि सभी खंगार लोग उसके रीति-रिवाजों को मानकर शादी करने आयें। इस प्रकार से खंगार राजा शर्त मानने को तैयार हो गया। बुन्देला राजपूत ने सभी खंगार राज परिवार को रिश्तेदारों सहित विवाह में बुलाया। उसने विवाह की दावत मे खंगारों को खूब शराब पिलाई जिससे वे मूर्छित और अर्द्ध-मूर्छित से हो गये। तत्पश्चात राजपूत बुन्देला और उसके रिश्तेदारों मे मिलकर सबको मौत के घाट उतार दिया। खंगारों में से एक स्त्री जो गर्भवती थी, किसी प्रकार से कुसुम के खेतों मे छिपकर बच गई। इसी कारण से आज भी खंगार जाति कुसुम के फूल की पूजा करते हैं। साथ ही मृत्यु के बाद उनको कपड़े नही पहनाये जाते हैं, बल्कि "कफन" के साथ ही जलाया

जाता है । उस गर्भवती स्त्री ने एक फकीर के घर पहुँचकर शरण ली । इसके पश्चात वह एक डांगी जमींदार के यहाँ रहने के लिये चली गयी । बुन्देला राजपूतों को इसकी भनक लग गयी, और वे पीछा करते हुये उस डांगी परिवार के पास गये, उसने खंगार स्त्री को शरण देने से इंकार कर दिया । बुन्देला राजपूतों ने उससे कहा कि तुम्हारे परिवार की स्त्रियाँ एक साथ बैठकर भोजन करें, जिससे हम जान जायेगें कि कोई खंगार स्त्री आपके परिवार मे नही हैं । इस तरह से डांगी को पाँच बार " मैंहर" बाँटना पड़ा, जो सिर्फ अपने रिस्तेदारों को ही दिया जाता है । परिवार की सभी स्त्रियों के साथ उस खंगारिन स्त्री ने भी उस भोज को प्राप्त किया । इस तरह से बुन्देला राजपूतों को यह निश्चित हो गया कि वह खंगारिन स्त्री यहाँ पर नहीं है । अतः जो गर्भवती स्त्री बच गयी थी, वही आज की खंगार जनजाति की उत्पत्ति का कारण बनी । इसी परम्परा को आज भी खंगारों और डांगियों में पाया जाता है । वे विवाह के उत्सव मे मैंहर केक" का मिलकर के सेवन करते हैं ताकि हमारी पुरानी यादगार ताजा बनी रहे । बचाने वाले फकीर की याद में वे लोग आज भी एक प्रथा चलाते हैं, जिसमें एक बाला, या बाँटने वाला बनता है और अन्य मैंहर केक को ग्रहण करने वाले । देने वाले को देवत्व प्रदान करने वाला मानकर उसके प्रसाद को ग्रहण करते हैं । अतः उस(शरण-) फकीर को एक "देवता का दर्जा दिया जाता है ।

प्रस्तुत कहानी के आधार पर यह सिद्ध होता है कि खंगार बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के प्रमुख नागरिक हैं जिनकों बुन्देला राजपूतों ने नेस्त नाबूद कर दिया था । यह कहानी इतिहास के आधार पर सही नहीं भीं हो सकती है । आज यह भी कहा जाता है कि किसी भी खंगार को कुरार के किले में

प्रवेश नहीं करने दिया जाता है । क्योंकि जो कत्लेआम का नेता था उसकी आत्मा इस किले में भटकती रहती है, जो रात्रि के समय भयानक, और डरावने दृश्य प्रस्तुत करके रहने वालों को भगा देती है ।

सामाजिक रीति-रिवाज-

"रसल व हीरालाल" ॥ 1916,पृ0-443 ॥ ने लिखा है कि खंगार लोग बाह्य जाति या जनजाति को अपने में मिलाना पसंद नहीं करते हैं । यदि कोई उच्च जाति की स्त्री से खंगार पिता का बालक पैदा होता है तो वे उसको अपने में मिला लेते हैं, अन्य को नहीं । यदि कोई खंगार स्त्री किसी अन्य जाति वाले के साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित कर लेती है तो वे उसको समाज से बहिष्कृत कर देते हैं । यदि वही अपनी जाति खंगार के साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित करती है तो उसको समाज द्वारा एक भोज देकर क्षमा कर दिया जाता है । ये लोग माँस खाते हैं और मदिरा पीते हैं । ये लोग मुर्गा, मुर्गी स्वयं मार कर और सुअर या गौ माँस का भी सेवन करते हैं । ये लोग अन्य जातियाँ बनियाँ, सुनार, समेरा आदि के यहाँ पक्का खाना खाते हैं, और ब्राहमणों के यहाँ पर कच्चा खाना खाना पसंद करते हैं । ये लोग प्रतिदिन नहाते हैं और कपड़े उतार कर भोजन करते हैं । इनका भोजन चौके मे पवित्रता के साथ पकाया जाता है । ये लोग अपने नामों के अन्त मे "सिंह" जोड़ते हैं, ताकि इनको राजपूत माना या जाना जाये ।

व्यवसाय -

खंगारों का कहना है कि वे लोग सेना में सिपाही का कार्य किया करते थे । आज इनका व्यवसाय किरायेदार, मजदूरी, चौकीदारी आदि के रूप मे देखने को मिलता है । कुछ मानव शास्त्र विद्वानों ने इनको "चोर"

नाम से भी पुकारा है जिनका कार्य चोरी करना और सामान उठाकर भाग जाना माना था । ये कहावत प्रसिद्ध है - " खंगार तभी शक्तिशाली होता है जब उसके पास " खुन्ता" होता है ।" खुन्ता एक प्रकार का लोहे से बना, नुकीला हथियार होता है जिसके द्वारा वह दीवार में छेद करके "नकब" लगाता है और चोरी कर लेता है । सुनार और खंगार एक साथ ही धनवान बनते हैं । क्योंकि खंगार चोरी से माल लाकर सुनार को कम दामों में बेचता है और वह उसको गलाकर जेवरात बनाकर उच्च दामों में बेच देता है । अत: दोनों ही फायदे में रहते हैं । ये लोग विभिन्न प्रकार से चोरी करने के तरीकों में प्रसिद्ध होते हैं । जो लोग छत काटकर चोरी करते हैं उनको " छप्परसर " बोला जाता है, और जो लोग दीवार में छेद करके चोरी करते हैं उनको "खोनयाफोर" बोला जाता है । वर्तमान समय में ये लोग चोरी के साथ असामाजिक धन्धों को भी त्याग कर एक अच्छे नागरिक जीवन व्यतीत करने की कोशिश कर रहे हैं ।

बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के महान उपन्यासकार स्वर्गीय डा0-वृन्दावन-लाल वर्मा ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास " गढ़ कुण्डार " की भूमिका में खंगारों का वर्णन किया है । आपने भी " रसैल व हीरालाल" द्वारा वर्णित खंगारों का विनाश बुन्देला राजपूतों द्वारा हुआ है, को ही स्वीकार किया है । दोनों वर्णनों में उद्देश्यों की समानता है, और वर्णन की भिन्नता है । श्री वर्मा जी ने लिखा है कि खंगारों के साथ अनुसूचित जाति जैसा व्यवहार समाज में देखने को मिलता है । इसके विपरीत ये स्वयं को क्षत्री बताते हैं । उच्च जातियों का इनके साथ खान-पान का व्यवहार बिल्कुल भी नहीं है ।

<u>वर्तमान स्थिति</u> -

शोधकर्ता ने खंगारों की वर्तमान स्थिति जानने के लिये

"क्रास क्वश्चन्स" का प्रयोग किया । ये प्रश्न उत्पत्ति, धर्म, सामाजिक रीति-रिवाज, विवाह, व्यवसाय आदि से सम्बन्धित थे । निष्कर्ष के तौर पर यह पाया कि ये लोग सभ्य समाज के अंग बनना चाहते हैं । ये गाँवों और नगरों में भी रहने लगे हैं । ये लोग स्वभाव से जिद्दी, अक्खड़, स्वाभिमानी होते हैं । व्यवसाय के रूप मे खेतीबाड़ी, छोटी मोटी नौकरी, और चोरी आदि को अपनाते हैं । इनके परिवारों में रेडियो, टी0वी0 पर्याप्त मात्रा मे पाये जाते हैं । शिक्षा बहुत ही कम है । स्त्री शिक्षा बिल्कुल नहीं है । पंचायत के निर्णय को आज भी मानते हैं । मुखिया में विश्वास करते हैं । इनकी पंचायत को "कमेटी" का नाम दिया जाता है । समाज में इनको अनुसूचित जाति का दर्जा मिला हुआ है ।

<u>शिक्षा प्रसार</u> -

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 29 और 30 में शैक्षिक आरक्षणों की व्यवस्था की गई है । केवल संवैधानिक प्राविधानों से ही जनजाति के स्त्री पुरूषों का शैक्षिक पिछड़ापन दूर नही किया जा सकता है । इसके लिए शैक्षिक पिछड़ेपन के कारणों का जानना आवश्यक है, तभी हम शिक्षा का प्रसार सही रूप से कर सकते हैं । इनके (साहरियों) सर्वोन्मुखी विकास, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक आदि के लिये केन्द्रीय और राज्य सरकारों द्वारा प्रयत्न किये जा रहे हैं, लेकिन सफलता सम्भव नहीं हो सकी है ।

अतः शोधकर्ता ने अपने सर्वेक्षण में पाया कि इनमें साक्षरता का प्रतिशत 15% है । स्त्रियों की शिक्षा बिल्कुल भी नही है । शिक्षा का उच्च स्तर कक्षा-5 तक ही है । ये लोग पढ़ना चाहते हैं, लेकिन गरीबी, माँ-बाप की प्रेरणा का अभाव, अपने व्यवसाय मे लिप्त रहना, बड़ा परिवार,

सरकारी नीति का सही रूप से लागू न होनाऔर सामाजिक असमानता प्रमुख हैं । साक्षात्कार मे पाया गया कि वे महसूस करते हैं कि उनके माँ-बाप ने उन्हें क्यों नही पढ़ाया ? परिणाम स्वरूप शोधकर्ता ने शैक्षिक अभिवृत्ति को जानने के लिये अपने इस कार्य को उपयोगी माना ।

सहरिया -

शोधकर्ता ने "सहरिया" जनजाति को परिवर्तनशील ।ट्राँजिशनल। जनजाति के रूप में अध्ययन हेतु लिया है । ये लोग व्यवसाय के बारे में निश्चित नीति या क्रिया को नही अपनाते हैं, बल्कि बदलते रहते हैं । अतः इनको व्यवसायिक रूप से परिवर्तनशील जनजाति माना जाता है । इस जनजाति के अध्ययन के लिए शोधकर्ता ने बुंदेलखण्ड प्रक्षेत्र में फैले हुये परिवारों में जाकर साक्षात्कार किया, ग्रन्थों का अवलोकन किया और सरकारी दस्तावेजों का निरीक्षण किया ताकि इनकी वर्तमान और आदि कालीन स्थिति का सही ज्ञान प्राप्त हो ।

उत्पत्ति -

सहरिया जनजाति की उत्पत्ति के बारे में "क्रुक ।1975,पृ0-252। महोदय ने श्री एच0सी0फैराई, सी0एस0 के नोट को आधार माना है । यह जनजाति सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में फैली हुई है । वर्तमान समय मे इसका फैलाव जिला-झाँसी, ललितपुर मे सबसे अधिक पाया जाता है । इनके बारे मे 1891 की जनगणना मे कोई लिखित ब्यौरा प्राप्त नही होता है । फिर भी सुपरिनटेन्डेन्ट गर्वमेन्ट प्रिटिंग प्रेस कलकत्ता द्वारा प्रकाशित " हिन्दी फिंगर प्रिन्ट मैन्यूअल" । 1916 । में मध्य भारत में मोगये, बावरी, बदक, बागरी, बैरागी, कंजर, बंजारे, बेडिये, सुनोरिये, चन्द्रवेदिये, साँसी,नट, मुल्तानी, मेवाती, नायक, कंगार, तथा सहरिये विमुक्त जनजातियों का वर्णन मिलता है । 1891 की

जनगणना में "सोहरी" जनजाति का वर्णन है जिसके समान इनकी विशेषतायें देखने को मिलती है ।

प्रस्तुत जनजाति "साहरिया" की उत्पत्ति अरेबियन शब्द "साहरा" से हुई है । "साहरा" शब्द का अर्थ होता है"जंगलीपन" यानी जंगलों मे रहने वाली उत्तरी अफरीकन जनजाति । लेकिन "साहरिया" नाम "सबेराज" से बना है जिसकी उत्पत्ति संस्कृत लेखों में प्राप्त होती है । इनको "कोलरियन" या "द्राविडियन" जनजाति का वंशज माना गया है । ये जातियाँ मध्य भारत में पाई जाती हैं । अतः साहरिया जनजाति की समानता "कोल्स, मुन्डाज, करकस, भील्स, भुइंया, आदि जातियों के साथ की जाती है । कुछ विशेषतायें इन लोगों ने " सोहरी " जनजाति से प्राप्त की है । बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र में इनको "रावत" नाम से भी पुकारा जाता है । " रावत " शब्द का उद्‌गम संस्कृत भाषा के शब्द "राजदूत" से हुआ है । "राजदूत" शब्द का अर्थ होता है- राजा का संदेश वाहक" या राजा का पुत्र" ।

अतः साहरिया जनजाति की उत्पत्ति के संदर्भ में यह स्पष्ट हो जाता है कि ये जाति जनजाति है जिसमें विमुक्त जनजाति की सभी विशेषतायें पाई जाती हैं। वर्तमान समय में इनमे अच्छे नागरिक बनने की क्षमता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है ।

<u>जनजातीय संगठन</u> -

साहरिया जनजाति विभिन्न प्रकार की उप जातियों ।गोत्रों। मे विभाजित है । इनमें "सिराउलीया" कोडोरिया", येगोटिया, सनोलिया, रजोरिया, जघोरिया, कुलमोरवा, सरोताया, चकरदिया, पिरोंया, करवारिया बैगोलिया, सनोरिया आदि प्रसिद्ध गोत्र पाये जाते हैं । इन गोत्रों की उत्पत्ति

कैसे हुई ? इसका जनजाति के पास कोई लेखा जोखा उपलब्ध नही है । शायद इनकी उत्पत्ति पारिवारिक सम्बन्धों के आधार पर हुई होगी । इन उप-विभागों को जाति बिरादरी से बाहर शादी सम्बन्धों को स्थापित करने हेतु ही " एक्जोगामस" कहा गया है । वर्तमान समय में विवाह आदि सम्बन्धों में एक्जोगामी सिर्फ प्रथम या द्वितीय चचेरे-बहिन या भाई के साथ ही लागू मानी जाती है । ललितपुर जिले को ये लोग अपनी पैत्रिक जन्मभूमि मानते हैं । अन्यत्र से आकर बसना स्वीकार नही करते हैं ।

शादी एवं विवाह नियम -

"सहरिया" जनजाति मे विवाह के नियम और रीति-रिवाज अपने तरीके के हैं । जब कोई नई नवेली दुल्हन अपने पति के घर में आती है, तो उसे एक रिवाज का पालन करना पड़ता है, जिसे ये लोग" दूध भाटी" के नाम से पुकारते है। इसमें दुल्हन को दूध और चावल की दावत देनी होती है जिसको सभी लोग बड़े प्यार और उत्साह के साथ खाते हैं । एक व्यक्ति बहुत सी स्त्रियों के साथ शादी कर सकता है, लेकिन घर मे एक बीवी के जीवित रहते हुये वह दूसरी बीवी को नहीं रख सकता । यदि उसकी पहली पत्नी किसी जटिल बीमारी से पीड़ित हो या उसके संतान न होती हो तो वह समाज की आज्ञा लेकर शादी कर सकता है, फिर भी प्रथम पत्नी की सेवा भी करनी होगी । अविवाहित नवयुवतियां अपनी जाति के अलावा किसी अन्य के साथ प्रेम सम्बन्ध स्थापित कर लेती हैं, साथ ही उनके परिवारीय जनों को यदि कोई आपत्ति नही होती है, तो वह अपनी जाति वालों को दावत देकर उस व्यक्ति के साथ शादी कर सकती है । अविवाहित लड़कियों की पवित्रता पर विशेष ध्यान रखा जाता है । दस वर्ष की आयु तक प्रत्येक लड़की की शादी कर दी जाती है ।

इनमें दुल्हन को विवाह करने के लिये कोई निश्चित दहेज या मूल्य का प्रचलन नहीं पाया जाता है, फिर भी रिवाज के अनुसार वर का पिता आठ रुपये इसलिये देता है ताकि विवाह का खर्चा सम्पन्न हो सके । यदि कोई शादी-शुदा स्त्री किसी अन्य व्यक्ति के साथ यौन सम्बन्धों में लिप्त पाई जाती है तो उसे जाति से पूर्ण रूप से निष्कासित कर दिया जाता है । यह निर्णय जन-जाति की पंचायत के द्वारा किया जाता है । वह स्त्री फिर अपना विवाह नहीं कर सकती और न बिना विवाह के वह रखैल के रूप में रह सकती है । यदि उसका पति उसे दुबारा पत्नी बनाने को तैयार हो जाता है तो यह मामला पंचायत में जाता है, और पंचायत उनको दण्ड स्वरूप जनजाति को दावत दिलवा कर फिर से विवाह की सहमति दे देती है । जो संतान विजातीय व्यक्ति से पैदा हुई होती है उसे न तो जाति के अधिकार ही मिलते हैं और न जाति का सम्मान ही । साथ ही इनको हेय दृष्टि से देखा जाता है ।

विधवा विवाह की परिपाटी इनमें पायी जाती है । यदि बीमारी से किसी की मृत्यु हो जाती है और उसका अविवाहित कोई छोटा भाई है तो उसके साथ विवाह सम्पन्न हो जाता है । सामान्य रूप से छोटा भाई बड़े भाई की पत्नी को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लेता है, लेकिन बड़ा भाई छोटे भाई की पत्नी को स्वीकार नहीं कर सकता है । फिर भी यदि अत्यन्त आवश्यक होता है तो वह भी कार्य कर लिया जाता है । यदि कोई विधवा अपनी जनजाति से बाहर विवाह करती है तो उसका बच्चों पर, धन पर किसी भी प्रकार का अधिकार नहीं रह जाता है ।

<u>जन्म रिवाज</u> -

साहरिया जनजाति की

तो किसी भी प्रकार के आयोजन या खुशी के कार्यक्रम का वर्णन प्राप्त नही होता है और न आज है भी । उस समय "बसोर" जनजाति की नर्स या दाई उस गर्भवती की देखभाल करती है । बच्चे के जन्म लेने के दसवें दिन माँ को "डेसबान" अधिकार के अधिकार तहत शुद्ध करबा दिया जाता है । इसके साथ ही परिवारीय या गोत्र के लोगों को भोजन भी दिया जाता है । यदि परिवार बहुत ही गरीब है तो कुछ-कुछ उबले चने ॥घुघरी॥ परिवारीय सदस्यों के बीच बाँट दिये जाते हैं । इस प्रकार से जन्मोत्सव से सम्बन्धित प्रथा तो जनजाति में देखने को मिलती है, लेकिन गोद लेने का नियम स्पष्ट नहीं है ।

विवाहोत्सव -

जब माता-पिता या परिवारीय सदस्य या मित्रों द्वारा लड़का और लड़की के मैच को तलाश कर लेते हैं, तो लड़के का पिता अपने कुछ परिवारीय जनों या रिस्तेदारों के साथ लड़की वालों के घर जाता है । वहाँ पर वह लड़की के पहने हुये कपड़े के पल्लू को चूमकर उसके हाथ पर कुछ रुपये या मिष्ठान रख-कर शादी के सगुन को पूरा करता है । फिर वे लोग भोजन करते हैं और दूसरे दिन जब लड़के वाले जाने लगते हैं तो लड़की का पिता उनको कुछ भेंट स्वरूप रुपये देकर बिदा करता है । यह कार्यक्रम रिश्ता पक्का होना या सगाई कहलाती है । शादी वाले दिन लड़का और बाराती, लड़की के घर जाते हैं और लड़के के मस्तक पर तिलक लगाते हैं । दूसरे दिन मण्डप में लड़का और लड़की अपने परिवारों के समक्ष पाँच चक्कर लगाते हैं और इस प्रकार से शादी की रश्म पूरी की जाती है । इनके विवाह मे किसी भी ब्राहमण या पंड़ित को नहीं बुलाया जाता है । इस जनजाति का बुजुर्ग या लड़की का भाई ही सभी विवाह की रीतियों, रश्मों-रिवाजों को पूरा करबा देता है ।

मृत्यु संस्कार -

सहरिया जनजाति में मृत्योपरान्त के संस्कार भी स्पष्ट रूप से पाये जाते हैं । इनके यहाँ पर मुर्दे को जलाया जाता है । कुछ संदर्भों में मुर्दे को गाढ़ने की प्रथा भी होती है । नाबालिग, अविवाहित या जहरीली बीमारी वाले मुर्दे को ये लोग जलाने के स्थान पर जमीन में गाढ़ते हैं । मुर्दे को जलाने के बाद उसकी राख को किसी बहती हुई नदी में फेंक देते हैं । उस व्यक्ति की मृत्यु के लिये दुख: प्रगट करने हेतु ये लोग अपने-अपने सिर के बाल मुंडवा लेते हैं । इनके यहाँ मृत्योपरान्त भोज ॥श्राद॥ करने की कोई संस्कार स्पष्ट नहीं है । साथ ही साथ कोई मृत्यु संस्कार के लिये पंडित या अन्य व्यक्ति नियुक्त होता है। जो व्यक्ति मुर्दे को आग देता है, वह तीन दिन तक अपवित्र माना जाता है । इसी तरह से एक स्त्री को भी मासिक धर्म के समय तीन दिन तक अपवित्र मानते हैं और बालक जनने के पश्चात दस दिन तक । इसके पश्चात स्नान कर लेने मात्र से ही स्त्री और माँ दोनों की अपवित्रता समाप्त हो जाती है ।

धार्मिकता -

मुख्य तौर पर सहरिया जनजाति " भवानी माँ " को पूजते हैं । इसके साथ ही उनमें "राम" और "कृष्ण" के प्रति भी अपार श्रद्धा पाई जाती है । उनका अपना जातीय या वंशानुक्रमीय कोई देवता या पुजारी नहीं होता है । ये लोग किसी भी ब्राहमण को अपनी जाति के धार्मिक कार्यक्रमों के लिये न बुलाते हैं और न नियुक्ति ही करते हैं । यदि परिवार में कोई धार्मिक संस्कार होना होता है तो ये अपनी बहिन के पुत्र या बुजुर्ग व्यक्ति को इस कार्य के लिये बुलाते हैं । इस जनजाति मे प्रेतों या बुरी आत्माओं को भगाने के लिए या उनसे बचने के लिये बलि की प्रथा प्रचलित है । बलि के तौर पर

बकरा प्रयोग में लाया जाता है । कुछ संस्कारों में बलि के तौर पर उसके सिर्फ कान को ही काट कर चढ़ाया जाता है ।

बलिके रूप मे जब बकरा काटा जाता है तो परिवार के सभी लोग उसके माँस को प्यार के साथ खाया करते हैं । ये लोग कुछ देवी-देवताओं मे भी विश्वास करते हैं जिनको " गोनर", नरसिंहा, गौरया, काटिया, थोलिया, सोमिया, और अहेयपाल" आदि नामों से पुकारा जाता है । इनमें से अधिकांश को जनजातिय लोग देवता के समान पूजते हैं । इन देवताओं की प्रार्थना करते समय ये लोग या तो पानी में खड़े होते है या सीधे हाथ की हथेली मे गरम लोहे का टुकड़ा रखते हैं । सामान्य तौर पर ये लोग रोगों को पिशाचग्रस्त मानते हैं । रोगी का उपचार दवाओं से कम, बल्कि पिशाचमुक्ति, इन्द्रजाल से मुक्ति और बुरी दृष्टि से मुक्ति आदि उपायों द्वारा जनजातीय ओझा के द्वारा करवाया करते हैं ।

व्यवसाय -

उत्तर प्रदेश सरकार (आर्डीनेन्स नं0-18, 1987) ने अनुसूचित जाति एवं जनजाति के सुधार हेतु सुविधाओं में इनके व्यवसाय को स्पष्ट किया है । साहरिया जनजाति अत्यधिक गरीबी में जीवन जी रहे हैं । वे माँसाहारी और शाकाहारी दोनों ही हैं । माँस के रूप मे मुर्गा, बकरा, गाय, सुअर आदि का सेवन करते हैं और साथ मे स्प्रिट को शराब के स्थान पर पीते हैं । वे आपस मे "राम-राम", "सीताराम", "राधाकृष्ण" आदि शब्दों का उच्चारण करके एक दूसरे को सम्मान देते हैं । ये जंगल मे पैदा होने वाली वस्तुओं को एकत्रित करके बेचते हैं । जंगल की लकड़ी काटते हैं । जंगल की ऊँची जमीन पर कुछ साहरिया खेती भी करते हैं । इनको अपराधी जनजातियों मे भी माना गया है

जिससे लूटमार करना, धोखा देना, डकैती डालना भी व्यवसाय हो सकता है ।

वर्तमान स्थिति -

शोधकर्ता ने अपने शोध तथ्यों के संकलन मे पाया कि ये लोग झाँसी मण्डल में स्थायी रूप से निवास करके जीवन व्यतीत करना चाहते हैं । उत्तर प्रदेश सरकार ने इनको अनुसूचित जाति मे स्थान दिया है । इनका व्यवहार अक्खड़, स्वाभिमानी, और आत्म निर्भर है । ये अपने कार्य को ईमानदारी से करते हैं । इनके चेहरों से समाज द्वारा शोषण करने की चिन्ता प्रगट होती है । गरीबी के कारण ये बच्चों को शिक्षा न दिलबाकर मेहनत मजदूरी करवाते हैं । शिक्षा का प्रतिशत बिल्कुल नगण्य है ।

निष्कर्ष -

शोध प्रयुक्त जन-जातियों का विस्तृत विवरण देखने से स्पष्ट होता है कि इनमें गरीबी, निवास और व्यवसाय की अस्थिरता, सामाजिक रूढ़ि ग्रस्तता, अंध-विश्वास, अपराधी प्रवृत्ति आदि विशेषतायें पाई जाती हैं । जिनके फलस्वरूप इनमें विकास के लक्षण प्रस्फुटित नहीं हो पाते हैं । इसके साथ ही ये लोग रोजी-रोटी में इतने उलझे रहते हैं कि बच्चों की शिक्षा की ओर ध्यान ही नही दे पाते हैं । अत: शोधकर्ता इनके मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन करेगा ताकि इनके परिवारों में शिक्षा का विकास हो और वे भी आधुनिक जीवन का आनन्द उठा सकें । साथ ही अपने पुराने जीवन के ढंग, स्तर को त्याग सकें ।

अध्याय-तृतीय

साहित्य का पुनरावलोकन

(१) सम्बन्धित साहित्य की आवश्यकता
(२) विदेशों में हुए अध्ययन
(३) भारत में हुए अध्ययन
(४) निष्कर्ष

मूल्यों का मापन-

वर्तमान शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य एक ऐसे उपकरण का पता लगाना है जिससे बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र की जनजातियों के मूल्यों का शैक्षिक अभिवृत्ति के विकास संदर्भ मे मूल्यांकन हो सके । मूल्यों का अनुभविक मापन कठिनाइयों और संकटों से परिपूर्ण रहा है । अब प्रश्न उठता है कि क्या मानव मूल्यों का मापन वैज्ञानिक तरीके या कसौटी पर सम्भव है ? इस संदर्भ मे डा०-वी०एन०-के० रेड्डी । 1979, पृ०-87 । का विचार है -

" मूल्य अपने में पूर्ण हैं । यह आत्म खोज का माध्यम हैंऔर विकास का उपकरण है । मूल्य का भाव निर्पेक्ष और सापेक्ष प्रयोग के द्वारा प्रतीत होते हैं । उत्तम एवं आदर्श जीवन की मुक्ति के लिये मूल्य आवश्यक साधन है।" जैसा कि " थर्स्टन " ।1964,पृ0-47। का कथन है -

" मूलत्य मे मानव मूल्य व्यक्तिपरक होते हैं । उनका सम्बन्ध सही प्रकार से भौतिक वस्तुओं के साथ नहीं जोडा जा सकता है । उनकी तीव्रता या परिणाम को भौतिक मापन के द्वारा नही मापा जा सकता है ।"

" ड्यूक " । 1955, पृ०-24-50 ।, ने मूल्यों के मापन में आने वाली कठिनाइयां प्रस्तुत की है -

1- मूल्य के निर्धारण में उच्च चारित्रिक गुणों का प्रयोग, ।

2- कुछ मूल्यांकनों मे तर्कसंगता की कमी ।

3- मूल्य अध्ययन के विभिन्न तरीकों मे से उपयुक्त एवं सामान्य तरीका ।

" चार्ल्स मौरिस " । 1956 । के विचार से " मूल्यों का प्रयोग कुछ मापनों के लिये ग्रहणशील है और इस प्रकार का अध्ययन मानव मात्र के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकता है ।" फिर भी यह कठिन प्रतीत होता है,

कि मूल्यों का वैज्ञानिक अध्ययन सम्भव हो पायेगा । अत: हमें उसके अस्तित्व को स्थापित करने वाली कुछ प्रविधियों का विकास करना चाहिये, ताकि उनसे मूल्यों के अस्तित्व पर प्रकाश डाला जा सके ।

यदि यह मान लिया जाय कि मूल्यों को मॉपा जा सकता है या मूल्य मॉपन के योग्य है तो प्रश्न उठता है कि वे कौन सी विधियाँ है जिनके द्वारा मूल्यों को मॉपा जा सकता है । विस्तृत रूप में, मूल्यों का प्रत्यक्षीकरण मानव व्यवहार के द्वारा या मौखिक कथन के द्वारा किया जा सकता है । व्यवहार का अवलोकन वास्तविक जीवन परिस्थितियों या जटिल परिस्थितियों में शोध कर्ता के द्वारा किया जाता है । मौखिक कथनों के अवलोकन मे प्रतिचार की प्रतिक्रिया, व्यवहार करने का तरीका, उनकी पसंद और नापसंद सामाजिक और राजनैतिक प्रभाव आदि का समावेश किया जाता है, ताकि लक्षणों का प्रक्षेपण कथन के द्वारा प्राप्त किया जा सके ।

" जेकब " ‖ 1957 ‖ ने मूल्य मापन के निम्नलिखित निदर्शक प्रस्तुत किये हैं -

अ- मानव के " वास्तविक जीवन व्यवहार" का आभास प्रश्नावली के द्वारा या निरीक्षण के द्वारा और क्रास वैकिंग के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है । उसका अस्तित्व समाज से विलय नहीं होता है । अत: इन निदर्शकों का प्रयोग वहाँ पर करना उपयोगी होगा, जहाँ वह रहता और कार्य करता है ।

व्यवहारिक तरीके के मूल्यों को सैद्धान्तिक रूप से और क्रियात्मक रूप से जीवन की आवश्यकताओं के लिये आवश्यक मानते हैं । फिर भी, व्यवहार स्थानिक प्रभाव, ज्ञान, बौद्धिक क्रियाओं, और संवेगात्मक उत्तेजना आदि से परिचालित होता है । मूल्यों को व्यवहार स्वरूप में तभी

पहचाना जा सकता है जब अन्य तत्वों के प्रभाव को विलग रखा जाय या उनको नियंत्रित किया जाये । इसके लिये विस्तृत विश्लेषण और सभी प्रकार की सूचनायें आवश्यक होती है । इस प्रकार से, जनजातियों के मूल्यों के मापन में शोध कर्ता को बहुत ही सावधानी बरतनी चाहिये, ताकि जनजातीय व्यवस्था, अभिरूचि, शिक्षा, आकांक्षा आदि के द्वारा शैक्षिक अभिवृत्ति का प्रकाशन हो सके ।

ब- यथार्थवादी व्यवहार के निर्माण में परीक्षण स्थितियाँ आवश्यक होती है । ये सब बौद्धिक कौशलों, संवेगात्मक उत्तेजनायें और ज्ञान आदि के मापन में विशेषरूप से सहायक होती हैं । मूल्यों का मापन व्यक्ति के व्यवहारिक परीक्षण के द्वारा ही सम्भव है, क्योंकि वह विभिन्न परिस्थितियों में अपने व्यवहार को अपूर्व बनाकर समायोजन स्थापित करता है । अत: उद्देश्य पूर्ण समस्या के लिए ही मूल्यों का मापन किया जाय तो निष्कर्ष वैध होगें ।

स-1- यथार्थ वादी निर्णय प्रश्नों के अन्तर्गत मौखिक कथनों का चयन, व्यक्तियों के व्यवहार प्रकार के आधार पर होता है, यदि विभिन्न परिस्थितियों मे व्यवहार भिन्नता प्राप्त होती है । विभिन्न व्यक्ति अपने मूल्यों का प्रदर्शन परिस्थितिवश करते हैं, जिससे उनके व्यवहार करने का कारण स्पष्ट होता है । मूल्य मापन का यह तरीका मौखिक कथनों के कारण सीमित प्रतीत होता है, फिर भी यह भावात्मक मापन की अपेक्षा यथार्थ व्यवहार मापन के अधिक नजदीक प्रतीत होता है । शोध कर्ता अपने प्रतिचार से यथार्थ परिस्थिति और यथार्थ व्यवहार के बारे मे चिन्तन करने को कहता है, न कि बनावटी या काल्पनात्मक व्यवहार के लिये । इस प्रकार से ये प्रश्न पूर्ण रूप से मूल्यों के मापन मे सक्षम है चाहे आवश्यकता के लिये मापन हो या नियम स्थापना के लिये ।

स-2- प्रश्नों की पसंद के अन्तर्गत व्यक्तियों से उनकी विभिन्न प्रकार की

क्रियाओं से सम्बन्धित प्रश्न पूछे जाते हैं ताकि उनके मूल्यों का प्रभाव आवश्यकता या प्रमुखता के आधार पर जाना जा सके । यदि सही रूप से प्रश्न बनाये गये हैं तो ये उत्तर यथार्थवादी निर्णय प्रश्नों की अपेक्षा यथार्थवाद के वर्णन मे सक्षम होगें ।

स-3- " चाहिये प्रश्नों " मे शोधकर्ता व्यक्तियों से विभिन्न परिस्थितियों के बारे मे प्रश्न करता है कि आप इन परिस्थितियों मे क्या करेगें ? ये प्रश्न व्यक्ति को मूल्यों से हटाकर, अनुग्रह के नजदीक ले जाते हैं और नियमों का मापन करते हैं । इस प्रकार से एक समस्या उत्पन्न होती है कि एक व्यक्ति जो करता है वैसा ही दूसरा क्यों नही करता ? इस समस्या का समाधान करने में "चाहिये प्रश्नों" को विशेष सफलता मिली है और उन्होने व्यवहार मानकों का भी विकास किया है । एक व्यक्ति क्या करता है ? इसका पता लगाना अति आवश्यक होता है क्योंकि दो मानकों के बीच उत्पन्न अंतर्द्वन्द समाप्त किया जा सकता है, जैसे- मित्रता और कर्तव्य में ।

द- <u>जनता समाज पद्धति प्रश्न</u> -

इसके अन्तर्गत पूछे गये प्रश्नों के द्वारा बड़े समूहों, व्यापारी वर्ग, संगठनों, बौद्धिकसमूह आदि की अभिवृत्ति का मापन स्वीकृत या अस्वीकृत रूप में किया जाता है अथवा जब शासन किसी समस्या पर जनमत संग्रह करना चाहता है, तो जनता की स्वीकृति या अस्वीकृति सरकार की पद्धति या तरीके के बारे में कैसी है ? का पता लगाया जाता है । ये प्रश्न " क्या होना चाहिये " का सामान्य रूप से निरूपण करते है न कि मूल्यों का । लेकिन स्थानीय विश्वासों, जो अर्थनीति, राजनीति और अन्य पक्षों से सम्बन्धित होते हैं के बारे मे दिशा निर्देश देते हैं । इसके अन्तर्गत मूल्यों का मापन तभी सम्भव हो सकता है,

जब हम स्थानीय विश्वासों को समाप्त कर दें, ताकि व्यक्ति एक ही मूल्य से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर भिन्न-भिन्न रूप से न दे पाये । फिर भी जो व्यक्ति नागरिक भूमिकाओं मे संलग्न हैं उनके उत्तरों के पीछे यथार्थवादी चिन्तन या अनुभव पाया जाता है ।

ई- मूल्य कथनों का सामान्यीकरण -

जो जीवन लक्ष्यों, आदर्शों, और सिद्धान्तों के बारे मे राय निर्मित करता है, का सीधा सम्बन्ध सामान्य मानक निर्णय क्षमता के विकास से या आवश्यकता पूर्ति से होता है । दूसरे रूप में, यह मौखिक कथन व्यक्तियों में चेतनता, अचेतनता के असत्यीकरण को प्रवृत्तियों का आश्रित बनाती है । इनके द्वारा उन पक्षों पर प्रकाश डालना भी कठिन है जिनका वर्णन किसी खास परिस्थिति या यथार्थवादी जीवन परिस्थिति मे किया गया है । इस संदर्भ में मानवीय राय पसंद, नापसंद, व्यवसायिक, स्थानीय, शासकीय, अशासकीय आदि के रूप में प्रगट होती है । अतः इसकी वैधता को सामान्यीकरण के आधार पर ही निश्चित किया जाता है ।

एफ- प्रक्षेपण निदर्शक, काल्पनिक कथनों या मौखिक वर्णन से सम्बन्धित होते हैं, क्योंकि इनका सीधा सम्बन्ध विभिन्न मनोवैज्ञानिक यंत्र रचनाओं से होता है जो मूल्यों के तहत क्रियाशील होते हैं । ये कथन चेतन असत्यीकरण को प्रगट करने में जुटे रहते हैं । इन कथनों का उद्देश्य विषय वस्तु का मापन करना न होकर, मनोवैज्ञानिक यंत्र रचनाओं के साथ सम्बन्ध को प्रगट करना रहता है । ये सभी प्रविधियाँ व्यक्तित्व बनावट मे आवश्यकताओं, आंतरिक परिवर्तन, और पर्यावरण के साथ यंत्र रचनाओं का प्रभाव आदि के सहयोग को मापने में सहायक होती है । इस प्रकार से प्रक्षेपण निदर्शक व्यक्ति के मूल आवश्यकता की

बनावट से सम्बन्ध रखता है जो मूल्यों की तह मे शक्ति संचयन का कार्य करता है ।

वस्तुत: यथार्थ जीवन या यथार्थ व्यवहार के अवलोकन परीक्षण उत्तम सिद्ध हुये हैं, क्योंकि यह व्यक्ति के मूल्यों से सम्बन्धित अधिक विश्वसनीय सूचनायें देता है अपेक्षाकृत विभिन्न कथनों के । " कथन " द्वारा बनावटी, झूठी, त्रुटिपूर्ण सूचनायें प्राप्त होती हैं । इसीलिये अधिकांश शोधकर्ता मौखिक कथनों के स्थान पर कागज और कलम का प्रयोग करने वाली मापन प्रविधियों पर निर्भर करते हैं और कुछ मूल्य आविष्कार भी विकसित हो चुके हैं ।

प्रस्तुत वर्णन में, मूल्यों से सम्बन्धित मापन की विभिन्न प्रविधियों का वर्णन प्रस्तुत किया जा चुका है । यहां पर शोधकर्ता की मुख्य कोशिश एक ऐसे उपकरण की खोज करना है जो सही रूप से मूल्यों का मापन करने में सफल हो । मूल्यों के मापन से सम्बन्धित उपकरणों का विकास अधिकांशत: विदेशों मे हुआ है । भारत वर्ष में इस प्रकार जो कार्य सम्पन्न हुये हैं वे अनुवाद के फलस्वरूप हैं, भारतीय परिस्थितियों में विकसित नहीं । अत: शोधकर्ता का विश्वास तभी सफल होगा जब वह जनजातीय मूल्यों का अध्ययन करके उनकी शैक्षिक समस्या के विकास के लिये सम्भव और ठोस उपाय प्रस्तुत कर सकेगा ।

<u>विदेशी अध्ययन</u> -

" मैकलीन एवं सहयोगी " । 1955, पृ0-669-677 । ने 1700 शिक्षण कर्मचारियों पर मूल्य अध्ययन किया । उन्होने अपने निष्कर्षों मे पाया कि पुरुष वर्ग आर्थिक मूल्य में निम्न और सामाजिक मूल्य मे उच्च पाये गये । अन्य मूल्यों मे सामान्य पुरुषों की अपेक्षा अन्तर नहीं के बराबर था । स्त्री छात्रायें आर्थिक मूल्य में निम्न स्तर पर आईं ।

ये लोग सैद्धान्तिक मूल्यों मे उच्चस्तर और धार्मिक मूल्यों मे निम्न स्तर पर आई, जबकि सामान्य स्त्रियाँ भिन्न स्तर पर थीं ।

" क्लैड साउ " ।1955, पृ0- 408-417। ने ग्रेजुएट छात्रों के कुछ मूल्य तरीके और सूक्ष्म चिन्तन चातुर्य को जानने के लिये एक अध्ययन किया । इसमें आपने विभिन्न मूल्यों में भिन्नता पाई । धार्मिक मूल्य ने उच्च स्थान पाया, जबकि द्वितीय स्थान पर सैद्धान्तिक और आर्थिक मूल्य आये । इसके पश्चात तृतीय स्थान पर सामाजिक और राजनैतिक मूल्य रहे । सबसे अन्तिम स्तर पर सौन्दर्यात्मक मूल्य रहा ।

" एन्ड्रूज " । 1957, पृ0-199-228 । ने मूल्यों का अध्ययन 564 शिक्षकों और प्राचार्यों पर किया । आपने उनमें सार्थक अन्तर पाया । प्राचार्य वर्ग सैद्धांतिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, और राजनैतिक मूल्यों मे भिन्नता रखते थे। उन्होने पाया कि जो अध्यापक सामाजिक विषयों का शिक्षण करते थे, उनमें सौन्दर्यात्मक और राजनैतिक मूल्यों की अधिकता था ।

" गोवन " । 1961, पृ0-105-109 । ने मूल्यों का अध्ययन शिक्षा के लिये किया । आपने पाया कि प्रतिभाशाली छात्रों की अंक सार्थकता सैद्धान्तिक और राजनैतिक मूल्यों में उच्च थी, जबकि आर्थिक और धार्मिक मूल्यों मे निम्न । इस प्रकार से यह सिद्ध हुआ कि सामान्य छात्रों की अपेक्षा शिक्षारत छात्र-छात्राओं उपर्युक्त मूल्यों से अधिक प्रभावित रहते हैं ।

" ओवस्ट" । 1966, पृ0-181-185 । ने तीन परीक्षणों की एक बैटरी का प्रयोग मूल्य अध्ययन हेतु किया । इसमें 494 छात्र/छात्राओं को लिया गया । इसके निष्कर्ष मे पाया गया कि छात्र वर्ग सैद्धान्तिक, और राजनैतिक मूल्यों मे उच्च थे, और छात्रा वर्ग सौन्दर्यात्मक और धार्मिक मूल्यों में ।

" किरचनर और होगन " । 1968, पृ0-349-353 । ने शिक्षकों के मूल्यों का विभिन्न पक्षों पर अध्ययन किया । आपने पाया कि शिक्षक ।पुरूष। सैद्धान्तिक, आर्थिक और राजनैतिक मूल्यों मे उच्च हैं अपेक्षाकृत स्त्री शिक्षकाओं के । पुरूष शिक्षक सौन्दर्यात्मक और धार्मिक मूल्यों मे स्त्री शिक्षकाओं की अपेक्षा निम्न स्तर पर हैं । माध्यमिक शिक्षक ।पुरूष। ने सैद्धांतिक और राजनैतिक मूल्यों में उच्च सार्थकता प्राप्त की, जबकि धार्मिक और सौन्दर्यानुभूति में निम्न सार्थकता पाई । इसी प्रकार से स्त्री शिक्षकाओं ने इनके विपरीत सार्थकता का प्रदर्शन किया ।

" बेडसाम " । 1958 । ने " कोरेयज प्रश्नावली " के द्वारा मूल्यों के दस पक्षों का मूल्यांकन किया । इसमें आपने प्रशिक्षण छात्र और अध्यापन के प्रथम वर्ष के अध्यापकों को चुना था । आपने यह जानने की कोशिश की कि अध्यापनरत व्यक्तियों में और प्रशिक्षणरत व्यक्तियों के मूल्यों में क्या अन्तर या समानता है । आपने पाया कि सभी लोग निम्न पाँच मूल्यों में विश्वास रखतें हैं -

1- योग्यता का प्रदर्शन ।

2- आत्मीयता में वृद्धि ।

3- ईश्वर मे विश्वास ।

4- एक पत्नी परिवार जीवन ।

5- मानवीय सम्बन्धों को महत्व देना ।

" जायस" । 1960 । ने स्नातक से नीचे के छात्रों पर मूल्य परीक्षण किया । आपने निष्कर्ष तौर पर पाया कि उनकी रूचि धार्मिक कार्यों मे अधिक थी, अपेक्षाकृत राजनैतिक और आर्थिक कार्यों के । इन छात्रों की रूचि

" धारनाथ और फोरडायत " । 1961, पृ0-277-281 । ने "पोइन्बैटरी आफ वैल्यूज" मापनी के द्वारा 205 व्यक्तियों का अध्ययन किया गया । तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि जो शिक्षारत व्यक्ति थे, उनकी सार्थकता, धार्मिक और सामाजिक सम्बन्धों में उच्च थी, अपेक्षाकृत सामान्य व्यक्तियों के ।

"पोई और मोरगन" । 1962, पृ0- 337-345 । ने अध्यापक मूल्य और उनका मौखिक व्यवहार का अध्ययन किया । इसमें कुछ तत्वों में सार्थकता प्रतीत हुई, जो नही के बराबर थी । अतः मूल्यों और व्यक्तित्व के सम्बन्ध मापने के लिये अनुभविक परीक्षणों की आवश्यकता महसूस की जाती है ।

" हेयज " । 1962 । ने डिफरेन्शियल वैल्यूइन्वैटरी" का प्रयोग 86 अध्यापक, प्राचार्य और अधिकारी वर्ग को सम्मिलित करके किया । आपने मूल्य और संतोष के बीच सम्बन्ध का मापन किया । आपने पाया कि दोनों के बीच प्राप्त होने वाली सार्थकता अनुपात संतोषजनक नहीं है । उन्होने यह भी ज्ञात किया कि आयु और शिक्षा स्तर का मूल्यों के साथ कोई सार्थकता नहीं होती है । आपने नव जवान व्यक्तियों में संतोष की कम मात्रा पाई और शैक्षिक स्तर का संतोष के साथ कोई सम्बन्ध नही पाया गया ।

" पैल्ट" । 1970 । ने एक प्रश्नावली का निर्माण किया, जिसके द्वारा छात्रों का उनके माता-पिता और अध्यापकों के साथ मूल्य स्थापना का मापन किया गया । आपने पाया कि मूल्य विश्वासों पर उनके माता-पिता और शिक्षकों का प्रभाव बहुत ही कम था ।

" वानान्कर और टेनीसन " । 1970, पृ0-544-550 । ने " डिफरेंशियल वैल्यूइन्वेंटरी" का प्रयोग करके प्रशिक्षणरत प्रारम्भिक शिक्षकों के

मूल्यों का अध्ययन किया । आपने पाया कि वे सब प्रशिक्षण को एकदम आवश्यक मानकर शिक्षारत थे । इनमें जो अधिक आयु के शिक्षक थे वे अधिक रूढ़िवादी पाये गये, अपेक्षाकृत कम आयु के शिक्षकों के ।

" ब्राउर " । 1971 । ने " रोकीज मूल्य मापनी " का प्रयोग करके मूल्यों का अध्ययन किया । आपने कैलिफोर्निया के तीन कालिजों के परिषद सदस्यों और छात्रों पर इस मापनी का प्रयोग किया । आपने पाया कि प्रसन्नता प्रथम स्थान पर, स्वतंत्रता द्वितीय स्थान पर, परिपक्व प्यार तृतीय स्थान पर आये । इनमें से राष्ट्रीय सुरक्षा, सामाजिक पहचान और छुटकारा आदि तीन मूल्यों का स्थान सबसे निम्न स्थान पर रहा ।

" बार्क " । 1971 । ने 238 जूनियर कालेज सदस्यों पर मूल्यों का अध्ययन किया । आपने पाया कि अधिकांश व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्ध रखते हैं । उन्होंने उच्च स्थान आत्म सम्मान, आवश्यकता पूर्ति, स्वतंत्रता, आंतरिक सम्बन्ध, परिवार सुरक्षा आदि मूल्यों को दिया । इनके अतिरिक्त अन्य मूल्य राष्ट्रीय सुरक्षा, समानता, सांसारिक शांति आदि को निम्न स्थान प्रदान किये ।

" क्लाइड कुलकोहन " ने अपने विषय "कल्चर एण्ड बिहेवियर" में स्पष्ट किया है कि मूल्यों और व्यवहार का क्षेत्र का अध्ययन नया है और अविस्तृत है । एस0के0पाल ने लिखा है " साहित्य का पुनरावलोकन इस बात से सहमत है कि छात्रों के मनोवैज्ञानिक मूल्यों का विस्तृत अध्ययन विभिन्न व्यवसायिक स्तरों पर अविकसित है ।"

" चार्ल्स मौरिस " । 1945 । ने शिकागो विश्वविद्यालय में अमेरिकन, भारतीय, जापानी, चीनी और नोरवे आदि देशों के पढ़ने वाले

छात्रों के मूल्यों का अध्ययन किया । इस अध्ययन को आपने " वैरायटीज आफ ह्यूमन वैल्यूज" के नाम से 1956 में प्रकाशित किया ।

निदर्शन -

आपने अपने मूल्यों के अध्ययन मे 725 छात्र भारतीय, 2015 छात्र अमेरिकन, 170 छात्र कनाडा, 192 छात्र जापानी, 523 चीनी छात्र और 149 नार्वे के छात्रों को प्रयोग किया । ये सभी छात्र कालिज से सम्बन्धित थे ।

शोध निष्कर्ष -

6 विभिन्न देशों के जन्मे छात्रों से प्राप्त मूल्यों का मध्यमान निम्न प्रकार से रहा -

क्रमांक	अमेरिका	कनाडा	भारत	जापान	चीन	नार्वे
1-	5.06	5.32	5.95	5.00	4.89	5.28
2-	2.81	2.64	3.99	4.05	2.95	3.54
3-	4.22	4.64	5.34	5.30	5.10	5.28
4-	3.74	3.33	3.63	3.62	3.17	3.17
5-	4.26	4.24	4.74	4.65	5.14	3.78
6-	4.88	4.57	5.28	5.04	5.31	5.02
7-	5.58	5.65	4.71	4.22	4.72	4.95
8-	4.53	4.85	4.24	3.65	3.98	3.95
9-	2.95	3.05	3.37	3.93	2.57	3.63
10-	3.85	3.75	5.32	4.65	3.69	4.30
11-	2.77	2.72	3.74	3.77	2.58	2.87
12-	4.41	4.12	4.54	3.96	4.54	4.34

एस०डी०	3.94	3.94	4.53	4.23	4.16	4.09
एन०	2015	170	724	192	523	149

उपर्युक्त अध्ययन एवं विवेचन के आधार पर शोधकर्ता निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँचा -

अ- पूर्वी देशों के छात्रों और पश्चिमी देशों के छात्रों के बीच पर्याप्त भिन्नता पाई गई । कुछ बातों मे चीनी छात्र, अमेरिकन छात्रों को पसंद करते हैं और कुछ बातों मे नापसंद करते हैं । यह अन्तर जापानी और भारतीय छात्रों व अमेरिकन छात्रों के बीच स्थापित हुआ । नार्वे के छात्र काफी सीमा तक अमेरिकन छात्रों के नजदीक पाये गये, लेकिन कुछ समानतायें जापानी छात्रों के समान देखने को मिली । जापानी और भारतीय छात्रों के बीच अधिकांश बातें समान पाई गई, और जो भिन्नता भी थी वह सिर्फ मूल्यों के कारण ।

ब- पाँच तत्वों का मध्यमान भारतीय और जापानी छात्रों का पश्चिमी छात्रों के मध्यमान से उच्च रहा । यह सूचित करता है कि एशियन संस्कृति वाले छात्र अधिक सहनशील होते हैं, अपेक्षाकृत पश्चिमी देशों के ।

स- प्रस्तुत अध्ययन से एक नई बात स्पष्ट होती है कि पश्चिमी राष्ट्रों के छात्र आत्म केन्द्रित अधिक होते हैं,जबकि एशियन छात्र समाज केन्द्रित होते हैं ।

" स्प्रिग्थोल और बीटन " । 1966, पृ0- 41 । ने " हाईस्कूल अध्यापकों मे मूल्य भिन्नता " को जानने का एक अध्ययन किया और मुख्य रूप से दो निष्कर्ष पाये -

1- हाईस्कूल अध्यापकों की मूल्य भिन्नता का मापन करके सार्थक मूल्य भिन्नता

पाई गई। सार्थक मूल्य भिन्नता उनके विषयगत भिन्नता पर भी आधारित थी । उनके मूल्य अध्ययन में भिन्नता भी पाई गई , जिनका सार्थकता सिर्फ सैद्धान्तिक मूल्य , आर्थिक मूल्य और सौंदर्यात्मक मूल्य में ही थी । यौनगत भिन्नता की सार्थकता सिर्फ सामाजिक मूल्य में ही देखने को मिली । स्त्रियों और पुरुषों में या विषय समूहों में सार्थक भिन्नता सिर्फ राजनैतिक और धार्मिक मूल्यों में पाई गई ।

2. विज्ञान और गणित के शिक्षकों ने उच्च सार्थकता सैद्धांतिक मूल्य में, कामर्शियल शिक्षकों ने उच्च सार्थकता आर्थिक मूल्य में, संगीत और कला शिक्षकों ने उच्च सार्थकता सौन्दर्यात्मक मूल्यों , में पाई । इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षित अनुभवी और व्यवसायिक अध्यापकों की उच्च सार्थकता सैद्धांतिक , आर्थिक और सौन्दर्यात्मक मूल्यों में पाई गई ।

"स्मिथ" (1967, पृ0 27-32) ने छात्रों में , संरक्षकों में, और शिक्षकों में " मूल्य ज्ञातता" का अध्ययन किया । आपने दो प्रश्नावलियों का प्रयोग कक्षा -9 के अध्यापकों और संरक्षकों पर किया । "ए"प्रश्नावली में 6 तत्वों की क्रमबद्ध उपयोगिता सम्बंधी प्रश्न हाईस्कूल में सफलता जानने के लिए की । "बी" प्रश्नावली में हाईस्कूल के बाद की सफलता के लिये प्रश्न पूछे गए। इसमें प्रयोग किये गये तत्व क्रमशः रचनात्मक , कड़ी मेहनत , बुद्धि, प्राप्तांक एवं धन और प्रसिद्धि आदि से सम्बन्धित थे । प्रश्नावली "ए" के तीन तत्वों में किसी भी प्रकार की सार्थकता अंतर प्राप्त नहीं हुआ । "कड़ी मेहनत " को प्रथम स्तर और "बुद्धि" को द्वितीय स्तर "बी" प्रश्नावली में प्राप्त हुआ । फिर भी , माता-पिता और छात्र वर्ग का सार्थकता अन्तर अध्यापकों के प्रति रहा । अध्यापक वर्ग के लिए प्राप्तांक और धन का महत्व कम प्राप्त हुआ ।

"रोकीज़" ।1968-69, पृ0 547-559 । ने एक अध्ययन मिशीगन राज्य विश्वविद्यालय के छात्रों पर किया । आपने यह जानना चाहा कि सिविल राइट आयोजनों के प्रति उनकी अभिवृत्तियाँ कैसी हैं । इसमें आपने सार्थक भिन्नता पाई । "समानता" मूल्य को उच्च स्थान प्राप्त हुआ । जो सिविल राइट आयोजनों में भाग लेते रहे थे, वे पाँचवें स्थान पर रहे । साथ ही जो सिविल राइट आयोजनों के साथ सहानुभूति नहीं रखते थे, उनका स्थान सातवाँ रहा । आपने आगे निष्कर्ष पाया कि वे छात्र जो स्वयं को उदारवादी और रूढ़िवादी के रूप में प्रदर्शित करते हैं, उनके मूल्यों में सार्थक अन्तर आया । उदारवादियों के मूल्यों में सार्थकता अधिक आई अपेक्षाकृत रूढ़िवादियों के । इन्होंने संसार में शांति, साँसारिक सुन्दरता , समानता और बुद्धिमत्ता पर अधिक बल दिया है । रूढ़िवादियों ने सामाजिक पहचान में सार्थकता , अन्य की अपेक्षा अधिक पाई है । इन्स्ट्रूमेंटल मूल्यों के संदर्भ में उदारवादी कम सार्थक प्रतीत हुए हैं अपेक्षाकृत रूढ़िवादियों के । उनमें सहायता , स्वतंत्रता , और बुद्धिमत्ता अधिक पाई गई ।

"कुक" । 1972, पृ0 134 । ने हाईस्कूल स्तर के छात्रों "मूल्यों और अभिवृत्तियों"को जानने के लिए अध्ययन किया था । आपने निष्कर्षों में पाया कि मूल्य प्रणाली और ज्ञान प्राप्ति में सीधा सम्बन्ध है । सामूहिक विशेषता में सबसे अधिक सार्थकता प्राप्त हुई । उत्तम प्राप्तांक प्राप्त छात्रों में विद्यालय के लक्ष्य , अधिकारियों का सम्मान , नियमों का पालन आदि गुण भी पाये गये । जो छात्र व्यक्तिवादी और उभयवादी प्रकार के थे , उनमें इस सीमा तक ये विशेषतायें प्राप्त नहीं हुईं ।

"नल एवं वाल्टर " ।1972, पृ046-47 । ने मूल्यों का अध्ययन कालेज छात्रों और अध्यापकों के व्यवहार के बीच सम्बंध जानने के लिए

किया । आपने विषयों मे रुचि, सहानुभूति स्ब, उचित मूल्याकंन, उदार एवं उन्नतिशील मनोवृत्ति विषय का प्रदर्शन, हास-परिहास, आत्म निर्भरता, विश्वास, व्यक्तिगत प्रभाव और बौद्धिक उत्साह को तीव्रता प्रदान करना आदि विभिन्न शैक्षिक आयामों मे शिक्षकों की प्रतिभा का मूल्याकंन किया । इनमें सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यानुभूमि, सामाजिक, राजनैतिक, और धार्मिक मूल्यों आदि को आधार के रूप मे प्रयोग किया गया था । निष्कर्ष के रूप मे 9 आयामों मे से 6 आयामों में छात्र और अध्यापक के बीच मूल्यों में सार्थकता पाई गई । फिर भी छात्रों के मूल्य पूर्ण रूप से स्वतंत्र पाये गये, अपेक्षाकृत अध्यापक मूल्य के ।

" नैन्सी " । 1973, पृ0-1519 । ने छात्र अध्यापक की " मूल्य अनुरूपता" का मूल्याकन किया । आपने रोकीजमूल्य मापनो" का प्रयोग अध्यापक मूल्य, छात्र मूल्य और छात्र प्रत्यक्षीकरण अध्यापकों मूल्यों आदि के मापने के लिये किया । प्रस्तुत अध्ययन मे पाया गया कि दोनों समूह के समायोजित मध्यमान मे किसी भी प्रकार की सार्थकता नही थी । फिर भी उच्च समरूपता समूह के छात्रों मे उच्च मध्यमान सार्थकता पाई गई और निम्न समरूपता समूह के छात्रों मे निम्न मध्यमान सार्थकता ।

"सुवीडलिस, लोन, और टोनेस्क" । 1974, पृ0-25-27 । ने पुरुष और स्त्रियों के मूल्य तरीकों का अध्ययन किया । आपने तथ्यों के बेमेल निदर्शन का विश्लेषण हाइरेरिकल समूह विधि के द्वारा किया और आपने छः विभिन्न मूल्यों तरीकों आत्मिक, रूढ़िगत, अविश्वासी, अनिद्रित, सामान्य और विषयगत आदि का मूल्याकंन किया ।

" मैटसैन एवं जे0आर0हैमन" । 1975, पृ0 258-268 । ने

ग्रेजुएट छात्रों के संतोष और बेसुरापन के बीच निषेधात्मक सम्बन्ध जाने के लिये उनके मूल्य विकास और अध्यापकों के मूल्यों का अध्ययन किया । इस कार्य हेतु आपने ब्राजील, भारत, नाइजीरिया और अमेरिका के छात्रों को चुना था । ब्राजील के छात्रों मे इस उप-कल्पना को नकार दिया । भारतीय छात्रों ने अपनी सार्थकता मानव, प्रकृति, संतोष आदि मे प्रगट की । नाइजीरिया के छात्रों मे प्रत्येक मूल्य के साथ सार्थकता प्रगट की । अमेरिकन छात्रों ने प्राचीनता के स्थान पर भविष्य की तैयारी पर अधिक बल दिया । अतः इस उप-कल्पना का न तो पूर्ण रूप से बहिष्कार ही हुआ और न सिद्ध ही हुई ।

" मार्टिन " । 1975, पृ0 32-35 । ने पाजिटिव रीइनफोर्समेंट आब्जरवेशन शिड्यूल । पी0आर0ओ0एस0। का प्रयोग करके मूल्यों का पुनर्बलन के साथ सम्बन्ध जानेकी कोशिश की । इसके साथ ही अपने मूल्य अध्ययन के लिये रोरवीज़ मूल्य सूची" का प्रयोग भी किया । निष्कर्षों मे पाया गया कि मूल्य " सुख" और सभ्यता की सार्थकता पी0आर0ओ0एस0 के पाँचों समूहों के साथ थी । अतः मूल्यों में और पुनर्बलन के बीच सम्बन्ध सार्थक होता है, स्पष्ट हुआ ।

" ग्रीन स्टोन " । 1976, पृ0 254-265 । ने "रोरवीज के मूल्यों" की जन सामान्यता जानने के लिये " एक क्षेत्र अध्ययन " किया । आपने दैव निदर्शन विधि के आधार पर नियंत्रित और प्रयोग समूहों का चुनाव किया । आपने पूर्व निर्धारित " अच्छे और "मन्द" अध्यापकों को पुनर्बलन के आधार पर अध्ययन हेतु लिया । निष्कर्ष मे पाया गया कि प्रयोग समूह मे "परिपक्व प्रेम" और प्यार करना" उच्च सार्थकता स्तर पर आया, जबकि"आत्म सम्मान" मूल्य निम्न स्तर पर आया, अपेक्षाकृत नियंत्रित समूह के ।

" फीदर " । 1977, पृ0 241-245 । ने मूल्य उपयोगिता, रूढ़िवादिता और आयु के बीच अंत: सम्बन्ध जानने का अध्ययन किया । आपने पाया कि आयु के बढ़ने के साथ-साथ मूल्यों का विकास भी होता है । आपने " टरमिनल वैल्यूज " के अन्तर्गत " परिवार सुरक्षा " और आत्म सम्मान" में सकारात्मक सम्बन्ध पाया और " इंस्ट्रमैंटल वैल्यूज" मे "नम्रता" और सफाई में । आपने मुख्य रूप से निषेधात्मक सम्बन्ध " उत्तेजित जीवन " और स्वतंत्रता" मे । टर्मिनल वैल्यूज । और बृहद चिन्तन" । इंस्ट्रमैंटल वैल्यूज । में पाया ।

" बैक टोल्ड और ऐकवाल " । 1978, पृ0 367-375 । में रूढ़िगत मूल्यों, का अध्ययन किया । आपने " हूपा " स्त्री एवं पुरुषों के मूल्यों का अध्ययन " कुल कोहन एवं स्टोडबैक के मूल्य अध्ययन के आधार पर किया । आपने निष्कर्षों के तौर पर चार बातों पर जोर दिया -

1- एक व्यक्ति का व्यवहार, आत्म वास्तविकता से उत्तम होता है ।
2- वैयक्तिक लक्ष्य और सामूहिक सहायता का आपसी सम्बन्ध होता है ।
3- वर्तमान को अधिक महत्व दिया जाता है, अपेक्षाकृत भूतकाल के ।
4- प्रकृति के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने की अपेक्षा अपने ऊपर नियन्त्रण और मास्टरी स्थापित करना ।

इस अध्ययन मे मुख्य बात यह पाई गई कि व्यक्ति मूल्य स्थापना मे भूतकाल के स्थान पर वर्तमान और भविष्य पर अधिक जोर देता है ।

" लिश्हर और बेवर" । 1979, पृ0- 167-170 । ने रोरचीज वैल्यूज इनवैन्टरीज" को आधार बनाकर स्नातक छात्रों का अध्यन " रूढ़िगत और उदार मूल्यों को जानने के लिये किया । निष्कर्ष मे रूढ़िगत और उदार

मूल्यों मे किसी भी प्रकार का सम्मान नही पाया गया । इसमें स्वतंत्रता और समानता को एक ही कोटि क्रम मे रखकर सम्बन्धित स्तर का अध्ययन किया गया था । दोनों ही समूह स्वतंत्रता मूल्यों को अच्छी तरह से समझते और जानते थे, लेकिन वे इस बात से बेखबर थे कि समानता के स्तर का मूल्यांकन गलत है ।

<u>मूल्यों का भारत मे अध्ययन</u> -

मूल्यों पर किये गये विदेशी अध्ययनों के मुकाबले, भारत देश में बहुत कम अध्ययन हुआ है । शायद जनजातियों के मूल्यों और उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति को लेकर कोई भी अध्ययन नही हुआ है । जनजातियों का अध्ययन समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, इतिहास आदि क्षेत्रों मे तो सम्भव हो पाया है, चाहे वह शोध कार्य के रूप में हो या लघु कार्य के रूप में । शिक्षा के क्षेत्र मे कोई भी कार्य न तो गुणात्मक रूप से और नहीं मात्रात्मक रूप से सार्थकता प्राप्त कर पाया है । अतः शोध कर्ता को तथ्य संकलन में और शोध कार्य को लिपिबद्ध करने में कोई भी सहायता सम्भव नहीं हो पा रही है । अब हम यहाँ मूल्यों के भारत देश मे हुये अब तक के अध्ययनों का वर्णन करते हैं -

अग्रवाल (1959) ने अपना अध्ययन " वैल्यू सिस्टम एण्ड डायमेंसस आफ यूनिवर्सिटी स्टूडेन्टस आफ यू0पी0" नामक विषय पर किया । इसके उद्देश्य निम्न प्रकार से हैं -

1- छात्रों के मूल्यों की प्रक्रिया को विस्तृत बनाना ।

2- छात्र जीवन के अध्ययन हेतु मूल्य मापनी का निर्माण करना ।

3- जीवन दर्शन से मूल्यों को प्राथमिक रूप से भिन्न स्थापित करना ।

4- सामाजिक, धार्मिक और सैद्धान्तिक मूल्यों के आधार पर वैयक्तिक भिन्नता का अध्ययन करना ।

5- जीवन दर्शन और मूल्य प्रक्रिया के बीच स्थापित सम्बन्ध का मूल्यांकन करना ।

निदर्शन -

शोधकर्ता ने लखनऊ और रूड़की विश्व-विद्यालय की छः फैकल्टीज मे से अपने निदर्शन का चुनाव किया । वे फैकल्टीज कला, विज्ञान, वाणिज्य, विधि, इंजीनियरिंग और मेडिकल थीं ।

निष्कर्ष -

1- मूल्य और जीवन दर्शन का सम्बन्ध स्वनियंत्रण, कार्य का सुधार एवं संगठन, आनन्द एवं ध्यान मे पाया गया ।

2- व्यक्ति द्वारा ग्रहण किये गये मूल्यों का आधार उसकी सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक आवश्यकतायें होती हैं ।

3- चार मूल्यों मे भिन्नता स्थापित हुई- स्वनियंत्रण के द्वारा लक्ष्य प्राप्त करना, विचारों की पवित्रता, वाक एवं क्रिया, आत्म विरोधी कार्यों के द्वारा छुटकारा ।

4- मानवीय कार्य और भाग्य का निर्माण धार्मिक मूल्यों के द्वारा होता है ।

5- मित्रता, योग्यता और आकांक्षाआदि मे मूल्य सार्थकता मिली ।

" कौर " ।1963। ने " प्रशिक्षणरत छात्रों के मूल्यों और उनके मौखिक व्यवहार" का अध्ययन किया । आपने 50 प्रशिक्षणरत छात्राओं में मूल्यों के क्रम का पता लगाया । वह क्रम सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, सौंदर्यात्मक, और सैद्धान्तिक मूल्य आदि रूप मे पाया गया ।

" शर्मा " । 1965 । ने 98 माध्यमिक शिक्षकों का दिल्ली मे अध्ययन किया । आपने पाया कि दिल्ली के शिक्षकों में सैद्धान्तिक, आर्थिक, और सामाजिक मूल्यों की बहुतायित पाई जाती है, अपेक्षाकृत अन्य मूलों के । पुरूष शिक्षकों ने सैद्धान्तिक और आर्थिक मूल्यों मे उच्च सार्थकता पाई, जबकि स्त्री शिक्षकों ने धार्मिक, सौंदर्यात्मक और राजनैतिक मूल्यों मे उच्च अंक प्राप्त किये ।

" कक्कर और गार्डन " । 1966, पृ0341-342 । ने " सर्वे-आफ इन्टरपरसनल वैल्यूज" पर अध्ययन किया । आपने 50 पुरूषों और 50 महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को अध्ययन के लिये चुना । आपने यह जानना चाहा कि मूल्यों का अध्यापकों के शिक्षा व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ता है । आपने इसके निष्कर्षों को अमेरिकन और जापानी अध्यापकों के साथ तुलना भी की । आपने पाया कि कुछ निश्चित मूल्य अमेरिकन संस्कृति मे पाये जाते हैं जैसे कि भारतीयसंस्कृति में । साथ ही आपने देखा कि भारतीय लोग जो अंग्रेजी भाषा को बोलते हैं, सार्थकता स्थापित करते हैं । इनमें से कुछ मूल्यों का सम्बन्ध शिक्षण की सार्थकता के साथ पाया गया । अध्यापकों का उच्च स्कोर परोपकारिकता नेतृत्व मूल्य में और निम्न स्तर सहयोग मूल्य मे आया । महिला अध्यापिकाओं का उच्च स्कोर स्वतंत्रता मूल्य मे और निम्न स्तर समानता मूल्य मे रहा ।

जब आपने इनकी तुलना अमेरिकन स्त्री-पुरूषों के मूल्यों के साथ की, तो पाया कि भारतीय प्रशिक्षणार्थियों का उच्च स्कोर समानता और परोपकारिता में तथा निम्न स्तर सहयोग और पहचान में रहा । भारतीय पुरूषों ने अमेरिकन पुरूषों की अपेक्षा स्वतंत्रता मूल्य मे निम्न स्कोर पाया । अमेरिकन और भारतीय स्त्रियों ने समान रूप से उच्च स्कोर समानता और परोपकारिता में

पाया और निम्न स्तर नेतृत्व मूल्य में ।

" एस0के0पाल " । 1967,पृ0 279-298 । ने भारतीय कॉलिजों के अध्यापकों का मूल्यांकन किया । आपने इंजीनियरिंग छात्र, मेडिकल छात्र, विधि छात्र, अध्यापक, आदि का वैल्यू पैटर्न्स का अध्ययन किया । इसमें छात्र पुरूष थे,और ऐसे लोगों का चुनाव किया गया जो अपने व्यवसाय में गहन रूचि एवं लगन रखते थे । मूल्यों का स्तर मध्यमान के आधार पर मापन किया गया । साथ "टी" परीक्षण का प्रयोग प्रत्येक समूह की सार्थकता जानने के लिये किया किया -

रैन्क आर्डर तालिका -

क्रमांक	इंजीनियरिंग छात्र	विधि छात्र	चिकित्सा छात्र	अध्यापक छात्र
1-	आर्थिक 45.76	राजनैतिक 44.64	सैद्धांतिक 44.30	राजनैतिक 42.62
2-	सैद्धान्तिक 49.26	आर्थिक 41.18	सामाजिक 43.12	सैद्धान्तिक 42.38
3-	राजनैतिक 40.12	सैद्धान्तिक 40.08	आर्थिक 40.70	आर्थिक 39.42
4-	सामाजिक 39.26	सामाजिक 38.98	राजनैतिक 40.06	सौन्दर्यात्मक 38.90
5-	सौन्दर्यात्मक 38.60	धार्मिक 37.58	धार्मिक 37.40	सामाजिक 38.74
6-	धार्मिक 36.14	सौन्दर्यात्मक 37.12	सौन्दर्यात्मक 34.34	धार्मिक 37.54

निष्कर्षों के आधार पर स्पष्ट होता है किजिन छात्रों ने चारो व्यवसायों का चुनाव किया था, उनके मूल्य तरीकों में भिन्नता स्थापित है ।

इंजीनियरिंग के छात्रों मे उच्च स्तर आर्थिक मूल्य को मिला और निम्न स्तर धार्मिक मूल्य को । विधि छात्रों ने " राजनैतिक मूल्य" और आर्थिक मूल्य को विशिष्ट स्थान दिया और सौन्दर्यात्मक मूल्य को निम्न स्थान । मेडिकल छात्रों ने सैद्धान्तिक मूल्य को उच्च स्थान दिया जबकि सौंदर्यात्मक मूल्य को निम्न स्तर । अध्यापक छात्रों ने प्रथम स्थान राजनैतिक मूल्य को दिया और धार्मिक मूल्यों को निम्न स्थान ।

सामान्य निष्कर्षों के रूप मे यह कहा जा सकता है कि व्यवसायिक प्रशिक्षणार्थी इंजीनियरिंग, विधि, चिकित्सा, और अध्यापक आदि सभी मूल्यों की विभिन्नता से प्रभावित पाये गये । इस बात के लिये शोध की आवश्यकता है कि किस मूल्य का विकास प्रशिक्षण के दौरान होता है? या कौन सा मूल्य किस प्रशिक्षण को बढ़ावा देता है ।

" डॉ0 सौभाग्यवती" । 1967 । ने एक मूल्य मापनी बनाई ताकि शिक्षण के क्षेत्र मे भविष्यवाणी की जा सके । आपने निष्कर्षों के तौर पर पाया कि जो कुशल अध्यापक/अध्यापिकायें हैं उनमें " सामाजिक मूल्य " उच्च स्थान पर पाया जाता है अपेक्षाकृत अकुशल अध्यापक/ अध्यापिकाओं के ।

" वर्मा " । 1968 । ने एक शोध कार्य प्रशिक्षण के प्रभाव को । मूल्यों पर, अभिवृत्ति पर, व्यक्तित्व पर, समायोजन पर । जानने के लिये किया ।

उद्देश्य -

शोध कार्य का उद्देश्य था कि क्या शिक्षक प्रशिक्षण मूल्यों, अभिवृत्ति, व्यक्तित्व समस्याओं और समायोजन समस्याओं पर उपयुक्त प्रभाव छोड़ते हैं, और ये परिवर्ती आपस मे कितने सह सम्बन्धित है ।

निदर्शन -

आपने राजस्थान प्रदेश के 546 बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों को इस शोध कार्य हेतु चुना ।

निष्कर्ष -

1- इन प्रशिक्षणार्थियों ने सैद्धान्तिक और आर्थिक मूल्यों में सार्थकता नहीं पाई ।

2- इन लोगों ने सौन्दर्यात्मक मूल्यों में सार्थकता प्राप्त की ।

3- ये लोग " सामाजिक और राजनैतिक" मूल्यों में विभिन्नता नही रखते थे ।

4- इन्होने " धार्मिक मूल्यों" में भी सार्थकता नही प्राप्त की ।

5- ये लोग बच्चों के प्रति और विद्यालय कार्य के प्रति सचेत थे और अपनी अभिवृत्ति को लगातार सहायक सिद्ध करते रहे । सम्पूर्ण मापनी के प्रति इनकी सार्थकता किसी न किसी रूप मे प्रगट होती रही ।

6- आर्थिक सुरक्षा, स्व-प्रगति, परिवार सम्बन्धी, घर, धर्म, व्यवसाय और स्वास्थ्य समायोजन आदि क्षेत्रों मे समस्याओं मे गिरावट आई ।

7- प्रशिक्षण का सीधा प्रभाव सामाजिक, संवेगात्मक, और व्यवसायिक समायोजन की प्रगति पर पड़ता है ।

" खरे " (1968, पृ० 104-109) ने एक शोध कार्य " आकुपेशनल डिफरेन्सिस इन लाइफ वैल्यूज " पर किया । आपका मुख्य उद्देश्य मूल्यों का व्यवसाय चयन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था ।

निदर्शन-

आपने अपना शोध क्षेत्र नागपुर, वर्धा, जबलपुर, और रीवा चुना, जो विधि, इंजीनियरिंग, चिकित्सा और शिक्षण व्यवसायाओं में कार्यरत थे ।

निष्कर्ष -

1- इंजीनियर्स, डाक्टर्स और प्रोफेसर्स ने सैद्धान्तिक मूल्यों में उच्च स्थान पाया, और वकीलों ने तृतीय स्थान पाया ।

2- इंजीनियर्स, डाक्टर्स और प्रोफेसर्स ने आर्थिक मूल्यों में तृतीय स्थान प्राप्त किया, जबकि वकीलों ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया ।

3- इंजीनियर्स और प्रोफेसर्स ने सौन्दर्यात्मक मूल्यों में चतुर्थ स्थान पाया, जबकि वकील और डाक्टर्स ने पंचम स्थान पाया ।

4- डाक्टर्स ने सामाजिक मूल्यों में द्वितीय स्थान, वकीलों ने चतुर्थ स्थान और इंजीनियर्स व प्रोफेसर्स ने पंचम स्थान पाया ।

5- वकीलों ने राजनैतिक मूल्यों में उच्च स्थान पाया, प्रोफेसर्स व इंजीनियर्स ने द्वितीय स्थान और डाक्टर्स ने चतुर्थ स्थान प्राप्त किया ।

6- सभी चारों समूहो ने धार्मिक मूल्यों में छठा स्थान प्राप्त किया ।

" सक्सेना" (1969, पृ0 135-162) ने " चैकलिस्ट " का प्रयोग करके " आर्थिक " मनोरंजनात्मक, संघात्मक, चारित्रिक, वैयक्तिक, सौंदर्यात्मक, धार्मिक और इन्द्रियात्मक आदि मूल्यों का मापन किया । आपने रूढ़िगत मूल्यों को कॉलिज छात्रों में सबसे अधिक शक्तिशाली, प्रभावशाली पाया ।

" दीक्षित और शर्मा " (1970, पृ0 57-63) ने भटनागर द्वारा विकसित " मूल्य मापनी " के द्वारा अध्यापकों का अध्ययन किया । आपने अपने निष्कर्षों में पाया कि माध्यमिक शिक्षक सौन्दर्यात्मक मूल्य में उच्च स्थान रखते हैं, अपेक्षाकृत विश्वविद्यालयी पुरुष अध्यापकों के । विश्व-विद्यालय के स्त्री शिक्षक आर्थिक मूल्यों में उच्च स्थान रखते हैं अपेक्षाकृत माध्यमिक शिक्षिकाओं

" कक्कर " । 1971, पृ0 77-80 । ने छात्र अध्यापक और कालिज अध्यापकों का मूल्यों के आधार पर तुलना की । आपने पाया कि सैद्धान्तिक, राजनैतिक और धार्मिक मूल्यों मे किसी भी प्रकार का अन्तर नहीं है, बल्कि आर्थिक, सौन्दर्यात्मक और सामाजिक मे पर्याप्त भिन्नता है । कालिज के अध्यापकों ने सौन्दर्यात्मक मूल्यों में उच्च सार्थकता प्रदर्शित की, जबकि छात्र अध्यापको ने आर्थिक मूल्यों में ।

" महेन्द्रा यू0 " । 1971 । ने वैल्यू पैटनर्स आफ एजूकेशनल ड्राप आउटस " का अध्ययन किया । इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शैक्षिक पिछड़ेपन मे सम्मिलित मूल्यों सैद्धान्तिक, राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और सौन्दर्यात्मक के स्तर का पता लगाना । इसमे 100 + 200 के अनुपात में अनुत्तीर्ण और उत्तीर्ण छात्रों का प्रयोग किया गया ।

निष्कर्ष -

1- अधिकांश रूप मे ड्राप आउट अनुत्तीर्ण और उत्तीर्ण छात्र सैद्धान्तिक, राजनैतिक, आर्थिक, और सौन्दर्यात्मक आदि मूल्यों में समान स्तर रखते थे ।

2- ड्राप आउटस और अनुत्तीर्ण छात्र धार्मिक मूल्यों मे किसी भी प्रकार की भिन्नता नही रखते थे, लेकिन ड्रापआउटस और उत्तीर्ण छात्रों मे भिन्नता में सार्थकता थी ।

3- सम्पूर्ण शोध कार्य के निष्कर्षों को देखने से स्पष्ट होता है कि सार्थक भिन्नता, ड्रापआउट और उत्तीर्ण छात्रों के बीच व ड्रापआउट और अनुत्तीर्ण छात्रों के बीच नही पाई गई । सिर्फ उत्तीर्ण छात्रों और अनुत्तीर्ण छात्रों के बीच सामाजिक मूल्यों मे सार्थक भिन्नता पाई गई ।

" कौल " । 1973, पृ0 173-184 । ने 100 ग्रुतिष्ठ और

100 सामान्य अध्यापकों के मूल्यों का अध्ययन किया । आपने पाया कि छः मूल्यों में से सैद्धान्तिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक मूल्यों में प्रशिक्षित अध्यापक उच्च स्तर पर आये, जबकि सामान्य अध्यापक आर्थिक और सौन्दर्यात्मक मूल्यों में उच्च स्तर पर आये ।

" बेकर, डी०एम० " । 1973 । ने स्त्री छात्राओं का " " वैल्यू पेटर्न" का अध्ययन किया । आपके शोध का मुख्य उद्देश्य छात्राओं के मूल्य अवरोधन या विरोध जीवन में उद्देश्य, अध्ययन में, व्यवसाय में, सामाजिक जीवन में और विवाह आदि क्षेत्रों में अध्ययन करना था ।

निष्कर्ष -

1- $\frac{3}{4}$ हिस्सा पिताओं में और $\frac{9}{10}$ हिस्सा माताओं ने कालेज शिक्षा प्राप्त नहीं की थी ।

2- 7 प्रतिशत लोगों ने स्नातक तक शिक्षा पाई थी ।

3- कुछ छात्रायें कालेज शिक्षा ग्रहण करने के लिये बिना उद्देश्य के आई थीं और कुछ व्यवसाय प्राप्त करने हेतु आई थीं ।

4- 12 प्रतिशत माता-पिता ही स्नातक छात्राओं को व्यवसाय के प्रति उत्साहित बना सके ।

5- बंधन को अवरोध या निरोध का शक्तिशाली स्रोत माना गया ।

6- छात्राओं के मूल्य पैटर्न को पाश्चात्य साहित्य और सिनेमा घरों ने अत्यधिक रूप से प्रभावित किया है ।

"मिलेप सिंह" । 1974 । ने अध्यापकों के मूल्यों का अभिवृत्ति और व्यवसाय संतुष्टिकरण के संदर्भ में अध्ययन किया । इस अध्ययन का उद्देश्य अध्यापकों में निहित प्रभावशाली मूल्यों का पता लगाना ताकि उनकी अभिवृत्ति

व्यवसाय के प्रति सहायक या अवरोधक बन सके । इससे वे व्यवसाय के प्रति संतुष्ट हैं या नहीं स्पष्ट हो सकेगा ।

शिक्षकों ने उच्च स्थान सामाजिक और सैद्धान्तिक मूल्यों में पाया जबकि निम्न स्थान आर्थिक और राजनैतिक मूल्यों में । आयु, शिक्षा का स्तर, प्रशिक्षण और विद्यालय प्रबन्ध, स्थान और विद्यालय की बनावट आदि का शिक्षकों के मूल्यों के विकास पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता है । उनके मूल्यों में अन्तर सिर्फ विषयगत शिक्षण भिन्नता के कारण प्रतीत हुआ ।

" डी०डी०, डी०के०" (1974) ने हाई स्कूल छात्रों की मूल्यों का अध्ययन किया । अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य छात्रों के मूल्यों के विकास का अध्यन करके उनका सम्बन्ध उनके माता-पिता और अध्यापकों मूल्यों के साथ स्थापित करना ।

<u>निदर्शन</u> -

आपने 803 छात्र कक्षा-5, 7 और 9 तक के लिये, 452 छात्र व्यवसायिक क्षेत्र से, 199 देहाती क्षेत्रों से, 152 छात्र शहरी क्षेत्रों के लिये ।

<u>निष्कर्ष</u> -

1- मूल्यों का मध्यमान 66.3 % था ।

2- विभिन्न कक्षाओं के छात्रों के बीच मूल्यों मे सार्थक अन्तर नहीं था ।

3- मूल्यों के विकास तरीके सभी छात्रों मे एक जैसे नहीं थे ।

4- छात्र मूल्यों और माता-पिता । अध्यापक मूल्यों के बीच सार्थक सम्बन्ध स्पष्ट नहीं था ।

" कुलश्रेष्ठ " (1974) ने अध्यापकों की उभरते मूल्य तरीकों का सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण मे अध्ययन किया ।

उद्देश्य -

1- अध्यापकों की उभरते हुये मूल्यों का अध्ययन करने के लिए एक मूल्य मापनी का विकास करना ।

2- अध्यापक मूल्यों का यौन, आर्थिक, धर्म, जाति, विषय, अनुभव, आयु, आमदनी, शिक्षा और प्रशिक्षण आदि के आधार पर अध्ययन करना ताकि भिन्नता और समरूपता का अध्ययन हो सके ।

3- अध्यापक मूल्यों का पता लगाकर सामाजिक/सांस्कृतिक का अध्ययन करना ।

4- शोध निष्कर्षों के आधार पर विद्यालय के पर्यावरण में सुधार लाने के लिए निर्देश देना ।

5- विद्यालयों के समाजिक और सांस्कृतिक पर्यावरण का अध्ययन करना ।

निदर्शन -

आपने शोध कार्य हेतु 700 अध्यापकों का चयन किया, जो देहाती क्षेत्रों और शहरी क्षेत्रों के 64 विद्यालयों से चयनित किये गये थे ।

निष्कर्ष -

तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि विद्यालय चाहे वे देहाती क्षेत्र के हों, या शहरी क्षेत्रों के सभी अनियंत्रित है और परेशान हैं । वे पूर्ण रूप से अपने आधार समाज के प्रभाव, मूल्य, रीति-रिवाजों से आच्छादित हैं । अधिकांश अध्यापकों ने अपनी रूचि को पठन-पाठन मे, पुस्तकालय अध्ययन अध्यापकों मे अंतः सम्बन्धों मे, प्राचार्य और छात्र सम्बन्धों मे आदि में प्रदर्शित किया । यह रूचि प्रदर्शन विद्यालयों की अपनी-अपनी भिन्नता पर निर्भर करता है ।

"शर्मा " (1975, पृ0 31-36) ने कालिज छात्रों के

किया । आपने निष्कर्षों में पाया कि पंसदों और मूल्यों में उच्च सार्थकता है, परिणाम स्वरूप इसीलिये समाज इनको सामान्य तौर पर ग्रहण भी करता है । सामाजिक सेवा ने उच्च स्थान प्राप्त किया । आत्म प्रकाशन और प्रसिद्धी को उच्चता प्राप्त हुई जबकि लाभ, शक्ति और सुरक्षा आदि को निम्न स्थान प्राप्त हुआ । सामान्य तौर पर यह प्रगट हुआ कि व्यवसायिक पंसद और मूल्यों का एक दूसरे के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है ।

" कटियार " । 1976 । ने इन्टर कक्षाओं के छात्रों के मूल्यों और व्यवसायिक पंसद का अध्ययन किया ।

उद्देश्य-

1- छात्रों के मूल्यों का अध्ययन करना और उनके अध्ययन पाठ्यक्रमों में अन्तर स्थापित करना ।

2- छात्रों के व्यवसायिक पंसदों का अध्ययन करना ।

3- छात्रों के व्यवसायिक पंसदों की तुलना अध्ययन पाठ्यक्रम के आधार पर करना ।

निदर्शन -

आपने शोध कार्य हेतु शहरी क्षेत्र के 2158 छात्रों का चयन किया । ये छात्र कक्षा-11 और 12 के छात्र थे ।

निष्कर्ष-

1- छात्रों ने उच्च स्तर प्रजातांत्रिक, सामाजिक और ज्ञान मूल्यों में पाया, सामान्य स्तर स्वास्थ्य में,धार्मिक, परिवार प्रतिष्ठा और सौन्दर्यात्मक मूल्यों में रहा, निम्न स्तर शक्ति, आनन्द और आर्थिक मूल्यों में रहा ।

2- छात्रों के विषयों के बीच मूल्यों में कम ही समानता स्थापित हुई ।

3- मूल्यों का प्रकाश जाति, धर्म, और सामाजिक प्रतिष्ठा के आधार पर

भिन्नता स्थापित करते हैं ।

4- उच्च स्तर मूल्यों की प्रक्रिया को निश्चित करते हैं ।

" रेड्डी " । 1976 । ने मूल्यों का अध्ययन शिक्षा मे परिवर्तन के रूप मे किया । शिक्षा एक परिवर्तित आदर्श है जो निश्चित समाज द्वारा मूल्यों के विकास में प्रयत्नशील रहती है । इस प्रकार से यह मूल्यों की अराजकता मात्र है और वर्तमान में पुरूष मूल्यों को ही जीवन का सत्य मानता है । फिर भी उसकी आकांक्षा वर्तमान शिक्षा प्रणाली के द्वारा परिपूरित नहीं होती है । इसके लिये हमें एक नवीन योजना के निर्माण की आवश्यकता है, जो हमारी आवश्यकताओं और जीवन के सभी उद्देश्यों की पूर्ति मे सहायक बन सके । यदि हम संसार की एकता चाहते हैं तो हमें अपने अन्दर चेतनात्मक जागृति के द्वारा स्वयं में एकता स्थापित करनी चाहिये , जिसे शिक्षा का पर्याय माना जाता है ।

निष्कर्ष -

1- शिक्षा के द्वारा मूल्य परिवर्तन सम्भव नही, अत: शिक्षा की सार्थकता मूल्यों के साथ प्राप्त नही हुई ।

2- वर्तमान शिक्षा, वर्तमान समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति नही कर पा रही है, अत: उसे आदर्श नही माना जा सकता ।

3- मूल्य सदैव समान नहीं रहते हैं । मूल्यों में परिवर्तन स्वत: ही बनावट और तरीकों में होता रहता है । अत: मूल्यों का प्रत्यय परिवर्तनशील होता है ।

4- वर्तमान शिक्षा प्रणाली अपने कर्तव्य पालन मे खरी नहीं उतरती है क्योंकि इसमें असत्य आदेशों का प्रत्येक स्तर पर बोलबाला है । शिक्षा और मूल्य अंत: सह सम्बन्धित यंत्र विन्यास है ।

" सिंह व गुप्ता " । 1977, पृ0- 73-76 । ने मूल्यों का अध्ययन रचनात्मकता के संदर्भ मे किया । आपने तथ्यों का संकलन भारतीय किशोरों पर किया। रूढ़िगत मूल्यों और रचनात्मकता के बीच किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं पाया गया । अत: यह सिद्ध होता है कि रचनात्मक छात्रों में अपने ही प्रकार का अनोखा मूल्य प्रकार होता है ।

" वर्मा " । 1979। ने मूल्यों का अध्ययन किया । आपने अपने अध्ययन मे पाया कि स्नातक छात्र/छात्राओं में मूल्य प्रकार, व्यक्तित्व और व्यवसायिक अभिरूचियों में सार्थक सम्बन्ध होता है ।

" पाण्डेय आर0पी0 " । 1983 । ने " माध्यमिक शिक्षकों के मूल्यों का प्रभाव उनके कक्षा व्यवहार के रूप मे किया ।

उद्देश्य -

1- प्रशिक्षित माध्यमिक अध्यापकों के मूल्यों के प्रकारों को जानना ।

2- व्यक्तित्व विशेषताओं का अध्ययन करना, जो निश्चित मूल्य प्रकारों में आती है ।

3- मूल्य प्रकार और व्यक्ति विशेषताओं के अनुसार शिक्षण व्यवहार को निश्चित करना ।

4- कौन सा मूल्य प्रकार शिक्षण कार्य को प्रभावशाली बनाने में सहयोग करता है, पता लगाना ।

निदर्शन -

शोधकर्ता ने 500 स्त्री/पुरूषों शिक्षकों को शोध हेतु चुना । ये सभी झाँसी मण्डल में कार्यरत और 5 वर्ष के अनुभवी थे ।

निष्कर्ष -

1- अध्यापक मूल्यों, सैद्धान्तिक और सौन्दर्यात्मक की सार्थकता कक्षा व्यवहार के साथ प्राप्त हुई, अन्य मूल्यों की नहीं ।

2- अध्यापक का व्यक्तित्व निश्चित मूल्य प्रकार से प्रभावित होता है, कक्षा व्यवहार के साथ सार्थक सम्बन्ध होते हैं ।

3- माध्यमिक शिक्षकों में पाई जाने वाली मूल्यों में से आर्थिक और सैद्धान्तिक मूल्य उच्च स्थान पर थे । धार्मिक मूल्य निम्न स्थान पर ।

4- पुरुष और स्त्री शिक्षकों के मूल्य प्रकारों में कोई अन्तर नहीं पाया गया ।

5- मूल्य का अध्ययन भिन्न परिस्थिति में निष्कर्षों में भिन्नता स्थापित करता है ।

* श्रीवास्तव सत्य प्रकाश । 1985 । ने । मूल्यों के प्रभाव को सृजनात्मकता । पर जानने का अध्ययन किया । आपने मूल्यों और सृजनात्मकता का सम्बन्ध मानकर विषय का अध्ययन प्रस्तुत किया ।

निदर्शन -

आपने झाँसी प्रक्षेत्र के 556 छात्र बी०ए० और बी०एस.सी० के अध्ययन हेतु लिये । इनमें से 301 छात्र बी०ए० द्वितीय वर्ष, और 255 बी०एससी० द्वितीय वर्ष के थे ।

निष्कर्ष -

1- सौन्दर्यात्मक मूल्य का सकारात्मक सार्थकता सृजनात्मकता के साथ पाई गई ।

2- मूल्यों का किसी भी प्रकार का सम्बन्ध सामाजिक आर्थिक स्तर और समायोजन के साथ नहीं पाया गया ।

शैक्षिक अभिवृत्ति मापन -

" हेला, पैना, व गेज " । 1955,पृ0 167-178 । ने प्रशिक्षित छात्रों के मूल्यों और शिक्षक अभिवृत्ति का अध्ययन किया । इस अध्ययन में पाया कि जो छात्र प्रभावशाली ढ्ग से शिक्षण करते हैं, उनके प्रति अध्यापकों का बौद्धिक तालमेल सार्थक होता है, जो अध्यापक शैक्षिक मूल्यों से प्रेरित होते हैं, वे छात्रों को अधिक प्रभावित और संतुष्ट कर पाते हैं ।

" कुण्ट " । 1954, पृ0 418-422 । ने अच्छे और बुरे शिक्षण के आधार पर शैक्षिक अभिवृत्ति का मापन किया । निष्कर्ष मे पाया कि अच्छे प्राइमरी अध्यापक सामान्यत: प्रभावशाली अभिवृत्ति का प्रदर्शन शिक्षा और सामान्य रूप में करते हैं अपेक्षाकृत अच्छे माध्यमिक अध्यापकों के ।

" रेयान्स " । 1960 । ने अध्यापकों की विशेषताओं का व्यापक रूप से अध्ययन किया । इस अध्ययन की उत्पत्ति 100 प्रोजेक्ट मे 6000 अध्यापक, 1700 स्कूल्स, और 450 विद्यालय प्रक्रियाओं को सम्मिलित किया गया था । यह अध्ययन करीब 6 वर्ष तक चला था । इसके मुख्य उद्देश्यों में कक्षा व्यवहार, अभिवृत्ति , विचार धाराओं और बौद्धिक व संवेगात्मक आदि क्षेत्रों में अध्यापक अभिवृत्ति का छात्रों के प्रति या कक्षा व्यवहार के प्रति मापना या विश्लेषित करना था । आपने पाया कि पुराने अध्यापक अधिगम केन्द्रित शिक्षा पर जोर देते थे और नौजवान अध्यापक बाल केन्द्रित शिक्षा पर । महिला अध्यापकों ने उच्च सार्थकता कक्षा व्यवहार के साथ प्रदर्शित की अपेक्षाकृत पुरुष अध्यापकों के । साथ ही अविवाहित अध्यापकों की अपेक्षा विवाहित अध्यापकों की सार्थकता निम्न स्तर पर रही । अंग्रेजी, सामाजिक विषय अध्यापक जो विवाहित थे,उनकी अभिवृत्ति छात्र सहायक थी, अपेक्षाकृत अविवाहित अध्यापकों के ।

" हार्न एवं मारिसन " । 1955, पृ0 118-125 । ने "मिनोसोटा टीचर स्टुटीट्यूट इन्वेन्टरी" के द्वारा 306 कॉलेज छात्रों का शिक्षा पाठ्यक्रम के बारे मे अध्ययन किया ।

प्रथम तत्व के अन्तर्गत "आधुनिक अभिवृत्ति और रूढ़िगत अभिवृत्ति"की तुलना कक्षा व्यवहार नियन्त्रण हेतु रखा गया ।

द्वितीय तत्व के अन्तर्गत " आशावादी अभिवृत्ति और निराशावादी अभिवृत्ति की तुलना छात्रों की राय मे जानने हेतु की गई ।

तृतीय तत्व के अन्तर्गत छात्र व्यवहार के प्रति " चतुरता या विद्रोही प्रवृत्ति का पता लगाना ।

चतुर्थ तत्व के अन्तर्गत छात्र का बहिष्कार रखा गया ।

पंचम तत्व के अन्तर्गत छात्र नियन्त्रण की इच्छा या स्वतंत्रता की इच्छा को स्थान दिया गया ।

" ब्रिम " । 1966, पृ0 441-445 । ने स्नातक छात्रों की अभिवृत्ति बच्चों के प्रति कैसी है, जानने के लिये अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत एक अध्ययन किया । आपने डेनवर विश्वविद्यालय के 250 प्रशिक्षणरत छात्रों पर । एम0टी0ए0आई0 । अध्ययन किया । प्री-टेस्ट और पोस्ट-टेस्ट के द्वारा तुलना करके सार्थक भिन्नता स्थापित की गई । इन छात्रों की अभिवृत्ति मे परिवर्तन पाया जाता था, जब वे लोग अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों होते थे ।

" सिम्प्सन, वाहिटले, और मोसर" । 1966 पृ0 93-106 । ने " कागनीटिव फ्लेक्सिबिलिटी एन इफैक्टिव टीचिंग" का अध्ययन किया । प्रभावकारिता का अध्ययन अध्यापकों की निरीक्षण क्षमता के आधार पर किया

निर्देशों का लागू करना आदि योजनाओं का समावेश करके अभिवृत्ति और उनके व्यवहार का अध्ययन किया ।

" सिल्वर मैन " । 1969, पृ0 402-407 । ने अध्यापक अभिवृत्ति का अध्ययन छात्रों के प्रति किया । आपने पाया कि अध्यापक अभिवृत्ति, छात्र व्यवहार द्वारा प्रभावित होती है । साथ ही छात्रों के निरीक्षित व्यवहार के द्वारा ही अध्यापक अभिवृत्ति का मूल्यांकन भी होता है ।

" विजियन और वर्लेटन " । 1970 । ने एक अध्ययन अध्यापक-छात्र अभिवृत्ति पर किया । आपने निष्कर्ष मे पाया कि अध्यापक अभिवृत्ति छात्रों की योग्यता और व्यवहार को प्रभावित करती है ।

" मैश " । 1972, पृ0 141-146 । ने अध्यापकों की योग्यता और सामाजिक कक्षा का अध्ययन किया । छात्र कक्षाओं का अवलोकन अध्यापकीय क्षमता के रूप मे किया गया । निष्कर्षों में पाया गया कि अध्यापक का छात्र प्रत्यक्षीकरण कक्षा के अन्दर छात्रों को प्रभावित करता है और महत्वपूर्ण होता है, अपेक्षाकृत सामाजिक कक्षा मे प्रत्यक्षीकरण के ।

" ग्रीन " । 1972, पृ0 343-347 । ने " मूल्य और अभिवृत्ति का अध्ययन किया । आपने अध्यापकों के दो समूह बनाये । पहले " फरवरी माह में अध्ययन किया, बाद मे मई माह में । प्रयोगात्मक और नियन्त्रित समूहों में भिन्नता की सार्थकता स्थापित करने के लिये "टी" परीक्षण का प्रयोग किया गया । निष्कर्षों मे पाया गया कि अभिवृत्ति के मध्यमानों मे सार्थकता थी, और मूल्य मध्यमानों मे सार्थकता नही थी ।

अभिवृत्ति का भारत मे अध्ययन

भारत देश मे अभिवृत्ति के अध्ययन के बारे मे विचार प्रगट करते हुये " एम0बी0बुच " ने लिखा है ।1972, पृ0 81-82 । " अभिवृत्ति के क्षेत्र मे भारत में किये गये अध्ययन प्रारम्भिक प्रकार के प्रतीत होते हैं । ऐसी कोई भी संस्था या केन्द्र स्थापित नही है जो निश्चित समय तक इस कार्य को लगातार कर सके ।"

अभिवृत्ति का अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापक, प्रशिक्षण, प्रेरणा, पाठ्यक्रम आदि मे सम्पन्न किये गये हैं । अत: शिक्षा के क्षेत्र में जनजाति की शैक्षिक अभिवृत्ति का मापन शोधकर्ता ने इसी ध्येय से शोध विषय चुना है । अत: भारत मे अभिवृत्ति मापन के लिये किये गये प्रयासों का वर्णन किया जाता है ।

" बुच " । 1959 । ने अभिवृत्तियों और शिक्षकव्यवसाय का अध्ययन किया । निष्कर्षों मे पाया गया कि प्रशिक्षण का अध्यापक की अभिवृत्ति निर्माण पर विशेष प्रभाव पड़ता है । प्रशिक्षण का प्रभाव स्त्री अध्यापिकाओं पर अधिक पड़ा, अपेक्षाकृत पुरुष शिक्षकों के ।

" रस्तोगी । 1956 । "कोठारी । 1958 ।, ठक्कर । 1959 । आदि ने अध्यापक अभिवृत्ति का अध्ययन किया । निष्कर्षों में पाया गया कि अध्यापकों का प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात शिक्षा और छात्रों के प्रति अभिवृत्ति मे एक नया परिवर्तन आता है । साथ ही वेतन के प्रति असंतुष्टि प्राप्त होती है ।

" पाण्डये" । 1958 । ने स्त्री शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का उनके व्यवसाय के प्रति अध्ययन किया, और पाया

रूप से शिक्षण व्यवसाय को अपना चुकी हैं, उनको जो सुविधायें और मौके प्राप्त होते हैं, वह किसी अन्य क्षेत्र मे नहीं होते हैं ।

"अदावल" । 1968,पृ0 137-138 । नेअभिवृत्ति अध्ययनों का पुर्निरीक्षण किया और निष्कर्ष निकाला कि अध्यापकों को अभिवृत्ति अपने व्यवसाय के प्रति अनुकूल नहीं है ।

"अग्रवाल" । 1966 । ने अपने अध्ययन मे पाया कि अध्यापकों की अभिवृत्ति अपने व्यवसाय के प्रति अनुकूल है । साथ ही पद, आयु, लिंग और अनुभव आदि तत्व शैक्षिक मनोवृत्ति मे परिवर्तन नही ला पाते हैं ।

"पन्नाबलम और विसवेसवरम" । 1966,पृ0 65-74 । ने 422 अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों पर शैक्षिक अभिवृत्ति मापने के लिये अध्ययन किया । निष्कर्ष मे पाया कि प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति मे शिक्षा, आर्थिक और व्यवसायिक स्थितियों में सार्थक सम्बन्ध नही था ।

" कुप्पूस्वामी व रैपन" । 1968, पृ0 9-16 । ने अध्यापक अभिवृत्ति को मापने के लिये "लिकर्ट" के प्रकार की मापनी तैयार की । उसमें आपने 40 प्रश्न बनाये थे । आपने निष्कर्षों मे पाया कि अध्यापक अभिवृत्ति का विद्यालय मे दिये जाने वाले नैतिक एवं धार्मिक सुझावों पर सार्थक प्रभाव था । स्त्री/पुरुष अध्यापकों और विवाहित/अविवाहित अध्यापकों के बीच अभिवृत्ति मे सार्थक भिन्नता थी ।

" वर्मा " । 1968 । ने अपने शोध कार्य " प्रशिक्षण का मूल्यों अभिवृत्ति, व्यक्तिगत समस्याओं,और समायोजन आदि पर क्या प्रभाव पड़ता है,मे स्पष्ट किया है कि प्रशिक्षणकर्ता की अभिवृत्ति बच्चों और विद्यालय कार्यों के प्रति सार्थकता स्थापित नही करती है ।

"मिले० सिंह" । 1977 । ने अपने शोधकार्य मूल्यों का अध्यापक अभिवृत्ति और व्यवसाय संतुष्टि मे स्पष्ट किया है कि अध्यापक अभिवृत्ति व्यवसाय, कक्षा शिक्षण, बालक शिक्षण केन्द्र, शिक्षा प्रक्रिया, अध्यापक और प्रशिक्षणार्थी आदि के साथ सार्थकता है । अनुभव, लिंग, विषय, विवाह, आयु, प्रशिक्षण आदि तत्वों का शिक्षक अभिवृत्ति के साथ किसी भी प्रकार की सार्थक भिन्नता स्पष्ट नहीं हुई है ।

निष्कर्ष -

उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मानव जीवन में " मूल्य" और अभिवृत्ति की सबसे अधिक उपादेयता है । व्यवहार के विभिन्न पक्षों और आयामों में मूल्यों का अध्ययन समय-समय पर किया गया, फिर भी शोधकर्ता ने इस परिवर्ती को अपने अध्ययन क्षेत्र का विषय बनाया । इस सम्बन्ध मे निम्न-लिखित तर्क प्रस्तुत हैं -

1- प्रस्तुत "मूल्यों" का अध्ययन ऐसी जनजातियों पर किया जा रहा है जो घुमक्कड़, परिवर्तित और कृषि प्रधान हैं ।

2- इन जनजातियों को विद्वानों ने आदिवासी माना है, अत: इनके मूल्यों का और शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन विकास मे साधक बनेगा ।

3- इन जनजातियों के मूल्यों का शैक्षिक अभिवृत्ति का अभी किसी भी विद्वान ने अध्ययन नहीं किया है ।

4- ये जनजातियां अपने विकास द्वारा बुन्देलखण्ड प्रक्षेत्र के पिछड़ेपन को दूर कर सकती हैं ।

5- इनमें शिक्षा के प्रति रुचि जाग्रत करना प्रशासन का ही नहीं शिक्षकों का भी कर्तव्य है, ताकि इनमें शिक्षा का विकास प्रारम्भ हो सके ।

6- इनको सामान्य नागरिक बनाना, समाज का परम कर्तव्य है, इस हेतु यह अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

7- अन्य जनजातियों के अध्ययनों मे जो कमियाँ रह गई थी, उनको इनके अध्ययन द्वारा समाप्त करना और इनके अन्दर नागरिक गुणों के भाव को पैदा करना भी आवश्यक है।

अध्याय-चतुर्थ

शोध प्रविधि

(१) अध्ययन की रूपरेखा
(२) शोध निदेशन
(३) उपकरण
(४) प्रदत्त संकलन की विधियाँ
(५) प्रदत्त विश्लेषण की प्रविधियाँ

अ- अध्ययन की रूपरेखा

प्रस्तुत शोध कार्य बुन्देलखण्ड प्रदेश (झाँसी जनपद) में व्याप्त जनजातियों पर किया गया है। इस हेतु उन्हीं जनजातियों का चुनाव किया गया है जो अपनी प्रारम्भिक अवस्था से ही जनजीवन में व्याप्त हैं। इसमें स्त्री एवं पुरुषों दोनों ही यौन वर्गों का समान रूप से अध्ययन किया जायेगा। इसमें 18 वर्ष से लेकर 65 वर्ष की आयु तक के स्त्री-पुरुषों पर तथ्य एकत्रित किये गये, फिर उनके मूल्यों और शिक्षक अभिवृत्तियों का अध्ययन किया जायेगा। प्रथमतः जनजातियों के मूल्यों का अध्ययन डा० एन०पी० अहलुवालिया द्वारा विकसित मूल्य अनुसूची (1980) के द्वारा किया जायेगा। इसके पश्चात उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति का अध्ययन डा० एस०एन०ओपिट्ट (1982) की अभिवृत्ति मापनी शिक्षा में के द्वारा किया जायेगा। प्रस्तुत शैक्षिक अभिवृत्ति मापनी का निर्माण विशेष तौर पर अशिक्षित और जनजातीय समुदायों हेतु ही किया गया है। इस प्रकार से जनजातीय समूह के विकास हेतु प्रशासनिक सुविधायें, शिक्षा प्रयास और उनमें साक्षरता प्रयास आदि की विश्लेषणात्मक व्याख्या प्रस्तुत की जायेगी।

ब- निदर्शन -

स्वतंत्रता के पश्चात भारत सरकार ने प्रशासन की सुविधा हेतु सभी विषयों को तीन सूचियों में विभक्त किया है।

केन्द्रीय सूची के अन्तर्गत वे विषय आते हैं जिन पर सभी प्रकार के अधिकार केन्द्रीय सरकार को होते हैं।

राज्यीय सूची के अन्तर्गत वे विषय आते हैं जिन पर पूर्ण अधिकार राज्य सरकार का होता है।

समवर्ती सूची के अन्तर्गत वे विषय होते हैं जिन पर केन्द्र एवं राज्य दोनों सरकारों का अधिकार होता है, लेकिन केन्द्र के निर्णय को प्रमुखता दी जाती है । अतः जनजातीय समूहों की शिक्षा का विषय समवर्ती सूची में आता है, जिस पर निर्णय का सुरक्षित अधिकार केन्द्रीय सरकार का होता है । इसके लिये वित्तीय सहायता, नीति निर्माण, प्रशासन और शिक्षा सुविधा आदि का विशद विवरण केन्द्र से विनियमित होकर राज्यों को आते हैं, जिनके तहत राज्य सरकारें जनजाति शिक्षा, साक्षरता का प्रबन्ध करती हैं ।

बुन्देलखण्ड प्रखण्ड में फैली हुई विभिन्न जनजातीय समूहों में से शोधकर्ता ने कबूतरा (नामेडिक ट्राइब) कैंगार (एग्रीकल्चरल ट्राइब) और सांहरिया (ट्रान्जीशनल ट्राइब) का चुनाव दैव निदर्शन द्वारा किया है । ये जनजातियाँ सम्पूर्ण झाँसी प्रखण्ड में फैली हुई हैं । अतः शोधकर्ता ने अपने अध्ययन का क्षेत्र झाँसी जनपद को ही बनाया है । अतः निदर्शन का स्पष्ट चुनाव निम्न तालिका से स्पष्ट होता है -

जनजाति का नाम	दैव निदर्शन संख्या	गाँव के नाम
नट एवं कबूतरा	200 (100 पुरुष+100स्त्री)	मदनपुरा, दातानगर, परवई, गोरा-मछोहा, बराटा, पहाड़ीबुजुर्ग, कल्याण-पुरा, गोपालपुरा, जौरा, गोन्दी
कैंगार	200 (100पुरुष+100स्त्री	हरीपुरा, हमारी की टपरिया, कैलार, नगरऊ, बड़ागाँव, परवई, करारी, गढ़ियागाँव, मदनपुरा, कोटखेड़ा, बिजौली, रक्सा, डगर, अठोदना,

सहरिया	200 (100 पुरुष+100 स्त्री)	पुरा बड़ौरा, बकौना ग्राम, रजला, कैलार, कनेरियाका दिवरका, हीरापुरा, गुलपुरा, सुकवाँ, धिसौली, बनगवाँ, बिजौली, रमौना, सिमरिया, नौटा, हाटी, पाथरी, सकतर, पहरा, सिपावनी, कटौरा, किसनी बुजुर्ग, उल्दन, भटा, दुरवई, मवई, पिपरा, सितौरा ।

निदर्शन का चयन शोधकर्ता ने मानक सर्वेक्षण विधि एवं दैव निदर्शन के द्वारा किया । निदर्शन का प्रयोग शोधकार्य में दो प्रकार से किया जायेगा -

प्रथमतः: जनजाति के मूल्यों का निर्धारण करने के लिये 100 नट-कबूतरा, 100 कंजर, एवं 100 सहरिया पुरुषों का प्रयोग किया जायेगा ।

द्वितीय बार में शैक्षिक अभिवृत्ति का मापन करने के लिये 100 पुरुष नट कबूतरे, 100 पुरुष कंजर, एवं 100 पुरुष सहरिया का प्रयोग किया जायेगा ।

समान रूप से स्त्री जनजातियों का भी मूल्य और अभिवृत्ति मापन पुरुषों के समान ही किया जायेगा ।

निदर्शन के चयन में इस बात का ध्यान रखा जायेगा कि स्त्री एवं पुरुष वर्ग के समूहों का तथ्य संकलन अलग-अलग बैठकों में हो, ताकि विश्लेषण में सहायता मिल सके ।

स- **उपकरण** -

सामान्य तौर पर शोधकर्ता आँकड़ों को एकत्र करने के लिये सूचना पत्रक, निरीक्षण पत्रक, साक्षात्कार पत्रक, प्रश्नावली पत्रक, एवं अन्य

मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया है । भारतीय परिस्थितियों में तमाम उपकरणों का निर्माण हो चुका है, लेकिन प्रस्तुत शोध समस्या हेतु शोधकर्ता ने डा० एम०पी० अहलुवालिया द्वारा विकसित " मूल्य अनुसूची" 1980 का प्रयोग तथ्य एकत्रित करने के लिये किया है ।

उपकरण का चयन -

शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन के लिये डा० एम०पी० अहलुवालिया द्वारा विकसित " मूल्य अनुसूची" का प्रयोग निम्नलिखित उपयोगिता को ध्यान में रखकर किया -

1- भारतीय परिस्थितियों में इस " मूल्य अनुसूची " को उत्तम मूल्य मापक माना गया है । इसमें मूल्यों का विकास ई० स्प्रेन्जरस के "टाइप्स आफ मैन (1928) के आधार पर किया गया है ।

2- इस परीक्षण का दावा है कि व्यक्ति के मूल्यों का पता कम से कम समय में लगाया जाता है । इसका प्रयोग भी सरल एवं उपयुक्त है ।

3- इसका आधार संसार प्रसिद्ध उपकरण " आल्पोर्टवर्नन लिन्डेज " (1931) " मूल्यों का अध्ययन " है ।

4- इस परीक्षण का विकास डा० राय चौधरी (1959) ओझा (1971) और कुलश्रेष्ठ (1974) के गहन अध्ययन के पश्चात किया गया है ।

5- इस परीक्षण का प्रयोग निर्माण कर्ता ने विभिन्न प्रकार के न्यादर्शों पर किया था जिससे शैक्षिक अभिरुचि और अभिवृत्ति का सही मूल्यांकन किया जा सके ।

6- इस परीक्षण में भी 6 मूल्यों को ही स्थान दिया गया है, लेकिन अन्य की अपेक्षा इसमें प्रश्नों की संख्या और उत्तरों की संख्या में वृद्धि कर दी गयी है ।

7- इस परीक्षण का प्रयोग विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न क्षेत्रों में किया है और उपयुक्त निष्कर्ष पाये हैं ।

8- परीक्षण का प्रशासन सरल है । इसके द्वारा एक ही बार में एक व्यक्ति या समूह का तथ्य संकलन, आयु वर्ग 15 से ऊपर तक का आसानी से किया जा सकता है ।

9- प्रस्तुत परीक्षण की शब्दावली सामान्य स्तर की है जिससे सभी लोग इसका प्रयोग आसानी से कर लेते हैं । निर्देश एवं अभ्यास प्रश्न ऊपर के पृष्ठ पर दिये हैं, जो प्रयोगकर्ता को सरलता प्रदान करते हैं ।

10- इस परीक्षण की विश्वसनीयता । सभी मूल्यों की । .74 से लेकर .87 तक पाई गई है ।

"मूल्य" अनुसूची का विवरण -

डा० अहलूवालिया द्वारा विकसित " मूल्य " अनुसूची पूर्ण रूप से " आल्पोर्ट वरनन- लिन्ड्जे " मापनी पर आधारित है । आपने इसके अंतर्गत 6 मूल्यों - 1- सैद्धान्तिक मूल्य 2- आर्थिक मूल्य 3-सौन्दर्यात्मक मूल्य 4- सामाजिक मूल्य 5- राजनैतिक मूल्य 6- धार्मिक मूल्य आदि का अध्ययन किया गया है । आपने इस अनुसूची का विकास शिक्षात्मक दृष्टिकोण जानने के लिये किया था । इसमें मूल्यों का वर्गीकरण प्रत्यक्ष रूप से ई० स्प्रेन्जर । 1928 । के " टाइप्स आफ मैन " के आधार पर प्रस्तुत किया गया है ।

" मूल्य अनुसूची का निर्माण भारतीय परिस्थितियों को ध्यान मे रखकर शाश्वत मूल्यों का अवलोकन करने के पश्चात किया गया है, ताकि प्रत्येक मानवीय आयाम का अध्ययन इसके द्वारा सम्पन्न किया जा सके । इस

देश में डा० एस०पी०अहलुवालिया, प्रोफेसर,अध्यक्ष एवं डीन, शिक्षा विभाग सागर-विश्व विद्यालय, सागर का नाम प्रख्यात है । आपने इसमें 25 प्रश्नों को प्रस्तुत किया है, और प्रत्येक प्रश्न के 6 स्वीकार्य उत्तर रखे गये हैं । इनमें से प्रत्येक उत्तर किसी न किसी मूल्य से सम्बन्धित रहता है । अतः 6 उत्तरों का सम्बन्ध 6 मूल्यों से होता है । इसमें परीक्षार्थी को प्रत्येक उत्तर पर एक से लेकर छः अंक लिखने होते हैं । प्रत्येक प्रश्नावली के साथ उत्तर पत्रिका का प्रयोग अलग से भी किया जा सकता है, जिससे कम प्रश्नावली पुस्तिकाओं से अधिक तथ्य संकलन हो सकता है । इनकी विश्वसनीयता और वैधता की व्याख्या विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत की जा चुकी है । डा० अहलुवालिया द्वारा विकसित मापनी में व्यक्तित्व के 6 प्रभावशाली रुचियों का वर्णन है -

1- <u>सैद्धान्तिक मूल्य</u> -

सैद्धान्तिक मूल्यों से प्रभावित व्यक्ति सत्य की खोज में, जीवन को सुन्दरता प्रदान करने में लगा रहता है । वह अपने बौद्धिक, आलोचनात्मक और अनुभविक ज्ञान के द्वारा जीवन क्रम को सुदृढ़ एवं सार्थक बनाता है । इस प्रकार के व्यक्तित्व पूर्ण वैज्ञानिक या दार्शनिक होते हैं ।

2- <u>आर्थिक मूल्य</u> -

इस प्रकार के मूल्य से प्रेरित व्यक्ति सिर्फ " अर्थ " के बारे में ही सोचता रहता है। उसका मुख्य ध्येय आर्थिक पहलू को किसी भी प्रकार से मजबूत बनाये रखना है । वह व्यापार, उत्पादन, बाजारभाव, सट्टा आदि में प्रखर रुचि रखता है और उसी में जीवन का आनन्द उठाता है । उसकी केन्द्रीय अभिरुचि प्रबल सम्पत्ति और स्थूल पदार्थों के अधिकार में लगी रहती है ।

3- सौन्दर्यात्मक मूल्य -

सौन्दर्यात्मक मूल्य से प्रभावित व्यक्ति सौंदर्य में लिप्त रहता है । वह अपने इस मूल्य को प्रकार और समरूप में प्रगट करता है । वह रचनात्मक कलाकार हो भी सकता है, और नहीं भी, लेकिन वह अपनी मुख्य रुचि कलात्मक या सौन्दर्यात्मक अनुभवों में रखता है । उसका दृष्टिकोण स्वयं में एक अनोखा प्रतीत होता है, जिस पर सौन्दर्यात्मक मूल्यों की गहरी छाप रहती है ।

4- सामाजिक मूल्य -

सामाजिक मूल्य का सीधा सम्बन्ध मानव मात्र को प्रेम करना, सेवा करना और मानवीय गुणों को धारण करना होता है । वह समाज सेवा को अपना धर्म मानता है । उसका विकास अंत:पक्षीय न होकर बहुपक्षीय होता है । उसके अन्दर मानवीय गुण दया, उपकार, और भाई चारे के भाव आदि प्रमुख होते हैं । वह स्वयं की हानि और अन्य की भलाई में विश्वास करता है ।

5- राजनैतिक मूल्य -

राजनैतिक मूल्य का अभिप्राय " शक्ति " से होता है । इस प्रकार के व्यक्ति " येन केन प्रकारेण " स्वयं को शक्तिशाली बनाते हैं, ताकि उनका प्रभाव प्रत्यक्ष और सक्रिय रूप में समाज पर पड़ सके । वे हमेशा संघर्षशील, प्रतिस्पर्धी और नेतागरी में लिप्त रहते हैं । इसमें जीतना, हारना दोनों में ही उनको जीवन का आनन्द आता है । वे स्वयं का प्रचार करते हैं एवं करवाते हैं, ताकि उनकी शक्ति और प्रभाव का अनुभव जनता कर सके । ऐसे ही लोग आज दल-बदलू भी कहे जाते हैं, क्योंकि वे शक्ति में रहना चाहते हैं ।

6- धार्मिक मूल्य-

भारतीय समाज को धार्मिक मूल्यों से प्रेरित माना जाता है ।

यही कारण है कि हम अनेकता में एकता और एकता में ही शक्ति का विकास मानते हैं । इसीलिये " वसुधैव कुटुम्बकम् " की भावना का विकास भारत की संस्कृति में निहित सत्यम् शिवं और सुन्दरम् जैसे शाश्वत मूल्यों के द्वारा हुआ है । परिणाम स्वरूप, व्यक्ति धर्मभाव, से मानव भाव में उतर कर आत्मभाव की ओर प्रस्थान करता है । यही आत्मभाव मानव को मानव मात्र से प्रेम करना, दया करना, सेवा करना सिखाता है । इसी को धर्म दर्शन के नाम से पुकारा जाता है ।

विश्वसनीयता-

मूल्य अनुसूची का विश्वसनीयता गुणांक .74 से लेकर .87 तक फैला हुआ है । सैद्धान्तिक मूल्य=.74, आर्थिक मूल्य=.81, सौन्दर्यात्मक-मूल्य=.87, सामाजिक मूल्य=.79, राजनैतिक मूल्य=.77 और धार्मिक मूल्य=.87 प्राप्त हो चुका है ।

मूल्य अनुसूची की वैधता -

मूल्य अनुसूची की वैधता गुणांक=.36 से लेकर .61 तक फैली हुई है । इसमें सैद्धान्तिक मूल्य=.48, राजनैतिक मूल्य=.39, आर्थिक मूल्य=.55, सौन्दर्यात्मक मूल्य=.61, सामाजिक मूल्य=.47, और धार्मिक मूल्य=.36 आदि प्राप्त हो चुके हैं ।

इस सूची का निर्माण मानव व्यक्तित्व में पाई जाने वाली प्रमुख अभिरुचियों के मापन के लिये किया गया है । प्रस्तुत शोधकार्य में शैक्षिक अभिरुचि का पता लगाने में ये प्रमुख आधार प्रस्तुत करती है । इस परीक्षण के विषय में " गफ " (1953,पृ0 156-157) महोदय लिखते हैं " प्रस्तुत परीक्षण 6 मूल्यों में से प्रत्येक की शुद्ध क्षमता का मापन नहीं करता है, बल्कि सम्मिलित

तीव्रता (क्षमता) का मापन करता है"।

एक अन्य मूल्य परीक्षण ("मौरिस," 1956) में आदर्श जीवन के लिये 13 तत्वों का विवेचन किया गया है। इनमें प्रयुक्त सभी 13 तत्व आपस में भिन्नता रखते हैं और मानव के सौन्दर्य एवं धार्मिक मूल्यों का बोध कराते हैं। यदि आदर्श जीवन की कामना करनी हो तो यह परीक्षण शुद्ध रूप से मानव मूल्यों का मापन करता है।

" कुल कोहन एवं स्ट्रोडबैक" (1961) ने मूल्यों का अध्ययन किया और बताया कि वास्तविकता के बारे में सैद्धान्तिक प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना ही मूल्य है। आपने आगे लिखा है कि " मानव जीवन की समान समस्यायें होती है जिनका हल सभी लोग हर समय खोजते रहते हैं। " इस प्रकार से आपने 5 ऐसी समस्यायें खोज ली, जिनके बारे में सभी व्यक्ति एक मत थे। इन्हीं को बाद में मूल्यों के रूप में स्थापित किया गया। " गार्डन (1960) ने व्यक्तिगत मूल्यों को जानने के लिये एक सर्वेक्षण किया, जिसका आधार मानव आवश्यकता थी, जिसको " मरे " (1938) महोदय ने भी अपने अध्ययन का आधार बनाया था।

हमारे देश के शोध कर्ताओं ने अधिकांश तौर पर विदेशी मापनियों का प्रयोग अपने कार्यों के लिये किया है। उदाहरण के तौर पर " रे चौधरी " (1959), भटनागर (1969), कुलश्रेष्ठ (1971), ओझा (1971), और अहलुवालिया (1973) आदि ने आलपोर्ट, वर्नन, लिंडजे, द्वारा बनाये गये " मूल्य परीक्षण" को अपने मूल्य परीक्षणों का आधार बनाया। " तिवारी" (1975) ने एक प्रश्नावली तैयार की जिसका आधार "मौरिस" का अध्ययन है। इसमें 20 मूल्यों को अध्ययन करने की व्यवस्था है।

इसी प्रकार से अग्रवाल" ।1967,पृ0 314-315। ने "कुलकोहन" के मूल्य प्रश्नावली के आधार पर एक अनुसूची तैयार की । कुछ शिक्षा शास्त्रियों ने " मूल्य परीक्षण" बनाने की दिशा में अपनेप्रयत्न किये हैं । उनमें से मुख्य " पाटिल " । 1960, पृ0 311-312 । " रमादेवी । 1963, पृ0 309-310 ।, " हफीज एवं बेगम " । 1964 पृ0 293-295 । रुहेला । 1969, पृ0 301-304 ।, रेड्डी " । 1969 पृ0 299 । "कुलश्रेष्ठ । 1971 ।, " अंसारी । 1972, पृ0 311-312 । और शैरी एवं वर्मा । 1972 । आदि हैं ।

<u>शैक्षिक अभिवृत्ति मापनी ।ए0एस0टी0ए0।</u>

शैक्षिक अभिवृत्ति मापनी का विकास डा0 एस0एन0चोपड़ा डीन फैकल्टी आफ एजूकेशन, लखनऊ विश्व विद्यालय, लखनऊ ने 1982 में किया था । आपने अभिवृत्ति मापनी, अहलुवालिया । 1975 ।, बेकर । 1966 । सूद । 1975 आदि की मापनियों का अवलोकन करने के पश्चात विकास किया है । लेखक ने अपने अध्ययन के अन्तर्गत नान इन्टलैक्चुयल और एकेडेमिक एचीवमेंन्ट के बीच सह सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश की है जिसमें शैक्षिक अभिवृत्ति को को मापने की आवश्यकता हुई । अत: उसने शैक्षिक अभिवृत्ति परीक्षण का विकास किया ।

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों और शिक्षा शास्त्रियों ने अभिवृत्ति मापनियों का निर्माण किया है । लेखक ने उनका अध्ययन किया । इसमें से

1- मैथड आफ पियर्ड कम्पैरिजन ।

2- मैथम आफ इक्वल एपियरिंग इन्टर वलून ।

3- मैथड आफ सक्सेसिव इन्टरवल्स ।

4- मैथड आफ सम्मिटिड रेटिंग्स ।

5- स्कलोग्राम एनालेसिस एण्ड द स्केल डिस्क्रीमिनेशन टेकनिक्स आदि प्रमुख हैं ।

आपने अपनी मापनी का विकास " थर्स्टन और केव । 1929 । की प्रविधि के आधार पर किया है ।

शैक्षिक अभिवृत्ति मापनी की विश्वसनीयता -

शैक्षिक अभिवृत्ति मापनी की विश्वसनीयता को ज्ञात करने के लिये लेखक ने । स्पिलिट-हाफ" विधि का प्रयोग किया । सभी कथनों को मापक मूल्यों के आधार पर सजा लिया गया और फिर दो समूहों में विभक्त कर दिया गया । सम कथनों को एक समूह में रखा गया और विषम कथनों को द्वितीय समूह मे रखा गया । फिर स्पियरमैन-ब्राउन सूत्रों के आधार पर सह-सम्बन्ध स्थापित किया गया । जो 0.89 प्राप्त हुआ । अतः सिद्ध होता है कि परीक्षण विश्वसनीय है ।

अभिवृत्ति का मापन एवं मूल्यांकन मूल्यों के मापन के समान है। अभिवृत्ति मापनी का निर्माण कठिन ही नहीं जटिल भी है । कोई व्यक्ति अधिक समय तक अभिवृत्ति मापन के बारे मे भविष्यवाणी नहीं कर सकता है, "विलियम, ए0 स्काट" । 1968, पृ0 204-274 । । "लारी " । 1971, पृ0 99-188। ने भूतकाल और वर्तमान अध्ययनों को ध्यान मे रखकर शैक्षिक अभिवृत्ति को चार स्तरों में विभाजित किया है -

1- स्व-सूचित सूची । सेल्फ रिपोर्टिंग इनवेन्टरीज ।

2- क्रम अवलोकन । सिस्टेमेटिक आबजरवेशन ।

3- प्रक्षेपण प्रविधि ।

4- सीमैंटिक डिफरेन्सियल ।

प्रत्येक विद्वान ने अपनी मापनी निर्माण में अभिवृत्ति का अर्थ

भिन्न रूप से प्रयोग किया है इसीलिये प्रत्येक अभिवृत्ति मापनी आपस में भिन्नता रखती है । " करलिंजर " । 1966,पृ0 159-168 । ने रूढ़िवादिता और विकास वादिता दो तत्वों का समावेश शैक्षिक अभिवृत्ति के संदर्भ मे किया है ।

अतः शोध कर्ता ने अपने अध्ययन में शैक्षिक अभिवृत्ति मापने हेतु डा0 एस0एल0चोपड़ा द्वारा विकसित "शैक्षिक अभिवृत्ति" मॉपनी का प्रयोग किया। इसके द्वारा निरक्षर, समाज विहीन, विकसित संस्कृति से हर मानव समुदाय की शैक्षिक आकांक्षा को उभारा जा सकता है, ताकि वे भी सभ्य नागरिक बन कर जीवन का आनन्द ले सकें ।

द- प्रदत्त संकलन की विधि-

शोधकर्ता का प्रमुख कार्य प्रदत्त संकलन करना होता है । इस कार्य हेतु वह प्रदत्त संकलन के विभिन्न तरीकों मे से किसी एक को अपने कार्य का आधार बनाता है । प्रदत्त संकलन विधि ऐसी हो, जिसमें कम से कम त्रुटियाँ हों और प्रयोगकर्ता एवं परीक्षार्थी दोनों को सुगमता हो । अतः प्रस्तुत कार्य हेतु शोधकर्ता ने मानक सर्वेक्षण विधि को प्रदत्त संकलन हेतु चुना ।

1- मानक सर्वेक्षण विधि -

संसार मे होने वाले परिवर्तन मानव व्यवहार और क्रियाओं मे परिवर्तन लाते हैं । मानव संस्कृति में उत्पन्न परिवर्तन किसी न किसी उद्देश्य के लिये होते हैं । जब मनुष्य अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये व्यवहार के तरीकों में परिवर्तन लाता है,तो वह वर्तमान के साथ सुख प्राप्त करता है । इस प्रकार से भूत का मूल्यांकन और भविष्य के बारे मे व्यवहार का अनुमान लगाया जाता है । अतः भविष्य का अनुमान और वर्तमान की क्रियायें मानव प्रगति का आधार बनती हैं जिससे आने वाली पीढ़ी के स्तर में उन्नति होती रहती है ।

लेकिन नवीन योजना या कार्यक्रम ग्रहण करने से पहले समूह, सामाजिक संस्थाओं के वर्तमान स्तर के प्रति विश्लेषण, व्याख्या और निष्कर्ष के रूप में संगठित और सुनियोजित प्रयास होने चाहिये। " (एफ0 विटनी, (1956, पृ0 161) ।
समस्या के समाधान में " प्रथम पद या क्रिया के रूप में सुनियोजित विश्लेषण होना चाहिये, ताकि वर्तमान दशा या अवस्था स्पष्ट हो जाय, " जे0डब्लू0-वेस्ट (1963, पृ0 105) । इस समस्या के समाधान के लिये सामाजिक विज्ञान वेत्ताओं ने मानक सर्वेक्षण विधि का विकास किया, जिसका उद्देश्य वर्तमान स्थिति के आधार पर समूहों का वर्गीकरण करना, सामान्यीकरण करना, और प्रदत्तों की व्याख्या सामयिक और भविष्य की उपयोगिता का ध्यान में रख-कर करना होता है (" एफ0 विटनी" (1956, पृ0 161) । नारमेटिव शब्द का अर्थ सामान्य या विशिष्ट परिस्थिति से लगाया जाता है, और सर्वे का अर्थ वस्तु के वर्तमान स्तर के प्रति " राय " या " मत " को एकत्रित करने से माना जाता है ।

शोध विधि जो वर्तमान स्थिति का अध्ययन, व्याख्या और वर्णन करे और यह बताये कि आदर्श मानक या विशिष्ट स्थिति, अभ्यास या आचरण कैसा है? इसका प्रयोग वर्तमान परिस्थितियों, सम्बन्धों, प्रवृत्तियों, अभिरुचियों, कार्य प्रणालियों, परिणामों आदि की जाँच के लिये किया जाता है । इसमें वैसे ही अनेक उदाहरण, मामलों, व्यक्तियों एवं संस्थाओं से या उसकी एक आड़ी या अनुप्रस्थकाट से प्रदत्तों को एकत्र किया जाता है और उनका विश्लेषण एवं व्याख्या करके वर्तमान स्थिति में मानकों को निरूपित किया जाता है. (डा0 आत्मानन्द मिश्र (1976, पृ0 447) ।

मानक सर्वेक्षण विधि का, आज, प्रयोग सामाजिक विज्ञानों के विभिन्न अध्ययनों में किया जा रहा है । शिक्षा के क्षेत्र में प्रारम्भिक दौर में वर्णनात्मक शोध कार्यों का बोलबाला था, जिसे मानक सर्वेक्षण विधि ने ही समाप्त किया । जब हम बृहद समूह का(पापुलेशन का)अध्ययन करना चाहते हैं तो इसी विधि का सहारा लेते हैं । यह पूर्ण रूप से वैज्ञानिक एवं सांख्यकीय विश्लेषण पर आधारित होती है । इसका प्रयोग किसी भी निदर्शन पर किया जा सकता है । इसके द्वारा प्रदत्त संकलन पर किसी भी प्रकार का अविश्वास नहीं किया जाता है । इसकी वैधता और विश्वसनीयता शंका और त्रुटि से परे है । इसकी तकनीक प्रश्न पूछने, प्रश्नावली तैयार करना, साक्षात्कार करना और विषय सूची विश्लेषण और प्रदत्त प्रसार आदि के बारे मे उपर्युक्त एवं सही राय प्रस्तुत करती है । इससे क्षेत्र विशेष में किये गये तथ्य संकलन के द्वारा विस्तृत और सही ज्ञान प्राप्त होता है (एफ०बी०विटनी 1960,पृ0450)।

इस प्रविधि के प्रमुख पद विषय की सार्थकता को प्रगट करते हैं -

1- प्रथमतः शोधकर्ता अपनी समस्या को प्रस्तुत करता है, उसके उद्देश्यों तथा लक्ष्यों को निर्धारित करता है और अपनी शोध कार्य सम्बन्धी योजना तैयार करता है । इस योजना से वर्तमान समय, समाज की आवश्यकता का गुणात्मक पक्ष स्पष्ट होता है । " मानवीय अभिरूचियों के संदर्भ में,शोध-कर्ता उद्देश्यों और मूल्यों को निश्चित करता है, ताकि शोध तथ्य उभर कर सामने आयें, और समस्या संदर्भ मे मानसिक दशा, चिन्तन आदि को व्यवहारिक रूप प्रदान करें । गुड एवं स्केटस" 1954,पृ0-55। । ।

2- इस वर्तमान समय की स्थिति के आधार पर प्रदत्त संकलन करते हैं । अब से पापुलेशन के एक हिस्से को निदर्शन मानकर समस्या का अध्ययन किया जाने लगा है, मानक सर्वेक्षण का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है, " गुड एवं स्केटस" । 1954, पृ0-598 ।" सामान्य तौर पर निदर्शन का चुनाव काल्पनिक आधार पर किया जाता है । इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को पापुलेशन के आधार पर निदर्शन में आने का समान और पर्याप्त अवसर मिलता है, । गुड एवं स्केटस, 1954, पृ0-601 । ।

3- इस प्रविधि के द्वारा व्यक्तिगत विशेषताओं का मापन नहीं होता है, बल्कि निदर्शन के माध्यम से,सम्पूर्ण समूह का अध्ययन करके पापुलेशन के बारे मे सॉख्यिकीय निष्कर्ष प्राप्त किये जाते हैं । इस वैज्ञानिक युग में साख्यिकीय निष्कर्षों को ही वैध एवं विश्वसनीय माना जाता है ।

4- इस प्रविधि का प्रयोग किसी वैज्ञानिक नियम या सिद्धान्त के प्रयोग हेतु नहीं किया जाता है, बल्कि सर्वेक्षण विधि के द्वारा उपयोगी एवं लाभकारी सूचनायें एकत्रित करके स्थानीय एवं सामयिक समस्याओं का समाधान खोजा जाता है, " ट्रेवर्स" । 1964,पृ0 284 । । प्रदत्त संकलन मे विस्तार, वस्तु निष्ठता का वर्तमान मे स्थित स्थायी सम्बन्धों और व्यवहार को स्पष्टता प्रदान करने के लिये किया जाता है । इसमें समूह की मनोवृत्तियों अभिरूचियों और कार्य करने के तरीकों आदि का भी विकास निहित रहता है । " सर्वेक्षण के द्वारा किये गये अध्ययनों मे मुख्य बात क्या उपलब्ध" है, होती है, न कि उसके अन्य रूपों से, "ट्रेवर्स । 1964, पृ0-283 । ।

5- इस शोध की उपकल्पनाओं को परीक्षित करने के लिये विभिन्न उपकरणों और यंत्रों के द्वारा प्रदत्त संकलन करते हैं । इनमें सूची, प्रश्नावली, मत

या राय, निरीक्षण, चेकलिस्ट, क्रम निर्धारण मापनी, स्कोर कार्डस, हस्त पाण्डुलिपियाँ, साक्षात्कार, मनोवैज्ञानिक परीक्षण और रिक्त स्थान पूर्ति आदि उपकरणों को विशेषरूप से प्रयोग में लाया जाता है, " बैस्ट " । 1963,पृ0-184 । । उपकरण के विभिन्न प्रकारों में से शोधकर्ता समस्या की सुविधाओं को ध्यान में रखकर प्रदत्त संकलन के लिये चुनाव करता है । यही उपकरण समस्या के समाधान के लिये उपयुक्त और प्रभावशाली सूचनायें एकत्रित करने में सहायक होता है, " बैस्ट" । 1963,पृ0-184 । ।

6- शोधकर्ता अपने प्रदत्तों का संकलन,वर्गीकरण, तुलना, मूल्यांकन,व्याख्या और सामान्यीकरण आदि के द्वारा अवलोकित व्यवहार व क्रियाओं के आधार पर करते हैं । शोध प्रक्रिया का प्रभाव क्या है, के वर्णन करने या व्याख्या करने से नही होता है, " बैस्ट । 1963, पृ0-103 । । जबकि शोध प्रक्रिया शोध कर्ता को निर्देशित करती है कि वह अपनी उपकल्पनाओं के प्रति सचेत रहकर निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिये क्रियाशील रहे ।

7- मानक सर्वेक्षण विधि के द्वारा हम समस्या का समाधान पाने वाले निश्चित एवं सही निष्कर्षों पर पहुँचते हैं और भविष्य की योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिये सुधार लाने के लिये उपयुक्त निष्कर्ष प्राप्त करते हैं ।

इस प्रविधि के द्वारा प्राप्त निष्कर्ष हमें नवीन समस्याओं के प्रति शोध कार्य की योजना बनाने में नये आयाम, नये व्यवहार के प्रति शोध करने के लिये मार्ग प्रशस्त करते हैं । इस प्रकार से परिवर्तों के बदलते स्वरूप में मानव आवश्यकता की पूर्ति समय-समय पर होती रहती है ।

II <u>तथ्य संकलन की विधि</u> -

प्रस्तुत शोध समस्या में तथ्य संकलन हेतु शोधकर्ता ने दो प्रकार

के उपकरणों का प्रयोग किया है -

1- जनजातीय मूल्यों का अध्ययन करने के लिये डा० एस०पी०अहलुवालिया द्वारा विकसित " मूल्य अनुसूची " का प्रयोग किया है । इसके 6 मूल्यों का अध्ययन किया जाता है । ये मूल्य सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक आदि हैं । इन मूल्यों के द्वारा नट-कबूतरे, साहरिया और कंगार आदि जनजातियों के अन्तर मे स्थापित अभिरुचियों का अध्ययन किया जायेगा, ताकि उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि का मूल्यांकन हो सके । इस उपकरण मे 25 प्रश्नों का इस प्रकार से प्रयोग किया गया है, जिससे सभी 6 मूल्य प्रगट हो सकें । प्रत्येक प्रश्नके उत्तर भी 6 हैं जो प्रत्येक मूल्य से सम्बन्धित हैं । उनमें से किसी एक पर निशान लगाने से एक मूल्य प्रगट होता है ।

2- शैक्षिक अभिवृत्ति का मूल्यांकन करने के लिये डा० एस०एल०चोपड़ा द्वारा विकसित अभिवृत्ति मापनी शिक्षा की ओर (ए०एस०टी०ई०) का प्रयोग किया गया । इसमें 22 कथनों का प्रयोग किया गया है । प्रत्येक उत्तर " हाँ " या " नहीं " मे देना होता है । आपने प्रत्येक कथन की स्केल वैल्यु प्रदान की है । इस प्रकार से प्रस्तुत मापनी का शैक्षिक अभिवृत्ति के मापने में व्यापक प्रयोग पाया जाता है ।

III- प्रदत्त विश्लेषण की प्रविधियाँ

अ- साँख्यिकीय मापक एवं निश्चयात्मक

शोधकर्ता के लिये साँख्यिकी का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक होता है । बिना इस ज्ञान केमानक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है । इसी ज्ञान के फलस्वरूप वह अपने तथ्यों एवं निष्कर्षों को प्रमाणीकृत

करता है । वर्तमान वैज्ञानिकता की छाप में बिना सांख्यिकीय के ज्ञान के शोध कर्ता निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाता है । सांख्यिकी विधियों के प्रयोग से शोध कार्य में पक्षपातहीनता, सत्यता और स्पष्टता के दृष्टिकोण का विकास होता है । इन विधियों के प्रयोग से समस्या के प्रदत्तों के विश्लेषण और निष्कर्षों में सरलता प्राप्त होती है, जिसे सामान्य शोधकर्ता भी प्रयोग कर सकता है ।

इस प्रकार से शोध कार्य में विभिन्न प्रकार की सांख्यिकी का प्रयोग होता है । इसमें से मध्यमान, प्रमाप विचलन, और सहसम्बन्ध आदि प्रमुख हैं । प्रदत्त संकलन में त्रुटि को जानने के लिये प्रमाप त्रुटि का मापन भी किया गया है । दो मध्यमानों के बीच अन्तर जानने के लिये और उनका सिगनीफिकेन्स का पता लगाने के लिये "टी" परीक्षण का प्रयोग किया गया है । साथ ही दो प्रवृत्तियों के बीच सम्बन्ध जानने के लिये सह सम्बन्ध का प्रयोग किया गया है ।

प्रस्तुत शोध हेतु प्रदत्तों का संकलन "मूल्य अनुसूची" के द्वारा किया गया । इसके पश्चात नट-कबूतरे, कंजार और साहरिया जनजातियों के प्रदत्तों का अलग-अलग मध्यमान ज्ञात किया गया । इससे शोधकर्ता को एक ऐसा अंक प्राप्त हो जाता है जो सम्पूर्ण प्रदत्तों का प्रतिनिधित्व करने वाला होता है । इस प्रकार से ज्ञात किया गया मध्यमान सभी प्रदत्तों का मानक अंक होता है । इसी को सभी प्रदत्तों का सारतत्व भी कहा जाता है । इसके पश्चात शोधकर्ता ने प्रमाप विचलन ज्ञात किया । इसका प्रयोग सांख्यिकी में समान प्रदत्तों और असमान प्रदत्तों का पता लगाने के लिये किया जाता है । इसके पश्चात प्रमाप त्रुटि का आकलन किया गया, जिससे प्रदत्तों का सही

विश्लेषण हो सके कि प्रदत्त संकलन से निदर्शन को सभी विशेषतायें का चयन हुआ है या नहीं । सम्पूर्ण प्रदत्तों में सभी विशेषताओं के चयन होने से ही परीक्षण की वैधता स्पष्ट होती है और निष्कर्ष भी सार्थकसिद्ध होते हैं ।

"टी" परीक्षण -

प्रदत्त संकलन से सम्पूर्ण ।पापुलेशन। का प्रतिनिधित्व होता है, ऐसा मानकर शोध कार्य का विकास किया जाता है । लेकिन यह वास्तविक रूप से प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है । इसके प्रतिनिधत्व में कुछ न कुछ कमी या अवगुण रह ही जाते हैं । अत: शोधकर्ता ने " टी" परीक्षण का आंकलन किया । इसके द्वारा स्वतंत्र परिवर्ती "मूल्यों" और परंतंत्र परिवर्ती शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सम्बन्ध का मापन किया जा सके । इस प्रकार से प्रत्येक मूल्य की शैक्षिक अभिवृत्ति के साथ सिगनीफिकेंस देखा जायेगा, ताकि मूल्यों का प्रभाव स्पष्ट हो सके ।

- सांख्यिकीय परीक्षण का प्रयोग एवं उपयोगिता

जब किन्हीं दो समूहों के मध्यमानों के बीच अन्तर या सम्बन्ध को मापा जाता है, तो हम कुछ सांख्यिकीय परीक्षणों का प्रयोग करते हैं । सांख्यिकीय वेत्ताओं ने " टी " परीक्षण, " एफ " परीक्षण आदि विभिन्न परीक्षणों को उपयोगी बताया है । प्रस्तुत शोध कार्य मे शोधकर्ता ने " टी" परीक्षण का प्रयोग अपने कार्य हेतु किया है । वह जानना चाहता है कि यदि दो मध्यमानों के बीच वास्तविक अन्तर है तो इसे क्रिटिकल से अधिक होना चाहिये, तभी शोधकर्ता के द्वारा चयनित निदर्शन वास्तविक मध्यमान अन्तर का प्रति निधि होता है । अत: सांख्यिकीय वेत्ताओं ने प्रस्तुत समस्या का निष्कर्ष दो मध्यमानों के अन्तर को मापकर निश्चित किया है ।

अध्याय-पंचम

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

(१) तथ्यों का संकलन
(२) तथ्यों का विश्लेषण
(अ) वर्णनात्मक सांख्यिकीय द्वारा
(ब) प्रसरण विश्लेषण द्वारा
(स) अन्तः सह-सम्बन्ध द्वारा
(३) जनजातीय मूल्यों की व्याख्या
(अ) नट–कबूतरा जनजाति
(ब) साहरिया जनजाति
(स) खंगार जनजाति
(४) जनजातीय शैक्षिक अभिवृत्ति की व्याख्या

तथ्य संकलन -

प्रस्तुत शोध के लिये तथ्य संकलन नट कबूतरा स्त्री/पुरुष, साहरिया स्त्री/पुरुष और खंगार स्त्री/पुरुष आदि पर किया जायेगा । सबसे पहले शोधकर्ता ने उन गाँवों और मोहल्लों का पता लगाया, जिनमें ये जनजातियाँ निवास करती है, या वहाँ पर जाने से मिल सकती हैं । इनमें नट-कबूतरा जनजाति घूमने फिरने वाली, साहरिया ट्रान्जीसनल, और खंगार कृषि कार्य वाली जनजातियाँ हैं । इनमें नट-कबूतरा जनजाति पर तथ्य संकलन काफी कठिन एवं जोखिम भरा रहा । इनके लिये पुलिस से प्रमाण-पत्र लेकर इनके मुखिया से मिले, तब बड़ी मेहनत और हिम्मत के पश्चात तथ्य संकलन हो सका ।

प्रत्येक गाँव में जाकर मुखिया या पंच से मिलकर बैठक बुलाई जाती । फिर शोधकर्ता उसको देहाती भाषा मे सरल तरीके से सम्बोधित करके अपने कार्य के उद्देश्य को स्पष्ट करता । इसके पश्चात शोधकर्ता और उसके साथी उनमें से एक-एक पुरुष के साथ एकांत स्थान पर बैठकर प्रश्नावली भरते । अधिकांश निरक्षर व्यक्तियों के प्रश्न की भाषा और अर्थ भी समझना पड़ता था । जो लोग साक्षर थे उनको प्रश्नावली और उत्तर पुस्तिका बाँट दी, थोडी देर बाद उनसे दोनों ही चीजों को एकत्रित कर लेते थे । समय के अनुसार शोधकर्ता उनमें चाय बिस्कुट आदि भी बाँट देता था, ताकि वे कार्य में मदद देते रहें । खंगार लोगों मे एक साक्षर पक्ष ने प्रश्नावली पत्रिका को ले लिया और दो दिन बाद भरकर के लौटा दिया । इस प्रकार से नट-कबूतरा, साहरिया और खंगार आदि पुरुषों पर मूल्यों का तथ्य संकलन पूरा किया ।

इसके पश्चात समान रूप से स्त्रियों पर भी तथ्य संकलन किया । पुरूष वर्ग पर तथ्य संकलन पूरा होने के पश्चात स्त्री तथ्य संकलन सरल रहा । इसमें शोधकर्ता अपने साथ कुछ साक्षर स्त्रियों को ले गया, जिससे स्त्रियों मे भय, संकोच आदि को प्रवृत्ति पर विजय प्राप्त कर ली गई । ये साक्षर स्त्रियाँ प्रश्नों को बोलती थीं और जनजाति स्त्रियाँ उत्तर देती थी, उनको ये निश्चित स्थानों पर नोट कर लेती थीं । इस प्रकार से " मूल्यों" से सम्बन्धित सभी तथ्य संकलन पूरा कर लिया गया ।

शैक्षिक अभिवृत्ति -

मूल्यों के तथ्य संकलन को अच्छी तरह से जाँच एक एकत्रित किया । इसमें से "नट-कबूतरा 200 (100 स्त्री, 100 पुरूष), साहरिया 200 (100 स्त्री 100 पुरूष) और खंगार 200 (100 स्त्री 100 पुरूष) आदि की संख्या मे उत्तर पुस्तिकायें छाँट लीं । इसके पश्चात इन्ही स्त्री/पुरूषों पर शैक्षिक अभिवृत्ति का तथ्य संकलन किया । मूल्यों की तरह ही शोधकर्ता ने इस परीक्षण का भी उद्देश्य स्पष्ट किया और उनको झाँसी शिक्षाधिकारियों से मदद दिलवाने का आश्वासन भी दिया । इस मांपनी मे 22 कथन हैं । प्रत्येक मे हाँ या नही में उत्तर देना होता है । प्रश्नों को एक-एक करके पढ़ा जाता था और दिये गये उत्तरों को उनके सामने बने स्थान पर लिख दिया जाता था । इस प्रकार से 600 स्त्री-पुरूषों पर शैक्षिक अभिवृत्ति का भी तथ्य संकलन किया गया, और अन्त मे सभी को धन्यवाद दिया ।

अन्तिम दौर मे शोधकर्ता ने 600 उत्तर पुस्तिकायें "मूल्य मापनी" की और उन्ही से सम्बन्धित शैक्षिक अभिवृत्ति की छाँटकर एकत्रित

कर ली । इसके अलावा जो उत्तर पत्रिकायें अधूरी या गलत थी, उनको नष्ट कर दिया गया । इस प्रकार से शोधकर्ता ने अपने शोध हेतु तथ्य संकलन का कार्य धैर्यपूर्वक सम्पन्न किया ।

तथ्यों का वर्गीकरण -

तथ्यों का संकलन करने के पश्चात शोधकर्ता ने विभिन्न प्रकार से तथ्यों का वर्गीकरण किया । अंकों का प्रथम रूप उस समय समाप्त हो जाता है जब वे संग्रहीत या एकत्रित हो जाते हैं । इस रूप में वे इतने अधिक होते हैं कि उनको समझाना, उनको प्रयोग मे लाना, एवं उनसे कोई निष्कर्ष निकालना बहुत ही जटिल होता है । इस विशाल अंक समूह या तथ्य समूह को ऐसे ढंग से छाँटा जाता है और ऐसे रूप या वर्गों मे रखा जाता है कि उनका मतलब स्पष्ट हो जाय और तथ्य अधिक सरल एवं बोध गम्य हो सकें ।

वर्गीकरण वस्तुओं की उनको सहायताओं और सम्बन्धों के अनुसार समूहों और वर्गों में व्यवस्थित करने की प्रक्रिया है, और इकाइयों की भिन्नता के बीच पाई जाने वाली एकता को प्रगट करता है ।

इस प्रकार प्रत्येक दृष्टि से यह स्पष्ट होता है कि वर्गीकरण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा फैली हुई सामग्री को व्यस्थित किया जाता है । इस व्यवस्था के आधार पर सम्पूर्ण सामग्री कुछ विशेष वर्गों में विभाजित कर ली जाती है । प्रत्येक वर्ग का विस्तार समान होता है । अतः विस्तृत रूप से प्राप्त की गई सामग्री को संक्षिप्त रूप दे देना ही वर्गीकरण है । इसके द्वारा तुलनात्मक अध्ययन की सुविधा होती है ।

निष्कर्ष तौर पर कहा जा सकता है कि वर्गीकरण उपयुक्त अवसर पर तथा प्रत्येक दृष्टि से सामग्री का सांख्यकीय विवेचन के लिये सुव्यवस्थित, सरल तथा निश्चित रूप से स्पष्ट करने योग्या होना चाहिये ।

शोधकर्ता ने जिन तत्वों का संग्रह किया और वर्गीकरण किया, उसमें जनजातीय स्त्री, पुरूषों का प्रयोग किया गया है । इसमें झांसी मण्डल के गांवों और मोहल्लों को लिया गया है, जिनमें नट-कबूतरे, सहरिया और खंगार रहते हैं । तथ्यों का वर्गीकरण होने के पश्चात सांख्यकीय विश्लेषण प्रारम्भ होता है ।

विश्लेषण एवं व्याख्या -

प्रस्तुत अध्याय मुख्य रूप से झांसी मण्डल में निवास करने वाली जनजातियों । 200 नट-कबूतरा, 200 सहरिया, 200 खंगार । के मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति के अध्ययन हेतु एकत्रित किये गये तथ्यों का विश्लेषण और व्याख्या से सम्बन्ध रखता है । इनके मूल्यों का तथ्य संकलन और शैक्षिक अभिवृत्ति का तथ्य संकलन पूर्ण रूप से वैध और विश्वसनीय मापनियों के द्वारा किया गया है । शोध कार्य में तथ्यों का संकलन करना ही कार्य का अन्त नहीं होता है, बल्कि तथ्यों का विश्लेषण इस प्रकार से किया जाय ताकि विषय के उद्देश्य और उप-कल्पनायें परीक्षित हो सकें ।

यदि एक अध्यापक तथा मनोवैज्ञानिक अपनी शोध की योग्यता तथा रूचि को सही रूप मे जीवित रखना चाहता है तो उसके लिये सर्व प्रथम सांख्यकी का ज्ञान आवश्यक है । यह सत्य तथा अटल है कि कोई भी शोधकार्य बिना सांख्यकी ज्ञान के असम्भव है । सांख्यकी विधियों में निर्पेक्षता, शुध्दता एवं सहीपन होता है । " वोल्फ" का विचार है कि

" प्राकृतिक घटनाओं में उसकी जटिलतातथा उपरी अस्पष्टता के बावजूद किसी नियम की खोज, विवेचना तथा समन्वय के द्वारा ही सम्भव है । अत: सांख्यकी विधि से व्याख्या करने में और आसानी से निष्कर्ष निकालने में सहायता प्रदान करती है । शोधकर्ता को यह कहने मे कोई हिचक नहीं कि सांख्यकी विधियों को अपनाये बिना कोई प्रयोगात्मक एवं शोधकार्य नितान्त असम्भव होगें और यदि सम्भव भी होगें तो उनमें वैज्ञानिकता का अभाव होगा ।

सुविधा के लिये शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्याय को चार उप-विभागों में बाँटा है । प्रथम उप विभाग के अन्तर्गत तथ्यों का संकलन विभिन्न परीक्षणों के प्रयोग द्वारा किया गया है ।
द्वितीय उप विभाग के अन्तर्गत वर्णनात्मक सांख्यकी के मध्यमान, प्रमाप विचलन मानक त्रुटि और विचन गुणक का विश्लेषण और व्याख्या करना ।
तृतीय उप विभाग के अन्तर्गत मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति को जानने के लिये यूनिवैरिएट एनालैसिस आफ वैरियन्स का विश्लेषण और व्याख्या करना ।
चतुर्थ उप विभाग के अन्तर्गत मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सम्बन्ध जानने के लिये सह सम्बन्ध का विश्लेषण और व्याख्या करना ।

वर्णनात्मक सांख्यकी का विश्लेषण एवं व्याख्या -

तथ्यों के विश्लेषण में शोधकर्ता ने वर्णनात्मक सांख्यकी विधियों का प्रयोग मध्यमान, प्रमाण विचलन, मानक त्रुटि आदि के रूप में किया है । जिनका विस्तृत वर्णन दिया जाता है -

मध्यमान -

तथ्यों को संग्रह करके, उनका वर्गीकरण करके, तथा उन्हें सांख्यकी में प्रस्तुत करके सरल बना लिया जाता है । इसके पश्चात इन अंकों के

आधार पर एक ऐसा अंक मालूम कर लिया जाता है, जो समस्त अंकमाला का प्रतिनिधि अंक कहलाता है । सामान्यत: यह अंक माला के बीच में स्थिति होता है और इस अंक के आस-पास ही माला के अधिक अंक रहते हैं । यह अंक समस्त पदों का सार होता है और इसी लिये इसे माला का प्रतिनिधि अंक माना जाता है । इसी को हम मध्यमान कहते हैं ।

प्रमाणिक विचलन-

इसको प्रमाण विचलन, मानक विचलन, प्रमाणिक विचलन और एस0डी0 आदि विभिन्न नामों से पुकारा जाता है । यह सर्वश्रेष्ठ विलन मांप है । प्रत्येक शोधकर्ता इसका प्रयोग करता है । सांख्यकीय गणनाओं में इसका प्रयोग वर्ग की समजातीयता और विषमजातीयता को जानने के लिये किया जाता है । शोध कार्य या उच्च सांख्यकीय गणनाओं में भी इसका प्रयोग होता है । अत: शोधकर्ता ने मध्यमानों की गणना करने के पश्चात प्रमाणिक विचलन की गणना की है । इस प्रकार से प्रमाणिक विचलन किसी श्रेणी में विभिन्न पदों के समानान्तर मध्यमान से विचलन के वर्गों के समानान्तर मध्यमान का वर्ग मूल होता है । इसका प्रतीकात्मक स्वरूप 6 भी प्रयोग किया जाता है ।

मानक त्रुटि-

मध्यमान, मानक विचलन, सह सम्बन्ध आदि मांपों में कुछ न कुछ त्रुटि पाई जाती है । इस त्रुटि का आधार निदर्शन का आधार होता है । निदर्शन का आकार बड़ा होने पर त्रुटि कम हो जाती है । अत: त्रुटि से हमारा तात्पर्य यह है कि माप उस मूल्य से कुछ भिन्न होती है जो हम निदर्शन जनसंख्या की यथार्थ मांप से प्राप्त करते हैं । प्रत्येक निदर्शन एक समान जनसंख्या ।पापुलेशन। से लिया गया है । अत: हम आशा कर सकते हैं कि समस्त मध्यमान एक समान होगें ।

मापों में "त्रुटि" का कुछ अंश सदैव प्रवेश कर जाता है और क्रमिक निदर्शनों के मध्यमान एक समान नहीं होते । निदर्शन वितरण में इस प्रकार की त्रुटि को "सैम्पलिंग त्रुटि" कहा जाता है । सांख्यिकी विदों ने निदर्शन त्रुटि ज्ञात करने के लिए कुछ सूत्रों का निर्माण किया है । इनमें से एक सूत्र मानक त्रुटि का है । यह एक ऐसा प्रतिदर्शक है जो एक सैम्पिल से प्राप्त मध्यमान की विश्वसनीयता का प्राक्कलन करता है । इससे यह ज्ञात होता है कि सम्भावित की कितनी मात्रा में सैम्पिल जनसंख्या के मध्यमान के प्रतिनिधिक हैं । दूसरे शब्दों में यदि हम निदर्शन मध्यमान को जनसंख्या मध्यमान के समान माने तो त्रुटि की कहाँ तक सम्भावना है ।

<u>मूल्यों का विश्लेषण</u> -

शोधकर्ता ने "मूल्य मापनी" के प्रयोग से तथ्यों को एकत्रित किया और उनका सांख्यिकी विश्लेषण मध्यमान, प्रमाण विचलन और मानक त्रुटि के आधार पर किया । ताकि विभिन्न प्रकार के "मूल्यों" की स्थिति का सही आंकलन हो जाये । यह निम्न तालिका से स्पष्ट होता है -

नट-कबूतरा समूह के मूल्यों का मध्यमान, प्रमाण विचलन, मानक त्रुटि और विचलन गुणांक का वर्णन

मूल्य	नट-कबूतरा पुरुष संख्या-100			
	मध्यमान	प्रमाण विचलन	मानकत्रुटि	विचलनगुणांक
सैद्धान्तिक	147.04	8.773	0.877	5.966
आर्थिक	125.53	7.093	0.709	5.650
सौन्दर्यात्मक	99.42	6.182	0.618	6.218
सामाजिक	74.40	5.161	0.516	6.937
राजनैतिक	48.64	3.878	0.388	7.793
धार्मिक	25.18	1.811	0.181	7.193

मूल्य	नट-कबूतरा स्त्रियाँ संख्या-100			
	मध्यमान	प्रमाण विचलन	मानकत्रुटि	विचलन गुणांक
सैद्धांतिक	140.45	9.656	0.965	6.875
आर्थिक	122.39	6.265	0.627	5.119
सौन्दर्यात्मक	96.77	10.707	1.07	11.064
सामाजिक	68.21	8.223	0.822	12.064
राजनैतिक	45.57	7.885	0.789	17.303
धार्मिक	23.29	3.471	0.348	14.905

तालिका नं0 5.1 से स्पष्ट होता है कि नट-कबूतरा जनजाति समूह के पुरुष अपने सभी मूल्यों में प्रभावशाली है, अपेक्षाकृत स्त्री समूहों के। पुरुषों मे सैद्धांतिक मूल्य (मध्यमान-147.04) का प्रभाव उच्च स्तर पर रहा और निम्न स्तर पर धार्मिक मूल्य (25.187) का प्रभाव रहा। इसी प्रकार से स्त्री वर्ग में उच्चतम प्रभाव सैद्धांतिक मूल्य का रहा और निम्नतम् धार्मिक मूल्य का। सभी मूल्यों पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट होता है कि सैद्धांतिक मूल्य का प्रभाव दोनों समूहों (स्त्री/पुरुष) में उच्च स्तर पर रहा है। साथ ही धार्मिक मूल्य का प्रभाव निम्नतम् रहा। राजनैतिक मूल्य मे सबसे अधिक विचलन (विचलन गुणांक- 7.79) पुरुष समूह में पाया गया और स्त्री समूह मे (विचलन गुणांक- 17.303) भी सबसे अधिक विचलन पाया गया। सैद्धान्तिक मूल्य, आर्थिक मूल्य और सौन्दर्यात्मक मूल्यों मे विचलन एक समान प्रतीत होता है। जबकि सामाजिक मूल्य में कुछ अधिक। जहाँ तक पुरुष और महिला वर्ग में विचलन का सवाल उठता है वहाँ पर दोनों ही वर्गों मे समानता स्थापित

MEAN OF DIFFERENT VALUES
NAT KABUTARA
MEAN
0
30
60
90
120
150
T
E
A
S
P
R
MALE
FEMALE
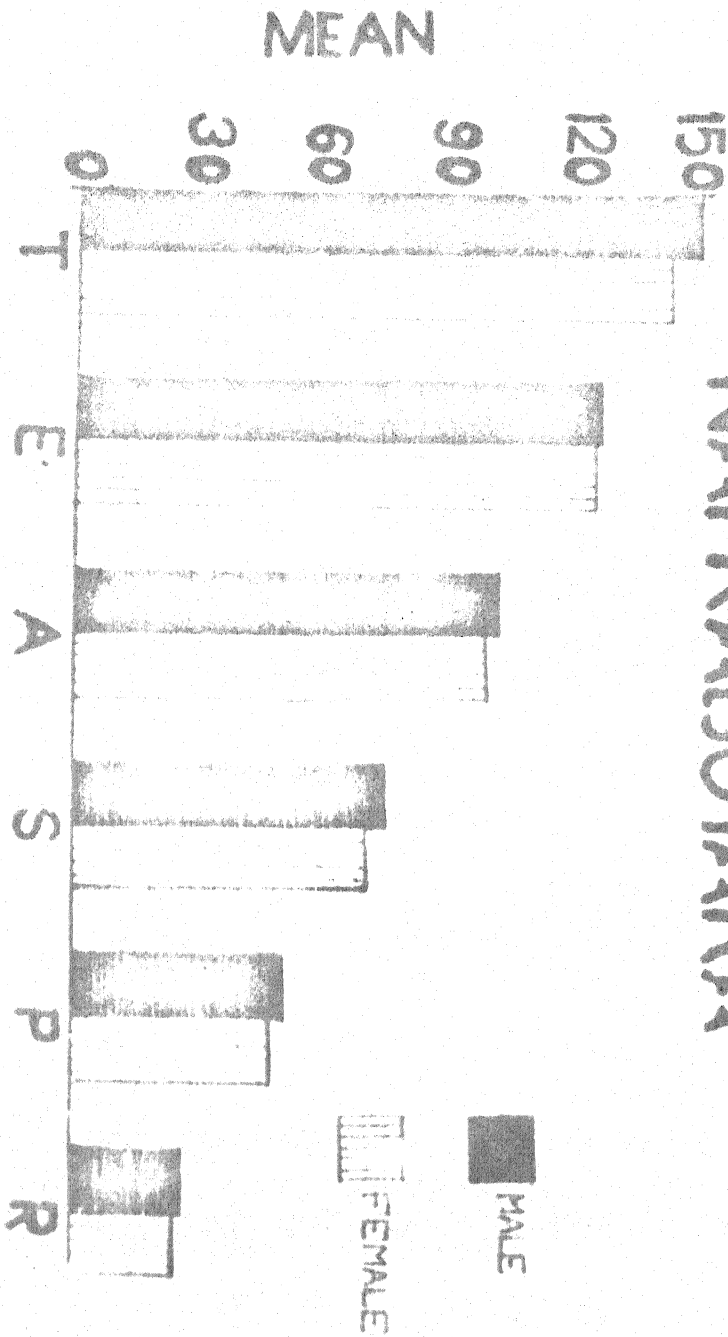
मूल्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि नट-कबूतरा जनजाति समूह में पुरूष वर्ग सभी मूल्यों में उत्तम पाये गये हैं, अपेक्षाकृत स्त्री/समूह के। इनका मुख्य कारण इस जनजाति का आक्रामक स्वभाव और अपराधी प्रवृत्ति का होना माना जा सकता है । इनका कार्य समाज और कानून विरोधी है, साथ ही ये लोग नोमैडिक रूप से जीवन व्यतीत करने के आदी हैं । पुरूष वर्ग का विचार है कि जब तक अनोखा व्यक्तित्व नही होगा, वह अन्य लोगों को प्रभावित नहीं कर पायेगा और न अपने अपराधिक जीवन को ऊँचा उठा पायेगा । ये लोग यथार्थवादी, सैद्धांतिक होते हैं । जब पुलिस का छापा इनके समूह पर पड़ता है तो ये नम्बर से स्वयं को पुलिस के हवाले कर देते हैं । इसी से वर्तमान मे उनका विश्वास प्रगट होता है । इसी प्रकार से जीवन के प्रति दृष्टिकोण महिला वर्ग का भी है । प्रत्येक प्रकार की वास्तविकता का सामना करने को ये तैयार रहती हैं । शोधकर्ता ने इस तथ्य की व्याख्या में और अधिक विस्तृत रूप से वर्णन किया है । अत: कबूतरा जनजाति का वर्तमान में अधिक विश्वास होता है और वे जैसा देखते समझते हैं, वैसा ही करते हैं । ये लोग स्वयं को प्रसन्न रखने के लिये सौन्दर्य में विश्वास करते हैं । इसीलिये अपने धार्मिक त्यौहार, विश्वास, रीति-रिवाज आदि का खुलकर पालन करते हैं । स्त्री वर्ग को परिवार चलाने या देखभाल करने के लिये उत्तम माना जाता है और उसी का शासन अपने परिवार पर होता है । इसके अलावा सैद्धांतिक मूल्य पुरुष और स्त्री दोनों वर्गों में ही उच्च स्थान पर हैं, जो वास्तविकतामें विश्वास रखने वालों मे होता है । दोनों ही वर्गों मे धार्मिक मूल्य निम्न स्तर पर रहा, क्योंकि आज के भौतिकवादी युग का प्रभाव इस जनजाति पर भी पड़ा है, जिसने सोचने को बाध्य कर दिया है कि समूह को बचाने के लिये धन और

शक्ति की आवश्यकता होती है, धर्म तो सिर्फ शांत पर्यावरण में सुखकर लगता है।

प पुरुष व स्त्री दोनों ही समूहों में, राजनैतिक मूल्य का सबसे अधिक विचलन रहा है। इसका मुख्य कारण है कि प्रत्येक व्यक्ति शक्तिशाली, प्रभावशाली और नेता बनना चाहता है, ताकि शक्ति उसकी मुट्ठी में रहे और वह जीवन का आनन्द उठाता रहें। अतः राजनैतिक जागरूकता, चेतनता का आना इस जनजाति में एक परिवर्तित स्वरूप दिखलाई पड़ता है, क्योंकि राजनैतिक जागरूकता तो बौद्धिक व्यक्तियों में ही आती हैं। ये लोग हमेशा शासन के प्रति या राष्ट्र की राजनीति के प्रति जागरूक रहते हैं। जैसा प्रसिद्ध दार्शनिक "प्लैटो" का सिद्धांत " द फिलास्फर किंग थ्योरी " जिसका वर्णन उसने अपनी पुस्तक " रिपब्लिक " में किया है (बारकर, 1952 पृ0 168)।

तालिका 5.2 : साहरिया समूह का मध्यमान, प्रमाण विचलन, मानक त्रुटि और विचलनगुणांक

मूल्य	साहरिया समूह के पुरुष संख्या-100			
	मध्यमान	प्रमाण विचलन	मानक त्रुटि	विचलन गुणांक
सैद्धान्तिक	148.52	6.573	0.657	4.382
आर्थिक	125.85	5.962	0.596	4.732
सौन्दर्यात्मक	100.48	5.60	0.560	5.60
सामाजिक	73.77	4.518	0.451	6.105
राजनैतिक	50.12	3.033	0.303	6.066
धार्मिक	25.14	1.289	0.129	5.154

मूल्य	साहरिया स्त्रियाँ संख्या-100			
	मध्यमान	प्रमाण विचलन	मानक त्रुटि	विचलन गुणांक
सैद्धांतिक	149.10	8.509	0.851	5.707
आर्थिक	125.54	8.246	0.825	6.569
सौन्दर्यात्मक	98.30	7.901	0.790	8.037
सामाजिक	74.03	5.688	0.569	7.683
राजनैतिक	48.43	5.168	0.517	10.671
धार्मिक	24.48	1.989	0.199	8.129

तालिका 5.2 से बिल्कुल स्पष्ट होता है कि सैद्धांतिक मूल्य सामाजिक मूल्य में स्त्री समूह अधिक प्रभावशाली रहा है अपेक्षाकृत पुरूषों के। जबकि पुरूष समूह आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य और राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों मे अधिक प्रभावशाली रहा है, अपेक्षाकृत स्त्री समूह के। तालिका मे देखने से स्पष्ट होता है कि दोनों ही समूहो में सैद्धांतिक मूल्य अपनी चरमसीमा पर रहा है और निम्न स्तर पर धार्मिक मूल्य। पुरूष समूह मे सामाजिक मूल्य मे उच्चतम विचलन। 6.105 वि0गु0। पाया गया है जबकि स्त्री समूह मे राजनैतिक मूल्य मे उच्चतम विचलन। 10.67 विगु0। प्राप्त हुआ है साथ ही अन्य मूल्यों मे समान स्थिति प्रतीत होती है।

मूल्यों मे विश्लेषण को देखने से स्पष्ट होता है कि स्त्री वर्ग सैद्धांतिक मूल्य और सामाजिक मूल्य मे पुरूष वर्ग की तुलना में अधिक श्रेष्ठ है। इसका कारण स्त्रियों का वास्तविकता मे विश्वास करना और अपनी सामाजिकता

MEAN OF DIFFRENT BALUES

SAHARIA

MEAN

150
120
90
60
30
0

T E A S P R

MALE
FEMALE
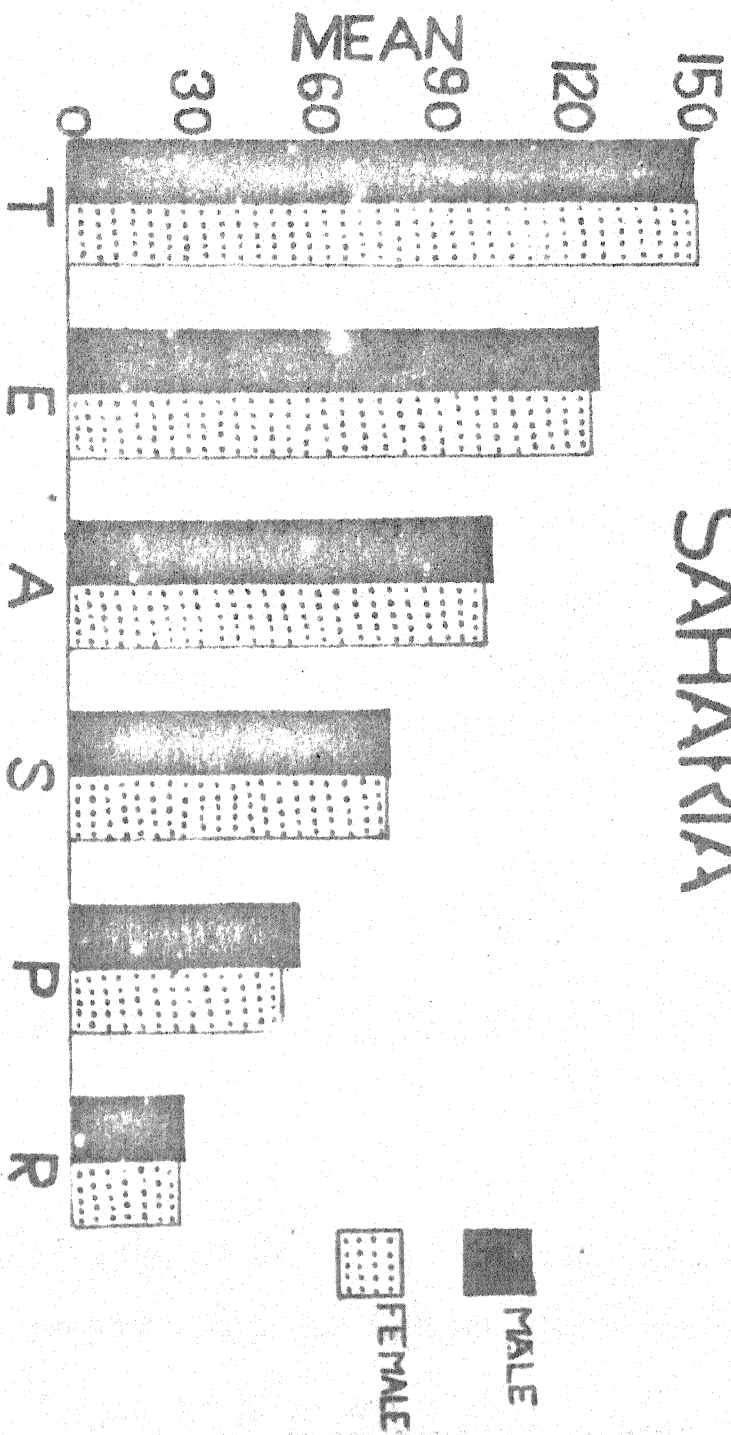
की भावना को बनाये रखना मात्र है । इस समूह की स्त्रियाँ वास्तविक मान्यताओं और वर्तमान में आवश्यकता पूर्ति पर विश्वास करती हैं, ताकि वे अपने परिवार का विकास न्यून साधनों से भी कर सकें । इसके साथ ही वे अपने समाज को स्थायित्व प्रदान करने के लिये उसकी अपूर्वता को बनाये रखने के लिये और साधन सम्पन्न बनाने के लिये सदैव क्रियाशील रहती हैं । सहरिया समूह में परिवार की मालिकन और पूर्ण प्रभुत्व स्त्री का ही होता है । इसके अलावा सैद्धांतिक और सामाजिक दोनों ही मूल्य मानव जीवन के अस्तित्व के लिये आवश्यक होते हैं । सैद्धांतिकता से समाज की निश्चितता और साधन सम्पन्नता दृढ़ होती है। जबकि सामाजिक मूल्य से अपने समूह के प्रति जागरूकता और स्थिरता में वृद्धि होती है । सहरिया जनजाति ने धार्मिक मूल्य में सबसे कम विश्वास प्रगट किया है । ऐसा लगता है कि आज के परिवर्तन का पूरा प्रभाव इन पर भी पड़ा है । इससे इन्होने धर्म को जीवन में सुख शांति के लिये उत्तम माना है, दैनिक आवश्यकता पूर्ति के लिये नहीं ।

शोधकर्ता ने सबसे अधिक विचलन पुरूष वर्ग में सामाजिक मूल्य में पाया है और स्त्री वर्ग में राजनैतिक मूल्य में पाया है । इससे स्पष्ट होता है कि समाज की स्थायित्व में और सामाजिक संगठन के प्रति सतर्कता ने पुरूष वर्ग को चिन्तित कर रखा है । सहरिया समाज भी भौतिकता की चकाचौंध में भ्रमित सा हो रहा है । अतः उसकी अपूर्वता को बचाने के लिये पुरूष वर्ग सामाजिक चेतना को जाग्रत कर रहा है । इसी प्रकार से स्त्री वर्ग में राजनीति के प्रति जाग्रति एक नया परिवर्तन है । वे अपने हाथों में अधिक से अधिक शक्ति लेने की कोशिश करती हैं । पारिवारिक कार्यों में बुजुर्ग स्त्रियों के कथन को महत्व दिया जाता है साथ ही बच्चों का विकास एवं निर्माण उन्ही के

द्वारा होता है । वे अपने परिवार के पुरुषों को राजनैतिक रूप से जाग्रत बनाती हैं । अत: इस जनजाति में स्त्री वर्ग अधिक बौद्धिकता के नजदीक है और विकास के समान अवसर भी चाहता है । यह भी माना जा सकता है कि साहरिया पुरुष वर्ग की मानसिकता में हीन भाव जाग्रत हो चुका है, क्योंकि इसकोअनुसुचित जनजाति माना जाता है । अत: आधुनिक समाज इनको मानवीय सम्मान नहीं देता है, जिससे इनमें राजनैतिक मूल्य का सामाजिक मूल्य की अपेक्षा कुछ कम विकास पाया जाता है । तुलना की दशा मे सामाजिक मूल्य का स्तर । वि0गु0- 6.105 । और राजनैतिक मूल्य का स्तर । वि0गु0- 6.066 । आया है । शोधकर्ता की दृष्टि में राजनैतिक और सामाजिक दोनों ही मूल्यों का विकास इस जनजाति के विकास के लिये उत्तम होगा ।

तालिका: 5.3 : खंगार समूह का मध्यमान, प्रमाण विचलन, मानक त्रुटि, और विचलन गुणांक का वर्णन -

मूल्य	खंगार पुरुष वर्ग संख्या-100			
	मध्यमान	प्रमाण विचलन	मानक त्रुटि	विचलन गुणांक
सैद्धांतिक	148.00	29.245	2.92	19.758
आर्थिक	121.80	22.98	2.29	18.142
सौन्दर्यात्मक	100.28	17.216	1.72	17.168
सामाजिक	79.06	16.333	1.63	20.659
राजनैतिक	52.79	19.872	1.98	37.643
धार्मिक	23.85	7.854	0.78	32.932

मूल्य	कंगार-स्त्री वर्ग संख्या-100			
	मध्यमान	प्रमाण विचलन	मानक त्रुटि	विचलनगुणांक
सैद्धांतिक	148.08	12.89	1.288	8.126
आर्थिक	123.05	15.393	1.59	12.510
सौन्दर्यात्मक	99.72	13.313	1.33	13.351
सामाजिक	73.39	10.539	1.054	14.360
राजनैतिक	50.93	12.353	1.235	24.254
धार्मिक	24.65	5.941	0.59	24.100

कंगार समूह की तालिका 5.3 से तथ्यों का विश्लेषण स्पष्ट होता है कि सैद्धांतिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, और धार्मिक मूल्य मे स्त्री वर्ग उच्च स्तर पर आया है, अपेक्षाकृत पुरूष वर्ग के । जबकि सौन्दर्यात्मक, सामाजिक और राजनैतिक मूल्यों मे पुरूष वर्ग उच्च स्तर पर रहा, अपेक्षाकृत स्त्री वर्ग के । दोनों ही समूहों को देखने से स्पष्ट होता है कि सैद्धांतिक मूल्य उच्च स्तर पर रहा है, और धार्मिक मूल्य निम्न स्तर पर । तालिका में राजनैतिक मूल्य का विचलन गुणांक पुरूष वर्ग (37.643 वि0गु0) और स्त्री वर्ग (24.254 वि0गु0) मे उच्चतम विचलन प्रगट करता है, अपेक्षाकृत अन्य मूल्यों के । सैद्धांतिक, आर्थिक सौन्दर्यात्मक मूल्यों मे विचलन की समानता पुरूष वर्ग मे प्रतीत होती है और स्त्री वर्ग में आर्थिक, सौन्दर्यात्मक और सामाजिक मूल्यों में विचलन की समानता स्पष्ट होती है ।

कंगार समूह में मूल्यों का विश्लेषण करने पर शोधकर्ता को स्पष्ट होता है कि स्त्री वर्ग सैद्धांतिक, आर्थिक, और धार्मिक मूल्यों मे पुरूष वर्ग की

MEAN OF DIFFRENT VALUES
KHANGHAR
MEAN
150
120
90
60
30
0
T
E
A
S
P
R
MALE
FEMALE
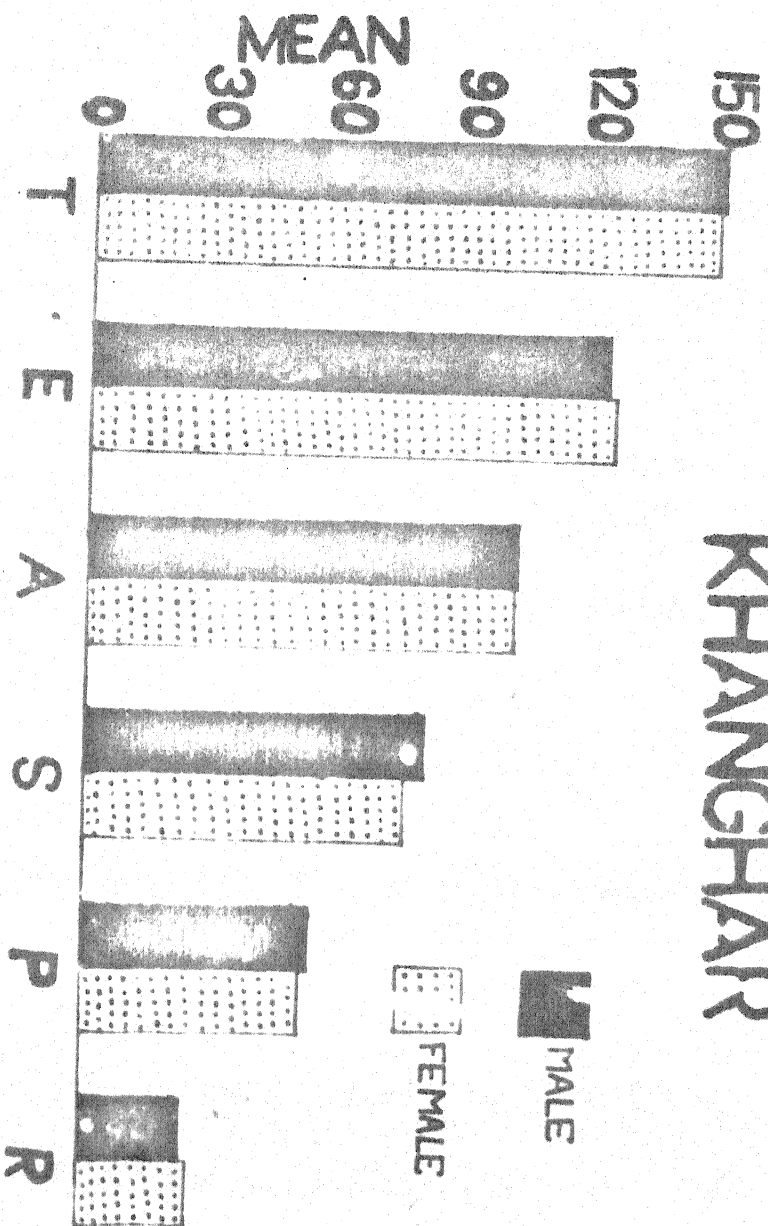
अपेक्षा श्रेष्ठ साबित हुये हैं । इसका कारण स्त्री वर्ग की वर्तमान की वास्तविकता में विश्वास करना, समाज के कार्यों मे रचनात्मक योगदान देना है और अपनी जाति की विशेषताओं को धार्मिकता के आधा पर अक्षुण बनाये रखना है । इससे स्पष्ट होता है कि स्त्री वर्ग अपनी चेतनता के द्वारा सांसारिक व्यवहारिकता को समझता है,ताकि परिवर्तनशील समय में भी खंगार समाज अपनी अपूर्वता और सामाजिक ढांचे को बनाये रख सके । जब शोधकर्ता ने तथ्यों का एकत्रीकरण करने के लिये स्त्रियों से प्रश्न पूछे थे,तभी इस बात की झलक मिल चुकी थी कि जीवन को चलाने के लिये समय की सत्यता, धन और नैतिकता की आवश्यकता होती है, जो इनमें स्पष्ट रूप से झलक रही थी । अतः स्पष्ट होता है कि ये लोग जीवन की सत्यता, समय की माँग मे ही विश्वास करते हैं, भविष्य की आशा में नहीं । खंगार समूह अपने धर्म के प्रति बड़े ही जागरूक होते हैं, क्योंकि वे इसे जीवन की आवश्यकता मानते हैं न कि दिखावा या छल-कपट । वे अपने धार्मिक कृत्यों को खुश होकर आयोजित करते हैं । इन सभी कार्यों की पूरी जिम्मेवारी महिला वर्ग की होती है । स्त्री एवं पुरुष दोनों ही वर्गों को उच्च स्थान सैद्धान्तिक मूल्य में प्राप्त हुआ है । अतः दोनों का विश्वास सत्यता या वास्तविकता मे दिखलाई पड़ता है । साथ ही दोनों को निम्न स्थान धार्मिक मूल्य मे मिला है , क्योंकि समय की भौतिकता-वादी नीति और व्यवसाय की अस्थिरता आदि ने इनकी रुचि को धार्मिक आडम्बरों और आयोजनों मे कम कर दी है ।

खंगारों की तथ्य विश्लेषण तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि सबसे अधिक विचलन पुरुष वर्ग और स्त्री वर्ग का राजनैतिक मूल्य में प्राप्त हुआ है । इसका मुख्य कारण शक्ति संचय की प्रवृत्ति का विकास है ।

आज का सभ्य नागरिक प्रत्येक प्रकार से अपने हाथ में व्यक्तियों की धन की और प्रशासन की शक्ति रखना पसंद करता है ताकि समाज के लोग उनको अपना नेता माने । " रसैल व हीरालाल" । 1916,पृ0-439 । ने इस जाति को "कुरार" गढ का राजा माना है । अतः स्पष्ट होता है कि शक्ति संचय इनकी वंशानुक्रमीय विशेषता रही है । इसी के वशीभूत होकर आज भी इनमें राजनैतिक चेतना की जाग्रति स्त्री-पुरूषों में पाई गई है । "रसैल व हीरालाल । 1916,पृ0 443 । ने आगे यह भी लिखा है कि इस जाति के लोग अपने नाम के अन्त मे "सिंह" शब्द को लगाते हैं । इससे भी स्पष्ट होता है कि इनके अन्दर राजनैतिक मूल्य कूट-कूट कर भरा है, जिसके वशीभूत होकर ये शक्ति संचय की ओर आज भी प्रवृत्त है ।

उपर्युक्त तीनों ही जनजातीय समूहों के मूल्यों का विश्लेषण देखने से स्पष्ट होता है कि इनमें राजनैतिक जाग्रति अपनी उच्च सीमा पर है । अतः इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि इनके अन्दर बौद्धिकता की कमी नहीं है, बल्कि कमीं शिक्षा की है । इस कमी के दूर होते ही ये भी राष्ट्र के निर्माण मे सहयोग दे सकेंगे । साथ ही इनका विश्वास जीवन की सत्यता में, धनोपार्जन मे और अपनी नैतिकता के विकास मे समान स्तर पर प्रगट होता है । अतः शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि ये जनजाति समूह बनावट मे भिन्नता रखती है, लेकिन मूल्यों के विकास मे एक समान है । इसी लिये इनके मूल्यों का विकास क्रम सैद्धांतिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक रूपों मे प्रगट हुआ है ।

शैक्षिक अभिवृत्ति -

जनजातीय समूहों की शैक्षिक अभिवृत्ति । स्त्री-पुरुष । का मापन शोधकर्ता ने अभिवृत्ति मापनी के द्वारा किया है । इसमें मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि और सी०वी० के आंकलन द्वारा तथ्यों का विश्लेषण किया गया है । जैसा कि निम्नलिखित तालिकाओं से स्पष्ट है -

तालिका नं०- 5.4

नट कबूतरा जनजाति		
पुरुष= 100	सांख्यकीय विश्लेषण	स्त्री= 100
130.79	मध्यमान	128.53
11.98	मानक विचलन	8.96
1.198	मानक त्रुटि	0.896
9.21	विचलन गुणांक	7.000

शैक्षिक अभिवृत्ति के तथ्यों के विश्लेषण की तालिका नं०-5.4 से स्पष्ट होता है कि नट-कबूतरा जनजाति समूह के पुरुष अपने मध्यमान में स्त्री समूह की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली हैं । उनका मध्यमान 130.79 स्पष्ट करता है कि स्त्री समूह मध्यमान 128.53 निम्न स्तर पर है । इससे स्पष्ट होता है कि इस जनजाति समूह में परिवार संचालन में पुरुष की प्रमुखता रहती है । उनके द्वारा लिये गये निर्णय पर्याप्त और मान्य होते हैं । इसी लिये उनके समाज को पुरुष संचालित समाज की संज्ञा दी जाती है । फिर प्रश्न उठता है कि उनमें साक्षरता का अभाव क्यों है ? इसका मुख्य कारण पुरुष वर्ग की अवेहलना मात्र है । यह अवेहलना सामाजिक अनुपयोगिता को देखकर हो सकती है ।

EDUCATIONAL ATTITUDE
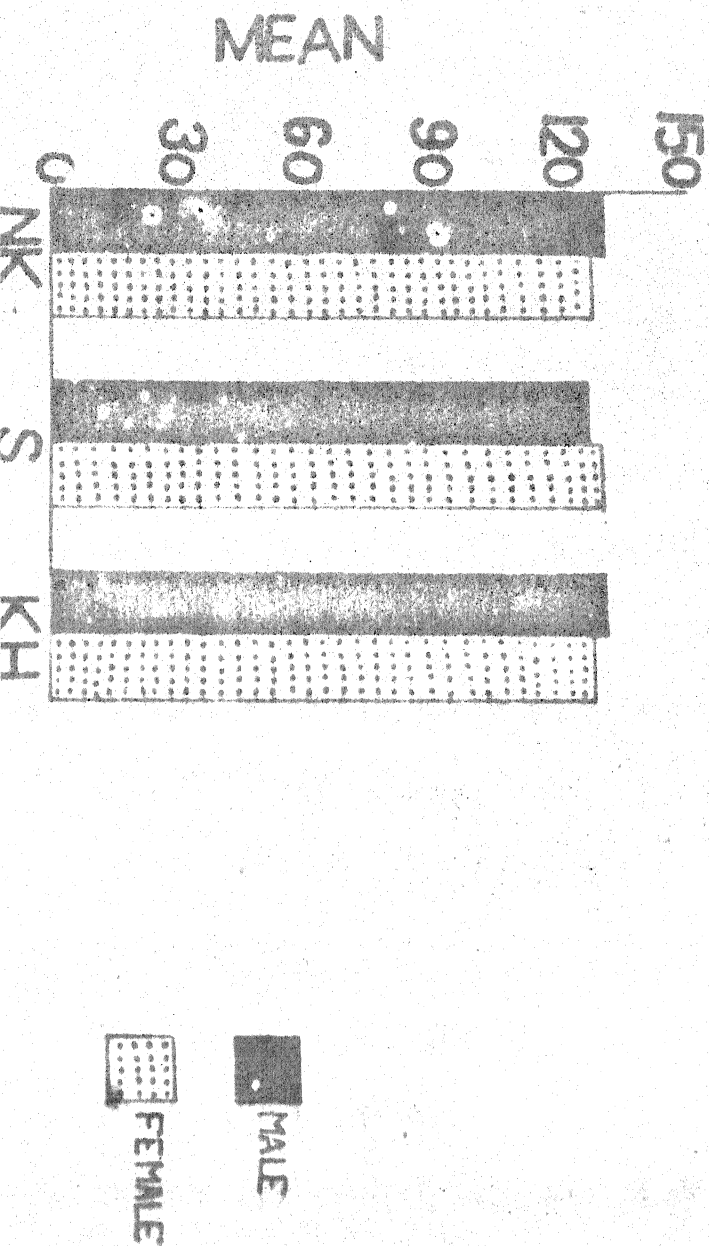
पाया गया, जबकि स्त्री वर्ग में । वि०गु०= 7.00 । था । अतः स्पष्ट होता है कि दोनों ही वर्गों में शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में समानता नहीं है ।

नट-कबूतरों की शैक्षिक अभिवृत्ति विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि दोनों समूहो ।स्त्री-पुरूष। शिक्षा के प्रति रूचि रखते हैं, और उसकी उपयोगिता को मानते हैं । अतः इस सैद्धांतिकता को व्यवहारिकता में परिवर्तित करना चाहिये ताकि इस जनजाति को आधुनिक समाज में जीवन व्यतीत करने का समान अवसर प्राप्त हो सके । शैक्षिक अभिवृत्ति को व्यवहारिकता में न अपनाने में प्रमुख कठिनाई इनके भ्रमणशील स्वभाव और निवास की अस्थिरता का होना है । ये स्वभाव से निर्दयी, आक्रामक, समाज और कानून विरोधी कार्य करना और अपराध मे संलग्न रहना आदि विशेषताओं से ग्रसित होते हैं । ये लोग भविष्य के स्थान पर वर्तमान को अधिक मानते हैं । उन्ही कार्यों को करते हैं जिनसे सामयिक लाभ होता है । ये अपनी जनजाति के "मानकों का पूर्ण रूप से पालन करते हैं । ये अपराध-शास्त्र मे प्रवीण और चतुर होते हैं । इसको नयी पीढ़ी मे बढ़ावा देने के लिये ये अविधिक शैक्षिक साधनों का प्रयोग करते हैं । वर्तमान शिक्षा की गतिशीलता, साक्षरता, नागरिक गुण, व्यवसायिकता, नैतिक एवं चारित्रिक गुण, और राष्ट्रीय एकता आदि का विकास ये लोग अपने समाज में रहकर समाज के लिये करते हैं । भारतीय सरकार द्वारा प्रदत्त शिक्षा को ये उपयोगी नहीं मानते हैं, अतः अपने बच्चों को विद्यालय में नहीं भेजते हैं ।

पुरूष एवं स्त्री दोनों ही समूहों मे शैक्षिक अभिवृत्ति सम्बन्धी विचलन सामान्य है । दोनों मे अभिवृत्ति सम्बन्धी भिन्नता तो है,लेकिन ये भिन्नता उद्देश्य प्राप्ति के तरीकों मे है न कि उद्देश्य में । पुरूष वर्ग शिक्षा को समय की बर्बादी समझता है, क्योंकि उससे सामयिक धन प्राप्ति नही होती है ।

इससे व्यवसाय निपुणता नहीं मिलती है और नहीं उसमें चतुरता, आक्रामकता, निडरता आदि का विकास ही होता है । स्त्री वर्ग का यह मानना है कि हम पुरूष वर्ग पर निर्भर रहते हैं । हमारा अस्तित्व पति के अलावा नहीं है, अतः हमें अपने पैरों पर खड़े होना चाहिये । लेकिन पुरूष वर्ग की प्रभावशीलता और सोच हमारी शिक्षा सम्बन्धी नीतियों को असफल बना देता है । शिक्षा के द्वारा हमारी स्वाभाविकता नष्ट हो जाती है जिसे हम खोना नहीं चाहते हैं । फिर भी इन पर भौतिकता का प्रभाव पड़ा है जिसके वशीभूत होकर ये लोग भी आधुनिक जीवन व्यतीत करने को उत्सुक लगते हैं । इनकी मानसिकता में शिक्षा के प्रति लगाव और उल्लास है, सिर्फ बाहर से ही शुष्कता टपकती है ।

ए०एस०टी०ए० की प्रश्नावली को देखने से स्पष्ट होता है कि इस जनजाति के स्त्री-पुरूष समूहों ने शिक्षा के प्रति नकारात्मक भाव प्रदर्शित किया है, उन्होने सिर्फ समय की बर्बादी, लाभ न होना, व्यवसायिक उपयोगिता का अभाव, सम्मान न करना आदि तथ्यों पर नकारात्मक भाव प्रदर्शित किया है । ये नकारात्मक भाव ऐसा नहीं है कि उसमें परिवर्तन न हो सके । ये विवशता वर्तमान शिक्षा प्रणाली की अनिश्चित नीति का परिणाम मात्र है । शिक्षा के पुराने स्वरूप "मनुष्यता का विकास करना" के स्थान पर "व्यवसायिकता में निपुण बनाना होना चाहिये । इससे ये लोग शिक्षा के प्रति जागरूक होगें और अपनी कुशलता का पूर्ण विकास करेगें । स्त्री समूह के मन में शिक्षा के प्रति एक अस्थिर विचार है । वे शिक्षा के द्वारा जीवन को अच्छा बनाना चाहतीं हैं, लेकिन बोझीले पाठ्यक्रम से डरती हैं । उससे आर्थिक लाभ न होना उनके दैनिक जीवन को प्रभावित करता है । इसलिये कोई ऐसा रास्ता निकाला जाय जो इन दोनों के बीच का हो । फिर भी तालिका नं०- 5.4 के विश्लेषण से इनमें

शैक्षिक अभिवृत्ति का सकारात्मक रूप स्पष्ट होता है ।

तालिका नं0-5.5: साहरिया समूह का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि और विचलन गुणांक का वर्णन -

पुरूष = 100	सांख्यिकीय विश्लेषण	स्त्री = 100
127.26	मध्यमान	130.93
10.56	मानक विचलन	11.36
1.056	मानक त्रुटि	1.136
8.31	विचलन गुणांक	8.73

तालिका नं0- 5.5: को देखने से स्पष्ट होता है कि साहरिया जनजाति समूह में पुरूषों का मध्यमान [127.26] रहा, जबकि स्त्री समूह का मध्यमान [130.93] रहा । अत: समाज के संचालन में स्त्री भूमिका प्रमुख रही है । उसका प्रभाव परिवार पर स्पष्ट रूप से झलकता है । परिवार के निर्णयों की तह मे उसका ही विशेष हाथ रहता है । कुक [1875, पृ0 253] ने स्त्री समुदाय की प्रमुखता को इसी तरह से माना है कि कोई भी पुरूष एक पत्नी के जीवित रहते हुये अन्य स्त्री से न तो विवाह कर सकता है और न उसे पंचायत की आज्ञा बिना रख ही सकता है । साथ ही विवाह मे दहेज या मूल्य का प्राविधान नहीं होता है । इस प्रकार से शैक्षिक अभिवृत्ति के मूल्यांकन में पुरूष वर्ग की अपेक्षा स्त्री वर्ग अधिक श्रेष्ठ साबित हुआ है । इसका प्रमुख कारण स्त्रियों का वास्तविकता में विश्वास करना , वर्तमान के लिये जीना और अपनी सामाजिकता की भावना को बनाये रखना मात्र है । वे अपनी वर्तमान और सामयिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये क्रियाशील

परिचित कराती हैं और अपने समाज का अच्छा नागरिक बनाती हैं । साथ ही अपने परिवार की लड़कियों को ऐसी शिक्षा भी देती है कि वे अपने न्यूनतम साधनों में परिवार को चला सकें । अत: स्पष्ट होता है कि ये लोग अविधिक शिक्षा मे विश्वास रखते हैं ।

शैक्षिक अभिवृत्ति तालिका को देखने से ज्ञात होता है कि पुरूष वर्ग का मानक विचलन (10.56) और स्त्री वर्ग का मानक विचलन (11.36) है । इसी के साथ विचलन गुणांक पुरूष वर्ग (8.31) और स्त्री वर्ग (8.73) है । अत: इनमें सामान्य रूप से विचलन नहीं है, फिर भी शैक्षिक अभिवृत्ति मे उच्चतम विचलन स्त्री वर्ग मे पाया गया है । इससे दो राय स्पष्ट होती है हैं - प्रथम तो पुरूष और स्त्री दोनों ही वर्ग शिक्षा के बारे मे समान राय स्थापित किये हुये है । ये राय सकारात्मक और शिक्षा ग्रहण करने में सहायक है । वे इस निश्चय पर नहीं पहुँच पा रहे हैं कि शिक्षा को प्रारम्भ कहाँ से और कैसे किया जाय । अत: उनकी इस मानसिकता को आगे बढ़ाना आवश्यक है । द्वितीय मे स्त्री वर्ग पुरूष वर्ग की अपेक्षा अधिक शैक्षिक धारणा रखती है । इसका मुख्य कारण स्त्री वर्ग का अपने परिवार के प्रति जागरूक होना है । वे देखती हैं कि शिक्षित समाज के बच्चे स्वच्छ, साफ सुथरे, आधुनिक भाषा और साधन सम्पन्नता आदि मे उनके बच्चो से भिन्न होते हैं । वे अपने बच्चों को भी ऐसा ही देखना चाहती है । शोधकर्ता ने अपने तथ्य संकलन में उनकी भावनाओं को दिया स्वप्न के रूप मे साकार होते देखा है । आज की भौतिकता का परिवर्तन उनमें कौतूहल पैदा करता है, और वे स्वयं को वैसा ही बनाना चाहती हैं जैसा कि आधुनिक भारतीय समाज के नागरिक हैं । इसके विपरीत पुरूष वर्ग जंगली सामान को एकत्रित करने मे लूट-मार करन में और शराब पीने

में मस्त रहते हैं । वे अपने परिवार को नई चेतना, सक्रियता और सजीवता देने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं । वे जब किसी शहर या कस्बे के विद्यालय के बच्चों को देखते हैं तो उनके चेहरे पर हीनता का भाव स्पष्ट रूप से झलकता है । अतः यह बताया जा सकता है कि ये लोग भी शिक्षा को जीवन का आधार बनाना चाहते हैं, कमी सिर्फ सही रूप से प्रेरित करने की है ।

ए०एस०टी०ई० मापनी के प्रश्न नं०-4 के प्रति सभी सकारात्मक मत प्रगट करते हैं । ये मत चरित्र निर्माण के संदर्भ में है । ये प्रश्न उच्चतम मूल्य । 10.79 । स्थापित करता है । इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा के प्रति उनकी भावना सकारात्मक है जो जीवन को उच्च स्थान प्रदान करती है । इसी प्रकार से प्रश्न ।1, 4, 8। आदि उच्चतम मूल्य प्रदान करते हैं । इनके प्रति इनका सकारात्मक भाव प्रगट हुआ है । अतः स्पष्ट होता है कि स्त्री-पुरुष दोनों ही समूह शिक्षा के प्रति लगाव, रूचि, धारणा और निश्चितता का सकारात्मक रूप से रखते हैं ।

तालिका नं0- 5.6 : खंगार समूह का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, और विचलन गुणांक का वर्णन -

पुरूष= 100	सॉंख्यिकीय विश्लेषण	स्त्री = 100
130.93	मध्यमान	127.96
12.26	मानक विचलन	10.46
1.226	मानक त्रुटि	1.046
9.3	विचलन गुणांक	8.2

खंगार समूह की शैक्षिक अभिवृत्ति विश्लेषण तालिका नं0 5.6 से स्पष्ट होता है कि पुरूष समूह उच्च भाव से ग्रसित है। अपेक्षाकृत स्त्री समूह के। पुरूष समूह का मध्यमान । 130.93 । आया है, जबकि स्त्री समूह का मध्यमान । 127.96 । आया है। इसका मुख्य कारण इनका कृषि कार्य में संलग्न होना है। विद्यार्थी 1975 । । शोधकर्ता ने भी इसे कृषि कार्य करने वाली जनजाति के रूप में माना है। आज भारत देश ने कृषि का आमूल चूल परिवर्तन कर दिया है जिसका मुख्य श्रेय शिक्षा को ही जाता है।

शिक्षा के द्वारा मानव जीवन में सभी प्रकार के विकास किये जाते हैं। आज की सभ्यता इसी का परिणाम है। अत: खंगार समूह भी इसकी ओर लालायित हो चुका है। इनमें आक्रामक प्रवृत्ति की विशेषता पाई जाती है। तथ्य सर्वेक्षण मे पाया गया कि इनके बच्चों में अपव्यय और अवरोधन की समस्या उच्च स्तर पर पाई जाती है। इसका मुख्य कारण गरम मिजाजी और आक्रोश का होना है। ये लोग अपने बच्चों को सही निर्देशन शिक्षा के अभाव के कारण नहीं दे पाते हैं, साथ ही इनके बच्चे अपने क्रोधी और नटखट स्वभाव के कारण कक्षा मे समायोजित नहीं हो पाते हैं। अत: या तो विद्यालय प्रबन्धक इनको कक्षा से निकाल देते हैं या ये लोग स्वयं ही विद्यालय त्याग देते हैं। इसके साथ ही एक तथ्य और भी है जिसके कारण ये बच्चे परिवार में ग्रहकार्य नहीं कर पाते हैं, वह है कृषि व्यवसाय में जुटे रहना। कृषि एक ऐसा कार्य है जिसमे पूरे परिवार को लगना और अथक परिश्रम करना पड़ता है। इसलिये बच्चों को समय नहीं मिलता और न शैक्षिक निर्देशन ही। बच्चों को और उनके माता-पिता को जागरूक बनाना शिक्षा व्यवसाय का कार्य है, ताकि वे अपने बच्चों को शिक्षित बनाने की सही योजना बना सकें।

स्त्री और पुरूष समूह में विचलन में श्रेष्ठता भी पुरूषों की ही है । पुरूष विचलन गुणांक । 9.3 ।, और स्त्री विचलन गुणांक । 8.2 । है । इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा के प्रति दोनों ही जागरूक हैं । पुरूष का कार्य क्षेत्र परिवार के बाहर होता है और स्त्री का कार्य क्षेत्र परिवार के अन्दर । फिर भी परिवार चलाने के लिये नीति गठन दोनों मिलकर ही करते हैं । अत: बच्चों और परिवार की शिक्षा व्यवस्था का निर्धारण दोनों की मानसिकता का ही परिणाम होती है । भिन्नता सिर्फ उनके स्वरूप और क्रियान्वयन में पाई जाती है । दोनों समूह शिक्षा के प्रति चैतन्य और आशातीत प्रतीत होते हैं । यदि परिणाम में सुधार ला दिया जाय तो इनमें शिक्षा का स्तर सामान्य बनाया जा सकता है । इनके व्यवसाय का भी प्रभाव शिक्षा अभिवृत्ति पर पड़ता है । ये लोग कृषक होते हुये भी चौकीदारी, मजदूरी और चोरी आदि मे संलग्न रहते हैं । । रसैल व हीरालाल- 1916, पृ0-439 । अत: इनकी मानसिकता में "असहायता" उच्च स्तर पर बैठ चुकी है । ये अपने बच्चों का विकास सामान्य नागरिक की तरह से करना चाहते है, लेकिन क्रियान्वयन से डरते रहते हैं । इस डर का मुख्य कारण बुन्देला राजाओं द्वारा इन पर अत्याचार करना है । महान उपन्यासकार स्वर्गीय वृन्दावन लाल वर्मा ने खंगारों का विनाश और उन्हें अनुसूचित जाति का रूप देना आदि का श्रेय बुन्देलों को दिया है, फिर भी ये लोग नगरों के पास आकर रहने लगे हैं और स्वयं का विकास शिक्षित बनकर करने लगे हैं । चूँकि इनको शिक्षित प्रतिशत बहुत कम है, अत: इनकी कुंठित शिक्षित अभिवृत्ति को उभार कर शिक्षा को अनिवार्य रूप से ग्रहण करना आदि रूप दे देना चाहिये । इस तरह से ये भारत राष्ट्र के सामान्य नागरिक बनकर जीवन के सभी सुख प्राप्त कर पायेगें ।

उपर्युक्त वर्णन में शैक्षिक अभिवृत्ति की तालिका नं0- 5.4, 5.5 और 5.6 को देखने से स्पष्ट होता है कि नट-कबूतरा, साहरिया और कंगार समूहों मे शिक्षा के प्रति अटूट लगाव और उत्सुकता है, क्योंकि ये लोग सिर्फ वर्तमान को ही अच्छा समझते है, लेकिन अब भविष्य के प्रति भी चिन्तित दिखाई देते हैं। वे अपने भविष्य को सुरक्षित रखना चाहते हैं ताकि बुढ़ापे में उन्हे किसी भी प्रकार की कठिनाई और दुखों का सामना न करना पड़े। यदि ए0एम0टी0ई0 प्रश्नावली को देखा जावे तो प्रतीत होता है कि 22 प्रश्नों मे से प्रत्येक स्त्री और पुरूष ने 20 प्रश्नों के उत्तर " हाँ " मे दिये हैं और कुछ ने 21 प्रश्नों के उत्तर "हाँ" मे दिये हैं। इनके तथ्यों का विचलन 127 से लेकर 132 के बीच स्थित है। जबकि कुल मांपनी मूल्य 133.32 है। इनमें प्रश्नों के " नहीं " मे दिये गये उत्तरों का मूल्य कुल = 12. 61 है। अत: इससे भी स्पष्ट होता है कि शिक्षा के प्रति कितना लगाव और आंतरिक चाह इन जनजातीय समूहों में है। अब सिर्फ सामाजिक दायित्व अपने कर्तव्य को कियान्वित करें तो इनकी शैक्षिक अभिवृत्ति की भावना व्यवहार मे परिवर्तित हो सकती है। इस प्रश्नावली से एक तथ्य और उभर कर सामने आया है कि बच्चों की पढ़ाई का मानसिक बोझा माता-पिता को ढोना पड़ता है। इन जनजातीय समूहों मे निरक्षरता व्याप्त है। अत: ये लोग सोचते हैं कि बच्चों को गृह कार्य कौन करायेगा? वे स्वयं असफल है और पैसा इतना है नही कि उनका व्यक्तिगत शिक्षण करवा पायें। इस प्रकार से समय और धन दोनों का अपव्यय न हो, ये बच्चों को विद्यालय ही नहीं भेजते हैं फिर भी काफी लोगों ने पढ़ाई के प्रति चिन्ता प्रगट की।

पुरूष वर्ग और स्त्री वर्ग मे शैक्षिक अभिवृत्ति के प्रति जो विचलन आया है, उसमें माता-पिता का अन्तर भाव भी सम्मिलित है। आज

का समाज विघटन वादी है और संयुक्त परिवार प्रणाली को समाप्त कर रहा है । शिक्षित बच्चे अपने बूढ़े माता-पिता पर ध्यान नहीं देते हैं और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति ही करते है, बल्कि समय-समय पर अनादर का भाव भी प्रदर्शित करते हैं ।

अन्त मे शोधकर्ता तथ्यों के विश्लेषण मे इसी निष्कर्ष पर पहुँचता है कि जनजातीय समूहों में शिक्षा के प्रति जागरूकता करने की आवश्यकता है । उनके अन्दर शैक्षिक अभिवृत्ति का दबा हुआ भाव या शिक्षा के प्रति अनादर का भाव भरा हुआ है, उसे हमें दूर करना है । इसके लिये उनको सामूहिक रूप से समझाना और शिक्षा के सही प्रारूप को उनके सामने रखना होगा ।

<u>प्रसरण का विश्लेषण ।एनालैसिस आफ वैरियन्स</u> । -

वर्णनात्मक साँख्यिकी का विश्लेषण करने के पश्चात प्रत्येक शोध कर्ता को प्रसरण साँख्यिकी का विश्लेषण करना होता है । अब हमारे सामने दो समूहों के मध्यमानों मे अन्तर का प्रश्न आता है । जब शोधकर्ता दो समूहों की मापों की तुलना करता है,तो उनके मध्यमानों मे अन्तर आता है । अत: शोध कर्ता यह जानना चाहता है कि दो समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर है या नहीं । हो सकता है कि दो समूहों के मध्यमानों मे जो अन्तर है वह समूहो मे किसी वास्तविक अन्तर का परिणाम न हो, अपितु प्रतिचयन करने में संयोग ।चान्स। का परिणाम हो । अत: शोधकर्ता की समस्या यह निर्धारण करने की है कि दो समूहों की मापों में जो अन्तर आता है उसमे संयोग की सम्भावना कहाँ तक है । अब यह प्रश्न उठता है कि दो समूहों के मध्यमानों की माप द्वारा जो अन्तर आता है, वह क्या संयोग का परिणाम है या वास्तविकता है ?

इसका उत्तर प्राप्त करने हेतु शोधकर्ता ने "टी" अनुपात का आकलन किया है । दो समूहों के मध्यमानों के अन्तर को अन्तर की मानक त्रुटि से भाग दे लेते है, जिससे यह ज्ञात हो जाय कि प्राप्त अन्तर प्रत्याशित अन्तर ।स्टेण्डर्ड एरर आफ डिफरेन्स। से कितना गुना अधिक है ।

प्रकरण विश्लेषण के लिये निम्न तथ्य आवश्यक माने गये हैं -

1- दोनों समूहों के प्रति चयनों का आधार सामान्य वितरण हो ।

2- प्रति चयनों का गठन दैव निदर्शन के द्वारा हो ।

3- एक समूह का उपभाग स्वयं मे स्वतंत्र हो ताकि उसकी अन्य तत्वों के साथ तुलना हो सके ।

4- प्रति चयन के सभी उप तत्वों की विषमता का आंकलन समान रूप से हो ।

" टी " अनुपात को ज्ञात करने के लिये शोधकर्ता ने एक समूह के मध्यमान मे से द्वितीय समूह के मध्यमान को घटा दिया । जो अन्तर प्राप्त हुआ उसमे स्टेण्डर्ड एरर आफ मीन डेवियेसन से भाग दे दिया । इस प्रक्रिया से जो अन्तर आया, वह "टी" अनुपात है । इस प्रकार से शोधकर्ता ने निम्न प्रकार से "टी" अनुपात का आंकलन किया -

<u>मूल्य</u> -

शोधकर्ता ने नट-कबूतरा, सहरिया और खंगार जनजाति समूहों के मूल्यों ।स्त्री-पुरूष। का मध्यमान ज्ञात किया । इसमें तीनों समूहों की छः मूल्यों का "टी" अनुपात भी ज्ञात किया ताकि दोनों ।स्त्री-पुरूष। सभी समूहों में अन्तर को प्रगट कर सके । अतः प्रत्येक जनजाति समूह का "टी" अनुपात अलग-अलग तालिकाओं द्वारा प्रदर्शित किया जाता है ।

तालिका नं0- 5.7 : नट-कबूतरा जनजाति समूह के स्त्री-पुरूष समूहों के मध्यमानों में अन्तर और उनके "टी"अनुपात की व्याख्या

मूल्य	MD	SE MD	DF	T	INTERPITATION
सैद्धांतिक	6.59	1.301	199	5.065	5 at.01 level
आर्थिक	3.14	0.675	199	4.651	5 at .01 level
सौन्दर्यात्मक	2.65	1.235	199	2.145	5 at .05 level
सामाजिक	6.19	0.970	199	6.381	5 at .01 level
राजनैतिक	3.07	0.878	199	3.496	5 at .01 level
धार्मिक	1.89	0.391	199	4.834	5 at .01 level

तालिका नं0- 5.7 मे नट-कबूतरा जनजाति समूह के पुरूषों और स्त्रियों के मध्यमानों में अन्तर प्रसरण को प्रगट किया गया है । प्रस्तुत मूल्यों मे उच्चतम प्रसरण सैद्धान्तिक मूल्य (6.59) सामाजिक मूल्य (6.19) मे प्रगट हुई है, अपेक्षाकृत अन्य मूल्यों के । अन्तर प्रसरण सबसे कम धार्मिक मूल्य (1.89) में प्राप्त हुई है, फिर भी इसमें सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है । प्रस्तुत अध्ययन में इस जनजाति ने प्रत्येक मूल्य में (स्त्री-पुरूष) सॉख्यिकी रूप से सार्थक अन्तर पाया है ।

शोधकर्ता ने तथ्यों के मध्यमान और मानक त्रुटि की संगणना के पश्चात "टी" अनुपात का आंकलन किया । इसके पश्चात प्रत्येक मूल्य के मध्यमान अन्तर का विश्लेषण और वर्णन किया । शोधकर्ता ने (तालिका नं0 5.7 "टी" अनुपात) इस जनजाति के स्त्री और पुरूषों के मूल्य मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया ।

'T' VALUE OF TRIBES
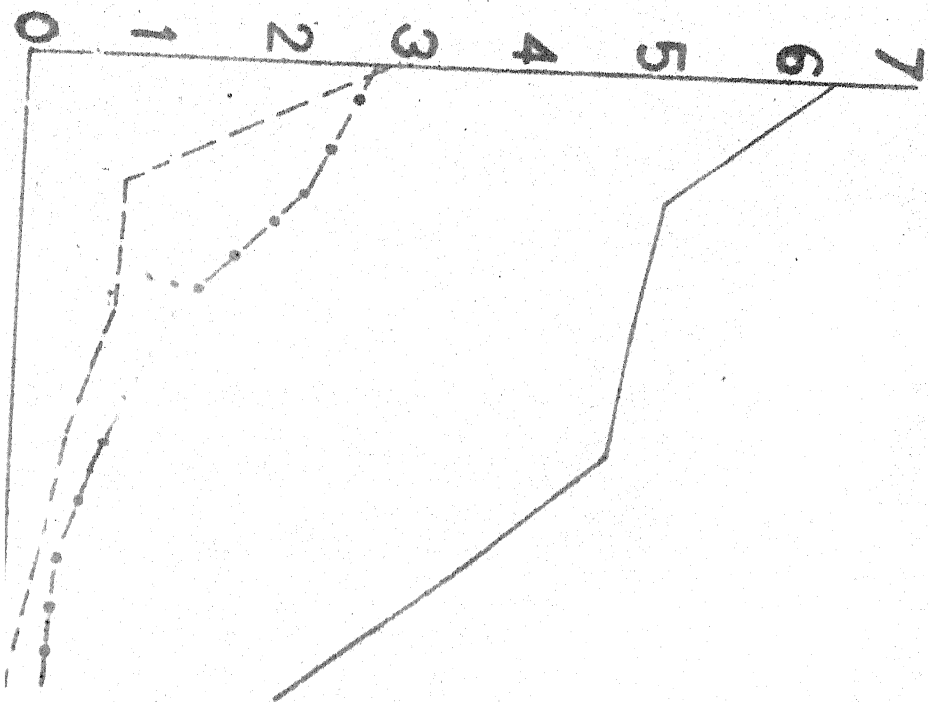
इससे स्पष्ट होता है कि दोनों ही समूह अपने जीवन के प्रति सचेत और ईमानदार है । अत: प्रत्येक नागरिक (नट-कबूतरा समूह) से यह आशा की जा सकती है कि वह अपना योगदान मानव विकास और राष्ट्र हित मे दे । किसी भी राष्ट्र का निर्माण उसके जन जीवन में व्याप्त मूल्यों के द्वारा ही सम्भव होता है । इन मूल्यों का विकास शिक्षा के अतिरिक्त किसी भी साधन से सम्भव नहीं हो सकता है । शिक्षा के द्वारा इस प्रकार के भाव का प्रवेश हम इस जनजाति के सदस्यों में आसानी से कर सकते हैं । इसके अतिरिक्त हम निम्नलिखित तथ्यों को भी विश्लेषित करते हैं -

1- इस जनजाति की उच्चतम प्रसरण सैद्धांतिक मूल्य (6.59) में स्थित है । यह वास्तव मे सही है, क्योंकि इस जनजाति के पुरुष और स्त्री समूहों के मूल्यों में उच्चतम अन्तर देखने में आया है । इसका प्रभाव जनजातीय व्यवहारों के देखने से स्पष्ट होता है । इस जनजाति के स्त्री-पुरुष वर्तमान की सत्यता को समझ-कर क्रियाशील रहते हैं, और जीवन को सुन्दरता प्रदान करते हैं । इनके परिवारों में आधुनिक सम्पन्नता भीं देखने को मिलती है । यह सम्पन्नता सुख भोग तक ही सीमित है, दिखाने के लिये नहीं । जीवन को उपयोगी बनाने के लिये ही यह लोग समाज विरोधी क्रियाओं में लिप्त रहते हैं । इन कार्यों से उनके अन्दर की भावना और यथार्थता प्रगट होती है । वे जैसे बाहर से हैं वैसे ही अन्दर से होते हैं । उनका जीवन सुखमय और समाज उपयोगी बने इसलिये वह स्वबुद्धि का, कौशल का, और अनुभव का खुलकर प्रयोग करते हैं । अत: इस जनजाति का दृष्टिकोण वैज्ञानिकता पूर्ण माना जा सकता है, क्योंकि वैज्ञानिकता प्रत्यक्ष दर्शन में विश्वास करती है, और ये लोग भी ।

2- इसके पश्चात सामाजिक मूल्य । 6.19 । की मध्यमान प्रसरण आती है । इसका मुख्य कारण इनके समाज की बनावट की अपूर्णता का होना है । इसका सीधा प्रभाव नागरिकों के व्यक्तित्व निर्माण पर, विकास पर, मूल्यों के गठन पर, व्यवसायिक अभिरूचि पर और दैनिक व्यवहार आदि पर पड़ता है । बालक का समाजीकरण अविधिक शिक्षा और दैनिक प्रत्यक्षीकरण के द्वारा होता है । बालक का विकास समाज की स्थिति, मान्यता और मानकों के द्वारा निश्चित किया जाता है । फिर भी भारतीय समाजों मे पुरूषों की क्रियायें अनियंत्रित और महिला कियायें नियंत्रित या निश्चित होती है । जिसका सीधा प्रभाव बालक के विकास पर पड़ता है । माँ अपने दूध में मिलाकर सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत बच्चों को स्वत: ही हस्तानान्तरित करती रहती है जिसका प्रभाव उनके दैनिक जीवन, व्यवहारों, क्रियायों आदि पर स्पष्ट रूप से पड़ता है । इस प्रकार से पुरूष और स्त्रियों के समाजिक मूल्य के मध्यमानों के बीच उच्च अन्तर स्पष्ट हुआ है ।

3- उच्चतम भिन्नता को स्पष्ट करने के पश्चात सामान्य रूप से भिन्नता आर्थिक मूल्य । 3.14 । और राजनैतिक मूल्य । 3.07 । में प्रगट हुई है । ये दोनों मूल्य सैद्धांतिक और सामाजिक मूल्यों की अपेक्षा कम प्रभावशाली रहे हैं । इसका मुख्य कारण मानव जीवन की आवश्यकताओं और भौतिकवाद का प्रभाव है । प्रत्येक स्त्री-पुरूष अपने जीवन को सुखी बनाना चाहता है, जिसका आधार धन का अधिक उत्पादन है । ये लोग धन का उत्पादन असामाजिक कार्यों को करके करते हैं । इन कार्यों में कच्ची शराब बनाना, बेचना, राहजनी करना, सेंध लगाना, चोरी करना, बाल कटी करना, डकैतों को सूचना देना आदि प्रसिद्ध हैं । इन कार्यों का मुख्य कारण इनकी घूमने फिरने की प्रवृत्ति

मात्र है । ये लोग पुलिस से बचने के लिए अपने निवास स्थान में परिवर्तन लाते रहते हैं । अत: आर्थिक स्रोतों में स्थिरता नहीं आ पाती है । इसीलिये ये लोग अपनी आवश्यकता पूर्ति की योजनाओं को सकारात्मक रूप देने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं । यही असमर्थता अन्य लोगों के धन को छीन लेने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है ।

इसी तरह से नट-कबूतरों का मध्यमानों मे सार्थक अन्तर राजनैतिक मूल्य । 3.07 । में भी स्पष्ट हुआ है । इसका मुख्य कारण भारतीय समाज में पुरूष वर्ग का प्रभावशाली होना है । इस भाव ने पुरूष वर्ग मे प्रशासन करने की क्षमता के कारण अहं भाव का भी विकास कर दिया है । इसी अहं भाव ने उनमें राजनीति क्षेत्र में अभिरूचि को जाग्रत किया है । वे अपने समाज में इसीलिये स्वयं को ताकतवर और प्रभावशाली बनाना चाहते हैं, ताकि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का सुख प्राप्त कर सकें । इनके मध्यमान प्रसरण से स्पष्ट होता है कि ये लोग वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के प्रति जागरूक हैं । शोधकर्ता ने तथ्य संकलन के समय देखा कि वे राजीव गांधी में रूचि रखते हैं, और विचार करते हैं कि वे क्या कर रहे हैं । ये लोग अशिक्षित हैं फिर भी बौद्धिक चातुर्य मे कम नहीं होते हैं । अत: वे राष्ट्र या समाज की सही और गलत नीतियों के प्रति तर्क प्रस्तुत करते हैं । तालिका नं0-5.। से स्पष्ट होता है कि पुरूष समूह मे राजनैतिक मूल्य अपेक्षाकृत स्त्री समूह से अधिक है । शोधकर्ता ने अपने भ्रमण काल मे पाया कि नट-कबूतरा समूह मे पुरूष वर्ग अपने कर्तव्य के प्रति और अधिकारों के प्रति तीव्र आंकाक्षा रखता है, और उसका पालन दैनिक व्यवहार में करता है । स्त्री समूह स्वयं के अधिकारों को समाज के नेताओं के ऊपर छोड़ देती हैं । वे गलत नीतियों और कार्यों का विरोध भी नहीं कर

पाती हैं । अतः नट-कबूतरा जनजाति के पुरूष वर्ग और स्त्री वर्ग मे सार्थक भिन्नता स्पष्ट हुई है ।

4- अन्त मे सौन्दर्यात्मक मूल्य और धार्मिक मूल्य मे भी मध्यमान भिन्नता सार्थक रूप में पाई गई है । इनकी भिन्नता का आधार व्यवसायिक प्रभाव न होकर के परिवार का प्रशिक्षण और आधुनिक परिवेश मात्र है । भारतीय समाजों की यह परम्परा रही है कि लड़कियों को सौन्दर्य मूलक और धार्मिक बनाया जाय । इससे वे अपने परिवार को भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत बनाती हैं और जिसका प्रभाव सम्पूर्ण भारतीय नारी मे देखने को मिलता है । इस प्रकार से परिवार के अन्दरूनी मामलों की वह मालकिन होती है, जबकि बाहय कार्यों का मालिक उसका पति होता है । इस प्रकार के आपसी सहयोग से वे लोग जीवन की गाड़ी को चलाते हैं और वर्तमान समस्याओं का निदान करके विजय प्राप्त करते हैं । साथ ही साथ ये लोग अब आधुनिक तरीके से जीवन यापन करने लगे हैं । वे सुन्दरता का वर्तमान अर्थ सौन्दर्य प्रसाधनों के प्रयोग से लगाते हैं । अपने रहन-सहन को सुन्दर बनाते हैं, स्त्रियों को सुन्दर वेशभूषा मे देखना पसंद करते हैं । वे अपनी सुरूचिपूर्ण आदतों से अन्य व्यक्तियों को प्रभावित भी करते हैं । इस प्रकार से यह स्पष्ट होता है कि यह जनजातीय समूह पुरूष वर्ग और स्त्री वर्ग के मूल्यों मे सार्थक भिन्नता स्थापित करता है ।

तालिका नं0 5.8 : सहरिया जनजाति समूह के स्त्री पुरूष समूहों के मध्यमानों मे अन्तर और उनके "टी" अनुपात की व्याख्या -

सहरिया मूल्य	MD	SE MD	DF	T	INTERPRETATION
सैद्धांतिक	1.58	1.287	199	1.234	NS
आर्थिक	0.31	1.018	199	0.305	NS
सौन्दर्यात्मक	2.18	0.968	199	2.750	S at .01
सामाजिक	0.26	0.726	199	0.358	NS
राजनैतिक	1.69	0.599	199	2.821	S at .01
धार्मिक	0.66	0.238	199	2.773	S at .01

तालिका नं0 5.8 में सहरिया जनजाति के स्त्री-पुरुष समूहों के मध्यमानों में अन्तर को स्पष्ट किया गया है । प्रस्तुत जनजाति के मूल्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि कुछ मूल्यों के मध्य सार्थक भिन्नता है, कुछ मूल्य सार्थक भिन्नता के नजदीक है,और कुछ मूल्यों मे भिन्नता सार्थक रूप से नहीं पाई गई है । सार्थक भिन्नता प्राप्त मूल्य सौन्दर्यात्मक, राजनैतिक और धार्मिक हैं । इसका मुख्य कारण है जनजाति का परिवर्तनशील स्वभाव और व्यवसाय । शोधकर्ता ने इसीलिये इसका ट्रान्जीशनल ट्राइब के रूप में अध्ययन किया है । "क्रुक" । 1975,पृ0-252। महोदय ने बुंदेलखण्ड क्षेत्र में फैली हुई इस जनजाति को व्यवसायिक रूप से अस्थिर माना है । समय-समय पर ये लोग अपने व्यवसाय को बदलते रहते हैं । परिणाम स्वरूप ये आज भी आर्थिक उन्नति नहीं कर पाये हैं ।

1- शोधकर्ता ने तथ्यों के मध्यमान, मानक त्रुटि की संगणना करके, फिर "टी" अनुपात की संगणना की । इसके पश्चात मूल्यों के मध्यमान अन्तर का विश्लेषण और वर्णन किया । इसमें तालिका नं0 5.8 से स्पष्ट होता है कि सार्थक भिन्नता स्थापित करने वाले मूल्य सौन्दर्यात्मक,राजनैतिक और धार्मिक हैं ।

इनका स्पष्ट प्रभाव साहरिया जनजाति में देखने को मिलता है । ये लोग स्वयं को सुन्दर बनाने में, स्वस्थ जीवन यापन में और नैतिक तथा धार्मिक कार्यों का व्यवहार मे पालन करने में विश्वास करते हैं । इस जनजाति मे परिवार का मुखिया पुरुष ही होता है । उसकी आज्ञा ही सदस्यों को माननी होती है । अतः पारवारिक प्रभुत्व ही उनके दैनिक व्यवहार, व्यवसाय परिवर्तन और सामाजिक विकास को निश्चित करता है । स्त्री को परिवार के आंतरिक मामलों का उत्तरदायित्व सम्हालना होता है । वह परिवारीय समस्याओं का समाधान पति के द्वारा मिलकर करती है । इनके अन्दर शक्ति संचय का भाव कूट-कूट कर भरा होता है । ये लोग निडर और संतोषी होते हैं । इसी लिये नये व्यवसाय को उसी रूचि और तत्परता के साथ करते हैं जैसे कि पुराने व्यवसाय को करते हैं ।

इस जनजाति का विश्वास धर्म और सदाचार में भी प्रगट होता है । ये आपसी सम्मान में भी धर्म को । राम-राम, राधाकृष्ण । स्थान देते हैं । इनके धार्मिक प्रभाव को हम अंध विश्वास मान सकते हैं । फिर भी इनकी आस्था, सत्य और ईमानदारी में होती है । ये लोग "ईश्वर से डरते हैं उसकी आराधना पानी मे खड़े होकर और हाथ पर गरम लोहे को रख कर करते हैं । ये लोग स्वाभिमानीऔर अक्खड़ स्वभाव के होते हैं । अपने-अपने भाग्य में विश्वास करते हैं । पुरुष वर्ग दैनिक जीवन में अपने लिये रोजी रोटी कमाने मे लगा रहता है, जबकि स्त्री वर्ग अपने परिवार की कुशलता में । पुरुष वर्ग और स्त्री वर्ग दोनों मे जो अन्तर पाया गया है, उसका मूल कारण उनमें शिक्षा का अभाव मात्र है । शिक्षा के द्वारा इन दोनों ही समूहों को सही दिशा निर्देश देकर सही रास्ते पर लाया जा सकता है ।

II- सार्थक भिन्नता को स्पष्ट करने के पश्चात उन मूल्यों की भिन्नता को स्पष्ट किया जाता है जो भिन्नता के नजदीक है । इनमें सैद्धांतिक मूल्य (1.58) की मध्यमान भिन्नता आती है । इसका मुख्य कारण है, इस जनजाति का वर्तमान के प्रति संशकित रहना । ये लोग व्यवसायिक रूप से अस्थिर है और स्थायी रूप से इनका कोई भी आय का स्रोत नहीं है । अतः ये जो उचित पाते हैं, करते हैं । उत्तर प्रदेश सरकार (आर्डिनेन्स 18, 1987) ने इनके कार्य को जंगली वस्तुओं को एकत्रित करना, खेती करना और कुछ असामाजिक कार्यों में लिप्त रहना आदि बताया है । इससे यह स्पष्ट होता है, कि इनकी आवश्यकता जिस तरह से पूरी होती है, वे करना प्रारम्भ कर लेते हैं । साथ ही भविष्य की योजना या तो बनाते नहीं हैं, याफिर चिन्तित नहीं रहते हैं ।

III- अन्त मे शोधकर्ता आर्थिक मूल्यों का वर्णन करता है, जिनमे साहरिया जनजाति के स्त्री-पुरुषों के मध्य सार्थक भिन्नता नहीं पाई गई है । इसका मुख्य कारण उनकी सामाजिक मान्यतायें और बनावट है । इस जनजाति की उत्पत्ति जंगल से मानी जाती है । ये लोग वर्तमान मानव समाज से दूर जंगलों में रहकर जीवन यापन करते हैं । इनके रीति-रिवाज, रहन-सहन, सामाजिक मान्यतायें अपने तरह की है । प्रत्येक समस्या का समाधान दोनों ही समूह मिलकर करते हैं । वे सामाजिक विरासत को उसी प्रकार से मानते है, जैसे कि वह चली आ रही है । उसमें परिवर्तन लाना अपना अपमान मानते हैं । अतः स्त्री और पुरुष समूह के मध्यमानों के बीच सार्थक भिन्नता नहीं हैं । इसके साथ ही आर्थिक मूल्य में भिन्नता न होने का कारण व्यवसाय की अस्थिरता मात्र है । जब किसी नये व्यवसाय को प्रारम्भ किया जाता है तो स्त्री-पुरुष दोनों ही

मिलकर कार्य करते हैं, रूचि लेते है और पूर्व व्यवसाय की चिन्ता नहीं करते हैं । यदि ये लोग पूर्व व्यवसाय और नवीन व्यवसाय की तुलना करके देखें तो भी व्यसाय में स्थिरता आ सकती है । ये लोग ऐसा करना पसंद नहीं करते हैं अत: जो कर रहे हैं वही उत्तम है वाली नीति में विश्वास प्रगट करते हैं ।

इस प्रकार से यह स्पष्ट होता है कि साहरिया जनजाति के पुरूष-स्त्री समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया जाता है । तालिका नं0- 5.8 से स्पष्ट होता है कि सैद्धांतिक, सौन्दर्यात्मक और राजनैतिक मूल्य ही मानव जीवन के लिये सबसे उपयोगी हैं । इन तीनों मूल्यों के प्राप्त होते ही अन्य मूल्य स्वत: ही प्राप्त हो जाते हैं । सैद्धांतिक मूल्य से व्यक्ति में सत्य की खोज और जीवन की आत्म निर्भरता आती है, सौन्दर्यात्मक मूल्य से मानवीय गुणों का विकास और सुन्दरता आती है, और राजनैतिक मूल्य से शक्ति संचय होती है । जो सत्य है, सुन्दर है और शक्तिशाली है, वही सब कुछ है । इसी मान्यता के वशीभूत होकर भारत राष्ट्र के मूल्य सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् का विकास हुआ है ।

तालिका नं0- 5.9 : खंगार जनजाति समूह के स्त्री-पुरूष समूहों के मध्यमानों में अन्तर और उनके "टी" अनुपात की व्याख्या -

मूल्य	MD	SE MD	DF	T	INTERPRETATION
सैद्धांतिक	0.08	3.191	199	0.025	NS
आर्थिक	1.25	2.788	199	0.448	NS
सौन्दर्यात्मक	0.56	2.174	199	0.258	NS
सामाजिक	5.67	1.940	199	2.923	S at .01 level
राजनैतिक	1.86	2.334	199	0.796	NS
धार्मिक	0.80	0.978	199	0.818	NS

तालिका नं0 5.9 में खंगार जनजाति के स्त्री-पुरूष समूहों के मूल्यों के बीच मध्यमानों में अन्तर स्पष्ट किया गया है । शोधकर्ता ने तथ्य संकलन के पश्चात मध्यमान, मानक त्रुटि की गणना की, फिर "टी" अनुपात का संगणन किया । इसके पश्चात मूल्यों के मध्यमानों के अन्तर का विश्लेषण और वर्णन किया है ।

खंगार जनजाति मूल्य तालिका 5.9 से स्पष्ट होता है कि इस जनजाति के स्त्री पुरूष समूहों के मध्यमान में सार्थक अन्तर नहीं हैं । सैद्धांतिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, राजनैतिक मूल्य और धार्मिक मूल्य आदि में सार्थक भिन्नता स्पष्ट नहीं हुई है । इसके अलावा सामाजिक मूल्य में (5.67) सार्थक भिन्नता प्रगट हुई है । स्त्री और पुरूषों के मध्यमान अन्तर को देखें तो पता चलता है कि उच्चतम अन्तर सामाजिक मूल्य (5.67) में, और निम्नतम अन्तर सैद्धातिक मूल्य (0.08) में आया है ।

सामाजिक मूल्य में सार्थक भिन्नता उत्पन्न होने का मुख्य कारण सामाजिक या राष्ट्रीय चेतना का जाग्रत होना मात्र है । "रसैल व हीरालाल (1916) ने इस जाति की उत्पत्ति "राज" परिवार से बतलाई है । अतः राज परिवार को आज दलित वर्ग में समायोजित करके उनके सभी जीवन मूल्यों को परिवर्तित कर दिया गया है । इन परिवर्तित मूल्यों को स्त्री वर्ग ने आत्मसात कर लिया, लेकिन पुरूष वर्ग आत्मसात न कर सका । परिणाम स्वरूप, उनका स्वभाव, व्यक्तित्व गुण और विचारधारा ने विशिष्टता धारण कर ली है । चूंकि स्त्री समूह का स्वभाव विनम्र, व्यक्तित्व सजीला, और दया से ओतप्रोत होता है । जो उनको वर्तमान परिस्थितियों के साथ समझौता करने मे सहायता देता है । इसीलिये इन्होने अपनी वर्तमान सामाजिक स्थिति

को अनुसूचित निम्न वर्गीय के रूप में ग्रहण कर लिया है । इसके विपरीत पुरुष वर्ग में अभी भी अपना राजसी खून उबाल लेता रहता है । ये लोग स्वभाव से अक्खड़ जिद्दी और स्वाभिमानी होते हैं । ये अपने समाज को और उसकी मान्यताओं को जीवित रखने के लिये अपने नाम के बाद " सिंह " शब्द का प्रयोग करते हैं । इनके परिवार के सदस्य प्रतिदिन नहाकर कपड़े उतार कर भोजन करते हैं । सिर्फ ब्राहमणों के यहाँ पर ही ये लोग कच्चा खाना खाते हैं अन्य जाति वालों के यहाँ नहीं । शोधकर्ता ने इनके परिवारों मे जाकर घरों की साफ-सुथरी हालत को देखा है । इनकी तहजीब और व्यवहार हमे प्रभावित किये बिना नहीं रहता है । खंगार जनजाति के स्त्री-पुरूष समूहों के बीच मध्यमान अन्तर सैद्धांतिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, राजनैतिक और धार्मिक मूल्यों के बीच नहीं आया है । इसका मुख्य कारण है उनकी आर्थिक सम्पन्नता और राजनैतिक निपुणता । ये लोग खेती, किरायेदारी, मजदूरी, चौकीदारी और चोरी आदि कार्यों को सहर्ष ग्रहण कर लेते हैं । अत: इनमें बेरोजगारी देखने को नहीं मिलती है । परिणामें स्वरूप ये लोग अपनी दैनिक आवश्यकता पूर्ति आसानी से करते हैं । इनके परिवार स्थायी मकानों मे निवास करते हैं, उनके पास रेडियो, टी0वी0 और आधुनिक मनोरंजन के साधन भी है । ये लोग अपनी जातीय विशेषता को अक्षुण बनाये रखने के लिये अन्य जाति के स्त्री-पुरूषों को अपने समाज का सदस्य नहीं बनाते हैं । ॥रसल व हीरालाल,1916,पृ0 443 ॥ ।

" टी " अनुपात विश्लेषण तालिका नं0 5.9 को देखने से स्पष्ट होता है स्त्री-पुरूषों के मध्यमानों के बीच भिन्नता राजनैतिक मूल्य में ॥ 1.86 ॥ है । इससे स्पष्ट होता है कि दोनों ही शक्ति संचय के प्रति जागरूक और चैतन्य है । इसका प्रमुख कारण उनमें वंशानुक्रमीय विशेषताओं का

होना माना जा सकता है । ये वंश से राजपूत रहे हैं । परिस्थितिवश और द्वेष भाव के कारण इनको निम्न स्तरीय बना दिया गया है । यदि इनकी व्यक्तित्व विशेषताओं का अध्ययन किया जाय तो इनमें वीरोचित गुणों की अधिकता पाई जायेगी । आज भी ये लोग अपने समाज की समस्याओं का निपटारा करने के लिये "कमेटी" का गठन करते हैं,और सभी उसके निर्णय का सम्मान करते हैं । इनके मुखिया को वही आदर दिया जाता है, जो भूतकाल में ये लोग अपने राजा को प्रदान करते थे । अत: इस जनजाति के स्त्री-पुरुषों के मूल्यों में भिन्नता स्पष्ट नहीं होती है ।

शैक्षिक अभिवृत्ति -

शोधकर्ता ने मूल्यों के तथ्यों के संकलन के साथ ही साथ शैक्षिक अभिवृत्ति का तथ्य संकलन किया । इसमे नट-कबूतरा, सहरिया और खंगार जनजाति पर " शैक्षिक अभिवृत्ति" की प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है । इन तथ्यों का मध्यमान, मानक त्रुटि, को ज्ञात किया गया, और फिर "टी" अनुपात के द्वारा तीनों जनजाति को स्त्री-पुरुषों के बीच शैक्षिक अभिवृत्ति भिन्नता का आंकलन किया गया, ताकि शैक्षिक अभिवृत्ति में भिन्नता का पता लग सके ।

तालिका नं0 5.10 : नट-कबूतरा,सहरिया,खंगार जनजातियों के स्त्री-पुरुषों के शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्यमानों में अन्तर और उनके "टी" अनुपात की व्याख्या -

जनजाति	MD	SE MD	DF	T	INTERPRETATION
नट- कबूतरा	2.26	1.496	199	1.510	NS
सहरिया	3.67	1.674	199	2.192	S at .05 level
खंगार	2.77	1.611	199	[illegible]	[illegible]

'T' VALUE OF ED. ATTITUDE
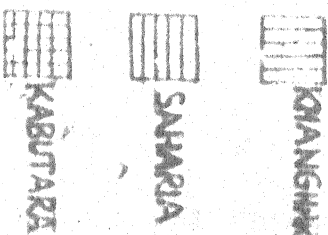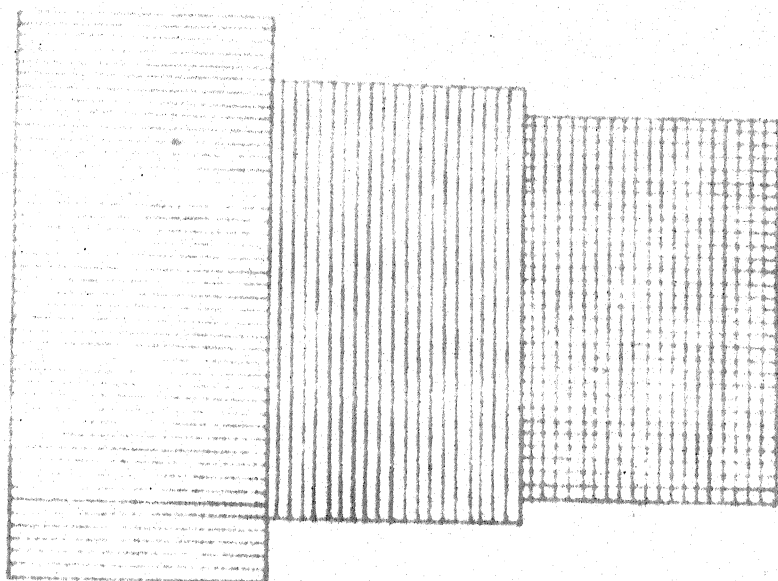
तालिका नं0 5.10 में जनजाति समूहों के स्त्री-पुरूषों के शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्यमानों के अन्तर और उनके "टी" अनुपात को प्रगट किया गया है । प्रस्तुत जातियों में उच्चतम शैक्षिक अभिवृत्ति अन्तर सहरियाजनजाति (3.67) में पाई गई है । अन्य जनजातियों में शैक्षिक भिन्नता सहरिया जनजाति से कम रही है । सबसे कम अन्तर नट-कबूतरा जनजाति में रहा है । सांख्यिकी दृष्टिकोण से यदि हम अनुमान लगायें तो सहरिया जनजाति ने शैक्षिक अभिवृत्ति मे स्त्री-पुरूष मध्यमान में पूर्ण अन्तर पाया है, जबकि खंगार और नट-कबूतरा जनजाति सार्थक भिन्नता के नजदीक रहे हैं ।

शोधकर्ता ने प्रस्तुत जनजातियों पर शैक्षिक अभिवृत्ति मापनी पर तथ्य एकत्रित किये और मध्यमान, मानक त्रुटि आदि ज्ञात की । इसके पश्चात "टी" अनुपात का आंकलन किया, ताकि सार्थक भिन्नता ज्ञात की जा सके । इसके पश्चात प्रत्येक जनजाति की शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्यमान अन्तर का वर्णन व विश्लेषण किया । तालिका (5.10) से प्रतीत होता है कि स्त्री-पुरूष शैक्षिक अभिवृत्ति मे सार्थक भिन्नता है भी और नहीं भी । अत: हम भिन्नता का तथ्य विश्लेषण निम्न प्रकार से प्रस्तुत करते हैं -

1- सहरिया जनजाति के स्त्री-पुरूषों में शैक्षिक अभिवृत्ति में पूर्ण सार्थक भिन्नता पाई गई है । तालिका नं0 (5.4) से स्पष्ट होता है कि स्त्री मध्यमान (130.93) और पुरूष मध्यमान (127.26) है । इसमें स्त्रियों के समूह को प्रधानता प्राप्त होती है । एक परिवार का आन्तरिक प्रशासन स्त्री के निदेशन में ही चलता है, और पुरूष बाहय कार्यों में लगा रहता है । लेकिन जब दोनों ही क्षेत्रों मे स्त्रियों का निर्णय या राय प्रचलित होती हो तो उस मानव समाज को स्त्री प्रधान समाज माना जाता है । सहरिया जनजाति में

भी हो सकती है । क्योंकि एक पत्नी के रहते द्वितीय स्त्री या पत्नी को ये लोग अपने परिवार में नहीं ला सकते हैं ।कुक,1975। ।

तालिका । 5.10 । से स्पष्ट होता है कि स्त्री-पुरूष मध्यमानों मे सार्थक भिन्नता । 3.67 । आई है । इसका प्रमुख कारण "परिवर्तनशील व्यवसाय" भी हो सकता है । पुरूष वर्ग को आर्थिक आवश्यकताओं को पूर्ति के लिये, परिवार का भरण पोषण के लिये, और अपनी जनजाति की सुरक्षा के लिये विभिन्न व्यवसायों को खोज में लगा रहना होता है । वे भारतीय मौसम के अनुसार अपने व्यवसायों में परिवर्तन करते रहते हैं, अतः उनको अपने बच्चों के पालन-पोषण और विकास के लिये सोचने का अवसर ही नहीं मिल पाता है । इसके विपरीत जो स्त्री वर्ग है उसको परिवार के आन्तरिक मामलों को बच्चों कीदेखभाल, समाज मे परिवार की प्रतिष्ठा और बच्चों मे जनजातीय विशेषताओं आदि का विकास करना होता है । इनमें आधुनिक समाज के समान बननेकी लालसा स्पष्ट रूप से झलकती है । वे अपनी शैक्षिक हीनता की भावना को बड़े ही दुःख के साथ प्रगट करती हैं । उनके बच्चों मे पारिवारिक शिक्षा, व्यवसाय कुशलता, जनजातीय आचरण और समाज प्रेम स्पष्ट रूप से झलकता रहता है । स्त्रियाँ दशहरा मेला या अन्य किसी नुमायश मे बच्चों के साथ जाती है, तो अपने परिवार के लिये वे आधुनिक वस्तुओं को लेकर आती हैं । इन सबसे स्पष्ट होता है कि स्त्रियों में शैक्षिक जागरूकता, चैतन्यता पुरूष वर्ग की अपेक्षा अधिक तीव्र है ।

अब प्रश्न उठता है कि शिक्षा की कमी क्यों है ? इसमें सबसे प्रमुख कारण गरीबी, धनाभाव, व्यवसाय अस्थिरिता और सरकारी प्रशासन की शिक्षा नीति का दोषपूर्ण होना आदि सम्मिलित है ।

उत्तर प्रदेश सरकार का हरिजन, जनजाति विभाग इनके शैक्षिक स्तर को ऊँचा उठाने हेतु कड़े कदम उठा रहा है, लेकिन ये कार्य सिर्फ आफिस और फाइलों तक ही सीमित रह जाते हैं । इनका लाभ जनजाति को नहीं मिल पाता है । सर्वेक्षण में शोधकर्ता ने देखा कि बुन्देलखण्ड के धनी मानी लोग इनको ऊँचा नहीं उठने देना चाहते हैं । वे इनको सदैव मजदूर और कृषि कार्य में सहायक बनाये रखना चाहते हैं । सरकार ने सहरिया जनजाति हेतु "तालबेहट" नामक कस्बे में एक शिक्षा स्कूल खोला है । आज उसमें एक भी सहरिया बालक या बालिका पढ़ने नहीं जाता है । इसका कारण पता लगाया तो पाया कि उस इमारत पर वहाँ के प्रभावशाली व्यक्तियों का कब्जा हो चुका है, और जैसा वे चाहते हैं, उसका प्रयोग करते हैं । अध्यापकों को वेतन स्वत: ही मिल जाता है । साथ ही वे लोग इतने गरीब हैं कि इनका बालक बाल्यावस्था से ही अपने परिवार के कर्जे को उतारने के लिये किसी के यहाँ पर धरोहर के रूप मे कार्य करने लगता है । अत: शिक्षा प्रशासन, समानता का अभाव और गरीबी आदि इनके शैक्षिक विकास में बाधायें हैं ।

उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट होता है कि पुरूष वर्ग तो धन कमाने में व्यस्त रहता है और उसे अन्य कार्यों की ओर सोचने का मौका ही नहीं मिल पाता है । अब सिर्फ स्त्री वर्ग बचा है जो गृह कार्य के अलावा अपने बच्चों के विकास के बारे मे सोच सकता है । अत: इनकी स्त्रियाँ ही बाजार करती हैं, मेला जाती है, और घर की आवश्यकता का सामान खरीद कर लाती हैं । वे अपनी मानसिकता का प्रयोग बच्चों के उच्च विकास की ओर कर रही हैं, तो पाती हैं कि शिक्षा के द्वारा ही ये विकास सम्भव बन सकता है । फिर भी ये विचार उनकी मानसिकता के घेरे से निकल कर व्यवहार में

नहीं आ पाता है, क्योंकि वर्तमान की समस्यायें, धनाभाव, व्यवसायिक अस्थिरता, प्रभावशाली व्यक्तियों की शोषण नीति, उनके विकास को अवरूद्धता प्रदान करती रहती है । अत: स्पष्ट होता है कि स्त्री समूह अपनी शैक्षिक चेतनता और जागरूकता के लिये पुरूष वर्ग की अपेक्षा अधिक सफल है ।

ii- खंगार जनजाति मे स्त्री-पुरूषों के बीच शैक्षिक अभिवृत्ति में सार्थक भिन्नता नहीं आई है । यदि हम साँख्यिकी के .05 स्तर पर सार्थकता ज्ञात करते हैं तो उसका स्तर 1.97 होता है । प्राप्त "टी" अनुपात 1.719 है । यह सिर्फ सार्थकता स्तर से0 0.25 कम है । इससे स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों में अन्तर तो हैं, लेकिन कम है। दोनों समूहों के मध्यमान तालिका से स्पष्ट होता है कि पुरूष समूह का समाज मे अधिक प्रभाव पाया जाता है, अपेक्षाकृत स्त्री समूह के । जबकि साहरिया समाज मे स्थिति विपरीत है । अत: दोनों ही समूहों में शिक्षा के प्रति जाग्रति मे भिन्नता नहीं के बराबर है । इसका मुख्य कारण इनके वंशानुक्रम और ऐतिहासिक प्रभाव मात्र प्रतीत होता है । इनके रक्त मे निडरता, आत्म संयम, उदारता, और विकास की तीव्र लालसा भरी हुई प्रतीत होती है । पुरूष वर्ग का प्रभाव परिवार के बाह्य क्षेत्र और आन्तरिक क्षेत्र दोनों मे ही छाया रहता है । ये लोग मिलकर समस्या समाधान करते हैं, लेकिन अन्तिम निर्णय पुरूष का ही लागू होता है । पुरूष वर्ग इस बात को मानसिक धरातल पर बैठा चुका है कि आज की उन्नति शिक्षा के बिना सम्भव नहीं हैं । अत: बच्चों मे शिक्षा का प्रसार और विकास के लिये अवसर प्रदान करना माता-पिता का कर्तव्य है, न कि सरकार का ।

शोधकर्ता जब तथ्य संकलन गाँवों में जाकर कर रहा था तो उसने पाया कि इनमें शिक्षा के प्रति जागरण है । वर्तमान में इस जनजाति में

शिक्षा का प्रतिशत 15 % है । उच्च शिक्षा का अभाव है । कोई भी सदस्य कक्षा 5 से अधिक शिक्षित नहीं मिला । इस समूह के स्त्री-पुरुषों को देखकर ऐसा नहीं लगता कि ये अशिक्षित होगें । ये लोग सबसे अधिक चिन्तित अपने सामाजिक स्तर के प्रति हैं जिसने इनको अनुसूचित जाति का बना दिया है । स्त्री समुदाय का मुख्य कार्य बच्चों का पालन पोषण करना, गृह कार्य मे दक्ष बनाना और परिवार की जिम्मेदारी को अच्छी तरह से निभाना है । वे समय-समय पर अपने बच्चों और अन्य समाज के बच्चों की तुलना करतीं हैं । वे स्वयं के गृह स्वामी से यह प्रश्न करतीं हैं कि हम और हमारे बच्चों की आवश्यकता पूर्ति क्यों नहीं हो पाती है ? इसका उत्तर वे स्वयं खोजती है और सिर्फ शिक्षा का अभाव ही पाती हैं । अत: वे अपना पेट काटकर भी बच्चों को स्कूल भेजना चाहती हैं । इससे यह स्पष्ट होता है कि खंगार जनजाति की स्त्रियाँ बच्चों को शिक्षित बनाने के लिये स्वयं को कष्ट देने को तैयार हैं । यही उनकी प्रेरणा बाह्य क्षेत्र में फलीभूत होगी, जो समय का इंतजार कर रही है ।

खंगार जनजाति के पुरुष वर्ग में और स्त्री वर्ग में जो थोड़ी सी भिन्नता शिक्षा के बारे में व्याप्त है, उसका कारण व्यापक और संकुचित दृष्टिकोण का प्रभाव मात्र है । पुरुषवर्ग चाहकर भी परिस्थितिवश नहीं कर पाता है । वर्तमान स्थिति में वह कृषि कार्य में एक नौकर, मजदूर की तरह से रात दिन लगा रहता है, तब जाकर परिवार का सादा भरण-पोषण कर पाता है । रात्रि को भोजन के समय वह परिवार की शिक्षा की बात पत्नी से करता है और सुबह को क्रियान्वित किये बिना ही खेतों पर चला जाता है । यह शिक्षा की लड़ाई वह अकेली मानसिकता के आधार पर लड़ता है और प्रमुखता रोजी-रोटी को दे देता है ।

इस कारण से वह शिक्षा की अवधारणा को जान-बूझकर मन मे दमित कर लेता है । साथ ही साथ वह अपनी पत्नी की भावना को भी दबा देता है । इस प्रकार से उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति की धारणा में सार्थक अन्तर उत्पन्न नहीं होता है ।

III- प्रस्तुत शोधकार्य का तृतीय जनजाति समूह नट-कबूतरा है । इस जनजाति के स्त्री-पुरूष शैक्षिक अभिवृत्ति में समानता रखते हैं । तालिका नं0 5.10 से स्पष्ट होता है कि स्त्री-पुरूष मध्यमान अन्तर । 2.26 । है जो सार्थक अंतर से काफी कम है । अत: दोनों की मानसिकता में शिक्षा के प्रति लगाव उत्सुकता और जाग्रति है । मानवी समाज की "कल्चरल लैग " से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति का मानसिक विचार धीरे-धीरे व्यवहारिक बनता है । आज की सरकारी घोषणा के पश्चात भी इनमें शैक्षिक अवधारणा का विकास व्यवहारिक रूप से नहीं हो पाया है, जो भारतीय समाज पर एम धब्बा है ।

मूल्यों की तालिका नं0 5.1 से स्पष्ट होता है कि स्त्री-पुरूषों के मूल्यों के मध्यमान में अन्तर । 6.61 । है जबकि शैक्षिक अभिवृत्ति तालिका में मध्यमान अन्तर । 2.26 । है । इससे स्पष्ट होता है कि शैक्षिक अभिवृत्ति के संदर्भ में स्त्री-पुरूष ।कबूतरा समूह। में सार्थक भिन्नता नहीं होता है । इसका प्रमुख कारण दोनों के आक्रामक और अपराधिक स्वभाव या वृतित्तयों का होना है । झाँसी जनगणना रिपोर्ट । 1971 । से स्पष्ट होता है कि ये लोग स्थायी व्यवसायों को न अपना कर अपराधिक कार्य, शराब बनाना, बेचना, राहजनी करना, सेंध लगाना, चोरी करना, बालकटी करना डकैतों के लिये सूचना देना आदि करते हैं । ये लोग जब कोई बड़ा अपराध कार्य सम्पन्न कर लेते हैं, तो अपने निवास स्थान को एकाएक त्याग देते हैं ।

इसी प्रकार से इनकी स्त्रियों की क्रियायें भी असामाजिक और पति को सहयोग करने वाली होती है । ये लोग आनंद की जिन्दगी व्यतीत करना पसंद करते हैं, और मांस मदिरा का सेवन प्रतिदिन करते हैं । इनका रहन-सहन विचारधार आदि आधुनिक समाज के नजदीक लाती है । ये स्वयं में परिवर्तन चाहते हैं, ताकि ये स्थायी निवास और व्यवसाय बना सकें ।

शोधकर्ता ने इनकी विचारधारा को अधिक गहराई से समझा है जिसमे उसे वंश परम्परागत रूढ़ि ग्रस्तता अधिक प्रतीत हुई है । वे अपने बच्चों के हितों को शिक्षा के द्वारा सुरक्षित करना चाहते हैं,लेकिन उनका घुमक्कड़पन बच्चों को शिक्षा से विरत कर देता है । इससे उनका धन,समय और शक्ति का ह्रास होता है । साथ ही अन्य परिवार वाले इससे सीख लेते हैं और अपने बच्चों को शिक्षा नहीं दिलवाते हैं । एक अन्य तथ्य भी बच्चों को विद्यालय न भेजने के संदर्भ मे स्पष्ट होता कि बच्चों के द्वारा इनके डेरों का और कार्यों की सूचना पुलिस को मिल जाना । जब कोई बड़ा अपराध होता है तो ये लोग अपने निवास स्थान में परिवर्तन कर लेतें है,ताकि पुलिस इन पर शक न कर सके । फिर पुलिस इनके बच्चों से पूँछताँछ करके कुछ सुराग लगा लेती है । बच्चे अपनी सत्यता के आधार पर सब कुछ बता देते हैं । अतः ये लोग स्वयं को शिक्षा से दूर ही रखते हैं ।

वार्तालाप के द्वारा शिक्षा के प्रति चाव, लालसा, उत्साह आदि प्रतीत होता है । इसकी स्पष्ट झलक उनके व्यवहार, रहन-सहन और परिवार मे मौजूद सामान आदि से मिलती है । इनमें कुछ कबूतरनियाँ बहुत अच्छा गातीं और नाचती है । वे चाहती है "सही शिक्षा और निर्देशन" ताकि उनकी योग्यता का विकास हो सके । अतः स्त्री-पुरुष दोनों ही समूहों मे शिक्षा

<u>सह सम्बन्धों का विश्लेषण एवं व्याख्या</u> -

जब शोधकर्ता को स्वतंत्र परिवर्ती और परतंत्र परिवर्ती के बीच सम्बन्ध जानना होता है तो वह सह-सम्बन्ध की गणना करता है। सह-सम्बन्ध युग्मित मापों के सह परिवर्तन ।कनकोमिटैन्टवैरियेसन । को निर्दिष्ट करता है। क्रियात्मक प्रयोगों मे हमको जो प्रदत्त प्राप्त होते हैं, वे युग्मित प्राप्तांक । पियर्ड स्कोर । होते हैं। ये युग्मित प्राप्तांक उन परिवर्तनों का निरुपण करते हैं, जो स्वतंत्र परिवर्ती के कारण परतंत्र परिवर्ती में उत्पन्न हो जाते हैं। जितनी बार स्वतंत्र परिवर्ती के मूल्य में परिवर्तन किया जाता है, उतनी ही बार परतंत्र परिवर्ती के मूल्य में भी परिवर्तन आता है। इस प्रकार के परिवर्तन शिक्षा क्षेत्र में, मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में और अन्य समाज मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों में देखने को मिलते हैं। अतः दो परिवर्तियों के बीच सम्बन्ध को जानने के लिये सह-सम्बन्ध गुणांक के द्वारा सम्बन्ध की मात्रा को ज्ञात करते हैं। गिलफोर्ड, 1956। सह-सम्बन्ध गुणांक वह अकेली संख्या है जो यह बताती है कि दो वस्तुयें किस सीमा तक एक दूसरे से सह-सम्बन्धित हैं, तथा एक के परिवर्तन दूसरे के परिवर्तनों को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं।

" जब व्यक्ति या वस्तुयें औसत से अधिक या औसत से कम एक दिशा में हों और साथ ही साथ यह दूसरी दिशा में भी औसत, औसत से कम या औसत से अधिक हों, तो यह प्रवृत्ति सह-सम्बन्ध कहलाती है" ।विलोमर्स और लिंडक्यस्ट, 1950। ।अतः सह-सम्बन्ध गुणांक का प्रयोग निम्नलिखित दशाओं में होता है -

1- जब दो या अधिक गुणों, क्षमताओं या विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन करना होता है,

2- शैक्षिक मार्गप्रदर्शन में इसका उपयोग है ।

3- सह-सम्बन्ध व्यक्ति को उनके व्यवहार के सम्बन्ध मे पूर्वानुमान किया जा सकता है, और उनके व्यवसायिक मार्ग प्रदर्शन में सहायक होता है ।

4- परीक्षणों की विश्वसनीयता निश्चित करने मे इसकी सहायता ली जाती है ।

5- परीक्षण वैधता में सह-सम्बन्ध गुणांक का महत्व है । नव-निर्मित परीक्षण के प्राप्ताकों एवं प्रमाणीकृत परीक्षण के प्राप्ताकों के बीच सह-सम्बन्ध गुणांक देखा जाता है ।

6- तत्व विश्लेषण करते समय सह-सम्बन्ध मैट्रिक्स बनाना होता है, जिसके लिये सह-सम्बन्ध गुणांक की आवश्यकता होती है ।

सह-सम्बन्ध की व्याख्या करने के उपरान्त शोधकर्ता प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त जनजातियों के मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य सह-सम्बन्ध गुणांक का विश्लेषण एवं व्याख्या प्रस्तुत करता है, ताकि जनजातियों के मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति के साथ सार्थक सम्बन्ध प्रगट हो सके ।

<u>मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति</u> -

शोध प्रयुक्त प्रत्येक जनजाति का शैक्षिक अभिवृत्ति के साथ सह-सम्बन्ध आंकलन करके विश्लेषित करना और व्याख्या करना आदि को निम्न रूप मे प्रगट किया जाता है ।

तालिका नं० 5.11 : नट-कबूतरा, सहरिया, कंजर जनजातियों के मूल्यों और उनके शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सह-सम्बन्ध गुणांक का विश्लेषण एवं व्याख्या -

जनजातियाँ मूल्य	नट-कबूतरा	साहरिया	कंगार
सैद्धांतिक/शैक्षिक अभिवृत्ति	.32	.38	.52
आर्थिक/ शैक्षिक अभिवृत्ति	.23	.42	.61
सौन्दर्यात्मक/शै०अभि०	.26	.27	.45
सामाजिक/शैक्षिक अभिवृत्ति	.24	.34	.51
राजनैतिक/शैक्षिक अभिवृत्ति	.29	.31	.48
धार्मिक/शैक्षिक अभिवृत्ति	.28	.25	.47

अतः सह-सम्बन्धों का विश्लेषण एवं व्याख्या को अधिक स्पष्ट करने के लिये सह-सम्बन्ध की व्याख्या करना आवश्यक हो जाता है। शोधकर्ता ने सह-सम्बन्ध की व्याख्या का आधार "गिल्फर्ड" । 1958 । के वर्गीकरण को मानकर किया है। इसको अधिक स्पष्ट करने के लिये हम 0.21-0.40 तक निम्न. 0.41-0.60 तक साधारण, और 0.61-0.99 उच्च सह-सम्बन्ध के रूप में व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। इसी को आधार मानकर " मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति" परिवर्तियों में सह-सम्बन्ध का विश्लेषण और व्याख्या प्रस्तुत की जाती है।

1- <u>सैद्धांतिक मूल्य एवं शैक्षिक अभिवृत्ति</u> -

तालिका नं0 5.11 को देखने से स्पष्ट होता है कि नट-कबूतरा साहरिया, कंगार जनजाति की सैद्धांतिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति का सह-सम्बन्ध सकारात्मक है। लेकिन उनके स्तर में अन्तर है। नट-कबूतरा और साहरिया का सकारात्मक सह-सम्बन्ध निम्न स्तरीय प्रगट हुआ है और कंगार

जनजाति का सह-सम्बन्ध साधारण प्रगट हुआ है । इससे स्पष्ट होता है कि कंगार लोग शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक एवं चैतन्य हैं ।

व्याख्या-

नट-कबूतरा, सहरिया और कंगार आदि जनजातियों का विकास का आधार समान ही है । इनके व्यक्तित्व गठन सैद्धान्तिक मूल्य से अत्यधिक प्रभावित रहा है । ये लोग जीवन मे और वर्तमान में सत्य की खोज में हमेशा लगे रहते हैं । ये लोग अपनी पूरी शक्ति और क्षमता का प्रयोग आदि ज्ञान को प्राप्त करने मे करते रहते हैं । इस तरह से ज्ञान का भाव आन्तिरक रूप से मूल्यों के समरूप विकसित होता रहता है, जो क्षणिक और बनावटी मूल्यों को स्थापित नहीं होने देता है । शोधकर्ता ने यह जानकारी तथ्यों के एकत्रीकरण के समय प्राप्त की ।

इस तथ्य का मुख्य कारण जनजातियों का सैद्धांतिकता में विश्वास करना मात्र ही नहीं है, बल्कि वे जो कहते हैं वही करते भी हैं । ये लोग अपनी शक्ति और तर्क पर विश्वास करते हैं । ये अपनी वाक् पटुता से दोस्त और दुश्मन में फर्क शीघ्र स्थापित कर लेते हैं ताकि आसानी से धोखा न खा सकें । ये लोग अपने आत्म ज्ञान के बल पर ही आत्मकेन्द्रित भाव से निकल कर समाज के केन्द्रित भाव को मानते हैं, जो मानव मात्र के लिये लाभदायक होता है । अतः "ज्ञान" शिक्षा का ही पर्याय मात्र है, जिससे नट-कबूतरा और सहरिया जनजाति के सैद्धांतिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति में धनात्मक निम्न स्तरीय सह सम्बन्ध प्रगट हुआ है ।

"कंगार" जनजाति के सैद्धांतिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य (सह-सम्बन्ध=.52) साधारण सह-सम्बन्ध रहा है ।

इससे स्पष्ट होता है कि धनात्मक सामान्य सह-सम्बन्ध दोनों परिवर्तियों के सम्बन्धों की गहनता को प्रगट करते हैं । सम्बन्धो की इस सार्थकता का कारण वर्तमान के सत्य और अन्तिम सत्य को एक ही समझकर जीवन यापन करना मात्र है । इस जनजाति का सम्बन्ध आज आधुनिक समाज, पर्यावरण और व्यवसाय स्थिरता के साथ अधिक हो चुका है , जिससे उनके मानसिक विचार में परिवर्तन आया है । इसका प्रभाव उनके समाज पर, जाति पर भी पड़ता प्रतीत होता है । ये लोग फिर भी अपनी नीतियों पर ही चलते हैं, अन्य समाजों के सिद्धांतों और नियमों को ग्रहण नहीं करते हैं । ये अपने समाज, परिवार और कार्य धर्म की रक्षा-सुरक्षा पूर्ण रूप से करते हैं, और उसमें भी किसी भी प्रकार का नकारात्मक विचलन पसंद नहीं करते हैं । इसी-लिये ये लोग उपयुक्त और सही ज्ञान का चुनाव वर्तमान की आवश्यकता पूर्ति हेतु करते हैं, और उसे जीवन का आधार बनाते हैं । इसी आधार पर खंगार जनजाति का व्यवहार अन्य जनजातियों से भिन्नता लिये हुये हैं । इसी को हम प्रगति या शैक्षिक अभिवृत्ति जागरूकता, चेतनता और उत्साह आदि मे भी प्रगट कर सकते हैं ।

उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट होता कि तीनो ही जनजातियों के सैद्धान्तिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सकारात्मक सार्थकता सिद्ध होती है । नट-कबूतरा और साहरिया जनजाति में सह-सम्बन्धों की सार्थकता निम्न स्तर पर है और खंगार जनजाति मे सामान्य स्तर पर । यह अन्तर यह अन्तर गुणात्मक न होकर मात्रात्मक है ।

2- आर्थिक मूल्य एवं शैक्षिक अभिवृत्ति -

यह सामान्य मान्यता है कि मानव समाज आर्थिकवाद या

भौतिकवाद से प्रभावित रहा है । तालिका नं0 5.11 से प्रतीत होता है कि नट-कबूतरा, सहरिया और खंगार जनजाति का सह-सम्बन्ध गुणांक (0.2, 0.42, 0.61) धनात्मक आया है । इससे दोनों परिवर्तियों के बीच सम्बन्धों की सार्थकता प्रगट होती है । गिल्फर्ड (1958) के आधार पर नट-कबूतरा जनजाति के आर्थिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सम्बन्ध धनात्मक निम्न स्तरीय रहा, सहरिया का धनात्मक सामान्य स्तर पर रहा, और खंगार जनजाति का सम्बन्ध सार्थकता धनात्मक उच्च स्तरीय रहा ।

<u>व्याख्या</u> -

तीनों ही जनजातियो मे शैक्षिक अभिवृत्ति के सम्बन्ध में जो गुणात्मक अन्तर आया है उसका मुख्य कारण आर्थिकता मात्र है । नट-कबूतरा जनजाति मुख्य रूप से अपराधिक जाति है । यह अस्थायी रूप से निवास करती है । इसका कोई भी निश्चित व्यवसाय नहीं है । इन तीनों ही बातों से सिद्ध होता है कि इनकी आर्थिक स्थिति काफी कमजोर और असंतुलित रहती है । जो व्यक्ति आर्थिक मूल्य से प्रभावित होते हैं, वे प्रत्येक कार्य को करते समय व्यापारिक दृष्टिकोण को अपनाते हैं । इनके ध्यान के केन्द्र मे सदैव 'अर्थ' सम्बन्धी विचार रहते हैं, और बाह्य परिधि में अन्य कार्यों से सम्बधित विचार । ये लोग प्रत्येक कार्य का विश्लेषण आर्थिक लाभ या हानि को ध्यान में रखकर करते हैं । इस जनजाति का शैक्षिक अभिवृत्ति के साथ सकारात्मक सम्बन्ध तो स्थापित हुआ है, लेकिन निम्न स्तरीय रहा है । इसका मुख्य कारण ये लोग धन की आवश्यकता अन्य कार्यों के लिये मानते हैं, शिक्षा के लिए नहीं । इनका सिद्धान्त "यदि खाने पीने से बच जाय,तो शिक्षा पर व्यय किया जाय" जैसा प्रतीत होता है । ये लोग इतने गरीब और भविष्य के प्रति

अनिश्चित होते हैं कि शिक्षा के प्रति भाव जाग्रत ही नहीं हो पाता है । फिर भी शोधकर्ता से उनकी भावना और उत्कंठा छिपी नहीं रही, कि वे भी समाज और राष्ट्र के सभ्य नागरिक बनना चाहते हैं ।

तालिका नं० 5.11 से साहरिया जनजाति के आर्थिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सार्थक सह-सम्बन्ध गुणांक स्पष्ट होता है । यह सह-सम्बन्ध सकारात्मक सामान्य कोटि का है, जो यह प्रगट करता है कि शिक्षा और अर्थ एक दूसरे के पर्याय हैं । इसका मुख्य कारण इस जनजाति की धन की लालसा की भावना ज्ञान के द्वारा पूरी होना प्रगट होता है । ये लोग भी प्रत्येक कार्य को करते समय आर्थिक हानि या लाभ को दृष्टिकोण में रखते हैं । इनका ध्यान अपनी आवश्यकता पूर्ति पर अधिक रहता है, बनिस्पति अन्य कार्यों के । ये कठिन से कठिन कार्य को करके स्वयं के भरण पोषण की व्यवस्था करते हैं । इसीलिये ये लोग कभी कृषि कार्य करते हैं । तो कभी जंगली वस्तुओं को एकत्रित करते हैं, तो कभी मेहनत और मजदूरी करके पेट पालते हैं । इस प्रकार से सिद्ध होता है कि जो लोग आर्थिक रूप से सम्पन्न होते हैं, उनका ही मन शिक्षा की ओर तत्पर होता है, अन्य का नहीं ।

खंगार जनजाति के आर्थिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सार्थकता स्थापित करने वाला उच्च सकारात्मक सह-सम्बन्ध गुणांक आया है । इसका मुख्य कारण है कि ये लोग पूर्ण रूप से आर्थिकता से प्रभावित हैं, और व्यवसाय मे निपुण हैं । ये लोग सभ्य नागरिकों के नजदीक अधिक आ चुके हैं । अपने व्यवसाय और कार्य को स्थायी बना चुके हैं । इनके निवास भी स्थायी हैं । ये लोग निवास और व्यवसाय परिवर्तन को हानि का लक्षण मानते हैं । शोधकर्ता ने तथ्य संकलन मे पाया कि ये आज पूर्ण रूप से कृषि कार्य में संलग्न हैं ।

साथ ही कोतवाल और चौकीदार के कार्यों को भी कर लेते हैं । इनको आर्थिक रूप से पूर्ण आत्म निर्भर माना जा सकता है । इस प्रकार से ये स्वयं की आवश्यकताओं की पूर्ति करके बच्चों के सुन्दर विकास की ओर भी ध्यान देने में उत्सुक रहते हैं । इनके विचारों एवं भावों में उच्चता और विचारों की पूर्णता प्रगट होती है । इस प्रकार से आर्थिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच उच्च सह-सम्बन्ध स्थापित हुआ है ।

उपर्युक्त जनजातियों के आर्थिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया है । इससे यह साफ जाहिर होता है कि धन की अधिकता या कमी शिक्षा विकास की उन्नति और अवनति पर प्रभाव डालती है । नट-कबूतरा की आर्थिक स्थिति कमजोर है, साहरिया की इससे अच्छी है और खंगार की सबसे उत्तम है, इसीलिये दोनों परिवर्तियों के बीच सम्बन्ध मे भी अन्तर आया है ।

3- सौन्दर्यात्मक मूल्य व शैक्षिक अभिवृत्ति -

जो व्यक्ति सौन्दर्यात्मक मूल्य से प्रभावित होता है, वह अपने व्यवहार और विचार से बड़ा ही साफ-सुथरा व स्पष्ट होता है । उसके द्वारा किये जाने वाला प्रत्येक कार्य नवीनता और सुन्दरता का परिचायक होता है । ये लोग प्रत्येक के साथ समायोजन आसानी से स्थापित कर लेते हैं । ऐसे लोग कलाकारी और सृजनशीलता के लिये प्रसिद्ध होते हैं । सौन्दर्यात्मक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सम्बन्ध स्थापना सिर्फ खंगार जनजाति मे सामान्य स्तर पर पाई गई है, जबकि नट-कबूतरा और साहरिया जनजाति का सम्बन्ध स्तर सामान्य से निम्न स्तर पर रहा है ।

सह-सम्बन्ध गुणांक तालिका नं0 5.11 देखने से प्रतीत होता है कि नट-कबूतरा जनजाति के सौन्दर्यात्मक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सकारात्मक निम्न स्तरीय सम्बन्ध पाया गया है । इसका मुख्य कारण उनमें शिक्षा का अभाव मात्र ही है । शिक्षा के द्वारा ज्ञान प्राप्त होता है और ज्ञान हमें जीवन को सुन्दर और अच्छा बनाना बताता है । सौन्दर्यात्मक मूल्य से प्रभावित व्यक्ति में स्पष्टता, सुन्दरता और समायोजन क्षमता का विकास स्वत: ही पाया जाता है । यह जनजाति अपनी कथनी और करनी में कोई भेद नहीं रखती है, अत: इनमें विचारों की स्पष्टता पाई जाती है । ये लोग स्थायी निवास और स्थायी व्यवसाय के अभाव में नवीनता और सुन्दरता से वंचित रह जाते हैं । सृजनशीलता को मानसिक शांति और स्थायित्व चाहिये, जो इनके पास नहीं पाया जाता है । मानसिक शांति इनके पास इसलिये नही होती है,क्योंकि ये लोग अपराधी प्रवृत्तियों से जुड़े रहते हैं, और पुलिस से बचने के लिये इधर उधर छिपते रहते हैं । इस प्रकार से इनके सामने जो भी परिस्थिति होती है उसी के साथ समायोजन करना अपना कर्तव्य मान लेते हैं । शोधकर्ता ने अपने तथ्य संकलन के समय पाया कि इनके मन मे शिक्षा के प्रति प्रेम उत्साह,लगन और कौशल है, लेकिन वातावरण का नितान्त अभाव है । इसी-लिये सौन्दर्यात्मक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच कम सम्बन्ध स्थापित हो सका है ।

साहरिया जनजाति को सौन्दर्यात्मक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सकारात्मक निम्न स्तरीय सम्बन्ध स्थापित हुआ है । इसका मुख्य कारण इनमें सौन्दर्यात्मक मूल्य के प्रभाव का कम होना है । इस जनजाति में स्पष्टता सुन्दरता और समायोजन का मिला जुला रूप देखने को मिलता है ।

ये लोग स्थायी निवास और व्यवसाय से जुड़ चुके हैं । ये परिस्थिति विशेष के अनुसार अपने को समायोजित करते रहते हैं । सौन्दर्यात्मक मूल्य का आधार शिक्षा और आर्थिकता होती है । इसका नितान्त अभाव इस जनजाति में पाया जाता है । शिक्षा प्राप्त करना और स्कूल में बच्चों को भेजना इनके लिये सम्भव नहीं । इनके बच्चे साहूकारों के यहाँ या बड़े तबके के लोगों के यहाँ सात-आठ वर्ष से ही सेवा मे लग जाते हैं, और पुरखों का कर्जा उतारने लगते हैं । ये बच्चों को पढ़ते हुये विद्यालय जाते हुये देखते हैं, तो विचारों मे खो जाते हैं । इस हालत मे हम उनकी दिवा स्वप्न वाली दशा मानते है, जो बिना सक्रियता के उन्हें समायोजन मे मदद देती है । इस प्रकार से स्पष्ट होता है कि इस जनजाति के लोग साधनों के अभाव में सौन्दर्यात्मक मूल्य से कम प्रभावित रहते है जिसका सीधा प्रभाव शैक्षित अभिवृत्ति के दृष्टिकोण पर पड़ता है ।

शोधकार्य में प्रयुक्त तृतीय जनजाति "खंगार है । ये लोग उपर्युक्त दो जनजातियों की अपेक्षा काफी उन्नति कर चुके हैं । इनके ऊपर सौन्दर्यात्मक मूल्य का प्रभाव अधिक स्पष्ट होता है । इनके निवास स्थायी हैं । घरों की लिपाई-पुताई और रंगों से मिश्रित कला का प्रदर्शन इनके सौन्दर्य मूल्य का द्योतक प्रतीत होता है । ये रहन-सहन और बातचीत में स्पष्ट और सुन्दरता का परिचय देते हैं । आज इन्होने अपने जनजातीय कार्यों को छोड़कर कृषि कार्य और नौकरी को अपना व्यवसाय बना लिया है । इससे इनकी कार्य कुशलता में वृद्धि होने के साथ-साथ आय मे भी वृद्धि हुई है । इस आय का प्रयोग ये लोग अपने परिवार को सुन्दर बनाने और बच्चों को ज्ञान वान बनाने मे व्यय करते हैं । परिणाम स्वरूप उनमें शैक्षिक दृष्टिकोण का सकारात्मक विकास होता है जो सौन्दर्यात्मक मूल्य को शिक्षा के साथ जोड़

देता है । वैदिक कालीन शिक्षा में सौन्दर्यात्मक मूल्य का विकास ही व्यक्तित्व गठन का मुख्य उद्देश्य माना जाता था, जिससे व्यक्ति आत्म तत्व की पहचान सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् के माध्यम से करता था । इसीलिये उस समय ऋषि और गुरुओं का आदर-सम्मान राजा लोग भी करते थे । इस जनजाति ने अपने आडम्बरों, झूठ और पिछड़ेपन को त्यागकर स्पष्टता सत्य, सैद्धांतिकता और प्रगतिशीलता को ग्रहण किया है । इसी कारण से ये लोग आज सभ्य समाज के अधिक पास आ सके हैं और साक्षरता में भी प्रगति कर रहे हैं ।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि तीनों ही जनजातियों में सौन्दर्यात्मक मूल्य के प्रभाव के अनुसार ही शैक्षिक अभिवृत्ति का विकास पाया गया है । अत: शैक्षिक अभिवृत्ति के साथ सार्थक सम्बन्ध स्थापित होता है ।

4- सामाजिक मूल्य व शैक्षिक अभिवृत्ति -

जो व्यक्ति सामाजिक मूल्यों से प्रभावित होता है, उसमें सामाजिक उद्देश्यों के प्रति सजगता पाई जाती है । वह हमेशा बहिर्गामी होता है, मानवता को प्यार करता है , वह उदार और दयालु होता है, वह अनुशासन बद्ध और जीवन के लक्ष्योंकी पूर्ति करने वाला होता है । शोधकर्ता ने जब सामाजिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति की तालिका का विश्लेषण किया तो पाया कि दोनों परिवर्तियों मे साधारण सम्बन्ध है । नट-कबूतरा और साहरिया जनजाति के सामाजिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सकारात्मक निम्न स्तरीय सह-सम्बन्ध गुणांक पाया गया है, जबकि खंगार जनजाति में सकारात्मक सामान्य सम्बन्ध पाया गया है । ये सम्बन्धों का विचलन उनकी सामाजिक बनावट, विरासत और आधार भूत सिद्धांतों की जटिलता के आधार पर है, अन्य किसी कारण से नहीं ।

सह-सम्बन्ध गुणांक तालिका नं0 5.11 से स्पष्ट होता है कि नट-कबूतरा जनजाति के सामाजिक मूल्य का कुछ सार्थक सम्बन्ध शैक्षिक अभिवृत्ति के साथ सिद्ध हुआ है । इसका मुख्य कारण उनके समाज की बनावट और जटिलता प्रतीत होती है । इनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति बड़ी ही दयनीय होती है । ये लोग अपराधी कार्यों में निपुण होते हैं । अपने समाज का संगठन, रीति-रिवाजों और प्रथाओं को अंध विश्वास की तरह से मानते हैं । इनमें परिवर्तन करना या लाना इनको स्वीकार नहीं है । ये लोग अपने बच्चों का समाजीकरण स्वनीति के आधार पर करते हैं । इसी आधार पर हम इनको कन्जरवेटिव समाज के नाम से पुकारते हैं जिससे अपने बच्चों का समाजीकरण सामाजिक आधार पर करते हैं । आज के युग में वर्तमान नवयुवकों ने सामाजिक प्रथाओं को मानना बन्द कर दिया है, लेकिन नट-कबूतरा जनजाति के नवयुवक अपनी मान्यताओं के प्रति बड़े ही कठोर हैं । वे किसी भी प्रकार के विचलन को पसंद नहीं करते हैं । यही कारण है कि उनमें वर्तमान जागरूकता और आधुनीकरण नहीं आ पाया है । अतः ये लोग शिक्षा के प्रति अपनी उदासीनता प्रगट नहीं करते हैं ।

सहरिया जनजाति का सम्बन्ध शैक्षिक अभिवृत्ति के साथ कुछ अधिक गहरा है, अपेक्षाकृत नट-कबूतरों के । इनके स्तर को साधारण स्तर के प्रारंभिक दौर मे माना जा सकता है । इसके पीछे सहरिया जनजाति की सामाजिक व्यवस्था की रूढ़िवादी नीति प्रतीत होती है । आज का आधुनिक समाज भी विभिन्न अंध विश्वासों और झूठ का शिकार है । इसके परे वह जा नहीं पाता है । जबकि ये जनजाति गरीबी की भंयकर चपेट में और ज्ञान के अभाव में भटक रही है । ये लोग निवास और व्यवसाय में अस्थिर है । फिर

भी इनके समाज के कुछ मानक होते हैं, जिनका पालन समाज के सदस्य करते हैं । इन लोगों में सामाजिक व्यवहारों मे भिन्नता पाई जाती है, जो अपनी वैचारिकता को उदार, दयालु और मानव हित के लिये ज्ञान के रूप में प्रस्तुत करता है । यही कारण है कि इनका शिक्षा का दृष्टिकोण कबूतरा जनजाति को अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है ।

"अंगार जनजाति के सामाजिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य धनात्मक सार्थक सम्बन्ध पाया गया है । यह सम्बन्ध सामान्य स्तर से कुछ उच्चता पर स्थिर है । इसका मुख्य कारण इनकी जातिगत विशेषता का होना माना जा सकता है । रसैल, 1966 । । ये लोग आज भी स्वयं को क्षत्री मानते हैं, जिसका प्रतीक "सिंह" शब्द का प्रयोग अपने नामों के अन्त मे करते हैं । वर्तमान विकसित समाज का प्रभाव इनके ऊपर भी पड़ा है । परिणाम स्वरूप इनमें स्व मानकों का गठन और प्राचीन मानकों से विचलन प्रारम्भ हो गया है । ये लोग निवास मे स्थायित्व प्राप्त कर चुके हैं, साथ ही आर्थिक रूप से आत्म निर्भर भी । इनके पास अपने बच्चों के भविष्य के बारे मे विचार करने के लिये पर्याप्त साधन और समय भी होता है । अत: सामाजिकता की आवश्यकता शिक्षा होती है का पूर्ण नियोजन इनके द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है । ये लोग अपने विचारों, भावों और क्रियाओं में चैतन्यता लाकर शैक्षिक मनोबल का विकास करते हैं । अत: शिक्षा के साथ इनका सम्बन्ध सार्थक रूप से स्पष्ट होता है ।

5- <u>राजनैतिक मूल्य व शैक्षिक अभिवृत्ति</u> -

जो व्यक्ति राजनैतिक मूल्य से प्रभावित व निर्देशित होता है, वह स्वयं को शक्तिशाली बनाता है । यह शक्ति शारीरिक रूप से चाहे न भी हो,

विचारात्मक रूप से अवश्य संगठित की जाती है । ऐसे लोग कोशिश करने में, मेहनत करने मे विश्वास करते हैं । ये अन्य लोगों के साथ प्रतिस्पर्धा और नेतृत्व गुणों को विकसित करने में लगे रहते हैं । ये अपनी शक्ति और क्षमता का विस्तार इतना अधिक करते है जितना वे कर सकते हैं । ये लोग शैक्षिक पर्यावरण को अपने अनुसार प्रभावित करते रहते हैं । दोनों परिवर्तियों के तथ्यों का विश्लेषण करने पर शोधकर्ता ने पाया कि उनमें सकारात्मक सामान्य स्तर का सम्बन्ध है ।

तालिका नं0 5.11 को देखने से स्पष्ट होता है कि नट-कबूतरा जनजाति के राजनैतिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति में सकारात्मक कुछ सार्थक सम्बन्ध पाया गया है । इनका सह-सम्बन्ध गुणांक । 0.29 । आया है जो धनात्मक होते हुये निम्न स्तर पर आधारित सम्बन्ध को प्रगट करता है । इसका कारण इस जनजाति का आक्रामक स्वभाव, अपराधी भाव और स्वेच्छाचारिता आदि मानी जा सकती है । अपराधिक शास्त्र का मत है कि अपराधी आक्रामक, शक्तिशाली, कौशलपूर्ण और स्वेच्छा से कार्य करने वाला होता है । इसी प्रकार की विशेषताओं को इस जनजाति ने धारण कर लिया है । राजनैतिक मूल्य का सीधा सम्बन्ध शक्ति के प्रदर्शन से होता है, जबकि शिक्षा में सहृदयता पाई जाती है । साथ ही राजनैतिक मूल्य में स्वभाव की व्यग्रता पाई जाती है, और शिक्षा मे धैर्यशीलता । नट-कबूतरा जनजाति के स्त्री और पुरूष वर्ग में शक्ति संचय विशेष रूप से पाई जाती है, जिसका उपयोग ये लोग अपनी अपराधिक क्रियाओं मे करते हैं । इसका प्रदर्शन इनके द्वारा तब देखने को मिलता है जब ये लोग बड़े से बड़ा अपराध भी सामान्य ढंग से कर डालते हैं । अत: शिक्षा या ज्ञान का प्रभाव नम्रता और शांतिमय स्वभाव का निर्माण करना होता है ।

जो ठीक इनके स्वभाव के विपरीत है । इसी कारण से इनके राजनैतिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य सकारात्मक निम्न स्तरीय सम्बन्ध पाया गया है ।

सहरिया जनजाति का भी राजनैतिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सकारात्मक निम्न स्तरीय सम्बन्ध है । फिर भी नट-कबूतरा जनजाति से ऊँचा और प्रभावशाली सम्बन्ध है । इसका प्रमुख कारण इस जन-जाति का विनम्र व्यवहार और समायोजन स्थापना की भावना का प्रभावशाली होना है । "क्रुक" ‖ 1975,पृ0 252 ‖ महोदय ने इस जनजाति को राजा का संदेश वाहक ‖राजदूत‖ माना है । राजदूत के अन्दर नम्रता, कौशल और समायोजन का भाव प्रमुख रूप से रहता है, जो अन्य लोगों को प्रभावित करता है । इस इस प्रकार से इनमें राजनैतिक मूल्य का एक भिन्न रूप हमें देखने को मिलता है । राजनैतिक मूल्यों के प्रभाव से व्यक्ति गत्यात्मक व्यक्तित्व विकसित करता है और शिक्षा के द्वारा उसके चरित्र का निर्माण सही मानकों के अन्तर्गत होता है । अतः इस जनजाति को आंतरिक रूप से प्रेरणा ‖शिक्षा ‖ राजनैतिक मूल्य के द्वारा ही प्राप्त होती है ।

सह-सम्बन्ध तालिका नं0 5.11 को देखने से स्पष्ट होता है कि खंगार जनजाति के राजनैतिक मूल्य का पूर्ण प्रभाव शैक्षिक अभिवृत्ति के साथ है । इसका मुख्य कारण जनजाति के राजनैतिक संस्कारों का हस्तानान्तरण होना मात्र है । यह जनजाति आक्रामक और अपराधिक कार्यों के लिये प्रसिद्ध है । इसके स्वभाव में शक्ति संचय और वीरता पूर्ण कार्यों का करना आता है । इनकी वीरता का परिचायक "खुन्ता" नाम का हथियार होता है । वर्तमान समय मे इन्होंने अपने निवास और आय के स्रोत को स्थायी बना लिया है, जिससे ये शारीरिक-मानसिक रूप से और आर्थिक रूप से शक्तिशाली बनते जारहे हैं ।

इनकी भावना में अपना पुराना मान-सम्मान पाने की घोर लालसा प्रगट होती है । परिणाम स्वरूप ये लोग शिक्षा की ओर प्रवृत्त होते जाते हैं । वर्तमान शिक्षा प्रणाली के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास होता है, जो बच्चों के भविष्य को सभारता और निर्देशित करता है । इस प्रकार से राजनैतिक मूल्य के प्रभाव से ये लोग अपनी शिक्षा की नीति को और आधार को स्वत: ही तैयार कर सकेगें । इस प्रकार से इनकी जाति की नेताशाही इनकी शिक्षा के विकास के लिये रोशनी की किरण का कार्य करेगी ।

6- धार्मिक मूल्य व शैक्षिक निष्पत्ति -

धार्मिक मूल्य से प्रभावित व्यक्ति का उद्देश्य मानव शक्ति और नैतिक मूल्यों के बीच समायोजन स्थापित करना होता है । वह अपने जीवन दर्शन का निर्माण वर्तमान मूल्यों के आधार पर करता है । वह धार्मिक सिद्धांतों और नियमों का पालन करता है, लेकिन व्यवहार में उनके पालन करने में शिथिलता प्रगट करता है । यह तथ्य वर्तमान अध्ययन के विश्लेषण में प्रगट होते हैं । इसी कारण से धार्मिक मूल्य को जनजातियों के अध्ययन में निम्न स्तर प्राप्त हुआ है । लेकिन सह-सम्बन्ध गुणांक में शैक्षिक अभिवृत्ति के साथ इनका सार्थक सम्बन्ध स्थापित हुआ है ।

तालिका नं0 5.11 से स्पष्ट होता है कि नट-कबूतरा जन-जाति का सह-सम्बन्ध गुणांक । 0.28 । है जो धनात्मक निम्न स्तर पर स्थित है । इससे स्पष्ट होता है कि धार्मिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सम्बन्ध तो है, लेकिन सामान्य से कुछ कम है । इसका प्रमुख कारण इस जनजाति की धार्मिक कट्टरता और अंध विश्वास मात्र है । अपराधी जनजाति होने के कारण बड़े ही शंकालु स्वभाव के होते हैं ।

ये समुदाय से अलग किसी भी व्यक्ति पर विश्वास नहीं करते हैं । ये आज भी पत्थर के देवी-देवताओं और मूर्तियों में आस्था प्रगट करते हैं । और उत्सव भी मनाते हैं । इनका अटल विश्वास अपने प्राचीन धर्म तथा नैतिक रीति-रिवाजों पर रहता है । ये लोग अपने धार्मिक पुजारियों और मुखिया की बात पर विश्वास करते हैं । फिर भी नवयुवक वर्ग की मनोवृत्ति मे परिवर्तन आता जा रहा है। आज की आवश्यकताओं ने और निवास की अस्थिरता ने उनके मन में एक नया विचार जाग्रत किया है, जिसके वशीभूत होकर वे लोग नया जीवन व्यतीत करना चाहते हैं । उनके मन में अनेकों प्रकार के विचार जन्म लेते हैं, उनको साकाररूप देने के लिये वे अन्य व्यक्तियों के पास जाते हैं, और स्वयं को परिवर्तित कर जीवन को सुखी बनाते हैं । अतः मानसिकता और सामाजिकता मे परिवर्तन स्वरूप इनकी रूचि शिक्षा के प्रति जाग्रत होती जा रही है ।

सहरिया जनजाति को परिवर्तनशील जाति के रूप में अध्ययन किया गया है । तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ये लोग सरल, विनम्र और परिश्रमी होते हैं । इनके धार्मिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सामान्य से कुछ कम सम्बन्ध स्थापित हुआ है । इसका मुख्य कारण इनकी धार्मिक भावना और दैनिक जीवन का तादात्मीकरण मात्र है । ये लोग हिन्दू धर्म के अधिक नजदीक प्रतीत होते हैं । इनमें वीरोचित गुण और आक्रामकता का नितान्त अभाव पाया जाता है, फिर भी ये "भवानी मां" जो वीरता की देवी मानी जाती है, की पूजा करते हैं । इनकी श्रद्धा " राम " और " कृष्ण " के प्रति अपार रूप से पाई जाती है । इनमें अंध विश्वासों का भी बोलबाला है । ये लोग स्वयं को धर्म के आधीन मानकर चलते हैं ।

इसके साथ ही इनके व्यवसाय में अस्थिरता रहती है, ये गरीबी के जाल में फंसे रहते हैं, और स्वयं को सुखी देखना पसंद करते है । इसीलिये ये लोग स्वयं को विचारों के तर्कात्मक पक्ष से निकाल कर वर्तमान परिस्थिति के साथ तादात्मीकरण स्थापित कर लेते हैं । धर्म में विश्वास किया जाता है, तर्क को स्थान नहीं होता है । अत: ये लोग दैनिक जीवन में होने वाले परिवर्तन को ही आत्मसात कर लेते हैं, और उसे ही सुख का साधन बनाने की कोशिश करते हैं । इस प्रकार से अविधिक शिक्षा के द्वारा ही सविधिक शिक्षा का विचार उत्पन्न होता है । परिणाम स्वरूप इनके धार्मिक मूल्य और शिक्षा मे सम्बन्ध पाया गया है ।

तालिका नं0 5.11 को देखने से स्पष्ट होता है कि बंगार जनजाति का धार्मिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सकारात्मक सामान्य सम्बन्ध है । "गिल्फर्ड" (1958) के सह-सम्बन्ध गुणांक स्तर से यदि हम देखें तो इस जनजाति का सह-सम्बन्ध गुणांक स्तर (0.47) सामान्य रहा है । इसका कारण जनजाति में उत्पन्न धार्मिक जागरण और नव-चेतनता का उदय मात्र है । इस जनजाति ने अपने अंध विश्वासों को समाप्त करके नये विश्वास को उत्पन्न किया है, जिससे परिवर्तित परिस्थितियों में समायोजन बनाना आसान कार्य हो गया है । इनका कार्य इनकी जाति के मुखिया तक ही सीमित रहता है । वर्तमान मे होने वाले लाभ को ध्यान मे रखकर ये नीति निर्धारण करते हैं । इन्होंने अपने पिछड़ेपन को नवीन चेतना, परिवर्तन और शैक्षिक विचारों के आधार पर दूर कर दिया है । ये लोग "भौतिकवाद मे ही खुशी हैं; को अच्छी तरह से समझ चुके हैं । अत: प्रसन्नता कीमनोवृत्ति का विकास करने के लिए नवीन ज्ञान का आश्रय लिया है ।

इस ज्ञान के द्वारा उनको सुख मिला, उन्नति हुई, जो धार्मिक मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति में सकारात्मक सम्बन्ध की सूचक है ।

उपर्युक्त विश्लेषण और व्याख्या से स्पष्ट होता है कि झाँसी प्रक्षेत्र में निवास करने वाली नट-कबूतरा, साहरिया, और खंगार जनजातियों के मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सार्थक सम्बन्ध है । तालिका नं0 5.11 से स्पष्ट होता है कि शोधकार्य में प्रयुक्त छः मूल्यों में नट-कबूतरा का सम्बन्ध निम्न स्तर पर रहा । साहरिया जनजाति का सम्बन्ध निम्न और सामान्य स्तर पर रहा । जबकि खंगार जनजाति का सम्बन्ध सामान्य और उच्च स्तर पर रहा । अतः निष्कर्ष के तौर पर स्पष्ट होता है कि मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य सम्बन्ध सार्थकता होती है ।

मूल्य विकास निष्कर्ष -

मूल्य और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सह-सम्बन्ध और "टी" वैल्यू की व्याख्या करने के पश्चात यह आवश्यक हो जाता है कि शोधकर्ता नट-कबूतरा, साहरिया और खंगार जनजातियों मे प्रयुक्त मूल्यों के विकास के बारे मे निष्कर्ष निकाले । इससे उनके मूल्यों के विकास की दिशा, और प्रभाव की जानकारी प्राप्त हो सकेगी । शोधप्रयुक्त मूल्यों की तालिका नं0 5.1 । नट-कबूतरा । स्त्री-पुरूष मूल्यों को स्पष्ट करती है । इसमे सभी मूल्यों का विकास समान रूप से पाया गया है और सभी मूल्यों मे पुरूष वर्ग श्रेष्ठ माना गया है । साहरिया जनजाति की तालिका नं0 5.2 से स्पष्ट होता है कि इनमें मूल्य विकास का स्तर सैद्धांतिक और सामाजिक मूल्य को छोडकर अन्य सभी में समान रूप से हुआ है । अतः विकास का क्रम निश्चित रूप से समान ही है । क्योंकि स्त्री-पुरूष मे भिन्नता भी "न" के बराबर है । इसी प्रकार से खंगार

जनजाति की तालिका नं0 5.3 से स्पष्ट होता है कि सैद्धांतिक और आर्थिक मूल्यों को छोड़कर अन्य मूल्यों में विकास का स्तर समान रूप से पाया गया है । इनमें भी अन्तर मात्रा बहुत ही कम है ।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि ये जनजातियाँ आदिम तो हैं ही, साथ ही वर्तमान विकास ने भी इनको प्रभावित किया है । अतः ये मूल्यों के विकास मे निम्न रूपों में समानता रखते हैं -

1- ये जनजातियाँ जंगली स्तर पर विकसित हुई है,अतः उनमें जीवन के प्रति संघर्ष की प्रवृत्ति स्थायी बन चुकी है,जिससे सभी में सैद्धांतिक मूल्य का विकास उच्च सीमा पर पाया जाता है ।

2- इनमें सामाजिक जटिलता पाई जाती है, जिसके वशीभूत होकर ये स्वयं का विकास अवरुद्ध करते जा रहे हैं । अपनी सामाजिक मान्यताओं का विरोध या विपरीत जाना इनके लिये सम्भव नहीं । किसी जनजाति में पुरुष सामाजिकता को कम महत्व देता है तो स्त्री समूह अधिक । इस प्रकार से दोनों मिलकर सामाजिक मूल्य को स्थायी बनाये हुये हैं ।

3- इनमें गरीबी अत्यधिक पाई जाती है,जिससे इनमें विकास क्रम धीमा है । इनके व्यवसाय स्थिर,उच्च और उपयुक्त नहीं हैं । इनकी आर्थिक दशा का प्रभाव इनके रहन-सहन पर भी पड़ता है । "नाडेल" (1953) का मत है कि इन जनजातियों का उद्गम समान कारणों से हुआ है,अतः इनमें मूल्यों के विकास की समानता होना आवश्यक है ।

4- जनजाति की एक विशेषता रही है"आक्रामकता" । ये लोग स्वयं को सुरक्षित बनाये रखने के लिये शक्तिशाली प्रवृत्ति का विकसित करते हैं । इस कारण से

इनमें राजनैतिक मूल्य का विकास हुआ । इसके कारण से लोग स्वयं की रक्षा, जन समूह पर आधिपत्य और उसके विकास को व्यवस्थित करते हैं । "मजूमदार" ॥1965॥ ने इनके आक्रामक स्वभाव, वाक स्पष्टता, अक्खड़पन और वीरता व निडरता आदि को जन्मजात गुण माना है ।

5- जनजाति और अपराध दोनों गहरे दोस्त हैं । अपनी आवश्यकता पूर्ति हेतु ये लोग चोरी करना, राहगीर को लूटना, शराब बनाना, डकैती डालना, कृषि उपज की चोरी करना आदि अपराधी कार्यों को बिना किसी घबराहट के पूरा करते रहते हैं । इन पर समाज और कानून का कोई भी असर नहीं पड़ता है ।

6- इनका जीवन स्तर और रहन-सहन अपनी विशेषता लिये हुये रहता है । इनकी बोली, वेशभूषा और कार्य करने का ढंग अनोखा होता है । ये अपनी आमदनी से ही अपने समाज के अनुसार सौन्दर्य प्रसाधनों का उपयोग करते हैं । ये स्वतंत्रता पूर्वक अपने रीति-रिवाजों का पालन करते हैं । इनकी सौन्दर्यप्रियता इनके उत्सवों में देखने को मिलती है ।

7- ये जनजातियाँ अपने-अपने धर्म, धार्मिक उत्सवों और धार्मिक रीति-रिवाजों में विश्वास और प्रगाढ़ स्नेह रखते हैं । ये पूर्ण धर्मावलम्बी होते हैं । इनके धार्मिक गुरू और मुखिया मिलकर ही समाज की नीति को दिशा देते हैं । अतः ये लोग स्वयं को अपने धर्म से विलग नहीं कर पाते हैं ।

उपरोक्त व्याख्या से स्पष्ट होता है कि शोध प्रयुक्त जनजातियों के मूल्यों के विकास मे समानता है । "कुक ॥1975॥ "मजूमदार ॥1965॥, रसल व हीरालाल" ॥1916॥, "सिन्हा" ॥1968॥ आदि प्रभृति विद्वानों ने जनजातियों की विशेषताओं मे, सामान्य क्षेत्र में, राजनैतिक प्रशासन, और विशिष्ट संस्कृति

को समान रूप से स्थित माना है । परिवर्तन, भौतिकवाद और आधुनिक परिवर्तन का है, जिससे सिर्फ बंगार जनजाति के मूल्यों का प्रभाव शैक्षिक अभिवृत्ति पर अधिक पड़ा है ।

अध्याय-षष्ठम्

शोध निष्कर्ष एवं सुझाव

(१) अध्ययन के निष्कर्ष

(२) अध्ययन के विस्तृत निष्कर्ष

(३) शिक्षारत व्यक्तियों के लिए सुझाव

(४) शिक्षा विषय के शोध कर्ताओं के लिए सुझाव

निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्ययन के निष्कर्ष-

प्रस्तुत अध्ययन की प्रथम परिकल्पना: जनजातीय मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सार्थक सम्बन्ध है, का परीक्षण किया गया । यह परिकल्पना पूर्ण रूप से स्वीकृति की जा चुकी है । अन्तर सिर्फ इतना है कि किसी जनजाति के मूल्यों का शैक्षिक अभिवृत्ति के साथ सम्बन्ध कम है, किसी का सामान्य है और किसी का उच्च स्तर का है । मूल्यों के विकास के विभिन्न आयाम होते हैं, और प्रत्येक जनजाति का विकास उसके द्वारा स्वीकृत पर्यावरण में हुआ है । अत: उनके मूल्यों पर पर्यावरण का प्रभाव स्पष्ट होता है । तालिका नं० 5.11 से स्पष्ट होता है कि नट-कबूतरा जनजाति का शैक्षिक अभिवृत्ति के साथ सम्बन्ध सकारात्मक कम है, सहरिया का इससे अधिक है, और खंगार का सबसे अधिक सम्बन्ध पाया गया है । ये जनजातियाँ वर्तमान परिस्थिति में जितना ध्यान इस ओर दे पाती हैं उसी के कारण इनका सम्बन्ध स्पष्ट हुआ है । शोध प्रयुक्त मूल्यों में से जनजातियों ने सबसे अच्छा और उच्च सम्बन्ध आर्थिक मूल्य और सैद्धांतिक मूल्य के साथ स्थापित किया है । इस प्रकार के निष्कर्ष हार्न मारिसन (1955), रस्तोगी (1956). पाण्डेय (1958) आदि ने भी अपने अध्ययनों से प्रगट किये हैं ।

"एन्दर बेइली" (1963), रोय (1966), सिल्वर मैन (1969), नैश (1972), ग्रीन (1972), मोसर (1966), पन्नावलम (1966) आदि प्रभुत विद्वानों ने अपने अध्ययनों से स्पष्ट किया है, कि जनजातीय मूल्यों का सम्बन्ध शैक्षिक अभिवृत्ति के साथ होता है । सह-सम्बन्ध तालिका से स्पष्ट होता है कि सभी मूल्यों का सम्बन्ध स्पष्ट और धनात्मक

प्रगट हुआ है । इस प्रकार के निष्कर्ष "वर्मा" ‡ 1958 ‡, मार्गन ‡ 1962 ‡, और सिन्धू ‡ 1974 ‡ आदि ने भी खोजे हैं ।

तालिका नं0 5.11 से स्पष्ट होता है कि नट-कबूतरा जनजाति के मूल्यों का शैक्षिक अभिवृत्ति के साथ सकारात्मक सम्बन्ध तो आया है, लेकिन सम्बन्ध की मात्रा सामान्य से निम्न स्तरीय है । सभी छ: मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सह-सम्बन्ध गुणांक की सीमा 0.23 से 0.32 तक स्थापित हुई है । इससे स्पष्ट होता है कि सभी मूल्यों का प्रभाव शैक्षिक अभिवृत्ति पर समान रूप से है । इसका मुख्य कारण मूल्यों के विकास में समरूपता का होना है । सबसे अधिक सह-सम्बन्ध सिर्फ सैद्धांतिक मूल्य के साथ रहा है । इससे स्पष्ट होता है कि वास्तव में इस जनजाति ने शिक्षा की उपादेयता को मान लिया है, और अपनी मानसिकता को तैयार करना चाहता है, ताकि शिक्षा का प्रयोग एवं उपयोग समूह में कर सके ।

साहरिया जनजाति और शैक्षिक अभिवृत्ति के बीच सह-सम्बन्ध सार्थक है । आर्थिक मूल्य को छोड़कर अन्य सभी मे निम्न स्तरीय यानी कम सह-सम्बन्ध प्रगट हुआ है । इससे स्पष्ट होता है कि ये लोग शिक्षा और अर्थ व्यवस्था को सम्बन्धित मानते हैं । रस्तोगी ‡ 1956 ‡, पाण्डेय ‡ 1958 ‡ पन्नावलई ‡ 1958 ‡, सिंह ‡ 1977 ‡ आदि ने भी इसी तथ्य पर जोर दिया है । इस समूह का ऐसा विचार प्रतीत होता है कि शिक्षा के द्वारा धन आपूर्ति और धन के द्वारा शिक्षा का विकास होता है । अत: शिक्षा के लिये धनोपार्जन आवश्यक प्रतीत होता है । इसीलिये आर्थिक मूल्य के साथ अच्छा सह-सम्बन्ध प्रगट हुआ है ।

तालिका नं0 5.11 से खंगार जनजाति के मूल्यों और शैक्षिक

अभिवृत्ति के मध्य सम्बंध स्पष्ट होता है । इसके सभी मूल्यों का सह सम्बंध सामान्य स्तर पर रहा , सिर्फ आर्थिक मूल्य को छोड़कर । ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा और धन एक -दूसरे को प्रभावित करते हैं । शिक्षा प्राप्त के लिए धन की आवश्यकता होती है । व्यवहारिक तौर पर यदि हम देखें तो पाते हैं संविधान के द्वारा प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क तो है , लेकिन अन्य खर्चे बहुत हैं जिनकी पूर्ति हेतु माता- पिता को ही"अर्थ " जुटाना पड़ता है । इस प्रकार से शोध कार्य की प्रथम परिकल्पना मूल्यों और शैक्षिक अभिवृत्ति के मध्य सार्थक सम्बंध होता है,स्वीकृत एवं सिद्ध होती है ।

प्रस्तुत अध्ययन की द्वितीय परिकल्पना :"नट-कबूतरा" जनजातीय समूह के मूल्यों का "साहरिया" जनजातीय समूह के मूल्यों के मध्य सार्थक सम्बंध है, का परीक्षण किया गया । प्रत्येक जनजाति के मूल्यों को ज्ञात करने के लिए छः मूल्यों को चुना गया । इनके बीच सह-सम्बंध ज्ञात किया गया ताकि दोनों के मध्य सम्बंध का पता लगाया जा सके । दोनों के मूल्यों में सकारात्मक सम्बंध (0.23 से0.88) पाया गया । इसमें सिर्फ सौन्दर्यात्मक मूल्य में सामान्य से कम सम्बंध स्थापित हुआ है और अन्य मूल्यों में उच्च सम्बंध स्थापित हुआ है । ग्रीन ((1972), नैश(1972), मोसर(1966) पुण्ट(1954), किदारनाथ शुक्ल (1978), मोहसिन(1978) आदि ने इसीप्रकार के निष्कर्ष प्रदान किये हैं ।

इन दोनों जनजातियों की मूल्य समानता मानकर सबसे अधिक या उच्च सैद्धान्तिक मूल्य (0.88) और राजनैतिक मूल्य (0.74) आई है । इसी प्रकार के निष्कर्ष वर्मा(1968) , सिंह(1977), पिजियन(1970), जयारामन(1966) आदि विद्वानों ने भी प्रस्तुत किये हैं ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि ये लोग वर्तमान में विश्वास करते हैं , भविष्य की चिन्ता नहीं करते हैं । इसीलिये इनकी उन्नति और प्रगति की गति अत्यन्त कम है । इनमें शक्ति एवं क्षमता है, लेकिन उसका प्रयोग ये लोग सिद्धांत और नियमों के अन्तर्गत करते हैं, जिससे इन्हे लाभ न होकर हानि ही उठानी पड़ती है । यही कारण है कि इनका उच्च सम्बन्ध सैद्धांतिक और राजनैतिक मूल्यों के साथ स्थापित हुआ है ।

तालिका नं0 5.12 से स्पष्ट होता है कि इन दोनों जन-जातियों के मूल्यों मे कम सम्बन्ध सौन्दर्यात्मक मूल्य । 0.23 । में स्थापित हुआ है । इसका मुख्य कारण इनका सत्य और वास्तविकता मे विश्वास करना है , न कि बनावटी पन में । यह लोग जितना अर्जित करते हैं, उसका प्रयोग जीवन यापन में कर देते हैं । नट-कबूतरा स्वयं को "खाओं, पियो और मौज उड़ाओं" की भावना में, व्यस्त रखते हैं , जबकि साहरिया स्थायित्व की भावना में । अत: अच्छा व्यवहार, मानवीय गुण और रहन-सहन में सफाई आदि साहरिया में अधिक अच्छी पाई जाती है, अपेक्षाकृत कबूतरा समूह के । परिणाम स्वरूप सम्बन्ध स्थापना में सौन्दर्यात्मक मूल्य पीछे रह गया है । अपने अध्ययन के निष्कर्ष में " अपर्णा राव" । 1974 । ने इसी बात की पुष्टि की है ।

अध्ययन की तृतीय परिकल्पना : नट-कबूतरा और कंगार जनजाति समूह के मूल्यों के बीच सार्थक सम्बन्ध हैं , को परीक्षित किया गया । इन दोनों जनजातियों मे समानता अधिक है, इसीलिये सभी मूल्यों मे सामान्य सम्बन्ध की स्थापना हुई है । इनकी उत्पत्ति स्वभाव, वंशानुक्रम और व्यक्तित्व गुणों में विकास की समरूपता स्पष्ट होती है ।

इन तथ्यों से "नोडल" ‖ 1953 ‖, कुक ‖1975 ‖, मजूमदार, ‖ 1965 ‖, रसल व हीरालाल ‖ 1916 ‖, सिन्हा, ‖1968 ‖, भार्गव ‖ 1949 ‖, और विद्यार्थी ‖1975 ‖ आदि प्रभृत विद्वान भी सहमत हैं ।

तालिका नं0 5.12 से स्पष्ट होता है कि सामान्य सम्बन्ध सैद्धान्तिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सामाजिक मूल्य और धार्मिक मूल्य में स्थापित हुआ है । इसका मुख्य कारण सिद्धान्तों एवं नियमों का पालन करना, स्पष्टवादी सत्य-प्रिय, आर्थिक अवस्था के प्रति चिन्तित रहना और धन कमाने के तरीकों को स्थापित करना, सामाजिक अस्तित्व में विश्वास करना और उसके मानकों पर चलना, तथा अपनी अपूर्वता को बनाये रखने के लिये धार्मिक एवं नैतिक नियमों का पालन करते हुये संतान में हस्तातंरित करते रहना है । इस प्रकार से छः मूल्यों में से चार मूल्यों के बीच सकारात्मक सामान्य सम्बन्ध स्थापित होना सिद्ध करता है कि दोनों ही जनजातियाँ मूल्य के धारण एवं विकास में समानता रखती हैं । मैकनील ‖1955 ‖, ब्लैडसा ‖1955‖, गोयन ‖1961‖, शर्मा ‖1965‖, किचनर ‖1968‖, कौल ‖1973‖,आदि विद्वानों ने मूल्यों के विकास की समानता पर बल दिया है ।

नट-कबूतरा और कंगार के बीच मूल्यों के विकास में उच्चता राजनैतिक मूल्य में और निम्नता, सौन्दर्यात्मक मूल्य में स्थापित हुई है । दोनों ही समूह आक्रामक और वीरता की पृष्ठभूमि से विकसित हुये हैं । नट-कबूतरा जनजाति का उद्‌गम मजूमदार ‖1975‖ महोदय ने मुगल कालीन राजपूतों से माना है । इसी तरह से कंगार समूह का उद्‌गम रसल व हीरालाल ‖1916‖ ने "कुरार" गढ के राजवंश से माना है । इस प्रकार से दोनों ही समूहों में शक्ति एकत्रित करना, नेतृत्व के गुण, निर्णय लेने की क्षमता और निडरता आदि

गुणों का होना स्वाभाविक रूप से पाया जाता है । परिस्थिति वश उनकी सामाजिक और आर्थिक दशा दयनीय होती गयी, फलस्वरूप उनके मन से सौन्दर्य बोध का भाव अस्पष्ट होता गया । इसीलिये सौन्दर्यात्मक मूल्यों के बीच सम्बन्ध कम मात्रा मे पाया गया है । इस प्रकार से प्रस्तुत परिकल्पना को भी स्वीकृति किया गया है ।

अध्ययन की चतुर्थ परिकल्पना : सहरिया और खंगार जनजाति समूहों के मध्य सार्थक सम्बन्ध हैं , का भी परीक्षण किया गया और वह अंत: सह-सम्बन्धित पाई गयी । भट्ट ॥1978॥, कृपाल ॥1978॥, आर०के०कर, ॥1974॥, अग्निहोत्री ॥1974॥ आदि विद्वानों ने भी इसी तथ्य का समर्थन किया है ।

तालिका नं0 5.2 और 5.3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि दोनों ही समूहों में मूल्य विकास की गति समान रूप से हुआ है । परिणाम् स्वरूप तालिका नं0 5.12 मे सैद्धांतिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य और धार्मिक मूल्य आदि के मध्य सम्बन्ध स्थापना सामान्य से कम स्थापित हुई है । इसका कारण दोनों ही समूहों के उद्गम और विकास के तरीकों मे अन्तर होना मात्र है । सहरिया एक जंगली और अस्थाई जनजाति "विद्यार्थी" ॥1975॥ है । जबकि खंगार क्षत्री जनजाति से अवतरित हैं । अत: दोनों केविकास के आयामों मे परिवर्तन होना स्वाभाविक है ।

सह-सम्बन्ध गुणांक तालिका से स्पष्ट प्रतीत होता है कि दोनों ही समूहों के सामाजिक मूल्य और राजनैतिक मूल्य मे उच्च सम्बन्ध स्थापना है । इसका मुख्य कारण दोनों समूहों की सामाजिक सुरक्षा और स्थायित्वता की भावना मात्र है । दोनों ही विकास के इस तीव्र युग मे अपनी

अपनी अपूर्वता को बनाये रखना चाहते हैं । वे प्रगति मे विश्वास करते हैं, लेकिन परिवर्तन मे नहीं । उनको अपनी सामाजिकता से वैसा ही प्यार है जैसा कि एक नागरिक को अपने राष्ट्र के साथ होता है । उसका विकास और अस्तित्व रक्षा का उत्तरदायित्व उन्हो के कधों पर होता है । इसी के साथ विकास का प्रथम तत्व शक्ति संचय और नेतृत्व के गुणों का विकास है, जिसको इन्होने अपने व्यवहार में लागू किया है । इस तथ्य का समर्थन नैश । 1972 । ग्रीन । 1972 । आदि विद्वानों ने किया है । इस प्रकार से यह सिद्ध होता है कि साहरिया और खंगार समूहों में मूल्यों के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया जाता है, और इसी रूप में परिकल्पना को स्वीकार भी किया जाता है ।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य: "जनजातीय समूहों ।नट-कबूतरा, साहरिया और खंगार। में पाये जाने वाले मूल्य प्रकारों को जानना" ।

शोधकर्ता का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वह प्रयुक्त जनजातीय समूहों के स्त्री-पुरूषों में व्याप्त मूल्यों का वर्णन करें, ताकि उनके प्रभाव का विश्लेषण गुणात्मक और संख्यात्मक रूप मे किया जा सके । प्रस्तुत शोध कार्य में छः मूल्यों । टी0ई0, ए0एस0पी0आर0। का अध्ययन किया गया है । इन मूल्यों पर पहले से विभिन्न व्यक्तियों और विद्वानों ने विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किया है जैसे - मैकलीन ।1955।, ब्लेहसो ।1955। गोयन ।1961।, शर्मा ।1965।, ओवस्ट ।1966।, किचनर और होगन ।1968।, कक्कड़ ।1971।, कौल ।1973।, सिंह ।1973।, और गौर ।1975।, मिसे0 सिंह ।1977।, पाण्डेय ।1983, श्रीवास्तव ।1988। । इन विद्वानों के कार्य शिक्षा के विभिन्न आयामों और घटकों से सम्बन्धित रहे है । वर्तमान अध्ययन में शोधकर्ता ने जनजातियों के अन्दर छिपी शैक्षिक अभिवृत्ति के प्रगटीकरण पर ही बल दिया है ।

वस्तुत जनजातियों का शैक्षिक व्यवहार या दृष्टिकोण उनमें स्थित छः मूल्यों का ही परिणाम होते हैं । यही मूल्य उनकी शैक्षिक मनोवृत्ति को प्रभावित करते हैं । अतः शोधकर्ता का प्रथम लक्ष्य इन जनजातियों मे व्याप्त छः मूल्यों का पता लगाना है । इस कार्य हेतु तालिका नं0 5.1, 5.2, 5.3, पर दृष्टिपात करना आवश्यक होता है । इस तालिका से स्पष्ट होता है कि सैद्धांतिक और आर्थिक मूल्य पुरूष वर्गऔर स्त्री वर्ग में उच्च स्तर पर है । प्रस्तुत निष्कर्ष का समर्थन गोयन ॥1961॥, ओपस्ट ॥1966॥, शर्मा ॥1965॥, पाण्डेय ॥1983॥, सिंह ॥1977॥ आदि प्रभृत विद्वानों द्वारा पूर्व ही किया जा चुका है । तालिका में निम्न स्तर पर धार्मिक मूल्य रहा है, जिसका समर्थन मैकनील ॥1953॥, गोयन ॥1961॥, पाण्डेय ॥1983॥ द्वारा किया जा चुका है । अतः शोधकर्ता यह निष्कर्ष प्राप्त करता है कि जनजाति समूहों के स्त्री-पुरूष वर्ग में मूल्यों के प्रकारों और प्रभावों के बारे में कोई अन्तर नहीं है, बल्कि समानता ही है । दीक्षित और शर्मा ॥1970॥, कक्कड़ ॥1971॥, कौल ॥1973॥ और अन्य विद्वानों ने भी यह स्पष्ट किया है कि मूल्यों में भिन्नता का आधार स्त्री-पुरूष नहीं होता है ।

इस प्रकार से शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि जनजातियों में स्त्री-पुरूषों का विकास एक ही समान पर्यावरणीय धरातल पर होता है । अतः उनमें मूल्य विकास में समानता होती है । अन्तर सिर्फ उनके शैक्षिक विकास का होता है जो वर्तमान की प्रगति पर बल देता है,और प्राचीन की अव्यवहारिकता को मिटाता है । फिर भी स्त्री और पुरूष मूल्यों में पूर्ण समानता नहीं पाई गई है । नट-कबूतरा जनजाति में मूल्य समानता है,लेकिन साहरिया जनजाति में सैद्धांतिक और सामाजिक मूल्यों मे स्त्री समूह का प्रभुत्व

पाया गया है, साथ ही "खंगार स्त्री-पुरूषों मे सैद्धांतिक और आर्थिक मूल्यों मे स्त्री समूह अधिक प्रभावशाली रहा है । तीनों ही जनजातीय समूहों में पुरूष वर्ग सैद्धान्तिक, सामाजिक और राजनैतिक मूल्यों मे अधिक प्रभावशाली रहा है । जनजातियों में मूल्यों के प्रकारों के संदर्भ मे शोधकर्ता ने निम्नांकित निष्कर्ष ज्ञात किये हैं -

1- पुरूष वर्ग और स्त्री वर्ग जनजातीय समूह मूल्यों के प्रकारों में समान पाये गये ।

2- कुछ मूल्यों में पुरूष जनजाति समूह प्रमुख रहे और कुछ मे स्त्री जनजाति समूह ।

3- मूल्यों का क्रम निर्धारण करने पर पुरूष और स्त्री समूहों में समानता रही । क्रम की उच्चता में सैद्धांतिक मूल्य रहा और क्रम की निम्नता में धार्मिक मूल्य रहा ।

4- यह निश्चित है कि "मूल्य" का अध्ययन जितने व्यवहारों, आयामों में किया जायेगा, निष्कर्षों में उतनी ही भिन्नता आयेगी । अत: शोधकर्ता की प्रस्तुत परिकल्पना, जो मूल्यों के प्रकारों के अन्तर से सम्बन्धितहै, सार्थक सिद्ध होती है ।

अध्ययन की छठवीं परिकल्पना : नट-कबूतरा जनजातीय समूहों की शैक्षिक अभिवृत्ति में अन्तर ।स्त्री-पुरूष। पाया जाता है -

प्रत्येक मानव मात्र की शैक्षिक अभिवृत्ति मे अन्तर अवश्य ही पाया जाता है । नट-कबूतरा जाति के स्त्री और पुरूष वर्ग में यह अन्तर होना स्वाभाविक ही है । तालिका नं0 5.4 के अवलोकन मात्र से स्पष्ट होता है कि स्त्री और पुरूष समूहों मे शैक्षिक अभिवृत्ति सम्बन्धी अन्तर है । लेकिन तालिका नं0 5.10 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि नट-कबूतरा जनजाति के स्त्री-पुरूषों के शैक्षिक दृष्टिकोण मे अन्तर की सार्थकता नहीं है ।

नट-कबूतरा की शैक्षिक अभिवृत्ति में अन्तर (टी= 1.510) आया है, जो .01 स्तर और .05 स्तर से कम है । अतः दैनिक जीवन में सुरक्षा का भाव, विकास के आयाम और भौतिकता की दौड़ में स्त्री-पुरूष दोनों की चिन्तन शक्ति समान रूप से क्रियाशील होती है, तभी परिवार का भरण-पोषण सम्भव हो सकता है । प्रस्तुत जनजाति विमुक्त जनजाति की कोटि में आती है । इनके स्थायी निवास और व्यवसाय नहीं होते हैं । ये अपराधी प्रवृत्ति के होते हैं । स्त्री और पुरूष दोनों ही अपराधों मे सलग्न रहते हैं । इससे इनमें शिक्षा के प्रति समान दृष्टिकोण का विकास होता है । " नैश " (1972), ग्रीन (1972), रस्तोगी (1956), पन्नाबलम् (1966) आदि के शोधकार्य के निष्कर्ष प्रस्तुत कथन का समर्थन करते हैं ।

प्रस्तुत जनजाति की सामाजिकता और उनके दैनिक जीवन पर हम दृष्टिपात करें तो पाते हैं कि कठोर जीवन यापन, शिक्षा से दूर, भविष्य की चिन्ता न करना, अपराधी व्यवसाय, निवास का अभाव आदि जटिल समस्याओं मे उलझा समाज शैक्षिक सोच मे समानता ही स्थापित कर सकता है । इनकी आवश्यक आवश्यकता और गौण आवश्यकता से परे की बात शिक्षा है । अतः वे इस पर अपने मानस को केन्द्रित ही नहीं होने देते हैं । जब कभी सरकारी नीति पर बिचार करते हैं तो स्वयं को संतुष्ट नहीं कर पाते हैं । अतः शैक्षिक अभिवृत्ति मे सार्थक अन्तर का न होना स्वाभाविक है ।

नट-कबुतरा का पारिवारिक जीवन शांतिमय नहीं पाया जाता है । स्त्री और पुरूष दोनों ही असुरक्षा के भाव से सदैव पीड़ित रहते हैं । अतः इनके व्यक्तित्व का विकास अपराधिक होता है । इनकी शांति को भंग करने वाला कारण व्यवसाय मात्र है जिसका उत्तरदायित्व सरकार और आधुनिक

समाज पर भी है । ये इन्हे शैक्षिक अभिवृत्ति से विलग करता है । ऐसा ही विचार हार्न मारिसन ‡ 1955 ‡, पिजियन ‡ 1970 ‡, सिंह ‡ 1977 ‡, वर्मा ‡ 1968 ‡ आदि विद्वानों ने प्रस्तुत किया है । इस प्रकार से वैयक्तिकता के बावजूद भी उनके सोच में समानता है । अत: प्रस्तुत परिकल्पना की सार्थकता सिद्ध नहीं होती है ।

अध्ययन की सप्तवीं परिकल्पना : साहरिया जनजाति समूह ‡स्त्री-पुरुष‡ की शैक्षिक अभिवृत्ति में कुछ अन्तर है -

सामान्यत: यह माना जाता है कि स्त्री-पुरुष समूहों में चिन्तन और व्यवहार में अन्तर पाया जाता है । कुछ विद्वानों ने दोनों के मानसिक सोच में समानता भी स्थापित की है । प्रस्तुत शोध की तालिका नं० 5.5 से स्पष्ट होता है कि शैक्षिक अभिवृत्ति के संदर्भ में स्त्री और पुरुष समूहों की मानसिकता समान नहीं है । पुरुष वर्ग की अपेक्षा स्त्री वर्ग अधिक उत्सुक व्यग्र और चंचल मालूम पड़ता है । इसके दूसरी तरफ पुरुष वर्ग शिक्षा के प्रति सामान्य भाव को स्थायी बना चुका है । इसका मुख्य कारण बदलते हुये वातावरण के लाभ, व्यवसायिक योजनायें और सुखी एवं समृद्ध जीवन की तीव्र इच्छा का स्त्रियों में जाग्रत होना है । ये लोग जंगली जीवन से ऊब चुके है । स्वयं को आधुनिक समाज मे स्थापित करना चाहते हैं । पुरुष वर्ग सदियों से सामाजिक बन्धनों में इतना जकड़ा हुआ है कि वह शिक्षा के प्रति सोच भी नहीं पाता है । गरीबी, व्यवसाय की अस्थिरता, ठेकेदारों की प्रताड़ना आदि इनको शिक्षा की ओर से विमुख कर देती है । बच्चे अपने परिवार का कर्जा उतराने के लिये बचपन से ही धनी लोगों के घर गिरवी रख दिये जाते हैं । ऐसी हालत में शिक्षा का सोच सदैव के लिये दब जाता है ।

तालिका नं0 5.10 से स्पष्ट होता है कि साहरिया जाति में शैक्षिक अभिवृत्ति ।स्त्री-पुरूष। में सार्थक भिन्नता है । इनकी ।टी= 2.192। भिन्नता की सार्थकता दोनों ही समूहों के सोच में अन्तर को स्पष्ट करती है । इनमें स्त्री समुदाय-पुरूष वर्ग पर शासन करता रहा है । स्त्री वर्ग को प्रमुखता उसके अथाह परिश्रम और पारिवारिक उत्तरदायित्वों के कारण मिली है । इसका समर्थन "क्रुक" । 1875,पृ0 253 । महोदय ने भी किया है ।

इस प्रकार से यह स्पष्ट हो जाता है कि शैक्षिक अभिवृत्ति की धारणा में स्त्री और पुरूष दोनों ही समूहों में परिस्थितिवश अन्तर है । पुरूष वर्ग आधुनिक समाज से दूर, व्यवसाय मे जकड़ा, परतंत्र और मादक व्यसनों में लीन रहता है । वह अपनी दयनीय दशा का जिम्मेवार ईश्वर को मानता है, स्वयं को नही । इसी कारण से वह अपना कर्तव्य भी भूल जाता है । इसके साथ ही स्त्री समूह के अन्दर अपनी संतान को अच्छा बनाने का भाव सक्रिय रहता है । वे अपने विचारों में उत्साह, सक्रियता लाती है और बच्चों को अच्छा बनाने की कोशिश भी करती है, लेकिन पुरूष वर्ग के सामने इस विचार को साकार रूप नहीं दे पाती है । अत: दोनों के विचारों में अन्तर होता है । इसकी पुष्टि "कुप्पूस्वामी । 1968 ।, पन्नाबलम् । 1966।, वर्मा ।1968।, सिंह ।1977। आदि के द्वारा भी होती है ।

स्त्री-पुरूष की शारीरिक बनावट मे भिन्नता , स्वभाव में भिन्नता आदि होने के कारण उनके सोच में भी भिन्नता होती है । स्त्री वर्ग अंतर्मुखी और पुरूष वर्ग बहिर्मुखी होता है । अत: स्त्री वर्ग स्व परिवार के अलावा अपने विचार को पल्लवित नहीं करती है । "शैल्डन ।1940।, विलियम्स ।1956।, जुंग ।1923। आदि प्रभृति विद्वानों ने प्रस्तुत विचार विभिन्नता का

समर्थन किया है । अतः शोध कार्य की सप्तवीं परिकल्पना स्वीकृति होती है कि शैक्षिक अभिवृत्ति में स्त्री-पुरूष समूहों में अन्तर होता है ।

अष्ठम परिकल्पना : खंगार जनजाति समूह की शैक्षिक अभिवृत्ति में अन्तर है -

कृषि कार्य मे निपुण और संलग्न जनजाति के रूप में इसका अध्ययन शोधकर्ता ने किया है । विद्यार्थी "1975। ने भी इस जनजाति को कृषि कार्य करने वाली माना है । मानव मात्र की यह विशेषता रही है कि उनमें मानसिकता और विचार मे अन्तर होता है । चूँकि खंगार जनजाति में, अन्य जनजातियों की अपेक्षा तीव्रता से परिवर्तन आया है । इसका मुख्य कारण उनकी व्यवसायिक निपुणता और निवास की स्थिरता मात्र है । इन दोनों आयामों में जो मानव प्राणी सफल रहते हैं, उनमें विचारों की तीव्रता और श्रेष्ठता स्वतः ही बढ़ जाती है । तालिका नं0 5.6 के अवलोकन से प्रतीत होता है कि खंगार जनजाति के स्त्री-पुरूष समूहों की शैक्षिक अभिवृत्ति सोच में अन्तर है, लेकिन तालिका नं0 5.10 से स्पष्ट होता है कि दोनों के सोच मे सार्थक अन्तर नही है ।

खंगार समूह में शैक्षिक अभिवृत्ति अन्तर । टी= 1.719 । आया है जो सार्थकता स्तर से कम है । अतः दोनों ही वर्गों में समानता का भाव दृष्टिगोचर होता है । शोध कार्य में प्रयुक्त जनजातीय समूहों में खंगार जनजाति आधुनिक समाज के अधिक पास है । आर्थिक दृष्टि से स्थिति समान्य एवं स्थायी है, अपना निवास सही रूप से बनाकर स्थायित्व प्राप्त कर चुके हैं । अतः भिन्नता का उदभव सम्भव नहीं । इसी विचार का समर्थन रेड्डी ।।973। बेलार्ड ।।970।, अग्निहोत्री ।।974।, बोस ।।974। आदि ने भी किया है ।

कृषि कार्य में जुटे रहने से मानव जीवन के सुख और आनन्द की ओर इनकी लालसा जाग्रत हो चुकी है । इनके बच्चे विद्यालय मे जाने लगे है, लेकिन अपव्यय और अवरोधन के शिकार बन रहे हैं । ये लोग आपसी सद-भाव से बच्चों में शिक्षा का विकास, प्रसार, साक्षरता और मानसिकता को स्थायी बनाने का प्रयास करते हैं । मानव विकास का यह नियम रहा है कि व्यवसाय निपुणता और स्थायी निवास होने के पश्चात वह शिक्षित और ज्ञान वान होना चाहता है । यही मान्यता खंगार स्त्री-पुरूषों में भी देखने को मिलती है । इसी विचार का समर्थन "बुच" ।1959।, मोसर ।1966।,अपर्णा ।1974।, मोहसिन ।1978। आदि विद्वानों द्वारा भी किया गया है ।

प्रस्तुत जनजाति की सामाजिक बनावट पर यदि हम ध्यान दें तो स्पष्ट होता है कि कठोर जीवन यापन यथार्थता का विकास करता है ये लोग वास्तविकता, सत्य और सैद्धांतिकता के नियम को मानकर क्रियाशील रहते हैं । स्त्रियाँ समान रूप से कृषि कार्यों मे सहयोग देती हैं, साथ ही गृह कार्य मे भी दक्षता हासिल करती हैं । अतः व्यवसाय में कुशलता सामाजिकता मे सहयोग उनमें समानता स्थापित करवा देता है । परिणाम स्वरूप उनकी मानसिकता शिक्षा के प्रति समरूपता स्थापित कर लेती है । "मिश्रा" ।1972। नायडू ।1972।, बैटली ।1963।, राय,।1963।आदि विद्वानों के निष्कर्ष भी कुछ-कुछ इसका समर्थन करते हैं । अतः प्रस्तुत परिकल्पना खंगार स्त्री-पुरूष वर्ग में शैक्षिक अभिवृत्ति सम्बन्धी अन्तर हैं,की सार्थकता सिद्ध नहीं होती है ।

<u>विस्तृत निष्कर्ष</u> -

शोध कार्य की परिकल्पना की स्वीकृति और अस्वीकृति का वर्णन करने के पश्चात अध्ययन के विस्तृत निष्कर्षों को प्रस्तुत करना शोधकर्ता का

मुख्य कर्तव्य होता है । शोध कार्य के कुछ तथ्यात्मक निष्कर्ष निम्न रूप से हैं -

1- प्रस्तुत अध्ययन मे तीन जनजातियों को अध्ययन हेतु लिया गया है । तीनों समूहों की अपनी-अपनी प्रकृति और स्वभाव हैं । इनके मूल्यों का शैक्षिक अभिवृत्ति पर पूर्ण प्रभाव या सम्बन्ध स्पष्ट हुआ है । इसका कारण शिक्षा मानव विकास की प्रमुख आवश्यकता बन चुकी है । इसके द्वारा प्राप्त ज्ञान और प्रशिक्षण से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है ।"महात्मागांधी" 1937। । यह बात अलग है कि शिक्षा की उपयोगिता जानते हुये भी इनमें शिक्षा के प्रसार का अभाव है । इस अभाव के पीछे अकेले जनजातीय समूहों का दोष ही नहीं मालूम होता है,बल्कि अन्य कारण भी प्रतीत होते हैं । अतः इनमें शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये हमें और प्रशासन को निम्न तथ्यों पर ध्यान देना चाहिये ।

अ- "महात्मागांधी" की बेसिक शिक्षा का व्यवहारिक प्रयोग होना चाहिये,ताकि ज्ञानार्जन के साथ-साथ धनोपार्जन भी होता रहे ।

ब- छात्रवृत्ति की धनराशि वर्ष के प्रारम्भ में मिलनी चाहिये । इसका आधा भाग अध्ययन,लेखन सामिग्री और आवश्यक वस्तुओं के रूप मे मिलनी चाहिये ।

स- छात्रों के लिए आवासीय शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिये ताकि सम्पूर्ण पर्यावरण ही शैक्षिक बनाया जा सके । उसमें निःशुल्क व्यवस्था और उपयुक्त अध्यापक ।छात्रावासाधिकारी। की नियुक्ति होनी चाहिये ।

द- विद्वानों के अध्ययन इनके बच्चों के बुद्धि स्तर को निम्न स्तरीय मानते हैं । वास्तव में यह न होकर प्रतिभा पलायन मात्र है । इनकी बुद्धि कौशल, चातुर्य आदि इनके द्वारा किये जाने वाले विभिन्न अपराधों से प्रगट हो जाता है ।

य- विद्यालय पाठ्यक्रम में इनकी संस्कृति, लोक कथायें, नृत्य और संगीत आदि का आयोजन आधुनिक परिवेश में करना चाहिये । इस प्रकार से इनके जीवन में व्यवहारिकता आयेगी ।

र- शिक्षा मे अपव्यय और अवरोधन की समस्या को दूर करने के लिये व्यवसायक, शैक्षिक और वैयक्तिक मार्ग-दर्शन का प्रबन्ध होना चाहिये ।

ल- जनजाति को मानवीय दृष्टिकोण से देखें, न कि उनका शोषण करें । शिक्षक ग्रामसेवक, स्वास्थ्य कार्यकर्ता और सरकारी कार्यकर्ता उनके साथ सहानुभूति पूर्ण व्यवहार करें, ताकि उनमें सम्मानीय भाव जाग्रत हो सके ।

व- शिक्षक का कार्य उनके बीच और आधुनिक समाज के बीच एक कड़ी का कार्य करना चाहिये, ताकि जनजाति परिवारों को भी समान सम्मान मिल सके । ऐसे कार्यक्रमों को आयोजित करें, जिससे उनके समाज का सम्मान बढ़े ।

स- इनके बच्चों में उत्पन्न हीन भाव को समाप्त करने के लिये नर्सरी और बाल-वाड़ी से शिक्षा को प्रारम्भ करना चाहिये । इससे इनमें पूर्व प्राथमिक शिक्षा से ही आत्म सम्मान, समानता, और व्यवहारिकता आदि का विकास प्रारम्भ होकर भविष्य को सुनहरा बनाने में सहायक होगा ।

II वर्तमान समाज के मानक परिवर्तित हो चुके हैं । इन पर भौतिकता का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा है । जनजातीय समाज स्वयं को इससे अपने को दूर नहीं रख पाया है । अतः आज के जनजातीय समूहों ने भी स्वयं को इस भौतिकता की दौड़ मे शामिल कर लिया है । वे आज वास्तविक ज्ञान को भौतिकवादी ज्ञान ही मानकर धनोपार्जन के विभिन्न तरीकों का प्रयोग करते हैं । अतः आज की शिक्षा का उद्देश्य भौतिकता को जानना है न कि स्वयं को जानना । इस तरह से जनजातीय मूल्यों ने उनके शैक्षिक दृष्टिकोण को प्रभावित किया है ।

इन परिस्थितियों में उनके विकास के क्षेत्र को सामाजिकता, राजनैतिकता, शैक्षिक पर्यावरण, भौतिक और अभौतिक साधन और रहने व व्यवसाय की अस्थिरता आदि ने प्रभावित किया है ।

III आज की शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य " बालक का सर्वांगीण विकास" करना माना गया है । जनजातीय शिक्षा मे भी हमें इसी को केन्द्र मानकर क्रियाशील बनाना होगा । इसके द्वारा बालक के व्यक्तित्व में निखार आता है । वह सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यवहारिक ज्ञान भी प्राप्त करता है । प्रस्तुत अध्ययन में जनजातीय शिक्षा के विकास के लिये मानसिक स्तर को तैयार करना मात्र है । जब ये लोग मानसिक रूप से तैयार हो जायेगें तो व्यवहारिकता में इसका पालन स्वत: ही करने लगेंगे । इस प्रकार से ये लोग अपने कार्यों को स्वयं करने की योग्यता और क्षमता को विकास करने मे समर्थ हो जायेगें । वर्तमान परिस्थितियों के साथ समायोजन भी कर सकेगें । अत: शोधकर्ता व्यक्तित्व विकास के लिये निम्न निष्कर्षों पर पहुँचता है -

1- व्यक्तित्व विकास के लिये बच्चों मे नागरिक गुणों का विकास किया जाय ताकि उनमें नागरिक चेतना का भाव विकसित हो सके ।

2- बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिये वातावरण तैयार किया जाय, उनके भोजन का प्रबन्ध, खेलकूद का प्रबन्ध और श्रव्य-दृश्य सामिग्री के द्वारा नये से नया ज्ञान सिखाया जाय ।

3- नैतिक शिक्षा के द्वारा मानव विकास, चरित्र, धर्म, समाज, संस्कृति आदि का उचित ज्ञान देकर मानव सद्भाव की शिक्षा का विकास किया जाय ।

4- व्यक्तित्व विकास में लड़का और लड़की में अन्तर न किया जाय, बल्कि समानता का व्यवहार होना चाहिये ।

5- इनके व्यक्तित्व का इस प्रकार से विकास किया जाय ताकि वे अपने अन्दर और बाहर परिवर्तन को स्थापित कर सकें ।

IV शोधकर्ता ने वर्तमान शोधकार्य मे सैद्धांतिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य और धार्मिक मूल्य का अध्ययन किया है । ये मूल्य प्रत्यक्ष रूप से उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति को प्रभावित करते हैं । इनके अलावा भी कुछ तत्व हैं जो उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति को प्रभावित करते होंगें, जिनको अप्रत्यक्ष रूप से ज्ञात किया जा सकता है । अतः जनजातीयों में शिक्षा के अभ्युदय के लिये अन्य कारकों को भी ध्यान मे रखा जाय । अतः मूल्यों के संदर्भ में निम्न बातों पर भी ध्यान देना चाहिये -

1- पुरूषों में और महिलाओं मे समान रूप से मूल्यों का विकास हुआ है ।

2- कुछ मूल्यों में पुरूष वर्ग ने उच्चता पाई है, तो कुछ में स्त्री वर्ग ने ।

3- नट-कबूतरा, साहरिया और खंगारों मे मूल्यों के विकास में सार्थक सम्बन्ध स्थापित हुआ है ।

4- वंशानुक्रम और पर्यावरण मूल्य विकास और शैक्षिक अभिवृत्ति को प्रभावित करते हैं ।

5- शैक्षिक अभिवृत्ति को सिर्फ मूल्य ही प्रभावित नहीं करते हैं, बल्कि पर्यावरण, अभिरूचि, श्रव्य-दृश्य सामिग्री, अभिप्रेरणा और व्यवसायिकता आदि भी करते हैं ।

V शोध का मुख्य केन्द्र जनजातीय समूहों के लिये विकास के आयाम योजना है, ताकि वे आधुनिक समाज के समतुल्य स्थान पा सकें । इसके लिये वर्तमान समाज, प्रशासन और शिक्षा प्रशासन को मिलकर कार्य करना होगा । अतः सम्पूर्ण विकास के लिये शोधिकर्ता निम्न निष्कर्षों पर पहुँचता है -

1- जनजातियों के लिये स्थायी निवास की व्यवस्था सरकार की तरफ से निःशुल्क रूप से होनी चाहिये ।

2- इनके व्यवसायों मे स्थायित्व लाने के लिये बहुउद्देशीय व्यवसायिक योजनाओं को लागू किया जाय, प्रशिक्षण दिया जाय, और बुजुर्ग स्त्री-पुरूषों को भत्ता दिया जाय, ताकि उनके मन में जीवन की सुरक्षा का भाव दृढ़ हो सके ।

3- इनके समाजों मे फैली भ्रान्तियों ।धार्मिक, सामाजिक, व्यवसायिक। को दूर करने के लिये प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को बढ़ावा दिया जाय ।

4- इनमें आर्थिक निर्भरता लाने के लिये स्त्रियों को क्राफ्ट, बीड़ी बनाना, सिलाई, चटाई, मिट्टी के व लोहे का सामान बनाना आदि की शिक्षा देना चाहिये ।

5- इनके जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिये मूल न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति की जानी चाहिये । रहने के लिये मकान, स्वच्छता, पीने का पानी, रोशनी की व्यवस्था, सड़क व रास्ता, दवाई, स्वास्थ्य सेवा, माताओं एवं बच्चों को पौष्टिक आहार आदि की व्यवस्था सरकार की तरफ से होनी चाहिये ।

6- सरकार द्वारा निर्धन, निराश्रित, परित्यक्त, महिलाओं और बच्चों का प्रबन्ध सहानुभूति के आधार पर करना चाहिये ।

शिक्षारत व्यक्तियों के लिये सुझाव

प्रत्येक अध्ययन अपने द्वारा एकत्रित आंकड़ो के आधार पर, निष्कर्षों के विश्लेषण के आधार पर, कुछ सुझाव प्रस्तुत करता है । ये सुझाव शिक्षा के क्षेत्रों में फैले विभिन्न व्यक्तियों के लिये उपयोगी हो सकते हैं । अतः कुछ निष्कर्षों को प्रस्तुत किया जाता है -

अ- जनजाति का सामाजिक स्तर बहुत ही निम्न माना जाता है । इसको पर्याप्त सम्मान-जनक बनाया जाय, ताकि इनका समाज में विश्वास और सम्मान स्थापित किया जा सके ।

ब- इस जनजाति समाज को दशा और स्थिति, पर्यावरण आदि में इस प्रकार से परिवर्तन लाया जाय, ताकि ये लोग आधुनिक समाज के साथ तादात्म्य स्थापित करके जीवन को सुन्दर बनायें । "जान डी वी" ने इसी लिये "विद्यालय को समाज का लघु रूप" माना था ।

स- प्रौढ़ शिक्षा, समाज शिक्षा और विद्यालय की शिक्षा इनमें नागरिक गुणों का विकास करेगी और इनमें राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव जाग्रत करेगी । इस प्रकार से इनमें आत्म संतोष और आत्मीयता के भावों में वृद्धि हो सकती है ।

द- वर्तमान युग भौतिकता का युग है । सम्पूर्ण मानवता में विकास की दौड़ इसी के लिये हो रही है । प्रस्तुत जनजातियों के विचार भी इस ओर मुड़ चुके हैं । अतः सरकार को चाहिये कि इनके लिये ऐसे साधन जुटाये, जिससे धन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से हो सके । साथ ही इनको आधुनिक जगत से परिचय करवाने के लिये श्रव्य-दृश्य केन्द्रों का विकास किया जाय । इनको रेडियों, टी0वी0, निःशुल्क प्रदान किये जायें, ताकि ये अपने उत्साह को जाग्रत कर सकें ।

य- यह आवश्यक हो जाता है कि जनजातीय वातावरण में मूलचूल परिवर्तन लाया जाय । इनके सामाजिक संगठन और बनावट में आधुनिकता का प्रवेश करवाया जाय, ताकि इनके सामाजिक पर्यावरण में पूर्ण रूप से परिवर्तन आ सके और वर्तमान की आवश्यकतानुसार स्वयं का विकास कर सके ।

र- "मूल्य" का स्वरूप गत्यात्मक है, जिसका प्रयोग विभिन्न प्रकार से किया जाता है । समय-समय पर विभिन्न विद्वानों और प्रसिद्ध दार्शनिकों ने अपने-अपने तरीके से इसका प्रयोग विभिन्न संदर्भों में किया है । भारतीय दर्शन ने मूल्य का प्रयोग मानव की उस दशा से किया है, जिसमें सुख और दुख: की सीमा से परे रहता है । मनोवैज्ञानिकों ने इसे मनोशक्ति माना है । समाज शास्त्रियों ने इसे समय की शक्ति का उपयोग मानकर अध्ययन किया है, और इसके साथ ही जीवन का साध्य भी । अन्त में विद्वानों ने इसे "समाकलन का सिद्धांत" भी माना है । अत: हमको "मूल्य का स्वरूप निश्चित करने से पहले उसकी परिसीमाओं को निश्चित कर लेना चाहिये । इसके साथ ही "मूल्य प्रकार" का अध्ययन भी आवश्यक है, ताकि अन्य परिवर्ती स्वभाव, प्रकार, आदि जनजातीय व्यवहार को विरोधी भाव से प्रभावित न कर सकें ।

ल- अभिवृत्ति का प्रयोग के क्षेत्र में एक सकारात्मक कदम है । इसके द्वारा व्यक्ति अपने प्रति पूर्व आभास ग्रहण करता है । इस से यह स्पष्ट हो जाता है कि व्यक्ति स्वयं के प्रति पर्यावरण से क्या आशा करता है । इसीलिये इसको तत्परता की दशा या स्थिति माना गया है । जनजाति समूहों में शिक्षा के प्रति चेतनता, उत्साह, प्रेरणा और जागृति आदि का विकास अभिवृत्ति के अध्ययन से ही सम्भव हो सकता है क्योंकि "मूल्य और अभिवृत्ति"आपस में सम्बन्धित है ।"रोकीज" और आल्पोर्ट" का मत है कि जब अभिवृत्ति एक निश्चित वस्तु या परिस्थिति पर प्रकाश डालती है तो मूल्य उस वस्तु या परिस्थिति के आचरण तरीकों और स्थिति की दशा का वर्णन करते हैं । अत: शोध कार्य का लक्ष्य जनजातीय मूल्यों का अध्ययन करके उनके शैक्षिक

विकास में सहयोग प्रदान करना मात्र है । अतः शिक्षा प्रशासन को चाहिये कि जनजातीय बच्चों में प्रतिष्ठा व सम्मान और आत्म संकेत की स्थापना करें, ताकि वे अपने को भविष्य के प्रति सही दिशा दे सकें । अतः यह आवश्यक हो जाता है कि अभिवृत्ति की परिसीमा और स्वभाव को निश्चित करने के लिये हमें क्रियाशील होना चाहिये ।

ब- शोधकर्ता शिक्षा क्षेत्र से ही जुड़ा है, अतः उसकी अवमानना नहीं करना चाहिये, लेकिन नई पीढ़ी को ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करना उसका कर्तव्य हो जाता है । अतः वर्तमान शिक्षा व्यवस्था मे कक्षा व्यवहार आज असहनीय हो गया है । इसका प्रभाव प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जनजाति ही नहीं समूचे मानव समुदाय पर पड़ रहा है । शिक्षा प्रशासन और अध्यापकों को मिलजुल कर कक्षा व्यवहार को सुधारना चाहिये, ताकि छात्रों मे अपव्यय और अवरोधन की प्रवृत्ति का विकास न हो पाये । कक्षा का वातावरण छात्रों की क्रियाओं पर निर्भर करता है । इन क्रियाओं का विकास शिक्षक व्यवहार और शिक्षण कला के द्वारा होता है । अतः अध्यापक मे इतनी क्षमता, कुशलता होनी चाहिये कि वह छात्र, उनके माता-पिता को सही मार्ग-दर्शन दे सके । इस हेतु उसे शिक्षा मनोविज्ञान, बाल-मनोविज्ञान और व्यवसायिक मनोविज्ञान का ज्ञान होना चाहिये । इनके द्वारा वह जान सकता है कि बालक क्या है ? और उसको शिक्षा की ओर कैसे प्रेरित किया जा सकता है । साथ ही उसे शिक्षण के विभिन्न तरीकों का व्यवहारिक प्रयोग करना जानना चाहिये, अन्यथा छात्र शारीरिक रूप से कक्षा मे उपस्थित रहेगा और मानसिक रूप से अनुपस्थित । अतः शोधकर्ता ने शैक्षिक अभिवृत्ति, छात्र और शिक्षण कला आदि मे समायोजन स्थापित

करना उचित माना है ।

FOLLOW UP WORK

प्रस्तुत अध्ययन ने कुछ प्रश्न-चिन्हों को जन्म दिया है, जिनके लिये उपयुक्त उत्तरों की आवश्यकता प्रतीत होती है । इससे अध्ययन के क्षेत्र की पूर्णता में विकास होता है । अत: भविष्य के शोधकर्ता निम्न तथ्यों को ध्यान में रखकर अपने अध्ययन को दिशा दे सकते हैं -

1- प्रत्येक जनजाति स्वयं मे परिपूर्ण है । उसका अकेले ही अध्ययन करना पर्याप्त हो सकता है ।

2- 600 स्त्री-पुरुष समूहों का अध्ययन प्रस्तुत अध्ययन में किया गया है । अधिक उपयुक्तता प्रदान करने के लिये प्रत्येक जनजाति के लिये इतने ही आंकड़े लिये जायें और उसमें लिंग, आयु, क्षेत्र और स्तर आदि परिवर्ती लेकर अध्ययन का विस्तार किया जा सकता है ।

3- प्रस्तुत अध्ययन का तुलनात्मक विस्तार अन्य प्रदेशों में व्याप्त जनजातियों के साथ किया जा सकता है । इस प्रकार से इनमें विकसित मूल्य और अन्य जनजातियों मे विकसित मूल्य की दशायें प्रगट या निश्चित की जा सके ।

4- जनजातियों मे शिक्षा की प्रगति हेतु अध्यापक की उपादेयता पर भी अध्ययन किया जा सकता है । इसमें अध्यापक व्यक्तित्व, शिक्षण कला, पाठ्यक्रम और पाठ्य साम्रिग्री सहगामी क्रियायें आदि सभी परिवर्ती बनाये जा सकतें हैं । इस प्रकार से जनजातियों की शिक्षा की प्रगति और विकास में तत्परता प्रदान की जा सकती है ।

5- जनजातीय शिक्षा प्रगति मे अर्थ की भूमिका पर भी अध्ययन किया जा सकता है, क्योंकि प्रस्तुत अध्ययन में आर्थिक मूल्य की भूमिका सकारात्मक रही है ।

वर्तमान में भी धनापूर्ति शिक्षा का केन्द्र माना जा रहा है ।

6- जनजातियों के मूल्यों का, व्यक्तित्व का और शैक्षिक अभिवृत्ति का वृहद रूप से अध्ययन किया जा सकता है । इसका अध्ययन प्रयोग विधि द्वारा उपयुक्त मापनियों के द्वारा किया जाय तो वास्तविकता कुछ भिन्न ही होगी ।

7- जनजातियों मे व्याप्त किशोरापराध और अपराधिक वृत्ति का समायोजन और व्यक्तित्व विकास पर भी प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है ।

8- जनजाति विकास एवं उत्थान हेतु सरकारी संसाधनों की समीक्षा का अध्ययन किया जा सकता है । इसके बावजूद भी विकास की गति धीमी क्यों है ? का पता लगाया जा सकता है, जो सभी के लिये लाभदायक हो सकता है ।

9- जनजातीय शिक्षा और अध्यापक भूमिका को अध्ययन का प्रमुख क्षेत्र बनाया जा सकता है । इसमें भारतीय अध्यापक की प्रतिमूर्ति और आधुनिक शिक्षा के स्वरूप मे समायोजन की स्थापना की जानी चाहिये, ताकि शिक्षा को व्यवसाय सोधक मानकर मानव कल्याणक माना जाय । इसके लिये सावधानी पूर्वक और लम्बे समय तक शोधकार्य की आवश्यकता है ।

SELECT BIBLIOGRAPHY

A- BOOKS, TESTS AND OTHER PUBLISHED MATERIALS.

1. A. Ansari, ' Velue orientation scale, in U. Parede and T.V. Rao, Hand book of Psychological and Social Instrument, Baroda : Samestin, 1972, P. 311-312.

2. B.C. Aggarwal, 'Kluckhohn Value questionnaire' in V. Pareck and T.V. Rao, Hand book of Psychological and Social Instruments, Baroda: Samesthi, 1967, p. 314-315.

3. C.M. Fleming : 'The Social Psychology of Education' London Routledge and Kegan paul, 1957.

4. Carl G. Jung, ' Psychological Types' London Rontledge and Kegan paul, 1923.

5. C. Klukhohan : 'Values and Value Orientations in the theory of Action : An Exploration in definition and classification' in T. parsons and E.A. Shils (eds), Toward a General Thecry of Action (Cambridge, Mass Harward University press, 1952).

6. Charles Morris, 'Varieties of Human Values' Chicago, uni - of Chicago press, 1956.

7. Charles Morris : 'Values of Students of United States, India, Japan, China and Norway' Chicago University, 1945.

8. Carter U. Good and Douglas E. Scates, ' Methods of Research Educational, psychological and Sociologixal' New York : Appletion- Century Crofis, 1954, P. 551.

9. D.S. Kothari, ' Report of the Education Commission' , New Delhi, Government of India, Min of Education, 1966.

10. D.H. Parker : The philosophy of Value' Am. Ardor. uni of Michigan Press, 1957.

11. E.M. Albert and C. Kluckohn : A selected Bibliography on Values, Ethics and Esthetics (1920-1958), Illinois Free press 1959.

12. G.W. Allport, 8 Study of Values' - a scale for measuring dominant in terests in personality. Manual of Direction Revised ed. Cambridge Hinghton Miflin Comp., 1960.

13. G. Tiwari, ' Ways to Live Questionnaire' Agre. Psychological Research Cell, 1975.

14. G.P. Shemyand Verma, 'personal Values Questionnaire' Agra. National psychological Corporation, 1972.

15. Harold Rugg and W. Withere ' Social Foundations of Education'. Englwood Cliffs, N.Y. Printice Hall, 1956.

16. Humayum Kabir, 'Education in New India' New Delhi, George Allen and Unwin Ltd., 1959.

17. Henry A. Murray : Explorations in personality. A Clinical and Experimental Study of fifty men of College A/C. New York, Oxford University Press 1951.

18. H.L. Singh and S.P.Ahluwalia. Study of Values Manual of directions and psychological Tests, Agra Bhargava Book House, Agra, 1981.

19. Henry E. Garet, 'Statistics in psychology and Edueation' (6th Indian Edition) Arun K. Mehta at Vakil and Sons pvt.Ltd. Vakil House, 18 Ballard Estate, Bombay 1.

20. H.E. Gough in O.K. Buros (ed)," The Forth Mental Measurements year book" Now Jursy, The Graphon Press; 1953, p.156-157.

30. H.A. Murray,"Exploration in Personality" Oxford, The University Press, 1958.

31. J. Bronowski,"The Values of Science" in a Maslow (ed) Now Knowledge in Human Values; New York: Harper and Row 1959.

23. Johan Dewey, 'Democracy and Education' New York, Mac Millan, 1937.

24. J.W. Calzel and P.W. Jackson , 'The Teachers Personality and Characteristics' in N.C.Goge (ed) Hand Book of Research in Teaching Chicago Rand Mc Nallin.

25. John W. Best, "Research in Education" New Delhi; Prentice Hall, 1963; p. 105.

26. K. Koffka; "The growth Of Mind" Trans., K.M. Ogden; London; Kigan Paul, 1946.

27. K.L. Srimali, "A search for values in Indian Education" Vikash Publication, Delhi, 1971

28. L.S. Mudaliar, "Report of the Secondary Education Commission", New Delhi, Govt. Of India, Min. Of Edu. 1953.

29. M.L. Jacks, "The Education of Good Men" London, Gallaues, 1955.

30. N. Rescher, "Introduction Of Value Theory". Engle Wood Cliffs, N.J.Printice Hall, 1969.

31. N.K. Singh and Others, "Effect of Learning in Teaching skills though Microteaching on the

skill competence and General Teaching competence of Inservia Science teachers and Pupil perceptions of teaching N.C.E.R.T. Delhi, July 1981.

32. R.M. Williams(Jr.) "Individual and Group Values in Edgar F. Borgatta(ed); "Social psychology reading and perspective" Chicago Rnd. M.C. Nally, 1969.

33. Richard Livingstone; "The Future in Education" Cambridge University Press, 1945.

34. Richard Livingstone; "Education for a world Adrift." CAMBRIDGE: University Press, 1945.

35. R.K. Ojha, "Value Test". Agra: National psychological Corporation, 1971, (V Revision).

36. Robert M.W. Travers, "An introduction to Educational Research". New York. The Mac Millan Company, 1964, p. 284.

37. Samsuddin, "Teacher Training", Educational India Vol. 32, NO. 2, September 1965.

38. S.P. Chaube, "Secondary Education for India. Delhi Atma Ram and Sons, 1956.

39. S.P. Kulshrestha, "Mannual of Directions for Revised and Modified Adoptation of the Study of Values". Varansi Rupa psychological Corporation, 1971.

40. Stephen B. Whitney; Encyclopeadia of Education Of Research; ed. Chester W. Horns, New York. The Mac Millan Company, 1960,p. 1450.

41. V.N.K.Reddy,"Man Education and Values" Delhi, B.R.Publishing, 1979,p. 87.

42. Webster's "New collegiate Dictionary". Spring Field 1961.

43. Y. Park,"Junior Collage Of Faculty" Their Values and Perceptions, Monograph No. 12" Washington. Enc. Clearing House for Junior Colleges, 1971.

TRIBES BILIOGRAPHY

Anderson, J.D. - The Peoples of India, Cambridge, 1913.

Archer, W.G. - The Santal Problem, Man in India, Dec. 1945.

Arya, B.S. - Kolta Enquiry Committee Report (Hindi), Lucknow 1960.

Atal, Yogesh - Adivasi Bharat, Delhi, 1965.

Bagchi, P.C. - Pre-Aryan & Pre-Dravidian in India, Calcutta, 1920.

Bailey, F.G. - Tribe, Caste & Nation, Manchester University Press, 1960.

Baines, A. - Census of India, 1891, Report. Ethnology, Strassbury, 1912.

Best, J.W. - Forest Life in India, 1935.

Bhargava, B.S. - Criminal Tribes, Lucknow, 1949.

Bhartiya Adimjati Srwak Sangh - Tribes of India, Delhi, 1957.

Bose, N.K. - The Hindu Method of Tribal Absorption, Scence & Cultyre Vol. VI, 1941.

Anthropology & Tribal Welfare,

- Report of the Fourth Conference for Tribes & Tribal Areas, Delhi, 1957.
Cultural Anthropology, Bombay, 1962
Fifty Years of Science in India- Progess of Anthropology & Archaeology, Calcutta 1963.
Culture and Society in India, Calcutta, 1967.
Problems of National Integration, Simla 1967.
Tribal Life in India, Delhi, 1971.

Crooke, W. - Tribes & Castes of the N.W. Provinces & Oudh, Calcutta, 1896.

Das, T.C. - 'Social Organisation of the Tribal People', Delhi, Indian Journal of Social Work, Vol. XIV, 1953.
Classification of the Tribals of India, Report of the Fourth Conference for Tribes & Tribal Areas, 1957.

Diwan Prati pal Singh - Bundelkhand Ka Etihas, Hit Chintan Press Ram Ghat, Banaras, Sambat, 1985.

Dhebar, U.N. - Report on Scheduled Tribes, Delhi, Govt. of India, 1960.

Dube, S.C. - The Kamar, Lucknow, 1951.

Manav Aur Sanskriti.

Approaches of Tribal Problems, Indian Anthropology in Action, Ranchi, 1960.

Enthowern, R.E. - Tribes & Castes of Bombay (3Vols). Bombay, 1920.

Gait, E.A. - Census of India, 1911, Report Vol. I, Pt.I.

Gorelal Tiwari - Bundelkhand ka Sankshipt Etihas' Nagari Pracharini Sabha Kashi, Sambat, 1983.

Govt. of India - The Adivasis, Delhi, 1959.

Govt. of M.P. - A Study of Tribal People & Tribal Areas of Madhya Pradesh, Bhopal, 1967.

The Tribes of Madhya Pradesh Bhopal, 1964.

Govt. of Rajasthan - Tribal Rehabilitation in Rajasthan, 1956.

Guha, B.S. - Census of India 1931, Delhi, 1935.

The Racial Elements in Indian Population, Bombay, 1938.

- The Indian Aborigines & their Administration. Journal of Asiatic Society Vol. XVII, 1951.

Gupta, K.K. Das - A Tribal History of Ancient India, Culcutta.

Lalit Prasad Vidyarthi - Bharatiya Adivasi' Hindi Samiti, U.P. Shasan, Sambat 2031 Vikrami.

Law, B.C. - Ancient Indian Tribes, Vol. I, Lahore, 1926.
Ancient Indian Tribes Vol 1 London, 1934.

Majumdar, D.N. - A Tribe in Transition, London, 1937.
The Fortunes of Primitive Tribes, Lucknow, 1944.
The Matrix of Indian Cultur Lucknow, 1947.
The Affairs of a Tribe, Lucknow, 1950.
Races and Cultures of India Bombay, 1958.
Himalayan Polyandry, Bombay, 1962.

Majumdar, D.N. & Madan T.N. - An Introduction to Social Anthropology. Bombay, 1956.

Mathur, K.S. - Some Problems of Tribal Rehabilitation in M.P., Journal of Social Research, 111-2, 1960.

Mathur, K.S. & Agarawal B.C.- Tribes, Caste & Peasantry, (Ed.), Lucknow, 1974.

Mamoria, C.B. - Tribal Demograghy in India, Kitab Mahal.

Ray, P.C. - The Effect of Culture Contac on the Personality Structure of two Indian Tribes, the Riang of Tripura and the Baiga of M.P., Calcutta, Anthropological Survey of India, Rasearch Bulletin Vol. VI No. 2, 1957.

Russel, R.N. & Hira Lal - The Tribes & Castes of the Central Provinces of India, Vol, I-IV, London, 1916.

Sachhidananda - Culture Change in Tribal Bihar, Calcutta, 1954.

Profiles of Tribal Culture

- Tribe-Caste Gontinuum: A Case Study of the Gond in Bihar-Anthropos, LXV, 1970.

Sedgwick - Census of India 1921, Report.

Singh, K.S. - Cu Tribal Situation in India (Ed), Simla, 1972.

Sinha, D.P. - Culture change in an Inter Tribal Market, Bombay, 1968.

Sinha, Surjit - Tribe Caste & Tribe-peasant Continuation in Central India, Man in India, Vol.45 No. 1, 1965.

Thurston, E. & Rangachari - Castes & Tribes of Southern India, 7 Vols. Madras, 1909.

U.P. Govt. - Ordinance, No. 18, 1987.

Verma, B. - Ged Kundar Upnyas in Hindi, Bhomika.

REFERENCE-ATTITUDES

1. W. Doob

" The Behaviour of Attitudes, " Psychol . Rev., 1947, 54 p.p. 135-156.

2. D.T.Campbell

" The indirect Assessment of Social Attitudes " Psychol. Bull., 1950, 47,p.31.

3. T.M.Newcomb

Social Psychology (New York: Holt , 1950).

4. H.B. English and A.C. English

Acomprehensive Dictionary of Psychological and Psychoanalytic Terms (New York: Mckay, 1958) p.50 .

5. L.R. Anderson , and M. Fishbein

" Prediction of Attitude from Number, strength , and Evaluative Aspect of Beliefs About the Attitude object: A comparison of Summation and Congruity Theories, " jnl. of Pers . Soc. Psychol., 1965, 2,p.p. 437-443.

6. M.E.Shaw and J.M. Wright

Scales for the Measurement of Attitudes (New York: Mc Graw- Hill, 1967), p. 10 .

7. J.A. Cardno

" The Notion of Attitude. An Historical Note," Psychel. Rep., 1955, 1, pp. 345-352.

8. H.J. Eysenck

" Primary Social Attitudes:

1. The Organization and Measurement of Social Attitudes,"

Int. Jnl. Opin . Attit . Res., 1947, 1, 49-84.

9. M. Sherif and H. Cantril

"The Psychology of Attitudes: Part 1 ," "Psychol. Rev.,

1945, 52, 295-310.

10. H.C. Triandis

" Exploratory Factor Analyses of the Behavioural

Component of Social Attitudes, " Jnl. of Abnorm. Soc.

Psychol., 1964, 68 , 420-430.

11. R.J. Rhine

" A Concept Formation Approach to Attitude Acquisition,"

Psychol. Rev., 1958, 65, 362-370.

12. William A. Scott.

"Attitude Measurement " in G. Lindzey and E. Aronson

(eds) The hand book of Social Psychology , Vo. 11,

2nd ed. , (Reading , Mass Addison - Wesley , 1968) pp 204

- 273.

13. R.A. Likert

" A Technique for the Measurement of Attitudes,"

Arch. Psychol, 1932 , No. 140, pp. 1-55.

14. T.J. Lanta

" Social Attitudes and Response styles," Educ. Psychol. Measmt., 1961 ,21, 543-557.

15. F. Kerlinger

The Attitude structure of the individual A Q- study of the Educational Attitude of Professors and laymen," Gen. Psychol . Mono., 1956, 53, 283-329.

16. F. Kerlinger

" Attitudes Towards Education and Perception of Teacher characteristics: A Q- study," Amer Educl. Res. Jnl. , 1966, 3, 159-68.

17. F.Kerlinger

"Progressivism and Traditionalism . Basic Factors of Educational Attitudes,"Jnl. of soc. Psychol., 1958., 48 , 111-35.

18. M. Gentoy

" Attitudes towards Education and Perceptions of Teachers Behaviour," Amer. Educ. Res.Jnl ., 1968, 5, 385-402.

19. R.L. Ebel

Measurement Applications in Teacher Education: A Review of Relevant Research."Jnl. ofTR. Educ. 1966, 17 ., 15-25.

20. G.E. Mazer

" Attitude and Personality change in student Teacher of Disadvantaged Youth", Jnl of Educl. Res., 1969,

63, 116-20.

21. Roy Nash

" Measuring T acher Attitudes" , Educl. Res., 1972, 14, 2 , 141-146.

22. M.B.Buch

" Educational Psychology - a Trend Report ," in India Council of social sciences Research, A survey of Research in Psychology . (Bombay :Popular Prakashan (1972), pp 81-82 .

23. M.B.Buch

" The Measurment of Attitudes of secondary school Teaschers Towards the Teachig Profession ." Jnl. of Educ. and Psychol. , 1959, 17(3).

24. U.Pandey

A study of women Teacher Traine Attitude towards Their Profession , (M.Ed. dissertation, Allahabad Univ., 1958).

25. Vimal A. Kothari

A study of Attitudes of Parents, Pupils and Teachers Towards Teaching as a Career, (M.Ed. Dissertation , Bombay Univ., 1958).

(C) - UNPUBLISHED DOCTORAL THESES

1. D.K. DE

A study of values of High School boys of some schools in west Bengal. (Doct. Research, Kalyani University, 1974).

2. H.L. Singh

Measurement of Teacher Values and their Relationship with Teacher Attitudes and Job Satisfaction. (Doct. Research, Banares Hindu University, 1974).

3. I.B. Verma

An Investigation into the impact of Training on the Values, Attitudes, Personal problems and Adjustments of Teachers (Doct. Research, Agra University, 1968).

4. Larry Kilburn

Hayes, The Relationship Between Individual Values, View points of Educations' Tasks and satisfaction with Local Schools (Doct. Research, Oklahoma State University, 1962).

5. O.W. Hansen and G.M. Stanley.

A study of the Motivation of High School Teachers (Doct. Research University of Southern California, 1969).

(C) - UNPUBLISHED DOCTORAL THESES

1. D.K. DE

A study of values of High School boys of some schools in west Bengal. (Doct. Research, Kalyani University, 1974).

2. H.L. Singh

Measurement of Teacher Values and their Relationship with Teacher Attitudes and Job Satisfaction. (Doct. Research, Banares Hindu University. 1974).

3. I.B. Verma

An Investigation into the impact of Training on the Values, Attitudes, Personal problems and Adjustments of Teachers (Doct. Research, Agra University, 1968).

4. Larry Kilburn

Hayes. The Relationship Between Individual Values, View points of Educations' Tasks and satisfaction with Local Schools (Doct. Research, Oklahoma State University. 1962).

5. O.W. Hansen and G.M. Stanley.

A study of the Motivation of High School Teachers (Doct. Research University of Southern California, 1969).

6. P.C. Katiyar

A Study of values and vocational Preferences of the Intermediate Class students in U.P. (Doct. Research Agra University, 1976).

7. S.P. Kulshresthe

The Emerging value pattern of teachers in a Socio- Cultural Environment (Doct. Research, Punjab University 1974)

8. S. Verma

Personality Factors, Value patterns Vocational Interests of Male Under-Graduates (psy. Doct. Research, Lucknow University, 1979).

9. S.B. Adevol

An Investigation into the quality of teachers Under training (Doct. Research, Allahabad University 1952).

10. U. Mahendra

Value Patterns of Educational Dropouts (Doct. Research, Agra University, 1972).

11. V.N.K. Reddy

Education as a Medium of Integration of Value and Effective value changes (Doct. Research, Osmania

6. P.C. Katiyar

A Study of values and vocational Preferences of the Intermediate Class students in U.P. (Doct. Research Agra University, 1976).

7. S.P. Kulshresthe

The Emerging value pattern of teachers in a Socio- Cultural Environment (Doct. Research, Punjab University 1974)

8. S. Verma

Personality Factors, Value patterns Vocational Interests of Male Under-Graduates (psy. Doct. Research, Lucknow University, 1979).

9. S.B. Adavol

An Investigation into the quality of teachers Under training (Doct. Research, Allahabad University 1952).

10. U. Mahendra

Value Patterns of Educational Dropouts (Doct. Research, Agra University, 1972).

11. V.N.K. Reddy

Education as a Medium of Integration of Value and Effective Value changes (Doct. Research, Osmania University, 1976)

12. V. Soudhagyavati

Prediction of Success in Teaching (Doct. Research, Agra University, 1967).

(B) - ARTICLES PAPERS IN PERIODICA

1. Gusziedelis, M. Lorr and Tonesk

" Patterns of personal values among Men and Women", personality and Social psy. Bulletin, 1974, 1, (1), p. 25 - 27.

2. B.L. Bowie and M.G. Morgan

"Personal Values and Verbal Behaviour Of Teachers" Jnl. Exptl. Educ.; 1962, 30, p. 337-345.

3. B.Kuppusamy and P.C. Eapen

"Attitude of Teachers towards moral and Religious instruction in schools", Jnl.Of Educl. Res. and Ext, 1968, 5, 1,p. 9- 16.

4. Charls F. Warnath and Hing R. Fordic

"Inventioned Values Of Etering College Freshmen " person and Gind Jnl., 1961 (40); p.277 -281.

5. D.C.Smith

"Discontinuity Of Values ", Alberta Jnl. of Educl. Res., 1967, 13(1); p. 27 - 32 .

6. D.M.Medley and H.E. Mitzel

" A Technique for Measuring Class Room Behaviour Jnl. Of Educl. Psy. , 1958 , 49, p. 86-92.

7. E.J. Null and J.E.Walter

"Values of students and their Ratings of a University Professor", College Student Jnl., 1972, 6 (A), P. 46-57.

8. F.W. Garforth

"Values in Society and Education", Educ. for Teaching, May 1964, P. 64.

9. Frences Obst

"A comparison of Teacher Candidate Groups on the Allport - Vernon - Lindzey Aesthetic Scale", Calif. Jnl. of Educl. Res. 1966, 17, P. 181 - 185.

10. F. Martin

"The Relationship of Values to Reinforcement Preferences of Middle School Teachers", Psychology, 1975, 12 (4), p. 32-35.

11. F.Linder and D. Wayer

"Interpersonal perception Of Values : Freedom and Equality", Perceptual and Motor Skills, 1979, 48, p. 167- 170.

12. H.G. Gupta

"Re-Orientation of Educational Programme" Educational India, 1968, 35, (6).

13. Indian National Commssion For Co-operation with UNESCO, "Education and Traditional Values - A Symposium", Educl. Quart., 1963, 15 (58), p. 64-105.

14. J.M.Mahain

"The Education Commission and preparation of Teachers", Teacher Education Vol. X, No. 1, July 1965.

15. J.C. Bledsoe

"A Co6operative study of values and critical thinking Skills of a Group of Educational Workers", Jnl. Of Educl. Psychology 1955, 46, p. 408 - 417.

16. John H.M. Andrews

"Administrative Significance Of Psychological Differences between Secondary Teachers of Different subject matter Fields", Alberta Jnl. Of Educl. Res., 1957 (3), p. 199-228.

17. James A. Cock

"An Assessment Of the Values Systems and Attitudes of Seected High School Youth", (A Factor Analytic Study) Dissertation Abstracts International, 1972 (33), pages 1347-A-1348-A.

18. K. Ray Chaudhary

Allport Vernon - Lindzey study Of Values (1958) Modification in Indian Situation", Indian Psychological Bulletin, 1959, 4(2); p. 67-74.

19. L.L. Thurston

"The Measurement of Values", Psy. Rev, 1954, 61(1), p. 24 - 50.

20. L.M. Bachtold and K.L. Eckvall

"Current Value Orientations Of Americans, Indians, in Northern Califonnin the Hupa", Jul, Of Cross Cultural Psy., 1978, 9(3); 367 - 375.

21. Lokesh Kaul

" A Study Of Sprangerian Values Of popular Teachers" Jnl. Of Educl. Res. and Ext, 1973, 9; p. 173-184.

22. L. Singh and Gupta

Creativity : As related to the Values Of 'Indian Adolescent Students", Indian Psychological Review, 1977, 14 (2), p. 73-76.

23. L.V. Gorden

" Survey Of Interpersonal Values", Chicago Science Research Associates, 1960.

24. Milton Rokeach

"A Theory Of Organization and change within values Attitudes systems". Jnl. Of Soc. Issues 1968, 24, 1.

25. M. Rokeach

"The Role of Values in public Opinion Research". Public Opinion Quarterly, 1968-69, 32(4); p.547-559.

26. N.T. Feather

"Value Importance, Conservatism and Age". European Jnl. Of Social psy., 1977, 7(2); p. 241- 245.

27. P.G.Khare

"Occupational Differences in life Values", Indian psyshological Review, 1968, 4(2); p. 104 -109.

28. R.C. Dixit and Dev Datta Sharma

"A Study Of Student Teacher Relationship in terms of Value Incorporation", Jnl. Of psy. Res. 1970, 14; p. 57-63.

29. S.B. Kakker and L.V. Gordon

"The Interpersonal Values of Indian Teachers Trainees". Jul. Of Social Psychology, 1966, 69; p. 341-342.

30. S.C. Sharma

"Occupational choices and Values of College Students", Indian Psy. Review, 1975, 12(1); p. 35-36.

31. T. Greenstien

"Bebavicur change through value self-confrontation A Field Experiment", Jnl. Personality and Social Psy. 1976, 34(2); p. 254-262.

32. W.F. Dukes

" Psychological Studies of Values". Psychological Bulletin, 1955, 52; p. 24 -50.

(a) - UNPUBLISHED M.Ed. DISSERTATIONS

1. A. Mukerji

Attitude to Teacher Training. (M.Ed. Dissertation, Gorakhpur University, 1961).

2. A. Prakash

A comparative study of Rural and Urban Area Final Year J.B.T. Students Attitude to wards Basic Education (M.Ed. Dissertation Kurukshetra University 1966).

3. Bruce R. Joyce

The Leavner in Teabher Education; A study of selected aspects of Values, (Dissertation Wayne State University, 1960).

4. B. Chiranjivi

An Investigation into the attitudes of Secondary School Teachers towards Teacher - Pupil Relation - Ship in Class Room setting, (M.Ed. Dissertation, Andhra University, 1964).

5. B.M. Sharma

An Investigation into the attitude of Teachers serving in Multipurpose Schools of Rajasthan towards, School Supervision, (M.Ed. Dissertation , Rajasthan University, 1960).

6. Har Swaroop Saxena

Teachers Attitude towards Educational Reforms

(M. Ed. Dissertation, Allahabad University, 1963)

7. K. Gupta

An Investigation igto the Attitude of Teachers towards Religious Education. (M.Ed. Dissertation Agra University , 1957).

8. K. Ravindra

Investigation into the Attitude of Post-Graduate Basic Training-Pupil Teachers towards certain aspects of their Professional Training.
(M.Ed. Dissertation Punjab Uni. 1967).

9. K.B. Shukla

Attitude Of Trained Teachers towards B.Ed. Training in Rewa Division. (M.Ed. Dissertation, Saugor Uni.1964)

10. L. Abraham

A Study Of the Attitudes Of Women Teacher in the Secondary Schools towqrds their Profession in the city of Jabalpur. (M.Ed. Dissertation, Jabalpur University).

11. O.D. Parashar

Attitude of Teachers towards Teaching .(M.Ed. Dissertation, Delhi University, 1963).

12. P. Kaur

Values and Verbal Behaviour Of pupil- Teachers (Dissertation, Agra Uni.1963).

13. R.P.Sharma

A Study of Values held by Teachers in Higher Secondary Schools of Delhi (M.Ed. Dissertation, Delhi Uni. 1965).

14. R.P.Khare

The Study Of Teachers Attitude towards recent Educational Reforms in Madhya Pradesh, (M.Ed. Dissertation , Jabalpur University, 1968).

15. S.S.Aggarwal

The Study of Attitude of Training College Teachers of Agra University towards their profession,(M.Ed. Dissertation , Delhi University , 1966).

16. Saroj Sahai

An investigation into the causes of Dissertation among Teachers (M.Ed. Dissertation . Delhi University 1967).

(b) - REFERENCE BOOK AND MANUALS

1. M.B. Buch

"A Survey Of Research in Education."

I Volume 1974, BARODA

II Volume 1978.

2. W. Cheser Harris

" Encyclopedia Of Education Research."

Third Edition , New York 1960.

3. Mrs. H.L. Singh and Dr. S.P. Ahluwalia

" Study Of Values."

Manual psychological Tests,

Agra Bhargava Book House, 1981.

4. Dr. S.L. Chopra

"Attitude towards Education "

Manual Psycological tests,

Agra , Bhargava Book House, 1982.